वर्ष 35, अंक 2-3 28.05.2012 मार्च–जून 2012

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

दिल्ली - 2012

योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव 'निदिध्यासन अंक'

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा॥ शिक्षापत्री, ११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

चार-चार दिन लगातार सुबह-शाम, पाँच

आप सब ऐसे बैठे रहते हो–

च-पाँच घंटे की सभाओं के कार्यक्रमों में
धन्यवाद है आप सबको !
– प.भ. सतीषभाई चटवानी, लंडन

इन स्वरूपों की सेरेसाया में ही मेरी रक्षा और सम्मान समाए हैं।
– प.पू. गुरुजी

‘यह सब अकेले हाथ नहीं बना; धन्यवाद है मेरे साथियों को...’

– प.पू. काकाजी

पू. देवशीबापा (माणावदर)

पू. नरसिंह फुआ (माणावदर)

पू. हरिभाई साहेब–‘भाई’ (माणावदर)

पू. मा. गुलज़ारीलाल नंदाजी (दिल्ली)

पू. भट्ट साहेब (अमदावाद)

पू. भीखाकाका (वडोदरा)

पू. विठ्ठलदास–‘फुआ’ (आणंद)

पू. महेन्द्रभाई गांधी

पू. बेचरकाका

पू. चंदुभाई–‘दाजी’ (सोखड़ा)

पू. आणंदबापा (जूनागढ़)

पू. चंद्रकांतभाई धाबलीवाला

पू. काकुभाई

पू. पुरुषोत्तमदास सोनी

पू. जयंतीभाई दोशी

‘हम भी ऐसे मौके पर इन मुक्तों का अभिवादन करना चूकें नहीं...’

– प.पू. गुरुजी

पू. कांतिकाका

पू. हर्षदराय दवे

पू. छगनभाई

पू. गोरधनकाका

पू. रमणीक अदा

पू. हर्षदभाई भट्ट

पू. नागरदासभाई

पू. पोपटभाई

पू. गोरधनदास कापड़िया

पू. रसिकभाई मर्चंट

पू. नलीनकांत दवे

पू. चंद्रकांतभाई देसाई

पू. रायशीभाई

पू. गोरधनदास नारबाला

पू. छगन मोटा

वर्ष 35, अंक 2-3 मार्च-जून 2012

भगवत कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये।

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत
सनातन, सचेतन और सक्रिय
गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली
द्विमासिक सत्संग पत्रिका

प्रकाशक एवं संपादक :
प.भ. प्रभाकर राव

कला निर्देशक :
प.भ. आशिष शाह

मुद्रक :
डी.के.फाईन आर्ट प्रेस प्रा. लि.

प्रति अंक शुल्क : ₹ 10.00

वार्षिक शुल्क : ₹ 50.00

Yogi Divine Society- Delhi
'Taad-dev', Kākāji Lane,
Swāminārāyan Mārg, Ashok Vihār-III,
Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327
E-mail : taaddev@ydsd.org
Website : www.ydsd.org

अनुक्रमणिका

विषय — **पेज नं.**

- अलौकिक अनुभूतियों से हरा-भरा 'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव'! 5-45
- 2 फरवरी 2012 – साक्षात्कार हीरक जयंती की पूर्वसंध्या पर बहनों की सभा

सौ. शोभना भाभी (दिल्ली) ---- 50
प.पू. योगिनी बहन (पवई) ---- 51
प.पू. पद्मु बहन (गुणातीत ज्योत) ---- 53
पू. डॉ. नीलम बहन (गुणातीत ज्योत) ---- 56
प.पू. हंसा दीदी (गुणातीत ज्योत) ---- 57
प.पू. आनंदी दीदी ---- 59
प.पू. प्रेम बहन (हरिधाम) ---- 62
पू. सुमन बहन (हरिधाम) ---- 63
प.पू. ज्योति बहन (गुणातीत ज्योत) ---- 64
प.पू. साहेबजी ---- 65
प.पू. दिनकरभाई ---- 65

- 3 फरवरी 2012 – कलशविधि एवं पाटोत्सव निमित्त सभा

प.पू. शांतिभाई साहेब (अनुपम मिशन) ---- 88
प.पू. दिनकरभाई ---- 89
प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी ---- 89

- 3 फरवरी 2012 – ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज साक्षात्कार हीरक जयंती सभा

प.पू. अश्विनभाई (अनुपम मिशन) ---- 90
पू. शास्त्री नर्मदाशंकरजी (मुंबई) ---- 92
प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ---- 93
श्री हरिशंकर गुप्ताजी (दिल्ली) ---- 94
प.पू. साहेबजी ---- 94
प.पू. महेन्द्र बापु (शिकागो) ---- 99
प.भ. मनोजभाई सोनी साहेब (वडोदरा) ---- 101
प.पू. गुरुजी ---- 103

- 4 फरवरी 2012 – ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज साक्षात्कार हीरक जयंती शिविर

प.भ. वच्छराजजी (दिल्ली) ---- 106
प.भ. दिलीपभाई भोजाणी (लंडन) ---- 107
पू. विठ्ठलदासभाई [फुआ] (हरिधाम) ---- 110
पू. प्रेमस्वरूपस्वामी (हरिधाम) ---- 111
प.पू. भरतभाई (पवई) ---- 113
प.पू. निर्मलस्वामिजी (समढियाळा) ---- 116

- 5 फरवरी 2012 – ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज साक्षात्कार हीरक जयंती शिविर

प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी (मुंबई) ---- 118
पू. विज्ञानस्वामिजी (कंथारिया) ---- 119
पू. दासस्वामिजी (हरिधाम) ---- 120
प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ---- 124
प.पू. भरतभाई (पवई) ---- 125

विषय	पेज नं.
प.पू. कोठारीस्वामिजी (हरिधाम)	128
प.पू. शांतिभाई साहेब (अनुपम मिशन)	130
● 5 फरवरी 2012 – प.पू. गुरुजी का 75वाँ प्राकट्योत्सव	
प.पू. वशीभाई (पवई)	140
प.भ. काशीरामभाई राणा साहेब (सुरत)	142
प.पू. साहेबजी	145
प.पू. दिनकरभाई	146
प.पू. गुरुजी	149
प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी	155
प.पू. निर्मलस्वामिजी (समढियाळा)	155
प.पू. साहेबजी	156
प.पू. स्वामिजी	156
● 22 फरवरी 2012 – प.पू. गुरुजी की 75वीं प्राकट्यतिथि सभा	
प.भ. राकेशभाई शाह (दिल्ली)	159
प.भ. भद्रायुभाई (दिल्ली)	159
प.भ. चांदप्रकाशजी (दिल्ली)	160
प.भ. काशीरामभाई राणा साहेब (सुरत)	161
पू. पुरी अंकल (दिल्ली)	163
पू. मल्कानी अंकल (दिल्ली)	164
प.पू. गुरुजी	165
● 8 मार्च 2012 – धुलेन्डी	
प.पू. गुरुजी	172
● 13 मार्च 2012 – प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की निश्रा में सुबह की सभा	
प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी (मुंबई)	175
पू. व्रजलालभाई (सांकरदा)	176
पू. कौशिकभाई (एरु)	180
प.पू. वशीभाई (पवई)	181
प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी	184
प.पू. गुरुजी	188
● 13 मार्च 2012 – प.पू. गुरुजी का प्राकट्योत्सव	
पू. बापूस्वामी (सांकरदा)	200
पू. पुनीतजी (पानीपत)	201
पू. कॅप्टन तेजस शाह (मुंबई)	204
पू. स्नेहलस्वामिजी (सांकरदा)	204
पू. यज्ञप्रियस्वामिजी (दिल्ली)	206
प.पू. भरतभाई (पवई)	207
प.पू. दिनकरभाई	212
प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी	213
प.पू. गुरुजी	214
पू. मल्कानी अंकल (दिल्ली)	221

अलौकिक अनुभूतियों से हरा-भरा 'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव'!

नो मॅच... नो वर्ड्स... मार्वलस... एक्सेलन्ट... डिवाईन... अमेज़िंग... बियॉन्ड इमेजीनेशन... बियॉन्ड माईन्ड... माईन्ड ब्लोईंग... एक्सट्रा ऑर्डिनरी... अद्‌भुत! ...न भूतो-न भविष्यति!!

- *आज काकाजी का ६०वां साक्षात्कार दिन मनाया जा रहा है... इतने सालों के बाद भी हम वही बात कर रहे हैं कि* ***काका रे! काका रे! आज आव्युं टाणुं नजराणुं तमने देवानुं...***
  उन्होंने हमें जो कुछ भी दिया है, उनके ऋण का स्वीकार हमने किया, पर हम उसे चुका कैसे सकेंगे, जो हमारे लिए बिल्कुल नामुमकिन है।
  यहाँ से पू. गुरुजी का माहात्म्य शुरू होता है, जिन्होंने इसे सत्य और संभव बनाया...

- ***सचमुच, मुकुंदजीवनस्वामी अक्षरपुरुषोत्तम के सिद्धान्तों को ही मुख्य और केन्द्र में रखकर, जिस तरह जीवन जी रहे हैं, उस पर 'गुणातीत समाज' के हम सब मुक्तों, साधकों, संतों गौरव कर सकते हैं, हम सबके लिए प्रेरणारूप है।***

  – प.पू. अश्विनभाई, ब्रह्मज्योति

- ***स्वामिजी*** *ने आपको याद करके बात की है –* ***'गुरुजी ने काकाजी का ऋण अदा कर दिया।'***

  – प.पू. कोठारीस्वामिजी, हरिधाम

- ***उत्सव में आए हर एक मुक्त की हर प्रकार से जो सेवा व आवभगत की, ऐसा हमने कहीं देखा नहीं। आपके ऊपर प्रशंसा के पुष्प बरस जाते हैं। दिल के प्यार में विवश होकर कहे बिना रहा नहीं जाता।***

  – प.पू. हंसा दीदी, गुणातीत ज्योत

- ***काकाजी सभी को जो ज्ञान देना चाहते थे और सुखी करना चाहते थे***
  उसके आप वाहक बने हो।
  जो 'ज्ञान' हम बोलते हैं, वो सभी जीएँ
  उसका अद्‌भुत दर्शन करवाया।

  – प.पू. शांतिभाई साहेब, ब्रह्मज्योति

- ***सुबह जब मैं 'ताड़देव' आया, तो न जाने क्यूं मुझे एहसास हुआ कि मैं दोबारा ताड़देव में 'सोनावाला बिल्डिंग' के उसी छोटे-से मंदिर के रूम में पहुंचा हूँ, जहां काकाजी महाराज ने करीब अपना पूरा जीवन व्यतीत किया।***
  दूसरा एहसास यह भी हुआ कि जैसे मैं अपनी माँ की गोद में बैठा हूँ और... ***एक महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारे मंदिरों में से शायद केवल यही एक ऐसा मंदिर है, जिसने अपने आंचल में पूरे इतिहास की झांकी को संजोकर रखा है। अपने इतिहास को यह भूला नहीं है।***

  – प.भ. मनोजभाई सोनी साहेब

मुक्तों और भगवत्स्वरूप संतों के हृदय के उद्‌गार जो इनकी ज़ुबाँ से फिसल गए, वे हमारी बड़ाई-प्रशंसा नहीं जताते, वरन् हमारे अंतर को ठंडक देते हैं कि ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की रुचि-रहस्य का अनुसरण करते और करवाते हुए प.पू. गुरुजी ने मुक्तों के हृदय में विराजमान प्रभु की मूर्ति को कितना प्रसन्न कर दिया!

सच, जिस पल की यहाँ के मुक्त बेसब्री से-आतुर होकर राह देख रहे थे, वह धन्य घड़ी पलक झपकते ही सामने आ खड़ी हुई। अविस्मरणीय माहौल बना, जब ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साक्षात्कार की हीरक जयंती एवं प.पू. गुरुजी के ७५वें प्राकट्योत्सव निमित्त योगी परिवार के दर्शन का लाभ मिला...

मुक्तों को निरंतर अनुसंधान रहे, इस हेतु **'योगी परिवार अमृत आनंदोत्सव'** के नाम से जयघोष तो पाँच वर्ष पूर्व प.पू. गुरुजी के ७०वें प्राकट्योत्सव पर हुआ था। परंतु जैसे ही ख्याल आया कि **२०१२** में तो ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साक्षात्कार की हीरक जयंती है, तो तुरंत ही प.पू. गुरुजी ने इसे **'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव'** के रूप में बदलवा दिया! एक ओर, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज और प.पू. गुरुजी के अद्वैत संबंध का तो ख्याल आया ही, साथ ही प.पू. गुरुजी के सेवकभाव का भी दर्शन सभी ने किया। प.पू. गुरुजी ने न केवल नाम बदलवाया, बल्कि सभी मुक्तों को सहजता से इस बात के लिए भी तैयार कर लिया कि यह महोत्सव ब्रह्मस्वरूप काकाजी, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी एवं प.पू. स्वामिजी को खूब पसंद **शिविर** के रूप में मनाया जाए और केवल एक दिन सायं की सेशन में ही उनका ७५वाँ प्राकट्योत्सव मना लिया जाए। इस बात को गहनता से देखें तो ख्याल आता है कि प.पू. गुरुजी से जुड़े मुक्तों के भीतर में यह बैठ गया है कि जैसे प.पू. गुरुजी राजी हों, वैसा ही करना है और उसी में प.पू. गुरुजी का बड़प्पन समाया है। वर्ना, हर एक शिष्य के अंतर में अपने गुरु की 'सर्वोपरिता' का भाव रहता है। लेकिन, ऐसे भावों से खूब परे, मुक्तों का दिल और दिमाग़ तो **'मियाँ के चाँद से चाँद'** मानने के लिए ही सदैव तत्पर है और उसी में उनका आनंद निहित है।

करीब डेढ़ वर्ष से इस अनुसंधान ने गति पकड़ी और १३ मार्च २०११ को प.पू. गुरुजी का ७४वाँ प्राकट्योत्सव मनाने के बाद तो मानो समय को पंख लग गए। **प.पू. दीदी की हार्दिक भावना थी–**
*किसी भी तरह **३ फरवरी २०१२**-ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साक्षात्कार की हीरक जयंती के मंगलकारी दिन मंदिर के शिखर पर कलश चढ़ा कर ध्वजारोहण करना है।*

इसे साकार रूप देने के लिए हमारे पुराने जोगी **प.भ. दालिया साहेब एवं प.भ. अनिलजी** के साथ-सहकार से **प.भ. पुरी साहेब, प.भ. आशिष शाह, प.भ. मिलनभाई माणेक, प.भ. शैलेषभाई आचार्य** के साथ **प.भ. चेतन, प.भ. निमित्त, प.भ. भद्रायुभाई जानी, प.भ. सिद्धार्थ मल्होत्राजी, प.भ. समीर शाह, प.भ. खेमसिंहजी, प.भ. सोमनाथजी–जिन्होंने सेवा के लिए अपनी चलती दुकान की भी परवाह नहीं की,** जैसे कई मुक्त दिन-रात देखे बिना जुट गए।

काफी निरीक्षण करने के बाद यह निर्णय लिया गया कि मंदिर की बाहरी दीवार पर 'बॅप्स' के मंदिरों की

भाँति **'बंसी पहाड़पुर'** का पत्थर लगाया जाए। राजस्थान के बयाना क्षेत्र से अमदावाद के हमारे **प.भ. शैलेषभाई आचार्य** की निगरानी में पत्थर मंदिर आना शुरू हुआ। प.भ. शैलेषभाई प.पू. गुरुजी को राजी करने की एक मात्र भावना से, अपना घर-ऑफिस इत्यादि की सारी चिंताएँ भगवान पर छोड़ कर, तकरीबन ७-८ महीने बढ़िया पत्थर निकलवाने के लिए बयाना रहे; तो दूसरी ओर, अमदावाद में उनके छोटे भाई **प.भ. परिमलभाई** ने उनका ऑफिस का सारा कार्यभार संभाल कर, न केवल खूब ही साथ दिया, बल्कि इस रूप में प.पू. गुरुजी के प्रति अपनी छुपी भक्ति अदा की। इसी प्रकार, प.भ. अनिलभाई माणेक (सेठ) के बड़े बेटे **प.भ. मिलन** तो करीब ढाई साल से मंदिर में रह कर कन्स्ट्रक्शन का पूरा कार्य देख रहे थे, तो मुंबई में उनके छोटे भाई **प.भ. मेहुलभाई** ऑफिस की पूरी जिम्मेदारी, प.पू. गुरुजी का बल लेकर, अकेले बखूबी निभा रहे थे। यूँ दोनों मुक्तों के छोटे भाइयों की भक्ति के प्रति हम नतमस्तक हैं ही, साथ ही प.पू. गुरुजी को अंतर से जो खूब पसंद है कि **सत्संगियों के परिवारों में सामंजस्य बना रहे, इसका दर्शन भी हुआ।**

करीब तीन सौ-साढ़े तीन सौ कारीगर पत्थर पर नक्काशी के कार्य में लग पड़े। शिल्पियों के भोजन इत्यादि की देखभाल का कार्य **जगरांव के प.भ. डँड साहेब** और **प.भ. बुधरामजी** ने बखूबी निभाया और... **१५ जुलाई-गुरुपूर्णिमा** के मंगलकारी दिन नक्काशी किए हुए पहले पत्थर का पूजन **प.पू. गुरुजी** एवं मुंबई से पधारे **पू. नर्मदाशंकर शास्त्रीजी** के वरद् हस्तों हुआ और मंदिर पर पत्थर लगाने की शुरुआत हुई। खूब अपनेपन से सांकरदा से **पू. कोठारीस्वामी, पू. बापूस्वामी** और पप्पाजी फार्म–'शाश्वत् धाम' से **पू. आचार्यस्वामी** भी निर्माण कार्य के सुपरविज़न की सेवा के लिए आ पहुँचे।

प.भ. परेशभाई महेता तो पू. अभिषेक को सहाय रूप होने के लिए एक साल से रोज शाम को प.पू. गुरुजी की सेवा के लिए हाज़िर हो जाते। **प.भ. मोतीलाल बाजवानजी**, अमदावाद से **प.भ. मालव** एवं बाद में **प.भ. समीरभाई दवे** ने भी मंदिर के कार्यालय के दैनिक कार्य जैसे–किसी को स्टेशन या एयरपोर्ट इत्यादि से लेने–छुड़वाने की व्यवस्था या बाज़ार से कुछ मंगवाने इत्यादि की जिम्मेदारी बहुत अच्छी तरह संभाली।

इसी दौरान उत्सव निमित्त अन्य तैयारियाँ भी शुरू हो गईं थीं। करीब तीस वर्ष में प.पू. गुरुजी ने कथावार्ता द्वारा या सहज बातों में अपने जीवन को मुक्तों के समक्ष खुली किताब की भाँति जो रख दिया, इससे सभी ने न केवल धन्यता अनुभव की, बल्कि 'गुणातीत ज्ञान' का मानो निचोड़ पा लिया। प.पू. गुरुजी ने ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज से जो भी प्राप्त किया, उसे अपने संबंध में आए सभी मुक्तों को उन्होंने बाँटा और सुखी किया है। सो, उनके द्वारा हमारे लिए किए गए परिश्रम के प्रति अपनी भक्ति अदा करने हेतु **प.पू. दीदी** ने मुक्तों के साथ विचार-विमर्श करके निर्णय लिया कि प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी के जीवन के ऐसे प्रसंगों को 'प्ले' के रूप में प्रस्तुत करें। इस हेतु प.पू. दीदी ने **प.पू. वशीभाई** से बात की। जनवरी २०१० में हुए 'मैत्री मिलन महोत्सव' में **'मूर्ति सुख मन भायो'** नृत्यनाटिका द्वारा सभी ने प.पू. काकाजी के जीवन एवं

उनके कार्य के विषय में भलीभाँति जाना और सराहा था। सो, प.पू. वशीभाई ने उस नृत्यनाटिका के निर्देशक आत्मीय स्वजन समान आणंद के **प.भ. प्रदीपजी एवं सौ. वेदकुमारीजी** से बात करके, ३ अगस्त २०११ को **प.भ. घनश्यामभाई अमीन** के साथ उन्हें दिल्ली भेजा। प.भ. प्रदीपजी एवं सौ. वेदकुमारीजी से पहली ही मुलाकात में खूब अपनेपन का एहसास हुआ और... एक ही दिन में पहले से तैयार की गई स्क्रिप्ट पर विचार-विमर्श करके वे लौट गए।

फिर... सितंबर में प.भ. प्रदीपजी एवं सौ. वेदकुमारीजी प्ले की पूरी स्क्रीप्ट तैयार करके प.पू. वशीभाई और प.भ. घनश्यामभाई अमीन के साथ दिल्ली आए। दो दिन लगातार बैठ कर स्क्रीप्ट पर विवेचन करते हुए मानो एक शिविर ही हो गई। प.पू. गुरुजी से किसी प्रसंग के बारे में कुछ पूछते, तो वे प.पू. काकाजी के साथ की अनेकों ऐसी ही बातें बताते, जिनमें से कई हमें तो मालूम ही नहीं थीं। उपस्थित मुक्तों के दिल से तो धन्यवाद-धन्यवाद निकलता था कि इस प्ले के माध्यम से प.पू. गुरुजी से कितना कुछ पाया। तत्पश्चात् प.भ. घनश्यामभाई के अनथक् परिश्रम से प्ले का कार्य भी खूब तेज़ गति से होने लगा। **६ अक्तुबर-दशहरे** के मंगलकारी दिन – प्ले का नाम रखा गया – **'अर्चिमार्ग की ओर...'। २१ अक्तुबर** तक प्ले के सारे संवाद इत्यादि रॅकार्ड हो गए। तुरंत ही प.भ. प्रदीपजी के निर्देशानुसार आणंद के **श्री जयेन्द्रभाई सेकरीवाल एवं प.भ. आशिषभाई गेरसोम** ने नाटक के भजन एवं कप्लेट्स तैयार किए और उनमें सैद्धांतिक रूप से बदलाव करने में **प.भ. हेमंतभाई मर्चंट** ने **प.भ. राकेशभाई** को खूब योगदान दिया। मूलतः देखा जाए तो –

प्ले की शुरुआत से लेकर अंतिम पड़ाव तक प.भ. घनश्यामभाई ने केवल अपनेपन की भावना ही व्यक्त नहीं की, बल्कि प.पू. काकाजी के प्रति अपनी भक्ति भी अदा की है। प.भ. घनश्यामभाई ने अपनी उम्र या सेहत की तनिक भी परवाह किए बिना जो भागदौड़ की, वह सभी के लिए आदर्श रूप है।

वैसे तो उत्सव का अनुसंधान पिछले एक-डेढ़ साल से हर एक को खूब था, पर पिछले दो-ढाई महीने से तो मानो वह शुरू ही हो गया... मंदिर में निर्माण कार्य जारी रहने के कारण **'अक्षरज्योति'** के बाहर बरामदे एवं प्रार्थना हॉल **'नैमिषारण्य'** में सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रॅक्टिस होने लगी। **२७ दिसंबर** को प.भ. प्रदीपजी एवं पवई के **पू. जास्मिनभाई** अपने साथियों के साथ प्ले की प्रॅक्टिस करवाने के लिए दिल्ली आ गए। **दिल्ली मंदिर** से जुड़े करीब **८० मुक्तों** ने इसमें भाग लिया। ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के प्रति भक्ति अदा करने की भावना से शिकागो से **पू. पिन्टुभाई, प.भ. दर्शनभाई, प.भ. वंदनभाई** और **मुंबई** एवं **औरंगाबाद** से लगभग **तीस मुक्त** भी प्ले में किसी न किसी रूप से योगदान करने के लिए उत्सव से बीस दिन पहले आ गए थे। प्रभु ने भी उस समय सब की खूब कसौटी ली। इस दौरान दिल्ली में कड़ाके की ठंड पड़ी, फिर भी सब प्ले एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रॅक्टिस के लिए आते ही। **उनके मन में तो केवल प.पू. गुरुजी को राजी कर लेने की अत्यधिक भावना, उमंग एवं उत्साह था।** देर रात तक प्रॅक्टिस

करने के बाद सुबह फिर अन्य सेवाओं में वे लग जाते। प्ले में कई प्रसंग ऐसे थे, जैसे कि–गुरुहरि योगीजी महाराज प.पू. गुरुजी को स्वयं के स्वधाम जाने का संकेत देते हैं या जब प.पू. काकाजी के स्वधामगमन जाने का प्रसंग आता और भजन बजता ***'अब तो रहना है मुझे आत्मन् मुक्तों के अंतर में...'*** तो प्रॅक्टिस करते हुए कई मुक्त रो पड़ते थे।

१३ जनवरी २०१२–**प.पू. दीदी के मंगलकारी प्राकट्य दिन** पर प.पू. गुरुजी एवं सभी उपस्थित मुक्तों द्वारा पूजन करवा कर मंदिर के बड़े शिखर का अंतिम पत्थर लगाया गया। फिर भी ३१ जनवरी तक कुछ न कुछ छोटा-मोटा कार्य चलता ही रहा। इस दौरान जो भी कन्स्ट्रक्शन कार्य को देखता, वह एक बार तो सोच में पड़ जाता कि २ फरवरी से तो उत्सव शुरू हो रहा है और यहाँ तो चारों ओर कैसा फैला हुआ है? लेकिन दिल के एक कोने में यह विश्वास भी पक्का ही था कि ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज आख़िर में न केवल यह पूरा करवा देंगे, बल्कि उत्सव भी बहुत अच्छी तरह संपन्न होगा और... हुआ भी ऐसा ही। १ फरवरी को तो मंदिर के चारों ओर लगीं सारी स्केफोल्डिंग्स हटवा दी गईं और सफाई भी हो गई। तब **मंदिर की खूबसूरती देख कर सड़क से गुज़रने वाला अनजान व्यक्ति भी दो मिनिट तो मंदिर के सामने खड़ा रह कर सोचता कि मंदिर ज़मीन में से एकदम निकल कर आया है क्या? पत्थर लगाने वाले ठेकेदार एवं कारीगर खुद हैरान थे कि केवल छः महीने के अंतराल में इतनी जल्दी पत्थर कैसे लग गए!** मंदिर का नज़ारा ही बदल गया... फूलों की लड़ियों से सुसज्जित गेट तो मानो सबके स्वागत के लिए सेल्यूट देता हुआ खड़ा था। साथ ही 'तीन फरवरी पार्क' के बीचोंबीच 'गुणातीत समाज का लोगो', 'प.पू. काकाजी की साईनयुक्त सूर्य का लोगो', 'प.पू. पप्पाजी का लोगो' और 'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव लोगो' से अंकित किया हुआ गैस का बड़ा गुब्बारा तो कई दिन पहले से ही उत्सव के आगमन का संकेत दे रहा था।

१ फरवरी की सुबह गुरुहरि पप्पाजी के लाड़ले मानसपुत्र समान लंडन के प.भ. दिलीपभाई भोजाणी को रिसीव करने के लिए प.पू. गुरुजी एयरपोर्ट गए और... गुरुहरि पप्पाजी के प्रति अपनी भक्ति अदा की। सायं की फ्लाईट से प.पू. प्रेम बहन, पू. सुमन बहन और पू. योगिनी बहन भी सभी को दर्शन देने के लिए दिल्ली आ पहुँचे।

दूसरे दिन **२ फरवरी की सुबह–**

हरिधाम से पू. कोठारीस्वामी, पू. प्रेमस्वामी, पू. शास्त्रीस्वामी, पू. दासस्वामी के साथ करीब १५० संत, मुक्त एवं बहनें,

अनुपम मिशन से प.पू. साहेब, प.पू. अश्विनभाई, प.पू. शांतिभाई के साथ करीब ६० मुक्त,

गुणातीत ज्योत से प.पू. हंसा दीदी, प.पू. पदु बहन के साथ करीब १०९ बहनें एवं १४३ मुक्त,

सांकरदा से करीब २० संत, मुक्त एवं बहनें,

शिकागो-प.पू. दिनकरभाई, पू. बापु एवं प.पू. दिनकरभाई की १०४ वर्षीय माताश्री पू. दीवाळीबा के साथ करीब १२२ मुक्त,

पेरिस से प.भ. प्रवीणभाई लाड़ पेरिस के मुक्तों के साथ,

सत्संग के प्रारंभ के दिनों में ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का गोकळियुं मंडल गिना जाता **माणावदर** का मंडल और **प.पू. निर्मलस्वामिजी, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई के साथ–**

मुंबई – पवई मंदिर से जुड़े करीब ५०० मुक्त गुणातीत कुनबे के सदस्य के रूप में आनंद करने - कराने पहुँच गए।

गुणातीत समाज के एक आत्मीय की भाँति **प.भ. काशीरामभाई राणा साहेब** भी चार दिन आनंदोत्सव में ओत-प्रोत होने के लिए सुरत से आ पहुँचे। सायं की फ्लाईट से ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज द्वारा नियुक्त किए गए संतों के दोनों गवर्नर्स **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** एवं **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** भी सभी को दर्शन व सेवा का सुख देने के लिए पधारे।

सायं प.पू. साहेब, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई एवं प.पू. हंसा दीदी, प.पू. पदु बहन, प.पू. प्रेम बहन, प.पू. योगिनी बहन एवं प.पू. दीदी -**वडील बहनों की निश्रा में, ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी का अभिनंदन करने हेतु , 'तीन फरवरी पार्क'** में जर्मन तकनीक से बनाए पिलरलेस सभामंडप **'कल्पवृक्ष'** के तले सभा आयोजित की गई थी। 'तीन फरवरी पार्क' छोटे-छोटे बल्बों की लड़ियों से जगमगा रहा था। धरती पर स्वर्ग उतर आया हो, ऐसा नज़ारा था। गुरुहरि योगीजी महाराज एवं प.पू. काकाजी की प्रतिमा के बांयी ओर, दिल्ली मंदिर से जुड़े **प.भ. रवि आर्टिस्ट** द्वारा भक्तिभरे हृदय से 'पुश पिन आर्ट' से बनाई गई प.पू. काकाजी की एवं दाईं ओर प.पू. गुरुजी की मूर्ति रखी हुई थी।

सायं करीब साढ़े पाँच बजे पंजाब में प्रचलित शुभ संकेत देते **'जागो'** के बोल पर गिद्दा करते हुए दिल्ली सत्संग की लड़कियों ने प.पू. हंसा दीदी, प.पू. पदु बहन एवं प.पू. प्रेम बहन इत्यादि बड़ी बहनों का **'कल्पवृक्ष'** में स्वागत किया। 'कल्पवृक्ष' के मुख्यद्वार के अंदर पीछे की ओर एक मूर्ति लगाई गई थी, जिसमें प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी एवं प.पू. साहेब की खड़ी मूर्ति के नीचे प.पू. गुरुजी की बैठी हुई मुद्रा में मूर्ति थी और उसके नीचे प.पू. गुरुजी के अंतर की भावना व्यक्त की गई थी –

'इन गुणातीत स्वरुपों की सेरेसाया में ही मेरी रक्षा और सम्मान समाए हैं।'

मुख्य द्वार की दाईं और बाईं, दोनों दीवारों पर ऐसे तीस मुक्तों के दर्शन हो रहे थे, जिन्होंने 'योगी परिवार' के सर्जन में गुरुहरि योगीजी महाराज, प.पू. काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी को हर प्रकार से खूब साथ-सहकार दिया! साथ ही गुजराती एवं हिन्दी में ब्रह्मस्वरूप काकाजी के स्वमुख से कई बार निकला उद्‌गार लिखा था–

'यह सब अकेले हाथ नहीं बना ; धन्यवाद है मेरे साथियों को...'

स्टेज की पृष्ठभूमि पर एक ओर गुरुहरि योगीजी महाराज की मूर्ति, दूसरी ओर साधक बहनों को कथावार्ता करते हुए ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की मूर्ति के दर्शन हो रहे थे। **गुरुहरि योगीजी महाराज** की मूर्ति के नीचे उनके द्वारा कथित रहस्य लिखा था–

'बहनें दादुभाई की बातें सुनें, इसमें क्या हरजा है ?'

सच, प.पू. बापा के इस कथन में खूब मर्म छिपा है! **ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी जैसी निर्गुण विभूतियों के कारण ही आज बहनों का एक क्रांतिकारी कार्य संपन्न हो पाया है।**

बहनों की सभा थी, सो स्टेज पर ब्रह्मस्वरूपिणी प.पू. सोनाबा और प.पू. बेन की मूर्ति के दर्शन हो रहे थे... साथ ही उत्तर भारत के मुक्तों के प्राणाधार प.पू. गुरुजी की मूर्ति का भी सभी दर्शन कर रहे थे।

सभा का संचालन करते हुए **पू. बंसरी दीदी** ने सर्वप्रथम **'जागो'** एवं **'कल्पवृक्ष'** का अर्थ बताते हुए प्रार्थना की –

'जागो' *शब्द का अर्थ है– 'जाग्रत हो!' मीन्स– 'वेक अप!' पंजाब में किसी के यहाँ कोई भी शुभ प्रसंग हो, तो स्त्रियाँ एक या दो दिन पहले दीये जले हुए मटके सिर पर लेकर, लोक गीत (बोलियाँ) गाते हुए आस-पड़ौस में सबको बताती हैं –*

भई जागो! हमारे यहाँ शुभ प्रसंग आ रहा है। मानो, इसके द्वारा उत्सव की शुभ शुरुआत होती है।

पंजाब के लुधियाना, सवद्दी कलां, जगरांव, मोगा और अमृतसर इत्यादि ऐसे स्थान हैं कि जहाँ प.पू. काकाजी ने सत्संग के बीज बोकर संबंध में आए मुक्तों को निहाल कर दिया। सो, ***'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव'*** *की पूर्वसंध्या पर 'जागो' द्वारा उत्सव की शुरुआत इस भावना से की गई कि स्वरूपों की मर्जी में ही सच्चा समर्पण करने के लिए हम सभी अंतर से जाग्रत बनें और* ***'सुहृद्‌भाव का कलश'*** *चढ़ाने की उनकी जो ख़्वाईश थी, वह साकार करने के लिए तत्पर हों...*

गुरुहरि काकाजी महाराज कहते – गुणातीत समाज ***'कल्पवृक्ष'*** *है।*

'कल्पवृक्ष' एक ऐसा पेड़ है जिसके तले बैठ कर कोई जो कुछ भी सोचें–माँगें, वह मिलता है।

दूसरी ओर– ***प.पू. पप्पाजी*** *ने भी आशीर्वाद दिए हैं–*

'इस सत्संग' से *माँगो वह मिलेगा और ढूँढो वह हाथ लगेगा।*

गुणातीत समाज के इन दोनों आद्यसर्जकों ने हमें देने में कभी कोई कमी नहीं छोड़ी।

आज भी वो परब्रह्म तत्त्व, अक्षरधाम के इस दिव्य महोत्सव में, हमें देने के लिए मौजूद ही हैं।

और... इनके सर्जन ***'योगी परिवार'*** *के तकरीबन सभी मौजूद सदस्य हाज़िर हैं।*

तो, ***महोत्सव के ये चार दिन हम अपने सभी बौद्धिक मूल्यांकनों को छोड़ कर,***

प्रभु के बल से, प्रभु के आधार से, केवल इन सत्पुरुषों को राजी कर लेने की भावना से,

इस कल्पवृक्ष के तले बैठ कर,

दिल की सच्चाई से जो भी शुभ व सत्य संकल्प करेंगे, वह प्रभु पूरा कर ही देंगे...

गुरुहरि योगीजी महाराज की मरजी जान कर ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी ने बहनों को भगवान भजने का अनुपम मौका दिलवाया और दिल्ली के मुक्तों के लिए ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज ने **प.पू. गुरुजी** के रूप में अनमोल भेंट दी; उनका यत्किंचित् ऋण अदा करने और प्रार्थना करने की भावना से

सर्वप्रथम दिल्ली **सत्संग की युवतियों** ने भावनृत्य प्रस्तुत किया। गणेश वंदना में गणेशजी का विभिन्न नामों से हम आवाहन करते हैं, उसी तरह 'जनमंगल' में समाविष्ट श्रीजी महाराज के नामों द्वारा उनका **आवाहन**, *'ब्रह्मस्वरूप काकाजी-ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी का अभिनंदन'* और *'जय मुकुंदस्वामी गुरुजी नमामि'* के भाव से **भरतनाट्यम्**, **घूमर** एवं **गुजराती गरबे** से 'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव' की शुभ शुरुआत हुई।

प.पू. हंसा दीदी ने तो एक वर्ष पूर्व ही 'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव' का एहसास कराते हुए *'गुरुमां श्रीहरिनो वास...'* गरबा बना कर भेज दिया था। सो, उस पर दिल्ली **सत्संग की भाभियों** ने गरबा करके भक्ति अदा की। अक्षरज्योति की साधक बहन **पू. गार्गी** ने भी *'रंगीली छबि का कहना क्या...'* भजन पर भावनृत्य करके प.पू. गुरुजी के प्रति अपनी प्रीति व्यक्त की।

इस सभा में उपस्थित स्वरुपों, वडील बहनों और गणमान्य अतिथियों को हार-कलगी और उत्सव का बेच अर्पण करने के बाद, सौ. शोभना भाभी, पू. डॉ. नीलम बहन, पू. सुमन बहन के प्रासंगिक उद्‌बोधन के उपरांत प.पू. योगिनी बहन, प.पू. दीदी, प.पू. पदु बहन, प.पू. प्रेम बहन, प.पू. हंसा दीदी, प.पू. साहेब एवं प.पू. दिनकरभाई के सभी ने आशीर्वाद प्राप्त किए। प.पू. ज्योति बहन अस्वस्थता के कारण उत्सव में नहीं आ पाईं, लेकिन चेतना से वे हम सभी के बीच विराजमान थीं और... उनके दर्शन की कमी मुक्तों को महसूस न हो, सो उन्होंने कृपा करके वीडियो द्वारा दर्शन एवं आशीर्वाद दिए। 'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव' की पूर्व संध्या की स्मृति के रूप में **पू. डॉ. नीलम बहन** (गुणातीत ज्योत) ने **'नादसृष्टि'** भजन पुस्तिका, **प.पू. हंसा दीदी** ने **'ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज की मूर्तिप्रतिष्ठा'** की वीडियो डी वी डी और **पू. सुमन बहन** (हरिधाम) ने **ब्रह्मस्वरूप काकाजी, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी एवं प.पू. गुरुजी की क्रीस्टल मूर्तियों** का अपने वरद् हस्तों से अनावरण किया।

स्टेज पर विराजमान गुणातीत स्वरूपों की निश्रा और मुक्तों की उमंगभरी हाज़िरी से माहौल ऐसा अलौकिक व उष्मा से भरपूर था कि इस आनंद को व्यक्त करते हुए सभा का विसर्जन भी – *'आगाज़ अलौकिक ऐसा है, फिर कल से नज़ारा क्या होगा...'* – इन शब्दों से कत्थक नृत्य द्वारा सत्संग की लड़कियों ने किया।

और... सोने पर सुहागा तब हुआ, जब भगवान भजने की शुरुआत करने वाली वीरांगनाओं में से एक और आज गुणातीत ज्योत की अनेक बहनों की जीवनप्राण बनी अध्यक्षा प.पू. हंसा दीदी ने मूर्ति में मग्न होकर भजन के इन बोलों पर भावमुद्राओं द्वारा, उपस्थित मुक्तों को अनमोल स्मृति दी!

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज, १९७८ में अपनी हीरक जयंती के समय षण्मुखानंद हॉल में, प.पू. हंसा दीदी द्वारा बनाए भजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए, हाथ में करताल लेकर, भावविभोर होकर नाचे थे। आज प.पू. हंसा दीदी के मुख के भावों से ऐसा प्रतीत हो रहा था–मानो ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साक्षात्कार की हीरक जयंती के इस अवसर पर वे ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के प्रति यत्किंचित् ऋण अदा कर रही थीं।

दूसरे दिन सुबह यानि **३ फरवरी**–ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साक्षात्कार की हीरक जयंती की मंगल घड़ी भी आ गई, जब प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. निर्मलस्वामिजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई–प्रगट स्वरुपों एवं वरिष्ठ मुक्तों की निश्रा में पू. वशीभाई, पू. यज्ञप्रियस्वामी एवं प.भ. विनोदभाई पुरोहित ने मंदिर के तीनों शिखरों की कलशविधि तथा दिल्ली मंदिर के पाटोत्सव निमित्त महापूजा संपन्न की। मंदिर के हॉल में बैठने की व्यवस्था सीमित होने के कारण 'कल्पवृक्ष' के नीचे बैठ कर ही अन्य संतों, युवकों, बहनों, गृहस्थों ने स्क्रीन पर सारी विधि के दर्शन और प.पू. स्वामिजी, प.पू. दिनकरभाई एवं प.पू. शांतिभाई साहेब के आशीर्वाद प्राप्त किए।

इसी दौरान **प.पू. शांतिभाई साहेब** के वरद् हस्तों से श्रीजी महाराज एवं गुणातीत स्वरूपों की थ्री-डी प्रतिमाओं के सोविनियर का अनावरण हुआ। श्री अक्षरपुरुषोत्तम संस्था समेत समग्र गुणातीत समाज के विकास क्रम में ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का जो अमूल्य योगदान रहा है, उसकी संक्षिप्त झांकी कराती परिचय पुस्तिका **'हमारा मंदिर'–'आपणुं मंदिर'** का अनावरण **प.पू. दिनकरभाई** के करकमलों से हुआ। पुस्तिका का नाम पढ़ कर शायद कइयों के मन में विचार उठा होगा कि **'हमारा मंदिर'** नाम क्यों-कैसे दिया है? **प.पू. गुरुजी** अकसर बात करते हैं कि–

हमें मिले प्रगट स्वरुपों ने संबंध में आए मुक्तों को ऐसा अपनापन दिया है कि वे इस मंदिर के विषय में बात करते हुए, अन्य मंदिरों की भाँति 'स्वामिनारायण मंदिर' के नाम से ज़िकर नहीं करते; उनकी जिह्वा से 'हमारा मंदिर' स्वतः ही फिसलता है। मुक्तों के भीतर में यह बात भी बैठ गई है कि 'हमारा मंदिर' तो 'हमारा घर' है।

इस भावना को उजागर करते हुए प.पू. गुरुजी ने परिचय पुस्तिका को 'हमारा मंदिर' नाम दिया।

साथ ही उत्सव की स्मृति देते हुए प.पू. गुरुजी ने एक निराली घोषणा भी की कि भले ही इस पुस्तिका का मूल्य ३०० रुपये है, लेकिन जो भी मुक्त उत्सव के दौरान इसे खरीदेगा, उसे यह पुस्तिका ९९ रुपये में प्राप्त हो सकेगी और... पुस्तक में वे प.पू. दिनकरभाई से हस्ताक्षर करवा कर पू. वशीभाई के वरद् हस्तों ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के आशीर्वाद वाली प्रसादी की एक रुपये की नोट भी प्राप्त कर सकेंगे। यूँ मुक्तों की तो मानो लॉटरी ही लग गई। उन्हें तो ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज को अखंड रखे प.पू. दिनकरभाई के हस्ताक्षर भी बख़्शिश में मिल गए!

सभा के अंत में ऑडियो द्वारा **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के आशीर्वाद** प्राप्त करने का जब मौका आया, तब **'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव' की सभाओं का संचालन कर रहे पू. यज्ञप्रियस्वामी** ने निम्न बात से एहसास कराया कि किस प्रकार आज भी ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज दिव्य रूप से हाज़िर रह कर हमें जाग्रत करते रहते हैं...

प.पू. काकाजी के साक्षात्कार की हीरक जयंती निमित्त उनके आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उनके आशीर्वचन

ढूँढने थे। खूब आश्चर्य की बात यह हुई कि ढूँढने की शुरुआत करते ही जो आशीर्वचन मिला, उसमें ***पू. हरिभाई साहेब*** *के विषय में प.पू. काकाजी बात कर रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि हाल ही में १८ नवंबर २०११ को पू. हरिभाई साहेब ने शरीर छोड़ा और... आज उनकी गैरहाज़िरी हमें खलती है। खास करके प.पू. गुरुजी को तो इसलिए कि* ***'मैं अगले साल दिल्ली आ रहा हूँ'*** *– कह कर पिछले साल प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव में वे नहीं आए थे।*

दूसरी बात– प.पू. काकाजी हम सबको ***हमेशा*** *जो आग्रहपूर्वक कहा करते थे, उसी बात को मानो इस आशीर्वचन में उन्होंने दोहराया है। इससे स्पष्ट ख्याल आता है कि प.पू. काकाजी अब भी हमारी वैसी ही परवरिश में निरंतर लगे रहे हैं। इस तथ्य का एहसास उन्होंने इस आशीर्वाद द्वारा हमें कराया है। सो, इसे एकचित्त होकर सुनें और आत्मसात् करने के लिए प्रार्थना करें...*

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की सिंहगर्जना जैसी परावाणी सुन कर सभी 'प्रसादम्' में प्रसाद लेने के लिए गए।

सायं करीब छः बजे ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साक्षात्कार की हीरक जयंती की सभा में मुक्तों को दर्शन देने के लिए गुणातीत स्वरूप स्टेज पर विराजमान हुए। स्टेज की पृष्ठभूमि की एक ओर श्रीजी महाराज के साथ गुरुहरि योगीजी महाराज की मूर्ति एवं उनके द्वारा कथित उद्‌गार थे– *'ताड़देव – साक्षात् सोनावाला बिल्डिंग, अक्षरधामरूपी तखत...'* दूसरी ओर **'आत्मीयता की गंगोत्री'** को दर्शाती मुंबई-ताड़देव स्थित ६/डी, चौथी मंज़िल, सोनावाला बिल्डिंग के दर्शन हो रहे थे। **पू. यज्ञप्रियस्वामी** ने इस अद्‌भुत दर्शन का भी विस्तारपूर्वक विवरण दिया–

प.पू. काकाजी के शब्दों में – ***३ फरवरी १९५२*** *के मंगलकारी दिन गुरुहरि योगीजी महाराज ने उन्हें* ***'असली नारायण' का साक्षात्कार*** *कराया। तत्पश्चात्* ***'ताड़देव'*** *– सोनावाला बिल्डींग्स में रहते हुए प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी एवं पू. कांतिकाका के कुटुंब की आत्मीयता से प्रेरणा लेते हुए एक दिव्य परिवार –* ***'योगी परिवार'*** *का सर्जन हुआ, जो पनपा और* ***'गुणातीत समाज'*** *बना!*

गुरुहरि योगीबापा *तो कहते –* ***ताड़देव यानि 'अक्षरधाम का तखत'****। वे, यह* ***केवल कहने के लिए नहीं कहते, बल्कि दिल से मानते थे, तभी तो जब वे ताड़देव पोस्ट कार्ड तक भेजते, तो उस पर एड्रेस लिखते*** *–*

'ताड़देव – साक्षात् सोनावाला बिल्डिंग, अक्षरधामरूपी तखत...'

ताड़देव से आत्मीयता का ऐसा धोध बहा है कि ***प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी*** *ने भी ताड़देव को* ***'आत्मीयता की गंगोत्री'*** *कह कर नवाज़ा है।*

दूसरी बात, आज भी जब कोई भक्त वहाँ अपने किसी शुभ संकल्प के लिए धुन करता है, तो उसे शांति व समाधान मिलता है! उन विभूतियों का संदेश – 'सच्चे गुणातीत साधु बनो' वहाँ जीवंत है और... ***इसी स्मृति***

को कायम, जीवंत व सक्रिय रखने हेतु प.पू. गुरुजी ने दिल्ली मंदिर के परिसर को 'ताड़देव' नाम दिया है।

जब से ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साक्षात्कार की हीरक जयंती का उत्सव मनाने की बात चल रही थी, तब से प.पू. गुरुजी के मन में ऐसा रहा कि हम भूलें नहीं कि आज सब कुछ ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की बदौलत ही है और उत्सव में आए हमारे पुराने जोगियों को ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की हीरक जयंती के उन दिनों की स्मृति हो जाए, ऐसा माहौल बना देना है। सो, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की हीरक जयंती के समय **प.पू. हंसा दीदी** ने गुजराती में जो भजन बनाया था– *'काका रे काका रे, आज आव्युं टाणुं नजराणुं तमने देवानुं...'* – प.पू. गुरुजी ने उसे हिन्दी में करवाया और प.भ. राकेशभाई ने उसी भजन को गाकर सभा की शुरुआत की।

हार-कलगी एवं उत्सव के बेज अर्पण से स्टेज पर विराजमान स्वरुपों एवं गणमान्य अतिथियों का स्वागत करने के बाद अनुपम मिशन के **पू. अश्विनभाई** ने १९८५ में ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की निश्रा में हुई दिल्ली मंदिर की शिलान्यास विधि की डी.वी.डी.का अनावरण करके आशीर्वाद प्रदान किए। तत्पश्चात् सत्संग के युवकों ने *'जय हो, जय हो... अक्षरपुरुषोत्तम का है संबंध मिला'* भजन पर भावनृत्य प्रस्तुत करके मानो जयनाद किया।

१९६० में दीक्षा लेने के बाद प.पू. गुरुजी ने, गुरुहरि योगीजी महाराज की इच्छा एवं आज्ञानुसार, अन्य संतों के साथ, **पू. नर्मदाशंकर शास्त्रीजी** से संस्कृत का अध्ययन किया था। बाद में कई वर्षों तक पू. शास्त्रीजी से कोई संपर्क नहीं रह पाया, लेकिन प.पू. गुरुजी उन्हें याद करते रहते। पिछले वर्ष जब पू. शास्त्रीजी से संपर्क हुआ, तो मालूम हुआ कि वे भी प.पू. गुरुजी को अकसर याद करके अन्य संतों से उनके विषय में पूछते रहते थे। और... गुरुपूर्णिमा के मंगल अवसर पर प.पू. गुरुजी के आग्रह पर, ९३ वर्ष की आयु होने के बावजूद, वे दिल्ली मंदिर आए। चार-पाँच दिन मंदिर में ठहरने के बाद इस उत्सव में आने का वायदा करके गए। दिल्ली से जाने के बाद उनके दिलोदिमाग़ पर प.पू. गुरुजी ऐसे छाए रहे कि संस्कृत में प्रशस्ति की एक पुस्तिका के रूप में उन्होंने प.पू. गुरुजी के प्रति अपना प्रेम ज़ाहिर किया। **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** के वरद् हस्तों **'स्वामी मुकुंदजीवनरहस्यम्'** नामक इस पुस्तिका का अनावरण हुआ। प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने पू. शास्त्रीजी को अनावरण की पुस्तिका भेंट दी, साथ ही **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी ने शाल ओढ़ा कर उन्हें सम्मानित किया** और... पू. शास्त्रीजी ने अपने आशीर्वचन का लाभ दिया।

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के आशीष प्रदान के बाद, अशोक विहार क्षेत्र के एम.एल.ए. श्री हरिशंकर गुप्ताजी ने सभा को संबोधित किया। प.पू. गुरुजी के सखास्वरूप **पू. दासस्वामिजी** को उत्सव में आने से पूर्व जाग्रत अवस्था में ही प.पू. काकाजी एवं प.पू. स्वामिजी ने प्रेरणा की कि वे **३ फरवरी** के निमित्त भजन बना कर ले आएँ... सो– ***१९७८ में यानि चौंतीस वर्ष पूर्व बनाए*** गुजराती भजन– ***'हे जोगीना प्राणज्योति***

तम...' में नई कड़ियों को समाविष्ट करके **६६ वर्षीय पू. दासस्वामी ने उसी लहजे व बुलंदी में भावविभोर होकर गाया,** जो सभी को खूब स्पर्श कर गया। भजन के बाद सभी ने प.पू. साहेबजी के आशीर्वचन प्राप्त करके पू. महेन्द्र बापु एवं प.भ. मनोजभाई सोनी साहेब द्वारा किए प्रासंगिक उद्‌बोधन का लाभ लिया।

इस अवसर पर अनुपम मिशन की ओर से **प.पू. साहेब** ने प.पू. गुरुजी को एक बहुत ही अनमोल भेंट दी। यह अनमोल भेंट थी– भगवान स्वामिनारायण के समय नंदपंक्ति के दिव्य संतों के वरद् हस्तों से लिखित **'शिक्षापत्री'** की मूल प्रति, जो कि **डॉ. मनोजभाई सोनी साहेब** को एम.एस. युनिवर्सिटी के वाईस चान्सलर के ओहदे पर होते हुए, वहाँ के प्रोफेसर एवं मित्र **श्री जे.ए. इनामदार** ने उन्हें भेंट स्वरूप दी थी। श्री जे.ए. इनामदार को यह शिक्षापत्री वंशपरंपरा से मिली। **वलासण गाँव में स्थित** उनके पूर्वज पू. रयजीभाई बारोट इनामदार को श्रीजी महाराज ने स्वहस्तों से यह शिक्षापत्री दी थी। जिनकी आवाज़ हमें हमेशा अंतर तक स्पर्श कर जाती है, ऐसे **प.पू. शांतिभाई साहेब** ने यह विवरण देते हुए प्रार्थना की और प.पू. साहेब के श्रीचरणों में अंतर से नमन करते हुए दिल्ली मंदिर को अद्‌भुत पूँजी दी।

'सत्संग के छोटे बच्चों में बचपन से ही संस्कारों का सिंचन होता रहे'– ऐसी प.पू. दीदी की भावना को देखते हुए, **'नक्षु'** को उसकी मम्मी 'स्वामी की बातें' रटवाती है। सो, उसने माईक पर पाँच बातें सुनाईं। तत्पश्चात् शिकागो के भाइयों द्वारा प्रकाशित ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के जीवन प्रसंगों की संक्षिप्त झांकी कराती अंग्रेजी पुस्तक **'काकाजी'** का अनावरण प.पू. गुरुजी ने **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के वरद् हस्तों** करवाया। साथ ही शिकागो के पू. अमितभाई ने प्रार्थना भी की। 'हमारा मंदिर' की भाँति इस पुस्तक का मूल्य १२० रुपये होने के बावजूद उत्सव के तीन दिन सभी को यह ६० रुपये में उपलब्ध रही। अनावरण के बाद प.पू. गुरुजी ने आशिष प्रदान किए। पू. राकेशभाई ने तीन फरवरी की प्रार्थना के रूप में नया भजन *'छोड़ें पुराना ढाँचा, गुरु ढाँचे में ढल जाएँ...'* भजन प्रस्तुत किया। ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की हीरक जंयती के समय अक्षरनिवासी **पू. महापुरुषस्वामी** ने एक मार्मिक गुजराती भजन बनाया था। सभा के अंत में उसी के हिन्दी एवं पंजाबी में अनुवादित *'श्रीजी का प्यारा रे, प्यारा और ब्रह्मसमाज का दुलारा...'* भजन पर सत्संग के युवकों ने भावनृत्य करके ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की हीरक जयंती की स्मृतियाँ पुराने मुक्तों को तादृश करा दीं। दरअसल, प.पू. गुरुजी की आंतरिक इच्छा यही रही कि इन दिनों हम सभी ब्रह्मस्वरूप काकाजी की स्मृतियों से सराबोर रहें।

४ फरवरी को कल्पवृक्ष के तले **पू. इलेशभाई, प.भ. मुकेशभाई मच्छर** एवं **प.भ. राकेशभाई** द्वारा गाए गुजराती एवं हिन्दी भजन से ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साक्षात्कार हीरक जयंती के शिविर की मंगल शुरुआत हुई। आज की सभा में सर्वप्रथम प.भ. बच्छराजजी ने प्रासंगिक उद्‌बोधन किया। सत्संग के बाल भक्त **'कीर्तन मोंडे'** द्वारा पाँच 'स्वामी की बातें' सुनने के बाद, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी के मानस सुपुत्र

पू. दिलीपभाई भोजाणी के अनुभवों का सभी ने लाभ लिया। तत्पश्चात्, पू. इलेशभाई ने *'रहेवुं तारी मूर्तिमां, रहेवुं तारी स्मृति...'* गुजराती भजन प्रस्तुत करके सभी को स्वरूपों की स्मृति में लीन कर दिया। भजन के बाद **पू. प्रेम बहन** के वरद् हस्तों **१९८८ में हुए, दिल्ली मंदिर** के **खात् मुहूर्त** की डी.वी.डी. का अनावरण हुआ।

प्रासंगिक उद्बोधन के अंतर्गत हरिधाम से आए पू. विठ्ठलदास फुआ एवं पू. प्रेमस्वामी ने ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साथ की अपनी स्मृतियाँ बताईं। पवई मंदिर एवं पू. घनश्यामभाई अमीन से खूब अपनेपन से जुड़े **प.भ. आशिषभाई गेरसोम** ने प्रार्थना के भजनों के संग्रह को **'प्रार्थनापुंज'** नामक सीडी में भक्तिमय हृदय से संवारा है! प.पू. गुरुजी के वरद् हस्तों इसका उद्‌घाटन करवाना था, परंतु शिकागो द्वारा प्रकाशित पुस्तक की भाँति इसका अनावरण भी **प.पू. गुरुजी ने गुणातीत समाज के शिरछत्र प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के वरद् हस्तों ही करवाया।** साथ ही प.भ. आशिषभाई गेरसोम को प.पू. गुरुजी ने प्रसन्नता का हार पहनाया। अनावरण के बाद **हरिधाम के पू. स्वयंसेवकस्वामी** ने खूब जोशभरा भजन प्रस्तुत किया। अंत में, प.पू. भरतभाई एवं प.पू. निर्मलस्वामिजी के आशिष प्राप्त करके सभा का विसर्जन हुआ और सभी स्वयंसेवक शाम को होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम की तैयारियों में जुट गए।

इसी बीच पिछले छः साल से खूब अपनेपन से जुड़े मुंबई से **प.भ. विश्वास पंडया** एवं कत्थक नृत्य में निपुण उनकी पत्नी **नृत्यउवर्शी सौ. प्राची शाह-पंडया** भी अपने गुरु एवं साथियों को साथ लेकर आ गईं; क्योंकि सायं के सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरुआत उनके कत्थक नृत्य से ही होने वाली थी।

दोपहरभर ताड़देव मंदिर के परिसर में मुक्तों की रौनक बनी रही, क्योंकि आज तो अधिकतर मुक्त अपने ठहरने के स्थान पर वापिस ही नहीं गए थे। रास्ते में ट्राफिक के कारण कहीं लेट न हो जाए, इस अंदेशे से दोपहर का प्रसाद लेने के बाद कुछ मुक्त 'अक्षरतीर्थ' समाधिस्थल पर परिक्रमा करते रहे, कुछ 'तीन फरवरी पार्क' में परिक्रमा करते रहे, तो कुछ 'कल्पवृक्ष' के तले ही अपना-अपना स्थान लेने लगे।

सायं करीब साढ़े पाँच बजे प.पू. साहेब, प.पू. अश्विनभाई, प.पू. शांतिभाई साहेब, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, प.पू. हंसा दीदी, प.पू. पदु बहन, प.पू. प्रेम बहन एवं प.पू. दीदी की निश्रा में सर्वप्रथम **सौ. प्राची** ने राधा-कृष्ण की ठुमरियों पर कत्थक नृत्य प्रस्तुत करके शुभ आरंभ किया। **पिछले वर्ष से उनके मन में ऐसी भावना थी कि 'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव' में उन्हें प.पू. गुरुजी के प्रति अपनी ओर से भक्ति अदा करनी है।** उनके इस एक घंटे के कार्यक्रम से पूरा माहौल दिव्यता व भक्ति से भर गया। **नृत्य करते हुए सौ. प्राची के मुख के भावों पर प.पू. गुरुजी के प्रति उनकी प्रीति, भक्तिभावना स्वतः व्यक्त हो रही थी। मुंबई में उनकी तीन साल की बेटी के बीमार होने के बावजूद वे इस एक घंटे के प्रोग्राम के लिए विशेष रूप से दिल्ली आईं और प्रोग्राम करके तुरंत शाम की फ्लाईट से मुंबई लौट गईं। सच, सौ. प्राचीजी के अपनेपन की इस भावना को अंतर से धन्यवाद!**

करीब पौने सात बजे गुरु-शिष्य के अनूठे संबंध और शक्तिपात का दर्शन कराते **'अर्चिमार्ग की ओर...'** प्ले– जिसकी खूब उत्सुकता से सब राह देख रहे थे– की शुरुआत हुई। सवा तीन के घंटे के इस प्ले में नए-पुराने, परिचित-अपरिचित सभी स्तब्ध होकर बैठे थे कि अगले क्षण क्या देखने, सुनने और जानने को मिलेगा! ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज, प.पू. पप्पाजी महाराज एवं प्रगट गुणातीत स्वरुपों द्वारा समय-समय पर प.पू. गुरुजी को मिली गुणातीत ज्ञान की कुँजियों से तकरीबन पूरा गुणातीत समाज अवगत हुआ, क्योंकि इंटरनेट द्वारा सुदूर बैठे मुक्त भी सारी सभाओं का लाभ ले रहे थे।

सच, जैसे कि **प.पू. गुरुजी** अकसर बताते हैं कि जब वे स्कूल में पढ़ते थे, तब– 'एल्जीब्रा मेईड ईज़ी' या 'ज्यॉमेट्री मेईड ईज़ी' जैसी पॉकेट् बुक्स आती थीं। इसी प्रकार **आज इस प्ले– संवाद के द्वारा प.पू. काकाजी** और **प.पू. पप्पाजी** ने – **'स्पिरीच्युआलिटी मेईड ईज़ी' की जो करामात-तकनीक बताई, जिससे हमारी अध्यात्म की साधना सद्य, सरल एवं शॉर्ट हो जाती है और... प.पू. गुरुजी ने उनका भरोसा करके उसे अपनाई, उसका हुबहू दर्शन हो रहा था।**

प्ले के अंत में प्रभु ने सभी के धैर्य की परीक्षा भी ली। प्ले के क्लाईमेक्स भजन *'अर्चिमार्ग की ओर...'* पर सत्संग के लड़के-लड़कियाँ नृत्य कर रहे थे कि इसी बीच जनरेटर पर ज्यादा लोड पड़ने के कारण वो फ़ेल हो गया। फिर भी बच्चों ने अपनी परफॉर्मन्स जारी ही रखी। प.भ. राकेशभाई के एनाउंस करने के बाद ही वे सब रुके। **प्ले की ग्रिप भी इतनी मजबूत थी कि यह जानने के बावजूद भी कि बस अब 'एन्ड' ही है, कोई भी अपनी सीट से उठा नहीं, बल्कि तनिक भी डिस्टर्ब हुए बिना सभी ने धुन करनी शुरु की।** देखा जाए तो – सभी ने जो प्ले में देखा कि प.पू. गुरुजी ने हर प्रसंग पर धुन-भजन को ही आधार बनाया है और मुक्तों को धुन करने का ही संदेश दिया है, उसका यह हुबहू दर्शन ही था।

थोड़ी ही देर में बिजली आई और सभी ने प्ले का मार्मिक क्लाईमेक्स देखा। प.पू. काकाजी एवं प.पू. गुरुजी का उत्तरभारत के मुक्तों के लिए किया गया अत्यधिक परिश्रम, दिल्ली मंदिर की ज़मीन इत्यादि के लिए प.पू. गुरुजी विपरीत संजोगों में से जिस प्रकार गुज़रे... पंजाब में सर्दी-गर्मी या **अपनी देह की परवाह किए बिना सत्संग के जो बीज प.पू. काकाजी ने बोए, उसे देख कर पंडाल में बैठे लगभग सभी मुक्तों की आँखों में आसूँ थे,** क्योंकि कई मुक्त तो इन प्रसंगों से वाकिफ नहीं थे। **प.भ. दर्शनभाई एवं प.भ. पुनीतजी ने प्ले में प.पू. काकाजी का किरदार जिस भक्ति से अदा किया, वह अवर्णनीय है।** कई मुक्तों को तो उनमें हूबहू प.पू. काकाजी के ही दर्शन हुए, जबकि प.भ. पुनीतजी ने तो प.पू. काकाजी के स्थूल रूप से दर्शन भी नहीं किए हैं। **इसी प्रकार युवक के रूप में प.पू. गुरुजी यानि– 'दिलीपभाई' बने अमदावाद के प.भ. नंदिश और... बाद में प.भ. वंदनभाई व प.भ. दीपक अग्रवाल ने प.पू. गुरुजी का किरदार ऐसे भाव से निभाया, मानो प.पू. गुरुजी ने उन पर अपना कब्ज़ा ले लिया हो। 'नक्षु'** ने तो खूब छोटा होते हुए भी प.पू. गुरुजी के प्रति अपने अनूठे लगाव का दर्शन कराया। प्ले की प्रॅक्टिस दौरान एक

दिन वह प.पू. गुरुजी के दर्शन करने आया और तुरंत ही जाने लगा। प.पू. गुरुजी ने कहा कि– *थोड़ी देर तो यहाँ बैठ।* सहजता से वह बोला– *अभी नहीं, मेरा रोल है, मुझे प्रॅक्टिस के लिए जाना है।* वैसे उसका रोल तो सिर्फ २-३ मिनिट का ही था। पर, यह थी अपना किरदार निभाने की उसकी लगन। और... सभी ने महसूस किया कि प्ले में दिखाई गई 'कोटरा' राक्षसी से तनिक भी डरे बिना 'बाल घनश्याम' के रूप में खूब स्थिरता से उसने अपना किरदार निभाया, जिसे देख कर **प.पू. साहेब भी खूब राजी हुए।**

अंत में, **प्ले के डायरेक्टर ही नहीं**, बल्कि गुणातीत समाज के **आत्मीय स्वजन** समान **प.भ. प्रदीपजी** ने प्ले की खुशी ज़ाहिर करते हुए, वहाँ मौजूद प्ले के सभी आर्टिस्टों को आशीर्वाद दिलवाने के लिए प.पू. साहेब, प.पू. अश्विनभाई, प.पू. शांतिभाई, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. हंसा दीदी एवं प.पू. दीदी स्वरुपों को स्टेज पर आमंत्रित किया। **प.पू. साहेब** ने आशिष प्रदान करते हुए प.पू. गुरुजी के प्रति मुक्तों की भक्ति को सराहा। साथ ही एक रहस्य उजागर किया कि **एक धारणा के मुताबिक भगवान या सद्‌गुरु का किरदार कोई व्यक्ति नहीं कर सकता था, लेकिन, १९६६ के बाद प.पू. पप्पाजी की आज्ञा से गुणातीत समाज में किरदारों द्वारा गुणातीत ज्ञान को नृत्यनाटिकाओं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा दर्शाने की सर्वप्रथम शुरुआत प.पू. हंसा दीदी ने की।**

प.पू. हंसा दीदी ने भी प्ले में दर्शाए गए प.पू. गुरुजी के सर्वदेशीय उठाव के लिए खूब धन्यवाद तो दिया ही, साथ ही इसकी जरूरत पर प्रकाश डालते हुए प.पू. गुरुजी की दीर्घायु की प्रार्थना की...

प्ले में जिस-जिसने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष से सहयोग दिया, उन सभी को प.पू. गुरुजी की ओर से आशीर्वाद के रूप में **तुलसीपत्र की स्मृति भेंट** प.पू. साहेब एवं प.पू. हंसा दीदी के वरद् हस्तों दी गई। रात को करीब पौने ग्यारह बजे प्रसाद के लिए सभी स्वरुपों ने प्रस्थान किया।

श्री गीताजी के अट्ठारहवें अध्याय के श्लोक ७६ की भाँति यह प्ले-संवाद **'अर्चिमार्ग की ओर...'** को

'संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिममद्भुतम् केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहः'

अर्थात्– श्री कृष्ण और अर्जुन के इस अद्‌भुत संवाद का पुनः-पुनः स्मरण करके... मैं बार-बार हर्षित हो रहा हूँ– यूँ सदैव के लिए हर एक के हृदय पटल पर छा गया!

५ फरवरी की सुबह शिविर के अंतिम सत्र के लिए गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में सभी एकत्रित हुए। 'मैत्री मिलन महोत्सव' की स्मृति कराते हुए, उस समय प.पू. गुरुजी की आज्ञा से ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के जीवन पर बना हुआ भजन– *सबसे पहले योगीजी को पहचाना काकाजी ने...* प.भ. राकेशभाई ने गाया।

आज की पृष्ठभूमि का चित्रण 'स्वामी की बातों' के आधार पर था। गरुड़ के पंख में मच्छर को चिपका हुआ दिखाया था। साथ ही प.पू. गुरुजी के अंतर की भावना लिखी थी–

बापा ने मानो एक पक्षपात करके हमें प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी का एक्स्क्ल्यूजीव जोग दे दिया और

इन दोनों विभूतियों ने भी हमें एक्सॅप्ट किया – ग्रहण किया – अपनी सेरेछाया देकर संबंध दिया। हम पर इनका यह केवल 'अनुग्रह' ही कहा जाए कि अपने संबंध से इन्होंने इस प्रकार हमें 'अर्चिमार्ग की ओर' मोड़ दिया।

इसका तात्पर्य **पू. यज्ञप्रियस्वामी** ने बताया– ***'स्वामी की बात' प्रकरण ३ की ३१वीं*** *बात में एक हरिभक्त ने प्रश्न पूछा है –*

...मच्छर गरुड़ की स्पीड कैसे प्राप्त करे? मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने उत्तर दिया है–

यदि गरुड़ पृथ्वी पर आया हो और मच्छर उसके पंख में बैठ जाए, तो उसे क्या प्रयास करना पड़े? कोई प्रयास नहीं करना पड़े...

फिर बताया – तीन प्रकार के पक्षी होते हैं। वृत्ति, दृष्टि और पंख में रख कर – यूँ तीन प्रकार से अपने अंडे को सेते हैं।

तत्पश्चात् गोपाळानंदस्वामी और कृपानंदस्वामी का नाम लेते हुए स्वामी ने कहा –

वे तो वृत्ति द्वारा सेवन करें ऐसे हैं और हम उनकी गोद में बैठ गए हैं, तो कोई कसर रहेगी ही नहीं।

सो, पृष्ठभूमि पर चित्रित गरुड़ जैसे प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूप द्वारा हमें मिली सहुलियत की गहनता को समझें और प्रार्थना करें कि हर प्रकार के संजोगों में हम आपसे चिपके रहें, ताकि त्वरित गति और बिना किसी साधन के – मानो ***'बाइ एयर' की स्पीड से*** *अक्षरधाम रूप रहते हो जाएँ।*

सभा की शुरुआत मुंबई के प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी एवं पू. विज्ञानस्वामिजी के प्रासंगिक उद्‌बोधन से हुई। तत्पश्चात्, **प.पू. गुरुजी की गोल्डन एवं डायमंड ज्युबिली** की सुनहरी यादों से भरी वीडियो डीवीडी का उद्‌घाटन **पू. दासस्वामिजी** के वरद् हस्तों होना था, लेकिन बड़ों को ही आगे रख कर कार्य करने की क़वायद पाए पू. दासस्वामिजी ने प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी से उद्‌घाटन करवाया और माहात्म्य दर्शन के साथ प्रार्थना की।

पू. दासस्वामी के उद्‌बोधन के बाद डॉ. दिव्यांग ने सत्पुरुष को अंतर से प्रार्थना करता हुआ भजन प्रस्तुत किया– *'तुझ से रखें न कोई मन की चोरी, अंतरायरहित हो जाएँ...'* भजन के बाद प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने आशिष प्रदान किए और फिर **प.पू. भरतभाई** ने प.पू. गुरुजी के आशीर्वचन की ऑडियो सीडी **'मार्गदर्शिका भाग ४-५'** का अनावरण करके आशीर्वाद दिया। गुणातीत ज्योत की बहनों की ओर से इस उत्सव के लिए तैयार किया भजन – *'अणमूल्यो उत्सव उजवाय...'* पू. इलेशभाई एवं प.भ. मुकेशभाई मच्छर ने खूब भावपूर्वक गाकर सभी को आनंद-विभोर कर दिया। पू. नक्षत्र और पू. कीर्तन की भाँति मुंबई के प.भ. मिलनभाई माणेक के बेटे **'पू. नीरेक'** ने भी गुजराती में पाँच 'स्वामी की बातें' सभी को सुनाईं।

प.पू. गुरुजी अकसर प.पू. काकाजी की कही बात दोहराते हैं –

कोई भी सेवक शारीरिक रूप से तनतोड़ सेवा करे, वह सत्पुरुष को राजी कर लेने का बॅरोमीटर नहीं है।

*लेकिन, यदि कोई, सत्पुरुष की मर्जी में रहकर, उन्हें आगे रख कर और उनकी ही ओर एक मात्र निगाह रख कर केवल घंटी ही बजाए, तो वह **'आत्मसत्ता रूप'** वर्ता कहा जाए और उससे ही बड़े संत राजी होते हैं।* इस बात का हुबहु दर्शन इस उत्सव में अक्षरज्योति की साधक बहन **पू. नित्या दीदी** में सभी को हुआ। उन्होंने प.पू. गुरुजी और प.पू. दीदी की ओर निगाह रख कर, अपनी देह या तबियत की तनिक भी परवाह न करते हुए तनतोड़ सेवा करके प.पू. गुरुजी को राजी कर लिया। अतः **अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए प.पू. गुरुजी ने अपनी प्रासादिक कंठी प.पू. हंसा दीदी को भिजवाई और पू. नित्या दीदी को स्मृति के रूप में पहनाने के लिए कहलवाया।** प.पू. हंसा दीदी ने अपने वरद् हस्तों से पू. नित्या दीदी को वह पहनाई। वहाँ उपस्थित सत्संग की लड़कियों ने इस ख़ुशी को वहीं डाँस करके ज़ाहिर किया। **सच, पू. नित्या दीदी पर फिसली प.पू. गुरुजी की प्रसन्नता से मानो 'अक्षरज्योति' की सभी बहनों एवं भाभियों को उत्सव का फल मिल गया!**

सभा के अंतिम पड़ाव में **प.पू. कोठारीस्वामिजी** के वरद् हस्तों भजनों की ऑडियो सी डी **'स्वर्णस्वर भाग ९-१०'** का अनावरण हुआ और प.पू. कोठारीस्वामिजी एवं प.पू. शांतिभाई साहेब ने आशिष प्रदान किए।

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के ही नक्शेकदम पर चलते हुए, जिसने भी उनके लिए या मंदिर के लिए तनिक भी अपनेपन की भावना से कुछ किया है, उसे प.पू. गुरुजी कभी नहीं भूलते। अतः प.पू. गुरुजी की ओर से पू. राकेशभाई ने उन सभी का आभार व्यक्त किया, जिन्होंने उत्सव में किसी न किसी रूप से सेवा की। और... जैसे कि शिविर की शुरुआत गुणातीत समाज के आद्य सर्जक ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज का अभिनंदन करते हुए सत्संग की युवतियों ने की थी, यूँ आज पूर्णाहुति भी उनका शुक्रिया अदा करते हुए सत्संग के युवाओं ने *'जनम-मरण के फेरे काकाजी तो टालते हैं; जनम-मरण के फेरे पप्पाजी तो टालते हैं...'* भांगड़ा करके की। विसर्जन प्रार्थना के बाद सभी ने प्रसाद के लिए प्रस्थान किया। सभी स्वयंसेवक प.पू. गुरुजी के ७५वें प्राकट्योत्सव के लिए सायं की तैयारियों में लग गए।

सायं करीब पौने छः बजे दिल्ली मंदिर से काफी वर्षों से खूब आत्मीयता से जुड़े **प.भ. अमृतभाई पटेल** के मित्र **श्री विभूतिजी**, जो कि २६ जनवरी की झांकियाँ बनाने का कार्य करते हैं, द्वारा सुसज्जित दो **'टमटम'** में सभी गुणातीत स्वरुपों ने **'कल्पवृक्ष'** में फूलों से सुसज्जित गलीचे से होकर प्रवेश किया। ***'मन बिछाए राहों में, खोल हृदय के द्वार...'*** इस भावना के भजन पर डाँडिया द्वारा स्वागत करते हुए सत्संग के युवक स्वरुपों को स्टेज तक लेकर आए।

स्टेज पर विराजमान होने के बाद थोड़ी ही देर में प.पू. साहेबजी अपने आसन से उठे और इशारा करते हुए उन्होंने आसन पर विराजमान प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी को कुछ कहा। प.पू. स्वामिजी भी तुरंत खड़े होकर उस ओर देखने लगे। इतने में प.पू. गुरुजी भी उनके पास आकर बात करने लगे... जिस ओर ये स्वरुप इशारा करके बात कर रहे थे–वह थी स्टेज की पृष्ठभूमि, जिसमें तीन दृश्य थे। एक दृश्य में मूल

अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी एक उद्यान में बैठ कर लगातार एक मोर को देख रहे हैं, दूसरे दृश्य में पंख फैलाए हुए मोर नाच रहा है और अंतिम दृश्य में एक शिकारी मोर पर बार-बार निशाना लगाता है, पर चूक जाता है। उस पर लिखा था–

हम तो केवल कृपादृष्टि वाले ही नहीं, बल्कि गुणातीत स्वरुपों का हमें तो निरंतर जोग रहा है।
इतना ही नहीं, इन्होंने भी हमें ग्रहण किया है,
सो वे हमारी व्यावहारिक व आध्यात्मिक हर प्रकार से रक्षा करेंगे ही।

संबध में आए छोटे-बड़े **सभी मुक्तों के प्रति गुणातीत स्वरुपों का एक ही उद्यम रहता है कि किसी भी तरह वे प्रभु से जुड़ें।** लौकिक दृष्टि से कभी कोई जेस्चर अटपटा भी लगता है, पर उसकी भी वे परवाह नहीं करते। ऐसे ही मंदिर के खूब करीबी आत्मीय प.भ. एन.के. अग्रवालजी के सात-आठ वर्षीय नाती 'पू. समर्थ' ने अभी-अभी कॅसियो बजाना सीखा है! उसके मन में आया कि प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव पर धुन बजा कर सुनानी है। सो, उसने साऊथ की भाषा के एक खूब प्रचलित गाने की धुन बजाई। वह थी गाने की धुन, लेकिन यह बात भी स्पष्ट है कि बजाई कैसी निर्गुण विभूतियों के सम्मुख!

पू. समर्थ द्वारा बजाई धुन सुनने के बाद **पू. यज्ञप्रियस्वामी** ने आज की पृष्ठभूमि, जिस ओर गुणातीत स्वरूप कुछ देर पहले इशारा करते हुए बात कर रहे थे, उसका सार सभी को समझाया–

गुरुहरि योगीजी महाराज *अपनी बातों में अकसर बताते थे– जूनागढ़ के नवाब ने श्रीजी महाराज को मंदिर बनवाने के लिए जमीन दी थी और श्रीजी महाराज ने अपने जैसा ही 'औलिया पुरुष' कह कर गुणातीतानंदस्वामिजी को वहाँ रखा था। एक बार नवाब ने मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की अपने बगीचे में पधरामनी करवाई। स्वामी पचास साधुओं को लेकर वहाँ गए। यूँ तो स्वामी किसी चीज या व्यक्ति को कभी भी एक टक नहीं देखते थे। लेकिन वहाँ मौजूद एक मोर को वे लगातार देखते रहे। आस-पास खड़े सभी ने सहज भाव में सोचा– 'यह मोर पूर्व का मुक्त होगा।'*

स्वामी के वहाँ से चले जाने के बाद एक शिकारी ने उस मोर पर बंदूक से निशाना साधने की बहुत कोशिश की, लेकिन हमेशा वह सूतभर बच ही जाता। वहाँ उपस्थित माली सत्संगी था, सो स्वामी की महिमा को समझते हुए उसने शिकारी से कह दिया– 'तू सौ बार गोली चलाएगा, फिर भी यह मोर नहीं मरने वाला, क्योंकि उसके ऊपर ***'गुणातीत की दृष्टि'*** *पड़ गई है।'*

प.पू. गुरुजी ने इस बात का एक विशिष्ट रहस्य बताया – सभी पक्षियों में मोर निष्कामी पक्षी है,
सो गुणातीतानंदस्वामी उसे इतने चाव से देख रहे होंगे और उनकी कृपादृष्टि मोर पर पड़ी।
उस समय तो वह मोर शिकारी से मरा नहीं, पर आज मोर 'राष्ट्रीय पक्षी' बन गया,
सो इसे अब तो वैसे भी कोई मार नहीं सकता।

सो, निश्चिंतता और निर्भयता का एहसास कराने के लिए पृष्ठभूमि पर इस तथ्य को दर्शाया है।

सभा के आरंभ में पू. राकेशभाई द्वारा गाया भजन सुनने के बाद, प.पू. वशीभाई ने माहात्म्य दर्शन करवाया एवं आत्मीय स्वजन **प.भ. काशीरामभाई राणा साहेब** ने प्रासंगिक उद्‌बोधन किया। तत्पश्चात्, हारविधि का कार्यक्रम शुरु हुआ।

प.पू. गुरुजी के मन में हमेशा यही भाव रहता है कि हम जो भी करें, मिलजुल कर करें। सभी अपनी भावनाएँ अलग-अलग हार पहना कर व्यक्त करें, यह भी उन्हें जँचता नहीं। सो, प.पू. गुरुजी की मरजी में ही जीने की भावना से दिल्ली मंदिर से जुड़े संतों, युवकों, बहनों एवं अलग-अलग प्रांतों के गृहस्थ मुक्तों की ओर से बहनों एवं भाभियों ने अलग-अलग रंग की स्याही से लिखे **'स्वामिनारायण मंत्र' के पन्नों का ७५ फुट लंबा हार** बनाया था। अलग-अलग प्रांत के २४ मुक्तों एवं पू. नक्षु ने मिलकर सर्वप्रथम प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी को हार अर्पण करके जब वह प.पू. गुरुजी को पहनाया, तब **एक निर्दोष बालक की भाँति हाथ जोड़ कर उसे ग्रहण करते हुए, उन्होंने सभी को अविस्मरणीय मूर्ति दी!**

साथ ही मानो नए युग का आगाज़ हुआ, जब प.पू. गुरुजी की भावना जान कर, स्टेज पर विराजमान सभी स्वरुपों को इस हार के घेरे के अंदर ले लिया गया और भजन बज रहा था, ***'सुहृद्‌भाव का कलश चढाएँ हम, काकाजी का संकल्प साकार होगा, स्वरुपों का संकल्प साकार होगा...'*** सच, वह नज़ारा खूब अलौकिक और अंतर से प्रार्थना करने की प्रेरणा दे रहा था कि *'आवा ने आवा रे रहेजो मारी आँखलड़ीमां रे...'*

इस विशिष्ट हार अर्पण के बाद हर्ष व्यक्त करते हुए दिल्ली मंदिर के कुछ मुक्तों ने प.पू. गुरुजी का फूलों के हार, मुकुट एवं बाजूबंद से श्रृंगार किया। **प.पू. दीदी की 'अभिप्राय की सेवा'-भावना से खुश होकर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए, तुरंत ही प.पू. साहेबजी ने माइक द्वारा प.पू. हंसा दीदी से कहा कि प.पू. गुरुजी को जो ये हार-मुकुट इत्यादि अर्पण किया गया है, वह वे प.पू. आनंदी दीदी को पहनाएँ।** सो, **प.पू. हंसा दीदी** ने **इस रुप में प.पू. दीदी के प्रति सभी स्वरुपों की प्रसन्नता व्यक्त की।**

फिर भी, सभी केन्द्रों की ओर से संतों, युवकों, बहनों एवं मुक्तों ने अपने प्रतिनिधियों द्वारा प.पू. गुरुजी को हार एवं भेंट अर्पण की ही। हरिधाम के संतमंडल की ओर से प.पू. कोठारीस्वामिजी एवं पू. प्रेमस्वामिजी ने गोल्डन शाल के रूप में जब एक हार अर्पण किया, तब तुरंत ही प.पू. गुरुजी ने पू. शास्त्रीस्वामिजी एवं पू. दासस्वामिजी को भी बुलाया और पाँचों ने साथ खड़े रह कर सबको अनोखी मूर्ति दी। तभी पंडाल में लगी स्क्रीन पर प.पू. गुरुजी की हीरक जंयती के अवसर पर खींची गई इन संतों की मूर्ति के दर्शन हुए, तो मुक्तों ने तालियों से खुशी ज़ाहिर की और प.पू. काकाजी द्वारा दिए गए आशीर्वाद –

'पंजा एक' ऐसा तुम पाँच संतों (स्नेहलमंडल) को पक्का कराना है – की सभी को स्मृति हो गई!

जिस प्रकार प.पू. साहेब ने प.पू. दीदी की गुरुभक्ति व निष्ठा पर प्रसन्नता व्यक्त की, उसी प्रकार **संतों में पू. सुहृद्‌स्वामी द्वारा प.पू. गुरुजी को दी गई निश्चिंतता से राजी होकर प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी ने उन्हें प.पू. गुरुजी की प्रसादी का हार अर्पण किया।**

हारविधि के कार्यक्रम में प.पू. गुरुजी ने एक अनोखा जॅस्चर किया। कई केन्द्रों से आए हार उन्होंने खुद न पहन कर स्टेज पर विराजमान स्वरुपों को अर्पण कराए। जैसे-जब पू. विज्ञानस्वामिजी एवं पू. आचार्यस्वामी प.पू. गुरुजी को हार अर्पण करने आए, तो वे स्वयं उस हार को लेकर प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के पास गए और उन्हें हार पहना कर न केवल खुद ने आशीर्वाद लिए, बल्कि पू. विज्ञानस्वामी एवं पू. आचार्यस्वामी को उनसे आशीर्वाद दिलवाए। इसी प्रकार गुणातीत ज्योत से **प.पू. ज्योति बहन** ने ७५ कंठियों का विशिष्ट हार बनवा कर भेजा था, तो प.पू. गुरुजी ने वह हार **प.पू. दिनकरभाई** को अर्पण करवाया और... प.पू. दिनकरभाई ने संत के साथ बालक की भाँति संबंध कर लेने की प्रेरणा देते **पू. अभिषेक** को प्रसादी का वह हार पहनाया। ऐसे ही **प.भ. दिलीपभाई भोजाणी** लंडन ज्योत की ओर से हार अर्पण करने आए, तो वह हार भी प.पू. गुरुजी ने उन्हें **गुरुहरि पप्पाजी स्वरुप प.पू. हंसा दीदी** को अर्पण करने की आज्ञा दी। **इस चरित्र द्वारा प.पू. गुरुजी शायद यही दर्शाना चाहते थे कि आज यह केवल उनके प्राकट्य दिन का सेलिब्रेशन नहीं, बल्कि 'गुणातीत कुनबे' का स्नेहमिलन है।**

अनुपम मिशन की ओर से **प.पू. साहेब** ने खूब मार्मिक मूर्ति की भेंट दी, जिस पर अनुपम मिशन के सभी भाइयों के अंतर की भावना के रूप में भगवान स्वामिनारायण एवं गुणातीत स्वरुपों के निम्न आशीर्वाद एवं प्रार्थना लिखी थी–

श्रीजी महाराज द्वारा **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** को दिए आशीर्वाद–

दादुभाई! आपने योगीजी को राजी किया, तो हम राजी हुए। लो! तुम्हें गुणातीत के गुण और ऐश्वर्य दे दिया...

गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज द्वारा **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** को दिए आशीर्वाद–

योगीजी मेरा ही स्वरुप हैं। यह आपको प्रतीत हुआ, अब सभी को मनवाओ! उससे हम राजी... राजी और राजी!

गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा **प.पू. गुरुजी** को दिए आशीर्वाद–

यह 'मुकुंद' बहुत बलवान, सर्वोपरि साधुता की मूर्ति। ऐसे संत ब्रह्मांड में ढूँढने पर नहीं मिलेंगे। दादुभाई में विश्वास किया और सेया तो साधुता के सभी गुण पा गए। शास्त्रीजी महाराज बहुत राजी हुए! हम भी राजी हुए हैं... तो, अब सभी को शुद्ध उपासना समझाओ, महाराज को राजी करो और डंका मारो!

प.पू. गुरुजी की ओर से प्रार्थना–

हे महाराज! हे स्वामी! हे योगीबापा! हे काकाजी! आपके और आपके द्वारा सौंपे गए सभी की दासभाव से सेवा करने और उनमें पिघल जाने की शक्ति व भक्ति दो!

प.पू. साहेब की ओर से–

हे गुरुजी! परम पूज्य काकाजी के साक्षात्कार हीरक जयंती पर्व और आपके अमृतोत्सव के दिव्य आनंदपर्व पर हमारे लाख-लाख वंदन... लाख-लाख वंदन...! (अनुपम मिशन)

श्रीजी महाराज को जैसे इमाम साहेब ने चाँदी की खड़ाऊ की भेंट दी थी, वैसे ही ब्रह्मस्वरूप काकाजी के प्रति भावना प्रकट करते हुए उन्हें अखंड धारे हुए प.पू. गुरुजी को दिल्ली के **प.भ. आर.पी. गुप्ताजी** ने चाँदी की खड़ाऊ भेंट स्वरूप दी।

हारविधि-स्मृति भेंट अर्पण के कार्यक्रम के अंत में मुबंई-**पवई मंडल की अनुपम भेंट का तो नज़ारा ही 'न भूतो, न भविष्यति' था**, क्योंकि वह अनुपम भेंट थी – 'प.पू. गुरुजी के श्वास' ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की मार्बल की मूर्ति! प.भ. घनश्यामभाई अमीन द्वारा खूब परिश्रम से तैयार करवाई गई ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की मूर्ति को फूलों से सुसज्जित पालकी में बिठा कर, **प.पू. दिनकरभाई सहित पवई मंदिर से जुड़े करीब दो सौ मुक्तों के समूह** ने जब पंडाल में प्रवेश किया, तो **पूरा माहौल इलेक्ट्रीफाई हो गया।** सभी को ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मूर्ति के रूप में ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज स्वयं पधार रहे हैं। ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की मूर्ति स्टेज पर स्थापित होने के बाद प.पू. गुरुजी ने मूर्ति का पूजन किया और प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने हार अर्पण किया। प.पू. शांतिभाई ने पवई मंडल की प्रार्थना पढ़ी। तत्पश्चात् , नड़ियाद में ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की मूर्तिप्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में **पू. हेमंतभाई मर्चंट द्वारा रचित** भजन– *'वालम तमे पधार्या, थई गई धरा सुहावन...'* पवई के साधक भाई पू. हितेनभाई एवं साथियों ने सुनाया।

अंत में प.पू. दिनकरभाई से आशिष प्राप्त करके सत्संग के युवकों ने – *'अपनेपन के शहंशाह, हमारे जीवनप्राण'*–प.पू. गुरुजी को प्रार्थना करते हुए भावनृत्य प्रस्तुत किया। समय अधिक होने के कारण प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी एवं प.पू. साहेब की परावाणी का लाभ कम मिल पाया। परंतु , जैसे कि प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं कि हाथी के पाँव में सब आ जाते हैं , गुणातीत समाज के शिरछत्र **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** ने खूब आशिष बरसाते हुए सत्पुरुष से पक्का संबंध करने **वचनामृत अंत्य ७ और ११** पर खूब जोर दिया और उत्सव की केक का प्रसाद लेने के बाद रात को ग्यारह बजे 'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव' की पूर्णाहुति हुई...

शिकागो के कुछ मुक्त तो सभा के तुरंत बाद ही फ्लाईट्स के लिए एयरपोर्ट के लिए रवाना हो गए। ऐसे मुक्तों की भक्ति को सच में खूब धन्यवाद कि **केवल चार दिन के लिए ही विशेष रूप से वे इतनी दूरी से आए।** दूसरे दिन सुबह आठ बजे की फ्रंटीयर मेल से लेकर, बीच की कई फ्लाईट्स और रात की सर्वोदय ट्रेन तक सभी गुणातीत स्वरूपों एवं 'योगी परिवार' के मुक्तों ने गुणातीत समाज के इतिहास में अनोखी छाप छोड़ती स्मृतियों का खज़ाना दे-लेकर भावभीनी विदाई ली!

जैसे कि शुरुआत में मंदिर का पत्थर लगने की बात का जिक्र हुआ कि छः महीने में तो यह कार्य संभव ही नहीं था। ऐसे ही इस उत्सव में भी हर विभाग की सेवा में ऐसा ही महसूस हुआ कि **सारा नियंत्रण ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज एवं प.पू. गुरुजी ने अपने हाथों में ले रखा था...** कुदरत भी मानो इस उत्सव में अपना सहयोग देकर खुद को धन्य करने से पीछे नहीं रही। उत्सव से पहले खूब सर्दी पड़ रही थी, लेकिन **उत्सव के चारों दिन मौसम खुशनुमा बना रहा।** ५ फरवरी की रात को बादलों की गड़गड़ाहट सभी

को सुनाई दी और दिल्ली में कई जगह बारिश भी हुई, लेकिन अशोकविहार के इलाके के आस-पास नहीं हुई। मानो इन्द्रदेव उत्सव का सिर्फ दर्शन करके लौट गए। **दरअसल सब कुछ ब्रह्मनियंत्रित था, ऐसा सभी को एहसास हुआ।**

बाद में हुई शनिवार की सभाओं में या आपस की बातचीत में कइयों ने ज़ाहिर भी किया कि ब्राह्मीशक्ति-सुपरामेंटल पावर ही टोटल काम कर रही थी। उत्सव से पहले प.भ. कौशिकभाई जानी को अपने शरीर में कमजोरी महसूस होने के कारण ऐसा लग रहा था कि उत्सव के ये चार-पाँच दिन वे कैसे सेवा कर पाएँगे। लेकिन वे स्वयं बताते हैं कि उत्सव के दिनों में महाराज ने उन्हें देह का कुछ ख्याल ही नहीं पड़ने दिया। पहले दिन स्टेशन पर ट्रांस्पोर्ट की कुछ तकलीफ पड़ी, लेकिन प.भ. राकेशभाई शाह ने भी बताया कि वह परेशानी भी महाराज ने कब और कैसे हल कर दी, यह भी एक आश्चर्य है।

सभी मुक्तों की बातें सुन कर **प.पू. गुरुजी** ने कहा कि मुझे इस बात की खूब खुशी है कि **सबने प्रभु की सत्ता का दिल से अनुभव किया।**

सच, खूब गहराई से सोचें तो **सबका भार प.पू. गुरुजी ने खुद पर ही ले रखा था।** उत्सव समाप्त होने के एक सप्ताह बाद सब को पता चला कि प.पू. गुरुजी को हर्पिस हुआ है। जब सबने पूछा कि आपको यह कब हुआ, तब प.पू. गुरुजी ने बताया–

३१ जनवरी को मुझे छाती में थोड़ा दर्द उठा था। मैंने सोचा कि यदि मैं किसी को ज़रा भी ख्याल दूँगा, तो सभी की उमंग मर जाएगी। दूसरे दिन छाती के पास से दर्द खिसक कर बाईं ओर महसूस होने लगा, तो मैं समझ गया कि यह हार्ट से रिलेटेड नहीं है। फिर भी, सभी मूडलेस न हो जाएँ, इसलिए मैंने बताया नहीं था... ५ फरवरी को आपने नोट किया होगा कि स्टेज पर मैं प.पू. स्वामिजी की ओर मुड़ कर बैठा रहा था। उससे मुझे राहत मिल रही थी, क्योंकि उस पोज़ीशन में कपड़ा हर्पिस के दाने को छू नहीं रहा था। कइयों को तब ऐसा भी लगा कि मैं, साहेब और स्वामिजी आपस में बात कर रहे हैं...

खूब-खूब हँसते हुए प.पू. गुरुजी ने यह बात की। पर, प.पू. गुरुजी स्वयं भी अकसर कहते हैं कि ९९ बुखार पर मैं सबको इकट्ठा कर लेता हूँ। जबकि, यहाँ तो प.पू. गुरुजी का यह जॅस्चर देहातीत अवस्था का दर्शन दे गया कि भक्तों की खुशी के लिए वे इतने दिन तक, इतनी तकलीफ सहते रहे।

पू. नक्षु तो केवल पाँच साल का है, पर उसके द्वारा महाराज एक खूब गहरी बात कह गए। उत्सव के बाद प.पू. गुरुजी ने उससे सहज ही पूछा कि तुझे फंक्शन में सबसे ज्यादा क्या अच्छा लगा? तो उसने तुरंत ही कहा–

'तमे हतां ए ज सौथी सारुं हतुं; यानि–आप थे वही सबसे अच्छा था।'

उसका यह जवाब सुन कर प.पू. गुरुजी की आँखें नम हो गईं। इतनी छोटी आयु के बच्चे में इतनी गहरी सोच? इस उम्र के बच्चे तो खेल-कूद से बाहर नहीं आते। और... इसने तो सारी सभाओं में लगातार बैठ कर उत्सव का आनंद लिया। **पूर्व का ही कोई मुक्त होगा वो।**

इस उत्सव की सफलता कहें या सही मायने में उसका राज़ कहें, तो वह है पल-पल ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के सिद्धांतों पर जी रहे प.पू. गुरुजी की जीवनशैली! वे जो बोलते हैं, वैसा ही जीवन जीते भी हैं। इसीलिए संबंध में आते मुमुक्षु सहज उनसे और गुणातीत समाज से इस कदर जुड़ जाते हैं कि उन्हें यह मंदिर और मंदिर की सेवाएँ अपनी लगती हैं; **सेवा करने के लिए उन्हें विवश नहीं करना पड़ता।**

हम में से कई मुक्त जानते ही हैं कि शुरुआत में जब प.पू. दीदी भगवान भजने के लिए आईं, तो उनके रहने की अलग से कोई व्यवस्था नहीं थी। तब ऐसे संजोगों में **प.भ. विजयबाबु** एवं **सौ. मधु जीजी** ने उन्हें अपनी बहन मान कर कई साल तक अपने घर पर रखा। बाद में फिर बहनों की संख्या बढ़ते और अलग से उनके रहने की व्यवस्था हो जाने पर **'अक्षरज्योति'** स्थापित हुई। प.भ. विजयबाबु का परिवार तो मंदिर का अपना निजी परिवार, पर उनका दामाद भी ऐसा निजी बन जाए, तो वह तो पूर्व जन्म के संस्कारों के बिना संभव ही नहीं। करीब डेढ़-दो साल से प.भ. विजयबाबु के दामाद **प.भ. रवि गुप्ता** एवं उनकी बेटी **सौ. कानन** अकसर मंदिर आने-जाने लगे हैं। इस उत्सव में भी सेवा के तौर जब वे दो फरवरी को आए, तो उन्होंने देखा कि मंदिर से **कल्पवृक्ष** और **प्रसादम्** की दूरी काफी है। सो, जो बुज़ुर्ग हैं या जिन्हें चलने में कोई दिक्कत है, उन्हें काफी तकलीफ पड़ती है। अगले ही दिन प.पू. गुरुजी या किसी को भी बताए बिना वे अपने इलाके में चलती चार बैटरी रिक्शा मंदिर में ले आए! पूरे उत्सव में कइयों को खूब सुविधा तो मिली ही, साथ ही **जैसे कि प.पू. गुरुजी कहते हैं–मौके की सेवा लूट कर मुक्तों के भीतर बैठे प्रभु की मूर्ति उन्होंने पा ली।**

उत्सव के किसी विभाग पर भी नज़र डालें, तो ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के शब्दों में– *यह सब अकेले हाथ नहीं बना...* रसोई विभाग में **पू. सुहृद्स्वामी** के साथ कई मुक्तों ने जैसे कि **प.भ. राजुभाई शाह, प.भ. विनोदभाई, प.भ. विजयभाई महेता, प.भ. अजय चावलाजी, प.भ. सुशील भास्करजी, प.भ. दिलीपभाई शाह और प.भ. नानजीभाई** ने मुख्य कार्यभार संभाल कर, अन्य मुक्तों के सहयोग से प्रसाद की बहुत अच्छी व्यवस्था की। **उत्सव के बाद पता चला कि प.भ. राजुभाई शाह को तो चार दिन तक ब्रश करने का भी समय नहीं मिल पाया था** और उत्सव के दौरान चार-पाँच दिन प.भ. राजुभाई, प.भ. दिलीपभाई एवं प.भ. नानजीभाई तो रसोई के बाहर कन्टेनर में ही सोए। **प.भ. अशोकभाई राठोड़** द्वारा दिए गए रसोई उपकरणों से बहुत सुविधा हुई। सभा के प्रत्येक सत्र में रिफ्रेशमेन्ट की सेवा **प.भ. रवि गुप्ताजी** के समधी **प.भ. अनिल गुप्ताजी, प.भ. नवीनभाई** के संबंध से **प.भ. राजुभाई (बॉम्बे भेल हाऊस)** एवं **'मास्टर बेकरी' वालों** ने खूब अपनेपन से की। वॉटर सप्लाई एवं ड्रेनेज का बीड़ा उठा कर **प.भ. प्रकाशचंदजी** ने रसोई विभाग में तो मदद की ही, साथ ही मंदिर एवं उत्सव के पूरे परिसर में बिजली सुचारू रूप से जारी रहे, इस हेतु बिजली विभाग में **प.भ. संजय भास्करजी** के साथ मिल कर जनरेटर सेवा में भी खूब सहयोग दिया। **ऐसे मुक्तों की सेवा के लिए अंतर से** नमन!

प.पू. गुरुजी और **प.पू. दीदी** स्वयं हर एक सेवा में खूब परिश्रम से इतने अधिक ओत-प्रोत होते हैं कि

सहज ही सेवकों को सेवा करने का बल मिलता है। जैसे कि गुणातीत समाज एवं दिल्ली मंदिर के इतिहास का संक्षिप्त में परिचय देती हिन्दी व गुजराती सोविनियर **'हमारा मंदिर'** को **प.भ. आशिष शाह, प.भ. लक्ष्मी शुक्ला** एवं **पू. बंसरी दीदी** ने बहुत ही कम समय में तैयार किया, तो **प.भ. मनोज शर्मा** ने उत्सव के कार्ड की भाँति इसे भी बहुत अच्छी तरह प्रिन्ट करवा कर समय पर दे दिया। ऐसे मुक्तों की सेवा-भावना को भी धन्यवाद! पर, मुक्तों से पूछा जाए तो ये उद्गार ही निकलें कि– *करते हो आप काका, मेरा नाम हो रहा है...*

केवल मंदिर से जुड़े मुक्तों ने ही नहीं, बल्कि इन मुक्तों से जुड़े कइयों ने नैपथ्य में रह कर भी सेवा की है। **प.भ. मदनलाल चौहानजी** के संपर्क से थोड़े ही समय से खूब आत्मीयता से जुड़े **प.भ. राकेश बजाजजी** ने प्रसाद के लिए अपनी फॅक्ट्री से नई थालियाँ दे दीं। प्रसाद ग्रहण करते मुक्त तो कह भी उठते कि बर्तन बहुत साफ़ हैं। मुक्तों के मुँह से निकले ऐसे उद्गारों के फलस्वरूप अवश्य ही श्रीजी महाराज की प्रसन्नता भी उन पर ढली ही होगी। सबसे विशेष, सत्यवती कॉलोनी के–**श्री राधेजी, श्री मोहन बंसलजी, श्री पवनजी, श्री गर्ग साहेब** इत्यादि ने प्रसादम् के लिए जगह की सुविधा कर देने में जो सहयोग दिया, उसके लिए तो सभी उनके खूब आभारी रहेंगे। खूब भक्तिभरे हृदय से **प.भ. बुधरामजी, प.भ. लवलीजी** ने प्रसादम् की जगह साफ़ करवाई और **प.भ. श्यामलालजी** एवं **प.भ. महेश वर्माजी** ने ट्रेक्टर चला कर उसे समतल किया। प.भ. महेश वर्माजी तो एयरपोर्ट पर इंजीनीयर हैं, लेकिन जगजाहिर है कि जब किसी से प्रीत हुई हो, तो वहाँ अपना कुछ भी मान्य नहीं रहता–ऐसी यह बात है।

इसी प्रकार **प.भ. विपिन यादव** के दोस्त **प.भ. नितिन चावलाजी** ने तीन महीने के लिए हॅवी ड्यूटी क्रेन बिना कोई किराया लिए सेवा में भेजी। **प.भ. सोहनलाल बजाज साहेब** तो प.भ. मदनलाल चौहान के संबंध से मंदिर के हॉल निर्माण के समय छोटी घंटियों पर गोल्ड प्लेटींग करने की सेवा करके, मंदिर का अभिन्न अंग बन गए हैं और अबकी बार मंदिर के कलशों का गोल्ड प्लेटींग करने की सेवा भी उन्होंने उठा ली। **श्री विनय मित्तलजी** (दीपाली टेन्ट हाउस) द्वारा जर्मन तकनीक से बनाया गया पिलरलेस पंडाल तो सभी को खूब भा गया एवं **पू. ज्ञानस्वरूपस्वामिजी** के संपर्क से **श्री दिलीपभाई परिख** (प्राइमा प्लास्टिक्स) ने भी पाँच हज़ार कुर्सियाँ सेवा में भेजीं। **श्री गुलशन बत्तराजी** एवं **श्री रमेशजी** ने भी खूब अपनेपन से साऊंड सिस्टम व लाईटिंग द्वारा सहयोग दिया।

खूब अपनेपन की भावना से उत्सव के एक महीने पहले आए शिकागो के साधक भाई **पू. पिन्टूभाई, पू. सुहृद्भाई, पू. के.पी. भाई,** पवई के **पू. भाविकभाई, पू. चिरागभाई,** दिल्ली मंदिर के **पू. अक्षरस्वरूपस्वामी, पू. परिवेश शर्मा** ने उत्सव के दौरान साऊंड सिस्टम और इंटरनेट के ज़रीए उत्सव का सारा लाइव प्रसारण देने की सेवा करके घर बैठ कर दर्शन करने वाले कई मुक्तों के अंतर की प्रसन्नता पा ली! **प.पू. दीदी** की प्रेरणा से **पू. परछाईं दीदी** एवं **पू. नित्या दीदी** के साथ मिल कर **प.भ. राकेशभाई** ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों-भावनृत्यों के भजनों में जो भाव भरे, उन्हें सुन कर हर एक ने स्वरूपों

के प्रति प.पू. गुरुजी की पराभक्ति की सौरभ महसूस की और... बहुत ही कम समय पूर्व मंदिर से जुड़ी **सौ. शिल्पी माथुर** ने अपने स्वर एवं **श्री रतन प्रसन्नाजी** ने संगीत से सबका दिल छू लिया।

एड्मिनिस्ट्रेशन, ट्रांसपोर्ट एवं मुक्तों को ठहराने की व्यवस्था के लिए **प.भ. प्रभाकरजी, प.भ. कौशिकभाई, प.भ. प्रकाशभाई ठक्कर** के साथ-सहकार से **प.भ. विजय शर्मा, प.भ. परिमलभाई आचार्य, प.भ. मेहुलभाई ठक्कर, प.भ. आशिष जानी एवं प.भ. मयंक चावला** ने दिन-रात जाग कर जो सेवा की, वह भुलाई नहीं जा सकती। राजकोट के **प.भ. वल्लभभाई फलदु** जैसे मुक्त ने भी केवल ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज एवं प.पू. गुरुजी को राजी कर लेने की भावना से 'जनसुविधा' की सेवा ऐसी संभाली कि सभी मुक्तों के मुख से यही उद्गार निकले–

फंक्शन्स तो हर जगह अच्छे होते हैं, पर यहाँ तो टॉइलॅट्स पर भी इतना ध्यान दिया गया है कि वे बहुत साफ़-सुथरे हैं।

जगंराव के प.भ. पितांबरजी का बेटा **प.भ. हनी**, प.भ. महेन्द्र जयस्वालजी का बेटा **प.भ. जिम्मी** भी उत्सव से करीब २०-२५ दिन पहले ही आकर जहाँ जिस सेवा में जरूरत हुई, वहाँ लग गए। पवई के **पू. राजुभाई ठक्कर** ने भी उत्सव के वाईंड अप के लिए रूक कर अपनेपन का एहसास कराया।

करीब १५०० मुक्तों को ठहराने के लिए कई गेस्ट हाऊस, होटल्स एवं भवनों की व्यवस्था की गई थी। वहाँ रहने वाले भक्तों को कोई असुविधा न हो, इस हेतु से हर जगह पर एक या दो सेवकों को ड्यूटी सौंपी गई थी। **प.भ. रवि कपूरजी** भी एक जगह अपनी ड्यूटी पर तैनात थे। ६ फरवरी की जल्दी सुबह ही उन्हें खबर मिली कि उनकी मधर को पॅरालिसिस का एटैक पड़ा है। पर, उत्सव का समापन हो चुका था, सो वहाँ से 'वाईन्डअप' करवा कर ही घर जाने का इन्होंने सोचा। प.पू. गुरुजी और प.पू. साहेब को इस घटना का पता चला तो उन्होंने आशीर्वाद भी दिए कि इस सेवा के फलस्वरूप उनकी मधर ठीक हो जाएगीं। वाकई, जब प.भ. रवि कपूरजी जब घर गए तो उनकी मधर की तबियत में काफी सुधार था और वे जल्दी रीकवर भी कर गईं। **उत्सव की कामयाबी कहो या हर एक जो खूब स्पर्श कर गया, उसका कारण ऐसे सेवक ही कहे जाएँ।**

ये तो विभाग के अनुसार कुछ ही नाम हैं, लेकिन मूलतः देखा जाए तो मंदिर एवं प.पू. गुरुजी से निजी तौर पर जुड़े तकरीबन ढाई सौ परिवार के सभी सदस्य प.पू. गुरुजी को राजी कर लेने की भावना से किसी न किसी सेवा में रत थे और... इन सभी मुक्तों की सेवा-भावना का ही परिणाम है कि इतने समय के बाद भी सबकी चित्तपट्टी पर उत्सव एवं प्ले इस कदर छाया और अंतर को स्पर्श कर गया कि अभी तक उसके बारे में सभी के फोन आने जारी ही हैं कि अब तक भी हम अपने आपको उत्सव की स्मृतियों से बाहर नहीं ला पाए हैं। उत्सव की एक विशेष स्मृति कहो या खासियत यह थी कि प.पू. दिनकरभाई की १०४ वर्षीय माताश्री **पू. दीवालीबा** से लेकर मुंबई के प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी के २ महीने के पोते प्यारे **आत्मन्** ने इन दिव्य स्मृतियों को संजोया।

प.पू. हंसा दीदी का तो विद्यानगर पहुँचते ही ७ फरवरी को ई-मेईल द्वारा निम्न आशीर्वाद पत्र आया–

स्वामिश्रीजी

ता. ७.२.१२

पप्पा, काका, बा की त्रिमूर्ति को दिल के झूले में हमेशा झुलाते रह कर,
सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण की पराभक्तिरूप कार्य करते परम पूज्य गुरुजी को...
भावभरा जय स्वामिनारायण।

आपकी शूरवीरता को मैंने मनोमन कोमल कुसुमों का हार पहनाया है। वे कभी मुरझाएँगे नहीं।
इस उत्सव में आपकी शूरवीरता की सौरभ आपके हर एक कार्य में मैंने महकी हुई पाई।
आपके प्रत्येक सेवक, सेविका में माहात्म्य की धारा हमेशा हँसते मुख से बहती थी।
धारा तो नहीं, बल्कि जलप्रवाह कहूँ तो गलत नहीं कहा जाएगा,
क्योंकि आपने उन सभी को प्रत्यक्ष रूप में एवं संकल्प से सेया है।
इस आनंदोत्सव के प्रतीक में आपने डायमंड रखा,
उससे आपकी काकाजी के प्रति की भक्ति का दर्शन हुआ, जो हमें पहनाया था।
हर एक सभा में होते प्रवचन और भावनृत्यों के भजनों में
आपके दासत्व के साथ पराभक्ति का एहसास हुआ।
आपके प्रागट्य दिन पर आपका प्रवचन माहात्म्य व आनंद से भरपूर था।
परम पूज्य स्वामिजी ने अंत्य. ७ और ११ के ऊपर जो खूब भार दिया,
उसका प्रत्यक्ष स्वरुप आप लगे।
उत्सव में आए हर एक मुक्त की हर प्रकार से जो सेवा व आवभगत की, ऐसा हमने कहीं देखा नहीं।
आपके ऊपर प्रशंसा के पुष्प बरस जाते हैं। दिल के प्यार में विवश होकर कहे बिना रहा नहीं जाता।
इस आनंदोत्सव में मुझे आमंत्रण दिया, उसे मैं अपना सौभाग्य मानती हूँ।
साधक बहनों, भाइयों, हरिभक्तों को जय स्वामिनारायण।

यही... गुणातीत ज्योत की बहनों की ओर से...
***हंसा दीदी** के जय श्री स्वामिनारायण।*

SWAMI SHREEJI
JAY GURUHARI PAPAJI

SHREE GUNATIT JYOT MAHILA KENDRA

Pappji Marg, P.O.Box - 23, V.V.Nagar - 388120. Gujarat (India)
☎: (02692) 230163, 236646 Fax - 236894
E-mail:-gunatitjyot66@gmail.com Visit us :- www.gunatitjyot.org

સ્વામિશ્રીજી
તા.૭.૨.૧૨.

પપ્પા, કાકા, બાની પ્રિમૂર્તિના હૈયાના હિંડોળે સદાય હીંચકતા રહીને, સર્વોપરી ભગવાનની શ્રી સ્વામિનારાયણનું પરાભક્તિરૂપ કાર્ય કરનાર પરમ પૂજ્ય ગુરૂજીને ..

ભાવનીતરતા જયસ્વામિનારાયણ

તમારી શૂરવીરતાને મેં મનોમન કોમલ કુસુમોનો હાર પહેરાવ્યો છે. તે કદી કરમાશે નહીં. તમારી શૂરવીરતાની સૌરભ તમારા હરેક કાર્યમાં મહેંકી ઉઠેલી મેં આ ઉત્સવમાં માણી. તમારા પ્રત્યેક સેવક, સેવિકામાં મહાત્મ્યની સેર સદાય હસતા મુખે વહેતી હતી. સેર તો નહીં બલ્કે ધોધ કહું તો ય તે અસ્થાને નથી જ કારણકે તમે એ સૌને પ્રત્યક્ષ ત્યા સંકલ્પે સેવ્યા છે.

આ આનંદોત્સવના પ્રતીકમાં તમારી કાકાજી તરફની ભક્તિનું દર્શન તમે ડાયમંડ રાખ્યો તેમાં થયું, જે અમને પહેરાવ્યો હતો. દરેક સભામાં થતા પ્રવચન ને ભાવનૃત્યના ભજનોમાં તમારૂં દાસત્વ તેમજ પરાભક્તિ અનુભવી. તમારા પ્રાગટ્યદિનનું તમારૂં પ્રવચન મહાત્મ્ય ને આનંદ ભર્યું માણ્યું. પરમ પૂજ્ય સ્વામીજીએ છેલ્લાના ૭ ને ૧૧ ઉપર ખૂબ ભાર મૂકયો એનું પ્રત્યક્ષ સ્વરૂપ તમે લાગ્યા. ઉત્સવમાં આવેલા હરેક મુક્તોની દરેક પ્રકારની સરભરા કરી. આવું અમે કયાંય જોયું નથી. તમારા ઉપર પ્રશંસાના પુષ્પો વેરાઈ જાય છે. હૈયાના હેતે કહેવાઈ જાય છે.

આ આનંદોત્સવમાં મને આમંત્રણ આપ્યું એને હું મારૂં સૌભાગ્ય માનું છું. સાધક બેનો, ભાઈઓ, હરિભક્તોને જયસ્વામિનારાયણ

એજ.. ગુણાતીત જ્યોતની બહેનો વતી ...
હંસાદીદીના
જયશ્રી સ્વામિનારાયણ.

પ્રથમ પ્રભુ પછી પગલું

इसी प्रकार १९ फरवरी को **प.पू. शांतिभाई साहेब** का भी हृदयस्पर्शी निम्न संदेश ई-मेईल द्वारा प्राप्त हुआ –

...हे गुरुजी!
आपने इस ब्रह्मांड में पधार कर श्रीजी का कार्य किया
स्वामी जैसा चाहते थे, वैसा सत्संग दृढ़ करवाया
भगतजी महाराज और शास्त्रीजी महाराज ने शुद्ध उपासना स्थापित की
उसे सभी मुक्तों के हृदय में दृढ़ करवाया
योगीबापा ने संप, सुहृद्‌भाव, एकता का पाठ दिया
उस ज्ञान से सभी को जीवन में जीता किया,
काकाजी सभी को जो ज्ञान देना चाहते थे और सुखी करना चाहते थे
उसके आप वाहक बने हो,
सेवा की उमंग... झुकना-सहने के लिए उत्साह
संबंध वाले सभी की महिमा
और उस संबंध के भाव से सभी को राजी कर लेने की तान,
जो 'ज्ञान' हम बोलते हैं, वो सभी जीएँ
उसका अद्‌भुत दर्शन करवाया।
आपके अमृत मंगल पर
हमारे हृदय में माहात्म्य बढ़ा,
आत्मीयता का विस्तार हुआ,
सभी मुक्तों के साथ परस्पर मेलजोल बढ़ा,
उस दिव्य आनंद की गठरियाँ बांधी हैं,
जिन्हें पाकर हम धन्य हुए हैं।
इस अमूल्य पराभक्ति का माहात्म्य समझते हुए,
हमारा आपको कोटि-कोटि वंदन।
सभी सुहृद् स्वजनों को अनंत प्रणाम
हृदय के भाव से जय स्वामिनारायण।

बोरडी टींबा–१९.२.२०१२
संतप्रीति शिविर का दिन

હે ગુરુજી !
આપે આ બ્રહ્માંડે પધારી શ્રીજીનું કાર્ય કર્યું
સ્વામી ઈચ્છતા હતા તેવા સત્સંગ દૃઢ કરાવ્યો
ભગવાનજી મહારાજને શાસ્ત્રીજી મહારાજે શુદ્ધ ઉપાસના સ્થાપી
તે સૌ મુક્તોના હૈયે દૃઢ કરાવી
યોગીબાપાએ સંપ સુહૃદભાવ એકતાના પાઠ આપ્યા
ને તેને સૌનાં જીવન જીવતાં કર્યાં
કાકાજીને સૌને જે જ્ઞાન દેખું તેનું ને ખુશ કરવાવાળા
તેના આપ વાહક બન્યા
સેવાનો ઉમંગ... નમવા ખમવા પ્રતિ ઉત્સાહ
સંબંધવાળા સૌનો મહિમા
ને સંબંધના ભાવે સૌને રાજી કરી સેવાનું તાન
જે જ્ઞાન બોલાય તે સૌ જીવે
તેનું અદ્ભુત દર્શન કરાવ્યું

આપના અમૃતમંગલે
અમ હૈયે માહાત્મ્ય વધ્યું
આત્મીયતાનો વિસ્તાર થયો
સૌ મુક્તો સાથે રસબસતા વધી
તેના દિવ્ય આનંદનાં પોરસાં બાંધ્યાં છે
તે લઈને અમો ધન્ય થયા છે.
આ પરાભક્તિનાં અમૂલ મૂલનું માહાત્મ્ય સમજી
આપને કોટિ કોટિ વંદન છે.
સૌ સુહૃદ સ્વજનોને અનંત પ્રણામ છે
હૃદયના ભાવે 'જય સ્વામિનારાયણ' છે.

બોરડી રીંગા – ૧૯. ૨. ૨૦૧૨
સંત પ્રાપ્તિ શિબિરના દિવસે

एक 'ब्रह्मसूत्र' है – **'आनंदोब्रह्म' !** अर्थात् **'ब्रह्म' का लक्षण है 'आनंद'।** सो, 'ब्रह्म' के साकार स्वरुप के सान्निध्य में या उसके अनुसंधान से या उसे लक्ष्य में रख कर जो कुछ भी हो – उसकी बात भी हो – उसकी स्मृति करें – तो सहज ही 'आनंद' प्रगटता है। इस उत्सव में इस तथ्य की अनुभूति हर एक को हुई। **प.पू. काकाजी ब्रह्म का साक्षात् स्वरूप थे** ही, इसीलिए उनके सतत अनुसंधान में मनाए गए इस उत्सव के हर एक कार्यक्रम में आनंद ही आनंद प्रगटा। किसी प्रसंग पर-किसी भी जगह कभी भी थकान या बोरियत महसूस हुई ही नहीं। **चार दिन लगातार सुबह-शाम पाँच-पाँच घंटे की सभाओं के कार्यक्रमों में बैठे रहने के बावजूद भी सभी फ्रेश ही दिखाई देते थे। इतना ही नहीं, अंत में यह भी सुनने को मिला कि प्रोग्राम इतनी जल्दी पूरा हो गया?** अभी दो दिन और बढ़ाया होता, तो मज़ा आ जाता। **साकार ब्रह्म के अस्तित्व का इससे बड़ा क्या प्रमाण हो सकता है?**

यूँ, प्रगट साकार ब्रह्म के संबंध से उनके अनुसंधान और प्रकाश के रूप में ही वर्तते हुए जीएँगे, तो हमारा संपूर्ण जीवन भी सतत आनंदमय रहते हुए एक उत्सव ही बना रहेगा।

दरअसल, **कइयों के तो हाव-भाव से ऐसा लग रहा था कि वे 'मेहमान' नहीं, 'मेज़बान' हैं। मतलब, यह उत्सव उन्हीं के यहाँ हो रहा है।** बाद में प.पू. दीदी से फोन पर बात करते हुए **प.पू. वशीभाई** भी कह उठे – ***२,३,४,५ फरवरी का फंक्शन काकाजी का एक करिश्मा ही था!***

दूसरी ओर – **प.पू. दीदी** के जीवन में सभी ने देखा है कि जब से वे प.पू. गुरुजी के संबंध में आईं और गुणातीत समाज का परिचय पाया, तब से **उनकी एक ही मंशा रही है कि किसी भी तरह प.पू. गुरुजी को राजी कर लूँ और साथ ही साथ, प.पू. गुरुजी की महिमा-माहात्म्य का दर्शन कराने के लिए मैं क्या कर दूँ।** 'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव' के समग्र आयोजन के पीछे भी उनकी भावना-उमंग या अरमान यही था और... **इसी ध्येय से अपनी तबियत को भी गिने बिना, दिन-रात देखे बिना, यहाँ जुड़े हुए मुक्तों का साथ लेकर, सभी को सुहृद्भाव से 'एक-दूसरे का स्वीकार' कर लेने का मंत्र देती हुई वे तत्पर थीं...** सबने देखा है कि उनकी यह भावना – उत्साह देख कर प.पू. गुरुजी ने भी किसी प्रकार की रोक-टोक बिना, उत्सव के लिए डोर खुली रख दी थी। फिर भी, मंदिर के निर्माण का कार्य और अन्य संजोगों को देखते हुए – सेवकों की तंगी देखते हुए प.पू. दीदी को फ़िकर रहती कि कैसे लक्ष्य तक पहुँच पाएँगे?

लेकिन, प.पू. गुरुजी तो हमेशा कहते रहते कि **भले ही अपनी गुंजाईश से बाहर का काम उठाया है, पर चिंता नहीं करना-उत्सव अच्छा हो जाएगा और सभी मुक्त तुम से खूब राजी होकर जाएँगे। सच, सब के दिल से पूछें तो यह उत्सव एक चमत्कार के रूप में अद्भुत रीति से, सभी की कल्पना से परे मनाया गया।**

बाद में, हमने प.पू. गुरुजी से पूछा भी कि वे पहले से ही किस वज़ह से इस उत्सव के विषय में विश्वासपूर्वक ऐसा कहते थे। तब प.पू. गुरुजी ने बताया –

आनंदी दीदी की एक मुराद थी–अरमान था और संतों, व्रतधारिओं, भगवाधारी बहनों, गृहस्थों–आबाल-वृद्ध, स्त्री-पुरुषों–सभी मुक्तों ने ***'केवल प्रसन्नता प्राप्त करने की'*** *एक भावना से यह मौका लूट लेने की दृढ़ इच्छा रख कर, इस उत्सव को अपने कुटुंब का ही एक अनमोल अवसर मान कर, बिना किसी रिज़र्वेशन के तन, मन और धन से कार्य किया–तो महाराज को भी साथ में खड़े रहना ही पड़े न... और* ***जहाँ भगवान मौजूद हों, वह 'अच्छा' ही होगा न!***

साथ ही साथ सभी के हृदय की मानो 'उम्मीद' बढ़ाती हुई एक फलश्रुति इस उत्सव में हमें मिली। **३ फरवरी-ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साक्षात्कार की हीरक जयंती** के दिन–जब सभी 'कल्पवृक्ष' के तले बैठ कर, मंदिर की कलशविधि का स्क्रीन पर दर्शन कर रहे थे, प.पू. दीदी ने ध्यान दिया कि कलशों के पास खड़े हुए **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** प.पू. गुरुजी से कुछ कह रहे थे। प.पू. दीदी की ऐसी दिव्य-जाग्रत दृष्टि को कोटि-कोटि धन्यवाद! उत्सव के बाद प.पू. दीदी ने उत्सुकता से प.पू. गुरुजी से प्रार्थना करते हुए पुछवाया कि उस समय प.पू. स्वामिजी उनसे क्या कह रहे थे। कृपा करके वह हमें बताएँ। प.पू. गुरुजी को भी शत्-शत् नमन कि उन्होंने प.पू. दीदी की प्रार्थना स्वीकार करके हम सभी को उत्सव का मर्म – अपनी हृदयगत भावना गुजराती में लिख कर भेजी, जो बाद में २५ फरवरी को पवई में, जब पू. राजुभाई भट्ट के साथ उनका प्राकट्य दिन मनाया गया, तब अपने आशीर्वचन में निम्न प्रकार दोहराई भी–

१९८६ में प.पू. काकाजी के शरीर त्यागने के बाद लगभग डेढ़ वर्ष के बाद मुझे होश आया... तत्पश्चात् १९८६ की २६ जनवरी को प.पू. काकाजी द्वारा दिए आशीर्वचन की कॅसेट मैंने ३५-४० बार सुनी... मेरे मन में यही बात थी कि जब तक काकाजी स्थूल रूप में हमारे साथ थे, तब तक तो मैं अपने में ही खोया हुआ रहा... लेकिन, एक बात खूब पक्की है कि प.पू. काकाजी ने मेरे लिए बहुत परिश्रम किया है, खूब कसनी सही है। कई बार गुणातीत समाज में वे मेरे कारण बुरे भी बने हैं। अब तो मुझे 'स्व का भाव' भूल कर-छोड़ कर, बस उन्हें जो पसंद था, वही करना है।

प.पू. काकाजी को एक रंज था। *उनके ही शब्दों में–*

''एक कलश चढ़ गया, दूसरे कलश की बात अब शुरू करो... गुणातीतभावना वाले साधु बनो...

वैसी 'एकता' हमें स्थापित करनी है... ***हम अभी तक वैसा नहीं कर सके हैं...''***

फिर, आख़िर में दोबारा बोले–दूसरा कलश–'सुहृद्भाव का'!

और बोले–पाँच संत यदि मिल कर करें तो मूसल में से भी संगीत निकल सकता है...

हम अभी तक ऐसा कर नहीं सके हैं...

जो विरोध करे, उसका हम पहले भला चाहें...

यह भावना हम अभी संपूर्ण न भी कर पाए हों, पर करेंगे जरूर-करेंगे जरूर।

इसमें हमें किसी की महोब्बत नहीं है।

हमें शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की शोभा बढ़ानी है...

देश-परदेश में और सभी जगह 'एकता'... वह भी ***'एकता' ऊपर-ऊपर की या दिखाने की नहीं...***

हमें मिलजुल कर चैतन्यभूमिका में अखंड रह कर, *'जहाँ देखो वहाँ रामजी' वाला काम करना है...*

(इस हेतु) एक सूत्र है–

सर्वदेशीयता और अखंड सद्भाव तथा सुहृद्भाव...

प.पू. काकाजी की यह बात कलेजा चीर देती है... ***हमें मिलजुल कर ऐसा 'कलश' चढ़ाना ही है***

और प.पू. काकाजी को जो रंज रह गया था, उसे टालने के लिए जो कुछ भी 'स्वाहा' करना पड़े, वह कर देना ही है

और भूतकाल बिल्कुल भूल कर, प.पू. स्वामिजी के शब्दों के मुताबिक–

'सभी आत्मीय हैं ही, मुझे आत्मीय बनना है' *– इसे लक्ष्य में रख कर वर्तते जाना है।*

इस बार मंदिर की कलशविधि की जब बात निकली, तब भी मैंने यही बात की थी कि

कलश सोने के चढ़ें या न चढ़ें, लेकिन 'सुहृद्भाव' का कलश चढ़ जाए, तो हम पार उतरें...!

और... प.पू. काकाजी मुझे इस हेतु की प्रसन्नता की प्रतीति कराएँ, ऐसा मेरे दिल में रहा करता था...

तो, ३ फरवरी को जब ***प.पू. स्वामिजी*** *इस उत्सव में कलशविधि करने के लिए पधारे तो तुरंत ही उन्होंने मुझसे कहा–*

'ये कलश' हमारे हरिधाम के कलश से भी अच्छे हैं।

मैं तो उन्हें देखता ही रह गया यह सोच कर कि –

मंदिर का हॉल भी प.पू. स्वामिजी पहली ही बार देख रहे हैं। साथ ही बाहर का नक्काशी का काम भी लौकिक रीति से बहुत सुंदर हुआ है – लेकिन इस बारे में प.पू. स्वामिजी कुछ बोले ही नहीं...

प.पू. स्वामिजी ने केवल कलश की ही बात क्यों की ?

दरअसल, मेरे मन में तो काकाजी द्वारा कही गई 'सुहृद्भाव' का कलश चढ़ाने की बात घूमती ही रहती थी।

तो, ***प.पू. स्वामिजी के इन शब्दों से मानो मुझे हल मिल गया कि सुहृद्भावना-एकता के मार्ग पर ही मुझे अग्रसर रहना है।***

[મૂળ ગુજરાતી]

૧૯૮૬માં પ.પૂ. કાકાશ્રીએ શરીર છોડયા પછી લગભગ દોઢ વર્ષે તો મને કળ વળી... ત્યાર પછી ૧૯૮૬ની ૨૬ જાન્યુઆરીએ પ.પૂ. કાકાશ્રીએ આપેલા આશીર્વચનોની કેસેટ મેં ૩૫-૪૦ વાર સાંભળી... મારા મનમાં એક જ રહેતું કે સ્થૂળરૂપે પ.પૂ. કાકાશ્રી હતા, ત્યાં સુધી તો હું મારામાં જ ખોવાયેલો રહ્યો... પણ, એક વાત ખૂબ ચોક્કસ છે કે પ.પૂ. કાકાશ્રીએ મારા માટે ખૂબ પરિશ્રમ કર્યો છે, ખૂબ ભીડો વેઠયો છે. ઘણીવાર ગુણાતીત સમાજમાં મારે માટે ખોટા ય દેખાયા છે. હવે તો મારે 'મારાપણું' ભૂલી-છોડી, બસ એમને જે ગમતું એ જ કરવું છે.

પ.પૂ. કાકાશ્રીને એક રંજ હતો. એમના જ શબ્દોમાં–

''એક કળશ ચડી ગયો, બીજા કળશની વાત હવે શરૂ કરો... ગુણાતીતભાવનાવાળા સાધુ થાવ... એ 'એકતા' આપણે સ્થાપવી છે... **આપણે એ હજુ કરી શક્યા નથી...**''

વળી, છેલ્લે ફરી બોલ્યા– બીજો કળશ-'સુહૃદ્‌ભાવનો'!

ને બોલેલા– સંતો, જો પાંચ મળીને કરો તો સાંબેલામાંથી સંગીત નીકળે...

આપણે એ હજુ કરી શક્યા નથી...

વિરોધ કરે, એનું અમે પહેલું ભલું ઇચ્છીશું...

એ ભાવના અમે સંપૂર્ણ ન કરી શક્યા હોઈએ, તો જરૂર કરીશું–જરૂર કરીશું.

એમાં અમને કોઈની મહોબત નથી.

અમારે શાસ્ત્રીજી મહારાજ ને યોગીજી મહારાજનું શોભાડવું છે...

દેશ-પરદેશમાં ને બધે જ 'એકતા'... તે એ **'એકતા' ઉપર-ઉપરની નહીં...**

આપણે ભેગા મળીને ચૈતન્યભૂમિકામાં જ અખંડ રહીને, જ્યાં જુએ ત્યાં રામજીવાળુ કામ કરવું છે... (આ માટે) એક સૂત્ર છે–

સર્વદેશીયતા અને અખંડ સદ્‌ભાવ ને સુહૃદ્‌ભાવ...''

પ.પૂ. કાકાશ્રીની આ વાતો કાળજું કોરી ખાય છે... **આપણે ભેગા મળી આવો 'કળશ' ચડાવવો જ છે** ને પ.પૂ. કાકાજીને રંજ રહી ગયો એ ટાળવા જે કંઈ હોમી દેવું પડે એ હોમી દેવું જ છે

ને **ભૂતકાળ સદંતર ભૂલી જઈ પ.પૂ. સ્વામિજી**ના શબ્દો પ્રમાણે–

'બધાં આત્મીય છે જ, મારે આત્મીય બનવાનું છે'– એ લક્ષ્ય રાખી વરતે જવું છે.

આ વખતે મંદિરના કળશવિધિની વાત નીકળેલી ત્યારે પણ મેં આ જ વાત કરેલી કે–

કળશ સોનાના ચડે ન ચડે પણ 'સુહૃદ્‌ભાવ'નો કળશ ચડી જાય એટલે આપણું આવે પાર...!

ને... એ વાતે રાજીપાનો અણસાર પણ પ.પૂ. કાકાશ્રી મને આપે એવી હૈયાધારણ રહ્યા કરતી...

તે, આ ઉત્સવે **પ.પૂ. સ્વામીજી** ૩જી ફેબ્રુઆરીએ કળશવિધિના પૂજને પધાર્યા કે તુરંત જ મને કહ્યું–

'આ કળશ' આપણા હરિધામના કળશ કરતાં ય સરસ છે.

હું તો એમને જોતા જ રહ્યો કે–

મંદિરનો હૉલે ય તે પ.પૂ. સ્વામીશ્રી પહેલી જ વાર જુએ છે. વળી બ્હારનું નકશીકામે ય તે લૌકિક રીતે ઘણું સુંદર થયું છે; પણ એ કોઈ અંગે પ.પૂ. સ્વામીશ્રી કંઈ બોલ્યા નહીં...

પ.પૂ. સ્વામીશ્રીએ માત્ર કળશની જ વાત કેમ કરી?

મારા મનમાં આમે ય કળશની વાત તો રમ્યા જ કરતી'તી. તે **પ.પૂ. સ્વામીશ્રીના આ શબ્દો દ્વારા મને જાણે તાળો મળી ગયો કે મારે સુહૃદ્‌ભાવના–એકતાના આ માર્ગે જ અગ્રસર રહેવાનું છે.**

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के **'सुहृद्भाव के कलश'** की भावना केवल इस प्रसंग तक सीमित नहीं रही, बल्कि व्यापक होती नज़र आई... अभी उत्सव का 'वाईंड अप' ऑपरेशन निपटा ही था कि एक दिन **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** का फोन आया और उन्होंने प.पू. गुरुजी से कहा –

*सांकरदा के संतों एवं मुक्तों मिल कर हम करीब चालीस जने दिनाँक के मुताबिक **१३ मार्च** को आपका ७५वाँ प्राकट्य दिन मनाने के लिए आ रहे हैं।*

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी को श्रम न पड़े, इस भावना से प.पू. गुरुजी ने सहज मना भी किया। लेकिन, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की उमंग-उत्साह के समक्ष प.पू. गुरुजी नतमस्तक हो गए।

इस बीच **२२ फरवरी, फाल्गुन शुक्ल-१** तिथि के अनुसार स्थानीय मुक्तों ने सायं पू. गुरुजी का ७५वाँ प्राकट्योत्सव तो मनाया ही। तत्पश्चात् होली, **भगतजी महाराज के प्राकट्योत्सव** एवं **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के स्वधागमन दिन** पर ६ एवं ७ मार्च को 'अक्षरतीर्थ' पर अखंड परिक्रमा का कार्यक्रम हुआ। परिक्रमा करते हुए, इन्टरनेट के माध्यम से, सुरत में **प.पू. साहेब** के अमृतपर्व के उपलक्ष्य में मनाए जा रहे **'संतप्रीति सोपान'** एवं प.पू. साहेब के दर्शन करके, उनकी परावाणी का लाभ भी लिया। दूसरे दिन **८ मार्च धुलेन्डी** एवं **प.पू. साहेब के प्राकट्य दिन** के पावन अवसर पर प.पू. गुरुजी की निश्रा में सभी ने चंदनोत्सव का लाभ उठाया।

धुलेन्डी के बाद तो सभी प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के आगमन के अनुसंधान में मग्न हो गए। रोज ही प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी द्वारा भेजा गया कोई न कोई संदेश आता; जैसे कि – अब इतने मुक्त और आ रहे हैं या ऐसा कार्यक्रम रखना है वगैरह-वगैरह। उनका संदेश आया कि दो दिन के प्रसाद-भोजन का पूरा सीधा-सामान एवं स्टेज की डॅकोरेशन की सॅटींग भी वे ट्रान्सपोर्ट से ले कर आ रहे हैं और संचालन भी उन्हीं की ओर से किया जाएगा।

प.पू. वशीभाई ने प.पू. दीदी को फोन पर बताया भी था कि प.पू. साहेब के प्राकट्योत्सव पर वे जब प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी से मिले, तब भी उनकी बातों में प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव की तैयारियों के विषय में अतिशय उमंग और उत्साह झलक रहा था।

वह घड़ी भी नज़दीक आ गई, जब एड्वान्स पार्टी के रूप में सांकरदा से पू. गुरुजी (निष्कामस्वामी) १० मार्च की दोपहर की फ्लाईट से दिल्ली आ गए। इनके सौहार्द के वश प.पू. गुरुजी स्वयं उन्हें एयरपोर्ट लेने के लिए गए। ११ मार्च की रात की फ्लाईट से प.पू. भरतभाई एवं प.पू. वशीभाई भी इस उत्सव के लिए दोबारा आ गए और देर रात को बाई रोड दो संत एवं चार सेवक सारी सामग्री लेकर पहुँच गए। १२ की सुबह पवई से पू. माधुरी बहन के साथ प.पू. योगिनी बहन भी उत्सव में शामिल होने के लिए पहुँच गईं। दोपहर की

फ्लाईट से **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** तकरीबन २२ मुक्तों के साथ पधारे, जिन्हें रिसीव करने के लिए प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई एवं प.पू. वशीभाई के साथ एयरपोर्ट पहुँच ही गए थे। दोपहर तक ट्रेन द्वारा कुछ सांकरदा के अन्य संत एवं पवई के मुक्त भी पहुँच गए। यूँ सांकरदा मंदिर के सभी संत, युवक और साधक बहनें इस उत्सव को मनाने के लिए एकत्रित हो गए।

सायं प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी एवं प.पू. गुरुजी की निश्रा में भजन संध्या प्रारंभ हुई। प.पू. गुरुजी पर **अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए पू. बापूस्वामी द्वारा तैयार की गई खिचड़ी, छाछ, बाजरे की रोटी, मिर्च एवं गुड़ की थाली लेकर स्वयं प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी प.पू. गुरुजी के पास आए।** प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के चेहरे पर ऐसा आनंद झलकता था कि मैं अपने छोटे भाई के लिए क्या कर दूँ! देख कर ऐसा लगता था कि एक बड़ा भाई अपने छोटे भाई को लाड़ लड़ा रहा हो। **यह दृश्य मन को अत्यधिक छू लेने वाला था।** प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने दो दिन ऐसे कई जॅस्चर्स किए। इनके ऐसे रवैये के पीछे, **प.पू. काकाजी ने जिन विपरीत हालात में सांकरदा केन्द्र की नींव डाली और मंदिर का निर्माण किया था, उसी का, प.पू. गुरुजी के माध्यम से यत्किंचित् ऋण अदा करने की छिपी हुई इनकी प्रबल भावना झलक रही थी।**

भजन संध्या के बाद प.पू. गुरुजी को राजी कर लेने की एक मात्र भावना से मंदिर के अधूरे निर्माण कार्य में जिन मुक्तों ने खूब सेवा की, उन्हें प्रसन्नता के रूप में प.पू. गुरुजी ने प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के वरद् हस्तों ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज एवं पप्पाजी महाराज की भस्म वाली अंगूठी पहनवा कर मानो एक रक्षा कवच दिलवाया। अंत में, प.भ. राकेशभाई एवं प.भ. दिव्यांग ने डेढ़ दिन में 'मुग़ले आज़म' की कव्वाली *'तेरी महफ़िल में किस्मत आज़मा कर हम भी देखेंगे...'* के राग पर आधारित भजन– *'काकाजी के पैगंबर का नज़ारा हम भी देखेंगे...'* कव्वाली के रूप में प्रस्तुत करके प.पू. गुरुजी के ७५वें प्राकट्योत्सव की पूर्वसंध्या मनाई। सांकरदा से आए संतों और पवई के प.भ. एस.पी. खण्डेवालजी द्वारा चूल्हे पर बनाई बाजरे की रोटी एवं **आचार्य की खिचड़ी का प्रसाद पाकर सभी तृप्त ही नहीं हुए, बल्कि उनकी भावना को देख कर आवाक् रह गए।**

१३ मार्च की सुबह नौ बजे प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई एवं प.पू. वशीभाई की निश्रा में हुई महापूजा के उपरांत प.पू. गुरुजी के ७५वें प्राकट्योत्सव निमित्त छोटी सभा की शुरुआत प.भ. राकेशभाई ने नया भजन *'प्रभु से मेल...'* गाकर की। प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी एवं सांकरदा के साधक भाई पू. व्रजलालभाई ने प्रासंगिक उद्‌बोधन किया। तत्पश्चात् सांकरदा की साधक बहनें प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव निमित्त एक भजन बना कर लाई थीं! वह भजन– *'योगीजी के रूप में...'* प.भ. राकेशभाई ने गाया। सांकरदा, पवई, शिकागो मंडल के मुक्तों की भावना को शत्-शत् नमन कि वे इस उत्सव के लिए प.पू. गुरुजी के लिए फिर फेन्सी हार बना कर लाए, जिसे इनके प्रतिनिधियों ने प.पू. गुरुजी को अर्पण किया।

प.पू. गुरुजी ने आशिष वर्षा करके प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के वरद् हस्तों संतों को इस उत्सव की **'रिटर्न गिफ्ट'** के रूप में महापूजा की प्रसादी की हाथ की माला दिलवाई। साथ ही ऐसी प्रासादिक माला एवं 'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव' के उपलक्ष्य में उसके लोगो प्रीन्ट किए गए टीश्यू पेपर्स भी **'रिटर्न गिफ्ट'** के रूप में सभी केन्द्रों की साधक बहनों को भिजवाने के लिए प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के सुपुर्द किए। पवई से प.पू. योगिनी बहन आई थीं, सो उन्हें और सांकरदा से आईं बहनों को प.पू. दीदी ने यह **'रिटर्न गिफ्ट'** दिया। दरअसल, ऐसे टीश्यू पेपर्स भेजने के पीछे प.पू. पप्पाजी की एक अविस्मरणीय स्मृति निहित थी, जो प.पू. दीदी ने सभी केन्द्रों में भेजे पत्र में लिखी थी।

सौ. प्राची शाह-पंडया भी इस उत्सव के लिए अपने नवविवाहित भाई प.भ. कॅप्टन तेजस एवं भाभी सौ. अदिती के साथ आईं थीं। सो, प.पू. गुरुजी ने अपनी प्रसादी का हार **प.भ. तेजस** को पहनाया और अपनी प्रसादी का दूसरा हार उसे अपनी पत्नी **सौ. अदिती** को पहनाने की आज्ञा की। प.पू. गुरुजी द्वारा आशीर्वाद रूप दिए हार को पहन कर नवदंपति के मुँह से उद्‌गार निकले– ***'हमारी सच्ची शादी तो आज ही हुई है और इसी दिनाँक को अब हम अपनी शादी की सालगिरह मनाया करेंगे।'*** धन्य है ऐसे मुक्तों की भावना को। इतना ही नहीं, दूसरे दिन खास याद रख कर दोनों हार स्मृति के रूप में वे अपने साथ लेकर गए।

सभा के अंत में **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** ने आशीर्वाद बरसाए और ***'उजवीए जन्मदिन तमारो आज रे...'* भजन स्वयं गाया।** प्रभुस्वरूप संत के मुख से भजन सुनने का सभी को जो मौका मिला, वह दिल में संजोए रखने की एक दिव्यस्मृति है!

विसर्जन प्रार्थना करके सभी ने प्रसाद लेने के लिए प्रस्थान किया। आज दोपहर का गुजराती भोजन भी सांकरदा के संतों व मुक्तों ने भावपूर्ण हृदय से अपने हाथों से बनाया था। प्रसाद पाकर सभी सायं की सभा की तैयारियों में लग गए।

सायं की सभा का आयोजन मंदिर के पीछे के परिसर में किया गया था। पौने छः बजे जीवनभर न भूल पाएँ, ऐसी एक अनोखी स्मृति सभी को मिली, जब **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** मोर आकृति की **'टमटम'** स्वयं चला कर ला रहे थे। साथ में सबका प्यारा नक्षत्र बैठा था और पीछे की सीट पर प.पू. गुरुजी एवं प.भ. मल्कानी अंकल बैठे थे। धीरे-धीरे गॉल्फ कार ने कमल के फूल की डॅकोरेशन वाले गलीचे पर चलते हुए सभा मंडप में प्रवेश किया और उसी समय प.भ. राकेशभाई, प.भ. दिव्यांग ने *'श्रीजी मिले हैं और स्वामी मिले हैं...'* भजन गाकर उनका स्वागत किया। तब सभी को ऐसा ही लग रहा था कि वाकई, स्वर्ग धरती पर उतर आया है। **स्टेज की पृष्ठभूमि भी सांकरदा के ही संत बना कर लाए थे।** पृष्ठभूमि में ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज द्वारा निर्मित गुणातीत समाज का सर्वप्रथम सांकरदा का मंदिर, पवई मंदिर, दिल्ली मंदिर एवं शिकागो मंदिर दर्शाए गए थे। एक तरफ गुरुहरि योगीजी महाराज की मूर्ति थी, तो दूसरी ओर ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज की मूर्ति आशीर्वाद बरसा रही थी। बीचोंबीच **गुरुहरि योगीजी महाराज** का सूत्र–

'संप, सुहृद्‌भाव और एकता कैसे भी संजोगों में रखनी है...'

और सबसे ऊपर ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का निम्न सूत्र लिखा था –

'महाराज या प्रगट साक्षात् संत के सिवा हम अन्य कोई आधार न लें, यही सर्वोपरि कक्षा का लक्षण है।'

स्टेज के बीच में ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की मूर्ति के दर्शन हो रहे थे और 'अक्षरदेरी' के आकार के आसनों पर प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी एवं प.पू. गुरुजी विराजमान थे। आस-पास प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, सांकरदा के पू. कोठारीस्वामिजी एवं कुछ गणमान्य अतिथि बैठे थे।

आवाहन धुन के साथ सभा की शुरुआत हुई। सर्वप्रथम सांकरदा संतमंडल एवं दिल्ली गुणातीत समाज की ओर से प.पू. गुरुजी को हार अर्पण किया गया। पश्चात् **पू. बापूस्वामी** एवं पानीपत के **प.भ. पुनीत गोयलजी** ने माहात्म्य दर्शन कराते हुए प्रार्थना की। **पू. शाश्वत् मोन्डे** का भी जन्मदिन था, सो मुखपाठ की हुई पाँच 'स्वामी की बातें' उसने सभी को सुनाईं। सांकरदा से ही संतमंडल ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज और गुणातीत समाज का प्रतीक अंकित किया हुआ केक और खूब आश्चर्य की बात थी कि केक काटने के लिए चाकू भी वहीं से लेकर आए थे। केक कटिंग के बाद सांकरदा से ही लाई हुई छोटी-छोटी केक, लीची ज्यूस एवं दिल्ली मंदिर के आत्मीय स्वजन **प.भ. राजुभाई (बोम्बे भेल हाऊस)** द्वारा भेजी गई कचौरी का अल्पाहार सभी हरिभक्तों को दिया गया। इसी दौरान मुंबई से आए प.भ. तेजस ने प्रासंगिक उद्‌बोधन किया।

अब पूरा गुणातीत समाज प.पू. गुरुजी की जीवनशैली से भलीभाँति परिचित हो चुका है। अतः सांकरदा के मुक्त समग्र गुणातीत समाज की ओर से '**दिलदार हार**' बना कर लाए थे। प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के विराजमान रहते हुए वे अकेले तो हार ग्रहण करेंगे ही नहीं, यह जानकर वे एक जैसे दो हार बना कर लाए थे; जिसे प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. बापूस्वामी एवं सांकरदा के मुक्तों ने अर्पण किया। **प.पू. गुरुजी की मर्जी में बरत कर, दिल्ली में नूतन गुणातीत समाज का सर्जन करने में प.पू. दीदी ने जो परिश्रम किया, उससे राजी होते हुए प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने प.पू. गुरुजी की प्रसादी का हार प.पू. दीदी के लिए भिजवाया और प.पू. योगिनी बहन की हाज़िरी में सौ. शीला आंटी ने वह हार प.पू. दीदी को पहनाया।**

हार अर्पण के बाद प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की ओर से एक और दिव्य स्मृति सबको मिली। धुलेन्डी–प.पू. साहेब के अमृतपर्व के प्रथम सोपान के निमित्त प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी सुरत में हुए उत्सव में हाज़िर थे। उन्होंने देखा कि स्टेज पर विराजमान सभी स्वरुपों का पूजन तो हमेशा होता है, लेकिन स्वरुपों के साथ-साथ, वहाँ के स्वयंसेवकों ने उपस्थित सभी मुक्तों का भी पूजन किया था। उन्हें यह भावना खूब पसंद आई और... इस भावना को उन्होंने गुरुहरि योगीजी महाराज की स्मृति के साथ दिल्ली में प्रकट करना चाहा।

गुरुहरि योगीजी महाराज अपनी पूजा में श्री ठाकुरजी को बादाम पूरी का प्रसाद अर्पण करके सभी को देते थे। अतः प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की आज्ञा से सांकरदा से आए संतों, सेवकों, बहनों एवं गृहस्थों ने सभा में उपस्थित सभी मुक्तों का पूजन करके बादाम पूरी का प्रसाद मुँह में खिलाया। पूजन के लिए रोली तक वे सांकरदा से ही लेकर आए थे।

पूजन एवं प्रसाद के बाद सांकरदा के **पू. स्नेहलस्वामी** एवं दिल्ली के **पू. यज्ञप्रियस्वामी** ने माहात्म्य दर्शन एवं प्रार्थना की। हार अर्पण के कार्यक्रम में सांकरदा, पवई और दिल्ली की साधक बहनों की ओर से पुनः प.पू. गुरुजी को विशिष्ट हार एवं मुकुट अर्पण किया गया। उसी समय स्क्रीन पर ब्रह्मस्वरूप काकाजी की हीरक जयंती के समय उन्हें पहनाया गए हार एवं मुकुट पहनी हुई मूर्ति के दर्शन करके सभी को एहसास हो गया कि वे आज भी प.पू. गुरुजी के रूप में हमारे बीच में मौजूद हैं।

हार अर्पण के बाद प.पू. भरतभाई ने आशिष दिए। फरवरी के उत्सव में पंजाब-लुधियाना से **प.भ. कमलदेवजी** के संबंध से **सरदार रिक्कीजी** फोटोग्राफी के लिए खूब अपनेपन से आए थे। ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज या प.पू. गुरुजी से अधिक परिचय न होने के बावजूद प्ले के कई सीन्स देख कर वे रो पड़े थे। पूर्व के संस्कार के बिना तो ऐसा होना संभव ही नहीं है। सो, उनके अपनेपन की भावना को सराहते हुए प.पू. गुरुजी ने उन्हें दोबारा बुलाया और 'हमारा मंदिर' एवं तुलसीपत्र की स्मृति भेंट देकर उन्हें अपनेपन का एहसास करवाया।

वीडियो द्वारा प.पू. दिनकरभाई के आशिष पाकर सभी कृतार्थ हुए और प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की आज्ञा से प.भ. हेमंतभाई मर्चंट द्वारा रचित भजन– *श्रीजी की महिमा की शान है तू...* प.भ. राकेशभाई, प.भ. दिव्यांग एवं प.भ. हृदय ने प्रस्तुत किया। तत्पश्चात्, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने आशीर्वाद बरसाए। दिल्ली मंदिर के पुराने जोगी अक्षरनिवासी प.भ. जानी साहेब का नाती **प.भ. भार्गव (मोन्टु)** विवाह के उपरांत पहली बार मंदिर आया था, सो प.पू. गुरुजी ने उसे अपने वरद् हस्तों शादी की स्मृति भेंट दी।

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी जब सांकरदा से संतों एवं मुक्तों को लेकर प.पू. गुरुजी का ७५वाँ प्राकट्य दिन मनाने दोबारा आए, तो प.पू. गुरुजी भी भक्ति अदा करने से कैसे पीछे रहते! प.पू. गुरुजी ने प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी को हार अर्पण करके, पू. कोठारी उपेन्द्रस्वामी को श्री अक्षरपुरुषोत्तम की मूर्ति, जिनकी रोज महापूजा में पूजा होती थी, भेंट की। साथ ही, पू. निष्कामस्वामी और पू. बापूस्वामी को **'रिटर्न गिफ्ट'** के रूप में थ्री इन वन की मूर्ति – जिसमें एक ओर से ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के, बीच में प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी और दूसरी ओर से ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज के दर्शन हो रहे थे – भेंट में दी!

प.पू. गुरुजी ने सभी पर आशिष वर्षा करते हुए प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के साथ आए संतों-मुक्तों का तो अभिनंदन किया ही, साथ ही फरवरी के उत्सव के बाद राजकोट, मुंबई, पंजाब से दोबारा इस उत्सव के लिए फिर से आए मुक्तों की भावना को भी धन्यवाद दिया। सभा का अंतिम भजन, जो ५ फरवरी को गाना था,

पर समय के अभाव के कारण तब नहीं गा पाए थे, सो आज प.भ. राकेशभाई एवं प.भ. दिव्यांग ने मौका न चूकते हुए वह भजन सभी को सुनाया।

भजन के पश्चात् **प.पू. योगिनी बहन** को उनकी **हीरक जंयती** वर्ष के उपलक्ष्य में सभी की ओर से हार एवं स्मृति भेंट अर्पण की गई। इसी प्रकार **सौ. शीला आंटी का जन्मदिन** १५ मार्च को होने के कारण हर वर्ष की भांति मनाते हुए उन्हें हार एवं गिफ्ट अर्पण किया। प.पू. योगिनी बहन एवं सौ. शीला आंटी ने मिल कर केक कटिंग की। तत्पश्चात् प.भ. मल्कानी अंकल ने सभी का आभार व्यक्त किया और अंत में सत्संग के युवकों ने भावनृत्य प्रस्तुत करके सभा का विसर्जन किया।

सभी जानते हैं कि **श्रीजी महाराज** ने काठी-दरबारों की वेशभूषा, खान-पान अपना कर, यहाँ तक कि घुड़सवारी द्वारा उन्हें अपने से जोड़ा। इसी प्रकार **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** भी जहाँ गए वैसा पहनावा धारण करके, उन्हीं की बोली में उन्हें प्रभु में जोड़ा। उदाहरणार्थ ताजपुरा जैसे गाँव में गए, तो केड़िया और पगड़ी धारण की। पंजाब के माहौल में सिक्खों की पगड़ी पहन कर अनोखी मूर्ति दी और लंडन-अमेरिका जैसे देशों में कोट-पेन्ट-हॅट पहन कर अंग्रेजी भाषा का उपयोग किया। इसीलिए **प.पू. साहेब तो उन्हें कॉस्मोपॉलिटन साधु कहते हैं।** इसी प्रकार मुंबई के माहौल में पले-बड़े हुए और गुजराती होने के बावजूद, उत्तरभारत में विकास करने के लिए-सभी को अपनापन देते हुए **प.पू. गुरुजी** ने हिन्दी भाषा को महत्त्व दिया। कोई सिक्ख आएँ तो 'सत् श्री अकाल' कह कर, मुसलमान को 'सलाम वालेकुम' कह कर अपनत्व दिया, कोई विदेशी आए तो अंग्रेजी में स्वामिनारायण फिलॉसोफी का ज्ञान दिया। **ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज ने तो उन्हें कॉस्मोपॉलिटन साधु कह कर नवाज़ा भी!** अतः प.पू. गुरुजी का ऐसा व्यक्तित्व दर्शाने के लिए इस भावनृत्य के भजन में पाँच भाषाओं गुजराती, मराठी, अंग्रेजी, हिन्दी और पंजाबी का समावेश किया गया था। प्रसाद लेकर सभी ने प्रस्थान किया।

उत्सव में सभी को दर्शन देकर १४ मार्च की अर्ली मॉर्निंग की फ्लाईट से प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई और पू. अश्विनभाई मुंबई लौट गए। सुबह करीब साढ़े ग्यारह बजे बाई कार एवं ट्रेन से जाने वाले संतों तथा मुक्तों ने विदाई ली। दोपहर करीब तीन बजे प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, सभी संतों, युवकों एवं बहनें एयरपोर्ट के लिए रवाना हुए। उन्हें भावभरी विदाई देने के लिए प.पू. गुरुजी स्वयं एयरपोर्ट गए। पू. योगिनी बहन की फ्लाईट उसी समय की थी, परंतु लेट होने के कारण वह फ्लाईट रात को आठ बजे गई। इस दौरान पू. योगिनी बहन एयरपोर्ट के अंदर बैठे हुए लगातार बहनों के संपर्क में तो रहीं ही, लेकिन प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी उनकी तबियत के विषय में खूब चिंतित रहे।

यह केवल १३ मार्च के उत्सव की पूर्णाहुति मात्र ही नहीं थी, बल्कि 'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव' की स्मृतियों के मर्म को हम सभी अपने मन-मस्तिष्क में शाश्वत् बनाएँ, ऐसी अनमोल धरोहर गुणातीत स्वरुपों ने दे दी!

मूलतः देखें, तो दिव्य स्मृतियाँ प्रदान करने की रीति तो भगवान स्वामिनारायण ने ही बख़्शिश दी है! श्रीजी महाराज का जीवन चरित्र पढ़ें, तो **चैत्र शुक्ल नवमी यानि–रामनौमी**, जो अब की बार **१ अप्रैल** को सभी ने मनाई, के मंगलकारी दिन 'छपिया' गाँव में उन्होंने अवतरण किया और... वहाँ एवं अयोध्या में रहने के बाद गुजरात की पवित्र भूमि को अपना कार्यक्षेत्र चुन कर वहाँ रहे। अपने पूरे जीवनकाल के दौरान उन्होंने हर एक को लगातार किसी न किसी रूप में अपनी स्मृति दी। इसके पीछे उनका केवल एक ही हेतु था कि **सांसारिक जीव जीवन के दैनिक क्रिया-कलाप में ही डूबे न रह कर, उन स्मृतियों के सहारे अपने जीवन को प्रभु से भर कर धन्य करें।** श्रीजी महाराज के समय के ऐसे दो दृष्टांत खूब प्रेरणा के स्रोत हैं–

* श्रीजी महाराज के समय के प.भ. मावाभाई केवल सूखी रोटी खा रहे थे–साथ में कुछ दाल-सब्जी कुछ भी नहीं था। तब किसी ने पूछा– *'मावाभाई, तुम अकेली रोटी क्यों खाते हो?'* वे सहजता से बोले– *'मैं रोटी अकेली नहीं खाता, महाराज की मूर्ति को याद करके खाता हूँ।'*

  प.भ. मावाभाई का उत्तर बाह्यदृष्टि से साधारण-सा लगे या यूँ मान लिया जाए कि प्रीति के लक्षण वाले तो ऐसे ही बड़ी-बड़ी डींगे मारते हैं। परंतु इस छोटे-से प्रसंग की गहराई नापेंगे तो सच, **प्रभु की मूर्ति को याद किए बिना हम जो भी करेंगे, उससे हमारे प्रारब्ध बंधते जाएँगे; जबकि ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के कहे अनुसार प्रभु या उनको धारे हुए प्रगट संत को याद करके जो भी करेंगे, उससे हमारे पुराने प्रारब्ध धुल जाएँगे, साथ ही वे प्रारब्ध बंधने भी नहीं देंगे।**

* वड़ताल में एक हरिभक्त ने संतों-हरिभक्तों को अच्छे पकवान का भोजन कराने की इच्छा प्रकट की। उसका भाव निहार कर श्रीजी महाराज ने पंगत में बैठे हुए सभी संतों-मुक्तों को आग्रहपूर्वक खुद परोसा। इतने में एक संत जो गाँव में घूम कर आया था, उसने जाना कि सब कुछ परोसा जा चुका है। सो, महाराज ने उस संत से कहा–

  'तुम पत्तर लेकर पंगत में घूम कर सभी से थोड़ा-थोड़ा भिक्षा के रूप में माँग लो।'

  उस संत ने ऐसा ही किया, तो उसका पत्तर पकवानों से भर गया।

  तब महाराज ने उस संत को पंगत के बीच में खड़ा कर हाथ में पत्तर लेकर मर्म समझाया–

  'देखो, सभी के पास से झुक कर ग्रहण किया, तो पूरा पत्तर अच्छे पकवानों से भर गया। आप सभी निर्मानी होकर सभी में से अच्छे-अच्छे गुण ग्रहण करो, तो पूरा जीवन सद्गुणों से भर जाए।'

सच, **फरवरी** और **मार्च** में हुए इन उत्सवों को निरंतर याद करते हुए भी गीताजी के अट्ठारहवें अध्याय के ७७वें श्लोक का स्मरण हो आता है–

'संस्मृत्य संस्मृत्य... विस्मयो मे महान्राजन् हृष्यामि च पुनः पुनः'

अर्थात्– ...पुनः-पुनः स्मरण करके मेरा चित्त **विस्मय** से भर गया है और मैं बार-बार **हर्षित** हो रहा हूँ।

हमारा हर्ष केवल यहाँ तक सीमित न मानें। दरअसल, **'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव' के दौरान हुई कथावार्ता एवं भगवत्स्वरूप संतों के आशीर्वचन एक 'रीफ्रेशर कोर्स' थे।**

चार दिन के महोत्सव के दौरान **'गुणातीत भावना'** को उजागर करती खूब मार्मिक कथावार्ता हुई थी।

सो, एक पुस्तक के रूप में 'भगवत् कृपा' का यह अंक आपको मिल रहा है।

प.पू. गुरुजी ने तो पत्रिका में कथावार्ता के मुद्दे ही देने के लिए कहा था;

परंतु, **प.पू. दीदी** ने जब ध्यान से सबके रॅकॉर्डेड आशीर्वाद और कथावार्ता को सुना, तो उन्हें ऐसा हुआ कि–

'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव' हमारा एक ऐतिहासिक प्रसंग है

और...

प.पू. गुरुजी की प्रार्थना स्वीकार कर, सभी स्वरूपों ने तहेदिल से आशीर्वाद बरसाए हैं

एवं

संतों व मुक्तों ने भी खूब खुले मन से अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं हैं।

सच में तो जो बातें हुईं, उन्हें 'पूरे गुणातीत समाज की गौरवगाथा' ही कहा जाए।

सो, भले ही परिश्रम करना पड़ेगा, समय भी लगेगा और प्रिन्टिंग का खर्च भी बढ़ जाएगा,

पर, इसे डिटेईल में ही दिया जाए।

सामान्यतः सभा में हम अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हैं, तो मन में कई विचार उमड़ आते हैं,
जो कभी-कभी बातों में सिक्वन्स नहीं रहने देते। गुजराती वक्ताओं को हिन्दी भाषा की तकलीफ भी रही है।
हम आसानी से समझ सकें इस हेतु, उनके तात्पर्य को बरकरार रखते हुए, भाषा में सुधार करके
ध्वनिमुद्रण से संकलित कथावार्ता यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं...

तो, आइए–

संतों-मुक्तों के उद्‌गार एवं प्रगट स्वरुपों की परावाणी का **'निदिध्यासन'** करते हुए भीतर में टटोलें
और... **निजी कसर को ढूँढ कर उसे टालने के लिए,**
इस अविस्मरणीय आनंद के प्रत्येक पल को अपने अंतर में सदैव के लिए क़ैद करते हुए,
जरूरी लगे तो **'ईपॉक मेकिंग यु-टर्न'**,
जिसे प.पू. काकाजी **'ऑनरेबल रिट्रीट'** कहते –वह लेकर भी
गुरुहरि योगीजी महाराज के इस **प्राकट्‌योत्सव**
एवं **प.पू. गुरुजी के भागवती दीक्षा दिन** निमित्त प्रार्थना करें
और... **'विहंग मार्ग'** से–**'बाइ एयर' 'सद्यमुक्ति'** की ओर शीघ्र अग्रसर होते हुए
१२ जून को ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का प्राकट्‌योत्सव मनाएँ...

भगवा ले वीरांगनाओं ने डंका भारी बजाया ...

काकाजी को करें वंदन, पप्पाजी को करें वंदन...

अमृतमय
ये कलश है आया,
बल्ले भई हो
लख-लख बधाईयाँ !

बहनें दादुभाई की

2 फरवरी 2012– ब्रह्मस्वरूपिणी स्त्रीशक्ति

गुणातीतभावना प्रगटाने, वीरांगनाएँ माया से लड़ीं...

दिल्ली - 2012
बातें सुनें, इसमें क्या हरजा है?
– गुरुहरि योगीजी महाराज
की निश्रा में महिला सम्मेलन

‘आनंदोत्सव’

संबंध मिला सर्वोपरि का, वर्तन से हमारे बयां होगा...
आगाज़ अलौकिक ऐसा है, फिर कल से नज़ारा क्या होगा...

काकाजी के ही अनुग्रह से साधु मिले हैं लूटने जैसे...

2 फरवरी 2012 – साक्षात्कार हीरक जयंती की पूर्वसंध्या पर बहनों की सभा

सौ. शोभना भाभी (दिल्ली)

बंसरी दीदी ने स्वागत की बात तो की, पर एक संयुक्त कुटुंब इकट्ठा हुआ है, उसका स्वागत क्या करना? काकाजी कहते–

स्नेही को सत्कार क्या और प्रेमी का अनादर क्या?

फिर भी, आज सब स्वरूप पधारे हैं, तो उनके पास मांगने का अवसर है कि **हम जो सत्संग करें, उससे गुरुजी और दीदी राजी रहें; सत्संग में हमारी कोई भी प्रवृत्ति वृत्ति के आधीन न हो।**

गुरुजी का जीवन देखें, तो शांतिभाई साहेब ने बहुत अच्छे शब्दों में सौरभ में लिखा था–

गुरुजी ने ज्ञानगरीबी धारण की है *और उन्होंने* ***वो ज्ञान जीवंत किया है।***

शांतिभाई साहेब की इन दो बातों में गुरुजी का पूरा जीवन आ गया... **उन्होंने कभी भी अपना कुछ निजी नहीं रखा।** भक्तों के लिए एक छोटी सुई से लेकर अपनी गाड़ी तक का उन्होंने **अलगाव नहीं रखा और आनंदी दीदी व बहनों ने भी इस बात को संभाला है।**

हमारी अक्षरज्योति की बहनें भी हम गृहस्थों के सुख से सुखी और हमारे दुःख से दुःखी। कोई एक सामान्य रोग भी यदि बहनों को पता चले, तो सब उसमें लग जाती हैं। **किसी भी चीज का – तन-मन-धन से भी बहनों ने कभी भी गृहस्थों के साथ कोई अलगाव नहीं रखा।**

अक्षरज्योति में डेढ़-दो महिने से ड्रामा की प्रॅक्टिस चल रही थी। वहां मानो शादी का माहौल था। १००-१५० हरिभक्त अक्षरज्योति के आँगन में प्रॅक्टिस करते थे। **बहनों ने अपने बच्चों की तरह उन सभी को रखा है।** कितनी बार तो चाय, कॉफी, नाश्ता; ४००-५०० थेपले बनाकर रखते थे कि नमकीन से बच्चों का पेट नहीं भरता। कोई ऑफिस से सीधा आया हो, कोई कॉलेज से आया हो... कितने दिनों से तो बहनें रात को सोई भी नहीं हैं।

बहुत सालों पहले गुरुजी से गार्गी ने पुछवाया था कि भजन करते वक्त क्या मांगना चाहिये? तब वो बारह साल की थी। तो गुरुजी ने कहलवाया कि–*मैंने बापा से जब यह पूछा था, तो बापा ने मुझसे कहा था कि– 'आपका जैसा है वैसे स्वरूप की पहचान कराना' – यह एक ही चीज भजन करते हुए मांगनी।*

नया-नया सत्संग होता है, तब तो हम खूब उपशम में बरतते हैं न! तो तब यूँ होता था कि ओहो! स्वरूप क्या पहचानना, हमने तो गुरुजी को भगवान मान ही लिया है! पर जब प्रसंगों में से गुज़रना पड़ता है और जैसे आजकल गुरुजी खूब लगे हुए हैं कि सालों पहले स्वामिनारायण भगवान को कोई सर्वोपरि नहीं मानता था, वो स्थापित हो गया। फिर गुणातीत को 'अक्षर' नहीं मानता था, वो भी सब मानने लगे। **अब धाम, धामी और मुक्तों में दिव्यभाव रखने की बात है।**

मैं ऐसा मानती हूँ कि **हमने अगर गुरुजी को भगवान का स्वरूप माना हो, तो उनके भक्त दिव्य माने ही जाएँ।** आज प्राईम मिनिस्टर के बेटे के साथ हम जैसे-तैसे नहीं बरत पाएंगे। पता है कि वो प्राईम मिनिस्टर का लड़का है। पर, **हक़ीक़त में तो उन्हें भगवान का स्वरूप नहीं माना, इसलिए उनके भक्तों को दिव्य नहीं मान पाते।** बस, आज साहेब, हंसा दीदी, प्रेम बेन सभी स्वरूपों को दिल से प्रार्थना करते हैं कि हमें भजन की गरज रहे, लापरवाही न रहे।

आज हम गुरुजी का ७५वां प्रागट्य दिन मना रहे हैं; **दिल्ली के लिए उन्होंने हमें अपने ४०-४५ साल दिए हैं।** बदले में हम ऐसा वर्तें, अंतर से उन्हें दिव्य मान पाएं, भगवान का स्वरूप मानें।

आज आनंदी दीदी सहज और सरल जीवन जीती हैं। जब हम किसी मुक्त के साथ वर्तते हैं, तो दीदी याद आती हैं कि इस जगह दीदी होतीं, तो उनका क्या रिएक्शन होता? **हम में ऐसा कोई गुण नहीं-बुद्धि नहीं है; तब भी हम दीदी की तरह सामने वाले मुक्त का स्वीकार क्यों नहीं कर सकते?** बस, आज सभी स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना कि ऐसा भजन करने की हमें गरज रहे और हमारे जीवन में जो लापरवाही है, वो न रहे ताकि गुरुजी, दीदी और आप सबको अंतर में हाश कर दें...

प.पू. योगिनी बहन (पवई)

...गुरुजी ने महोत्सव का नाम भी अच्छा रखा है– **'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव'**! जहां देखें, वहां योगीजी महाराज के सभी भक्तों को–जो नहीं हैं उनकी फोटोग्राफ्स देख रहे हैं और जो हैं उन्हें भी गुरुजी ने कितना याद रख-रखकर बुलाया है। योगीजी महाराज ने काकाजी को १९५२ में गोंडल मंदिर में जब साक्षात्कार कराया, तो काकाजी की एक कौटुम्बिक भावना थी कि–

मुझे जोगी से जो मिला, वो मैं मेरी बा और बहन को बाँटूगा।

बापा ने उन्हें दो बादाम दिए थे। पहली बार जो बादाम दिया, उसमें से काकाजी ने एक बादाम आधी-आधी करके अपनी बा और बहन को दिया, तो बापा ने कहा–

दादुभाई वो झेल नहीं पाएँगे। आपके लिए दोबारा दे रहा हूँ और अब आप मेरे सामने इसे खा लेना। आपका हो जाएगा, तो उनका हो ही जाएगा; आप उन्हें करा सकेंगे।

यूँ बहनों के लिए भगवान भजने की राह खुली और सचमुच हम काकाजी और पप्पाजी के बहुत ऋणी हैं। जब योगीजी महाराज ने काकाजी को साक्षात्कार कराया, तब काकाजी ने पूरे समाज को योगीजी महाराज की पहचान करवाई कि ये कोई सामान्य साधु नहीं हैं, भगवान स्वामिनारायण का भव्य स्वरूप पृथ्वी पर मानवरूप में विचरण कर रहा है। इस प्रकार उनके साथ जो जुड़े हुए थे, उन सभी को बापा में जोड़ा।

१९५२ में साक्षात्कार के बाद ५४ में पप्पाजी अफ्रीका से पधारे और दोनों भाइयों ने मिलकर बापा को पूछा– ***बापा, बहनें भगवान भज सकती हैं क्या?***

बापा बोले– ***क्यों नहीं, बहनें दादुभाई की बातें सुन सकती हैं।***

सोनाबा शास्त्रीजी महाराज की बड़ी भक्त थीं। वे उनमें इतनी एकलक्ष्य रहती थीं कि शास्त्रीजी महाराज का मैसेज ऑटोमॅटिक टैलीपैथी से उन्हें मिल जाता था। शास्त्रीजी महाराज ने काकाजी और कांतिकाका को भाई-भाई बनाकर जोड़ा। यूँ ये चार विभूतियाँ इकट्ठी हो गईं... योगीजी महाराज ने अपनी सम्मति देकर अपना ये कार्यभार काकाजी और पप्पाजी को सौंपकर इस **नए युग कार्य की शुरुआत की।** ज्योति बहन, तारा बहन और बा ने काकाजी और पप्पाजी में इतना निर्दोषभाव रखा, तो आज सब बहनों के लिए भगवान भजने का बहुत ही सानुकूल हो गया। अगर बा ने बापा के वचन में विश्वास न रखा होता, तो यह नामुमकिन था। बाद में १९५५ में हंसा दीदी और उसके बाद देवीबहन आए। इस प्रकार बहनों के भगवान भजने के लिए इमारत के चार पिलर्स इकट्ठे हो गए और तब से हम सबके लिए भगवान भजने की राह खुली हो गई।

तब **बापा** ने कहा था–***५१ बहनें भगवान भजेंगीं।***

तो 'गुणातीत ज्योत' में सबसे पहले ५१ बहनें भगवान भजने के लिए आईं। आज तो उसमें से हर सेंटर पर बहुत सारी बहनों का विकास हो रहा है... इसके लिए काकाजी और पप्पाजी के हम बहुत ही ऋणी हैं।

...उसी राह पर चलते हुए यहां गुरुजी ने योगीजी महाराज की कौटुम्बिक भावना के सिद्धांत से सभी गृहस्थ भाभियों के साथ यहाँ काकाजी से जुड़ी बहनों को मिलाकर यह कार्य शुरू किया। यहाँ तो बिल्कुल नई शुरुआत थी। **एक-एक साधक बहन को अपनी बेटी के समान गृहस्थों को सौंपी है। ऐसा करके सभी में कुटुंबभावना को व्यापक बनाया है** और योगीबापा का 'संप, सुहृदभाव और एकता' का सिद्धांत हमें दिखाई देता है। गुजरात और मुंबई में तो पॉसीबल था कि काकाजी और पप्पाजी के साथ रहकर हमने साधना की। मगर **पंजाब में जहां स्वामिनारायण के नाम तक को कोई नहीं जानता था, ऐसी जगह पर गुरुजी को बिठा कर काकाजी ने ये नई शुरुआत की और गुरुजी की निश्रा में ये बहनें आज भगवान भज रही हैं। आनंदी दीदी को सचमुच खूब-खूब धन्यवाद है** कि उन्होंने भी भगवान भजने का संकल्प किया और बहुत सारी कठिनाइयां झेलकर इसे साकार किया। गुरुजी का जो मिशन था, उस राह पर चल-चलकर आज अच्छी तरह से उनका कार्यभार संभाल रही हैं। तो, धन्यवाद है आनंदी दीदी और सभी बहनों एवं सभी भाभियों को भी।

...हर जगह से सबको याद कर-करके गुरुजी ने इधर इकट्ठा किया है। जो न आ सकें, ऐसे भक्तों को भी आनंद बाँटने के लिए बुलाया है। तो, आज गुरुजी का हम जितना उपकार मानें, उतना कम है।

महाराज ने कहा था–*बहनों को एकांतिक धर्म सिद्ध कराना बड़ी कठिन बात है।*

मगर योगीजी महाराज बोले थे–*जिन्होंने लिखा है कि यह नहीं हो सकता, वे ही आज बोलते हैं कि हो सकेगा, मगर तकलीफ बहुत झेलनी पड़ेगी।*

तकलीफ झेल-झेलकर काकाजी और पप्पाजी ने हमारे लिए आज बहुत सुगम कर दिया है। आज तो गन्ने का बीच वाला भाग मिला है, कहीं भी कोई तकलीफ नहीं है। कम्प्यूटर का ज़माना है; सब सुविधाओं के साथ हम भगवान भज सकते हैं। आज के शुभ दिन सभी गुणातीत पुरुषों के चरणों में प्रार्थना है कि जो-जो बहनें भगवान भजने का संकल्प करके जी रही हैं, आ रही हैं, वो लक्ष्य हम सिद्ध कर पाएँ–ऐसी प्रार्थना।

प.पू. पदु बहन (गुणातीत ज्योत)

पिछले साल हम आए थे, तब हम सबको **प.पू. गुरुजी ने हमेशा के लिए ज़ाहिर आमंत्रण दिया था कि हर साल सब यहाँ आया करो,** हम सब यहाँ आनंद करेंगे। योगिनी बहन ने बहनों के इतिहास की सारी बात बहुत अच्छी की। काकाजी-पप्पाजी ने अगर यह कार्य शुरु न किया होता, तो हम कहाँ होते, क्या करते होते, उसकी कल्पना ही नहीं होती।

गुरुजी ने यहाँ आकर जो तकलीफ के साथ कार्य शुरु किया, उसके फलस्वरूप इतना माहात्म्य से भरपूर पूरा समाज दिखता है! बुद्धि बंद करके वचन पालने के लिए दिल्ली आए और भगवान ने काम किया। पप्पाजी हमेशा कहते थे– *महाराज अपना साज लेकर ही पधारते हैं।*
जैसे ज्योत के लिए ज्योतिबहन, ताराबहन, दीदी और देवीबहन को लेकर पधारें। चार बहनों द्वारा कार्य शुरु हुआ और... बहनों के लिए साधना आसान हो गई।

ऐसे यहाँ बहनों के लिए **आनंदी दीदी** के रूप में ऐसा पात्र रख दिया। इतनी कम बहनें हैं, पर इतना अच्छा काम कर रहीं हैं, वो हम सब दर्शन कर रहे हैं। **यहां जो बैठने की व्यवस्था थी, उसी से ही पता चलता हैं।** अभी भाभी ने गुरुजी की यथार्थ महिमा की एक ही वाक्य में बात की कि गुरुजी ने **ज्ञानगरीबी** ग्रहण की है और **ऐसा ही उनका सर्जन आज आनंदी दीदी हैं!** उन्हें यहाँ बैठने के लिए बहुत विनती की, उन्होंने तो नहीं स्वीकारी। पर उनकी बहनें कैसी! हम सब अपने हिसाब से बैठ गए, पर वे आकर हमें कहती हैं कि अगर आप चाहते हो कि दीदी सभा में आराम से बैठकर लाभ लें और दर्शन दें, तो हम आपसे हाथ जोड़कर विनती करते हैं कि उन्हें जहाँ हमने सेट किया है, वहीं बैठने दें। **यहाँ अचंभा होता है! वर्ना, हर एक को यूँ होता है कि मेरे स्वरूप का स्थान सबसे पहले हो, फिर तो सब हैं ही।** उसके बजाय, जो **काकाजी-पप्पाजी ने हमें जीकर बताया कि सामने वाले को बड़प्पन दो, तो तुम्हारा बड़प्पन अपने आप बढ़ जाएगा।** आनंदी दीदी यहाँ नहीं बैठीं और वहाँ बैठे, उसमें उनका और गुरुजी का बड़प्पन बढ़ गया। ऐसी छोटी-छोटी प्रॅक्टिकल बातों से **वर्तन में माहात्म्य से कार्य किया है। पप्पाजी हमेशा कहते कि– *मुझे बातें नहीं जँचती। पर, आप क्या जीते हो, उसका परिणाम मुझे जँचता है* और... वो परिणाम आज हम देख रहे हैं।**

आज हमें जो भाई गाड़ी में लेकर आए, खाना खाकर हम ठहरने की जगह पर जा रहे थे, रास्ते में खूब ट्राफिक था। पुलिस ने गाड़ी को यू-टर्न नहीं लेने दिया। इतना लंबा घूमकर हम उतारे पर पहुँचे। मैंने भाई से पूछा–तुम्हारा तो अभी खाना भी बाकी होगा न! तो वो हँस पड़े। उन्होंने कहा–मैं सुबह साढ़े तीन-चार बजे से ड्यूटी पर हूँ। एयरपोर्ट गया, फिर स्टेशन गया, अब आपको छोड़ कर फिर एयरपोर्ट जाना है। मैंने पूछा आप लोग तो दो-ढाई महीने से ऐसे ही होंगे ना! इतनी सारी तैयारी, इतना बड़ा समैया! तो बोले एक तरफ उत्सव की तैयारी, एक तरफ कार्यक्रम की तैयारी... दो महीने से लगभग। मेरी तो क्या बात है, पर जो छोटे-छोटे युवक, सुबह से सेवा में लगते हैं, रात को डेढ़-दो बजे हम खाना खाते हैं। सीधे आते हैं, सेवा में लग जाते हैं फिर प्रॅक्टिस! प्रॅक्टिस में से टाईम मिलता है, तब थोड़ा खाते हैं।

छोटी-छोटी लड़कियाँ सीधी प्रॅक्टिस में से 'जय स्वामिनारायण' कहने आईं थीं। मैंने उनसे पूछा– तुम लगातार प्रॅक्टिस करती हो? वे बोलीं–हाँ, हम जॉब करते थे, अभी छोड़ दी है। पूछा क्यों? तो उन्होंने बताया कि वो छुट्टी नहीं दे रहे थे। इससे भी अच्छी जॉब मिल जाएगी। हम गुरुजी और दीदी के वचन से इस उत्सव की सेवा करेंगे, जॉब की हमें चिंता नहीं है। ये सेवा कहाँ से!

इस सेवा की महिमा गुरुजी ने अपना जन्मदिन मनाने के लिए नहीं गाई। एक-एक गुणातीत स्वरूपों को उन्होंने जो आमंत्रण दिया है और जो यहाँ पधारने वाले हैं, उनके लिए हम से क्या नहीं हो सकता–वो जो उनके अंतर में माहात्म्य है, वो माहात्म्य उनकी बातों में अविरत बहा करता है।

जो नए हैं, उन्होंने काकाजी-पप्पाजी के तो दर्शन भी नहीं किए हैं, उनके अंतर में भी काकाजी-पप्पाजी का जो माहात्म्य है कि हम ऐसी भक्ति करेंगे, तो गुरुजी राजी होंगे। मतलब, उन्हें भी पता चल गया है कि गुरुजी और आनंदी दीदी किसमें राजी होते हैं।

ये हमें तैयार माल मिला है... भाभी ने जो बात की कि गुरुजी से एक बहन ने पुछवाया कि हमें क्या प्रार्थना करनी? गुरुजी ने कहा– *मैंने बापा से पूछा था और उन्होंने कहा कि आपके स्वरूप की पहचान कराना।* हमें– अभी के यंगस्टर्स को तो यह भी नहीं पता कि 'स्वरूप की पहचान' का मतलब क्या? पर, इतना अच्छा तैयार मक्खन दे दिया है! तो, **वचन से जितना दौड़ा जाए उतना दौड़ा करो, स्वरूप की पहचान अपने आप हो जाएगी। हमें पहचान करने के लिए माँगना भी न पड़े, इतना इन स्वरूपों ने यह रास्ता आसान कर दिया है।**

ज्योतिबहन, ताराबहन, दीदी और देवीबहन ने बहनों के लिए जो राजमार्ग खुला कर दिया, कैसी विपरीत परिस्थितियों में उन्होंने साधना की! उस वक्त ताड़देव में काकाजी-पप्पाजी की महिमा किसको थी? एक घर में रहकर साधना करनी और उस छोटे से घर में एक साथ १८-२० बहनें! मधुबेन, दयाबेन, सवीबेन, शोभनाबेन ये सभी स्वरूप काकाजी, पप्पाजी और बा–बड़ों की ओर दृष्टि रख कर, उनकी आँख का इशारा समझकर जीएं! आज हम कितने स्वरूपों का नाम लेंगे? भाइयों में देखें तो साहेबजी, दिनकरभाई, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, गुरुजी! **वे अपने वर्तन से महिमा गा रहे हैं।** हमें किसी को वचनामृत का पता नहीं है। पर, **वचनामृत के पन्नों पर जो लिखा है, वो इन स्वरूपों ने हमें जीकर बताया है। उनका वर्तन ही हमारे लिए एक वचनामृत है और इसलिए हमारे लिए साधना बहुत ही आसान हो गई है।**

आज जो पूरा समाज यहाँ आत्मीयता से इकट्ठा हुआ है, वो उनके अंतर की भावना की वजह से है। वर्ना गुजरात में तो दिल्ली की ठंडी का वर्णन इतना है कि आने वाला अपनी टिकिट कॅन्सल करा दें कि–भई, ५ डिग्री में अपना काम नहीं। पर टिकिट कॅन्सल करवाने की बजाय, सब हरिभक्तों को वहाँ से यहाँ आए हुए देखकर पता चलता है कि इन स्वरूपों का भाव कैसा! इन स्वरूपों का कार्य कैसा! हम तो बस उन्हें याद ही करते रहें, उनकी तरफ महिमा से देखते ही रहें!

सचमुच, हमें और कुछ करने जैसा नहीं है! यहाँ जो कार्यक्रम हुआ, उसमें दीदी के बनाए भजन में जो आख़िरी लाईन थी– **गुरुजी की स्मृति के बिना जीए, तो क्या जीए?** वो एक ही लाईन हमारे लिए खूब

काम की है। गुरुजी, उनके समाज के लिए; हम हमारे स्वरूप के लिए – जहाँ हैं वहाँ। सभी गुणातीत स्वरूप एक ही हैं, खाली नाम अलग हैं। जिसे जहाँ जोड़ा है, वहाँ उसके लिए यह लाईन खूब काम की है। **इस एक लाईन ने पूरे महोत्सव की समरी हमें दे दी। अपने गुरुहरि – अपने स्वरूप के मनन-चिंतन के बिना एक पल भी जो जीए, वो हम जीए नहीं हैं; अपना मरण ही है।** हम अखंड उनकी स्मृति में रहें। उनके वचन का अनुसंधान रखें।

हर वक्त हम से जीया जाएगा, ऐसा नहीं है। पर हमारे लिए **इन स्वरुपों की उष्मा, आशीर्वाद, संकल्प और सतत् उनकी महापूजा हमारे पीछे है। इसीलिए हम बिल्कुल भी फेईल हुए बिना, हिंमत और श्रद्धा से, वे जो कुछ कराना चाहते हैं, वो करने की केवल रुचि रखें और उन्हें महिमा से देखते रहें, बस इतना ही हम करें।**

दीदी ने पहले कहा और आमंत्रण कार्ड में भी आया था कि काकाजी, पप्पाजी को शिविर बहुत पसंद थीं और इसलिए हमें ये तीन दिन के उत्सव में शिविर करनी है। **प्रत्यक्ष के उपासकों के लिए सच्ची शिविर इतनी ही है कि प्रत्यक्ष स्वरूप का हम सतत् अनुसंधान रखें।** उनकी मर्जी, वही हमारा जीवन हो। उनकी मर्जी नहीं है, वो हम से हो ही न सके। पप्पाजी कहते – *कुछ भी करने से पहले एक सेकॅन्ड विचार करो कि यह मेरे गुरुहरि की मर्जी है? उसमें भक्ति है? भक्ति है तो करना है, भक्ति नहीं है तो सब कुछ छोड़ देना है।* बस, यह एक बात हम सबके जीवन में दृढ़ हो जाए।

...नड़ियाद – मूर्तिप्रतिष्ठा महोत्सव में स्वामिजी के कैसी तबियत में दर्शन किए! वर्ना स्वामिजी की तो प्रवचन में आवाज़ कैसी होती है! माईक की भी ज़रूरत न पड़े। उसके बजाय कितना शांत और धीमा प्रवचन! ऐसी तबियत में भी वे इतनी जल्दी नड़ियाद पधारे और छोटे से घर में हमें लाभ दिया। इससे हमें ख्याल आता है कि इन स्वरूपों की अंदर-अंदर की एकता कैसी है? किसी का भी उत्सव हो! इस बार तो कैसा हुआ- स्वामिजी का उत्सव और दूसरे ही दिन साहेब का उत्सव! रात को देर तक साहेबजी वहाँ और सुबह – उतनी ही जल्दी, स्वामिजी मिशन में! हमें तो आश्चर्य होता है कि क्या इन्हें उम्र आड़े नहीं आती, बीमारी आड़े नहीं आती! एक-दूसरे की कितनी महिमा है! बस, **ये भक्त इसमें राजी हैं कि हम हाज़िर रहें, तो वही उनकी भक्ति है। ऐसे माहात्म्य से हम सभी स्वरूपों का दर्शन किया करें। प्रसंग पर हमारे जीवन में याद रखकर हम इस प्रकार जीने की रुचि रखें।** बल तो वे लोग देने ही वाले हैं, अपने बल से कुछ होने वाला नहीं है। ऐसा सतत अनुसंधान कि अहोहो! ऐसे भक्त कहाँ, ऐसे स्वरूप कहाँ, ऐसी सेवा कहाँ से!

बस, 'अहोहो' से हमारे जीवन में शुरुआत हो। सभा में कोई ज़रा-सा भी ढीला बैठा हो, तो **पप्पाजी** तुरंत खड़ा करते या अपना तकिया फैंकते या कुछ ऐसा चरित्र करते। वे इतना ही कहना चाहते थे कि **ऐसे स्वरूप मिले, ऐसे भगवान मिले, फिर ऐसे मुँह लटका हुआ** क्यों? जैसे काकाजी कहते थे कि – ***मैं किसकी घरवाली हूँ?*** यूं इन सब स्वरूपों के अंदर एक ही भावना है कि – ऐसे सर्वोपरि पुरुषोत्तम नारायण मिले, उनके ऐसे गुणातीत स्वरूप मिले, बस अंदरोअंदर हम ऐसे माहात्म्य से जीएँ, एक-दूसरे के साथ मिलजुलकर 'संप, सुहृद्भाव, एकता' से जीएं और प्राप्ति का आनंद किया करें – ऐसा बुद्धियोग दें यही प्रार्थना। सहजानंद स्वामी महाराज की जय!

पू. डॉ. नीलम बहन (गुणातीत ज्योत)

...काकाजी को जो साक्षात्कार कराया, उसका वर्णन उन ७२ घंटो में, जिसे साक्षात्कार हुआ हो वही कर सकता है। पर कभी कल्पना करती हूँ तो सोचती हूँ कि वो क्या हुआ होगा ?

...योगीजी महाराज का इनके जीव में तो प्रधान्य था, पर उनसे पहले शास्त्रीजी महाराज के लिए जो उन्हें प्रेम था; लंडन जाकर शास्त्रीजी महाराज के लिए भजन लिखें कि जादूगरी, तेरी आँखें मुझे दिखती रहतीं हैं...! उस नवयुवक को लंडन जाकर शास्त्रीजी महाराज की आँखें दिखें और वो ही शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज में हैं, ऐसा अनुभव उन्हें हुआ। समाधि का एक बहाना लेकर बापा ने कार्य सौंपा और तीन फरवरी के बाद पहली जून–ठीक तीन महीने में तो पप्पाजी को अनुभव कराया। काकाजी का साक्षात्कार था–योग समाधि। पप्पाजी का साक्षात्कार था–ज्ञान समाधि। **पप्पाजी हमेशा कहते कि हम दोनों भाई–एक, हाथ का एक ऊपर का भाग है; एक, नीचे का भाग है। एक ही घर में दोनों को एक ही आध्यात्मिक कार्य करने के लिए स्वामिनारायण भगवान ने जन्म दिया।** अंतर से एक-दूसरे के लिए जो प्रेम, मान, अहोहोभाव और एक-दूसरे के लिए जो मर मिटने की भावना, वो जन्म से ही महाराज ने रखी थी और फिर यह साक्षात्कार हुआ। **खूब विभिन्न प्रकृति फिर भी जो पप्पाजी कहें, वही काकाजी को पसंद हो और काकाजी कहें, वही पप्पाजी को पसंद हो। यह थी उन दोनों की 'एकत्वभावना'!**

मेरे भाग्य में काकाजी की सेवा खूब मिली है। सत्संग में मैं १९७५ के बाद आई। उभराट में पहली बार काकाजी के दर्शन किए थे। उसके बाद बहुत बार उनके दर्शन किए हैं। पप्पाजी धीरे धीरे चलते, धीरे-धीरे और कम बोलते, कम स्मित देते। काकाजी से एक प्रश्न पूछें तो दस वाक्य में जवाब दें; कभी तो आधे घंटे तक समझाते रहते। मैं खुद जन्म से जैन हूँ। नया-नया सत्संग था; तब कुछ समझ नहीं आता था। दोनों स्वरूप हैं, **दोनों गुणातीत भावना में रहते गृहस्थ हैं, तो एक क्यों ऐसा करते हैं और एक क्यों ऐसा करते हैं? यह सच माना जाए कि वह सच माना जाए?** पर जैसे-जैसे पप्पाजी और सोनाबा की, काकाजी की सेवा का लाभ मिला, गुणातीत समाज की मॅडिकल सेवा का लाभ मिला, उस सेवा के फलस्वरूप मेरे मन, बुद्धि, चित्त शांत हुए, प्रश्न शांत हुए। एक ही बात सनातन है कि मैं गुणातीत हूँ और वो मेरा जो सच्चा स्वरूप है, उसी तरह मुझे २४ घंटे जीना है... फिर **काकाजी को देखें, तो उनकी ऐसी अलमस्ताई, स्वाधीनता, स्वतंत्रता, निर्दोषता, उनका हास्य... एक-एक चीज हमें अपील करेगी और हमें होगा कि गुणातीतभाव की अलमस्ताई ऐसी ही होती है। उन्हें किसी की भी परवाह नहीं होती थी। किसी ने मान दिया–ओहोहो! नहीं दिया–बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। तब हमें ख्याल आता है कि मुझे ऐसा साधु बनना है...**

विमुख हुए तो अहोहो! अभी हॉल में पढ़ रहे थे, माए हॅप्पिएस्ट डे - २८ मई, १९६६! क्यों हॅप्पिएस्ट डे? बापा ने हमारा विश्वास किया। यह कितनी बड़ी बात है? यूँ पप्पाजी भी कहते– *'विमुख नारायण की जय!'*

...मुझे कई बार ऐसा होता है कि ३० साल के गुरुजी को जब दिल्ली में रखा और आज जो उनमें

परिवर्तन हुआ, वो कैसे होता है? उसमें **गुरुजी की तपस्या, पवित्रता, मूर्ति धारने की उनके मन की एकाग्रता और... गुरुजी खूब स्फटिक जैसे, निखालस। मन में और बाहर दोनों अलग नहीं...**

सचमुच! यहाँ के छोटे से छोटे मुक्त या बड़े से बड़े साधक को देखते हैं, तो उसके चेहरे पर एक ओजस है। वो **ओजस प्रभु प्राप्ति का है, ज्ञान का नहीं है।** गुरुजी मुझे मिले हैं, उसका आनंद उनके चेहरे पर, उनकी आँख में से झलके बिना रहता ही नहीं है। **विचार, वाणी, वर्तन में गुरुजी का पीठबल है, उष्मा है और... उसका एक-एक मुक्त को दिल से अनुभव है; इसलिए एक-एक मुक्त सनाथ है।**

आज काकाजी, पप्पाजी, सोनाबा अपने पास नहीं हैं, तो भी हम अनाथ नहीं हैं। ज्योत में ज्योतिबहन, ताराबहन, दीदी, देवीबहन दिए। हरिधाम में हमें स्वामिजी और प्रेमबहन दिए। पवई में हमें भरतभाई, वशीभाई, बापू, योगिनी बेन और सब दिए; एक-एक सॅन्टर में।

तो, सचमुच आज हीरक पर्व और अमृत पर्व पर एक ही बात कहनी है कि खूब आनंद करें, खूब हल्के रहकर। **कोई ज्ञान कभी भी जीवन में काम नहीं आता है।** पर, ऐसे सच्चे गुरु की शरण में सिर झुकाकर, हृदय झुकाकर कहा करो कि हे पप्पाजी! हे गुरुजी! मैं आपका हूँ– मैं आपका हूँ। यह मुझ से हो सके ऐसा नहीं है। आप कर जाओ, आप कर जाओ। आप मेरी मदद करो। आप मेरी बुद्धि में बैठ जाओ... **उनके चरणों में से कभी भी सिर अहंकार से उठे नहीं कि दीदी हो गए हैं, तो मैं भी हो गई हूँ। ऐसा होगा, तो कुछ बचेगा नहीं। हमारा जहाँ हैं वहाँ, अधूरा ही रह जाएगा।** पर बस, मैं आपका हूँ– मैं आपका हूँ, आप मेरे भगवान हो, आप मेरे साथ रहना, आप मुझे बल दो यही भावना रखें... आज सचमुच मुझे इतना आनंद हो रहा है कि मत पूछो बात!

...आज हमारे लिए सचमुच **गुरुजी** के पास मांगने का दिन है। यही मांगना है कि **आप सौ वर्ष तक निरामय रहो और हमें ऐसी सेवा की कसनी देते रहो, ऐसे ही भक्तों का सान्निध्य, दर्शन और सेवा देते रहो और बस, आप हँसते रहो।** स्टेज पर रखी हुई यह मूर्ति मैंने पहली बार इतनी हँसती देखी। इतना अच्छा गुरुजी हँस रहे हैं, तो मुझे इतना आनंद हुआ कि सदैव आप ऐसे ही हँसते रहो और आपके संकल्प से हम भी ऐसे हँसते रहें। सबको जय स्वामिनारायण और गुरुजी को मॅनी-मॅनी हॅप्पी रिटर्न्स ऑफ धी डे!

प.पू. हंसा दीदी (गुणातीत ज्योत)

भगवान श्री स्वामिनारायण की कृपा से शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी और बा, इन सबके दर्शन और सेवा का लाभ मिला है। **काकाजी को जब साक्षात्कार हुआ, तब हमारे घर योगीजी महाराज का पत्र आया था। उसमें लिखा था कि जैसे राठोड़ धाधल के घर उत्सव हुआ था, ऐसा ही इस बार हुआ है। उसके दर्शन करने आप दादुभाई के घर जाना।**

दादुकाका और पप्पाजी, दोनों स्वरूप एक घर में! उसकी वजह से हमारे लिए साधना खूब सरल हो गई और सोनाबा! सोनाबा जैसी माँ; पप्पाजी कहते– *हज़ार जन्मों में भी न मिले! ऐसी सोनाबा की प्रीति, ऐसी उनकी उष्मा।*

इन सभी स्वरूपों ने उसका लाभ लिया है।

...१९५० की साल में काकाजी को एक बहुत बड़ा कॉन्ट्राक्ट लेना था। तब उन्होंने कुछ पैसे इकट्ठे किए थे। शास्त्रीजी महाराज ने गढ़डा में संगेमरमर का मंदिर बनाने का निश्चय किया था; इसके लिए लौकिक दृष्टि से उन्हें पैसों की जरुरत थी। उन्हें उनके वारिसदार तैयार करने थे। इसलिए शास्त्रीजी महाराज अपनी आँखों में आँसू लाए। शास्त्रीजी महाराज की आँखों में पानी और दादुकाका देख सकें?

उन्होंने कहा– *स्वामी! मैं क्या करूँ? आपको क्या चाहिए? आपकी आँख में आँसू क्यों?*

शास्त्रीजी महाराज बोले– *देखो न! मुझे भी क्या सूझा कि मैं अभी संगेमरमर का मंदिर बनाने की सोचकर बैठ गया! अब पैसे नहीं हैं।*

दादुकाका ने अपने धंधे के लिए जो ५१ हज़ार रूपये इकट्ठे किए थे, वो शास्त्रीजी महाराज के चरणों में रखे; उस वक्त कितनी बड़ी क़ीमत कही जाए? शास्त्रीजी महाराज के चेहरे पर उन्होंने हास्य देखा, वो हास्य कैसा होगा? और उस वक्त का उनका समर्पण कैसा?

ऐसे समर्पण के प्रताप से योगीजी महाराज के अनहद् लाड़ले बन गए और उन्हें साक्षात्कार करा दिया। एक बात पक्की है कि **भगवान के वारिसदार बनने के लिए भगवा कपड़ों की जरुरत है, ऐसा नहीं है। गृहस्थ भी वो कर सकता है** और हम इसका अनुभव कर रहे हैं; ऐसे काकाजी – पप्पाजी।

अपने गुरुजी जब दिलीपभाई थे, तो उन्होंने पप्पाजी से कहा था– *बाबुकाका, आप मुझे अच्छे नहीं लगते।* पप्पाजी ने कहा– *मैं तुझे भले ही अच्छा नहीं लगता, पर तू तो मुझे अच्छा लगता है न!* और आज हम देखते हैं कि **गुरुजी के हृदय में काकाजी और पप्पाजी का एक सरीखा स्थान है।** उसका हम अनुभव कर रहे हैं...

एक बार ६-डी में मैं घनश्याम और प्रफुल्ल को पढ़ा रही थी। मैं थोड़ी कड़क लगती, कड़क हूँ ही। तो, वे वहां से जा रहे थे, खिड़की में से उन्होंने देखा, मैंने भी देखा, पर मैं हँसी नहीं। तो एकदम मुझे कहते हैं– *आप बहुत गुस्सा करते हो।* मेरे मन में हुआ कि मैंने कब उसे गुस्सा किया–मुझे पता नहीं है। पर, **निखालिसता।** आज **उनकी उस निखालिसता ने उनकी साधुता को उज्ज्वल किया है।**

जब उन्हें दिल्ली भेजा, तब उनके साथ कौन था? उन्हें किसका आसरा था? पर काकाजी का वचन! योगी बापा का संकल्प था कि मुझे यमुना के किनारे मंदिर बनाना है। काकाजी ने वो पकड़ा और **उनकी दृष्टि में यह एक विरला आया कि इसे मैं कहूँगा, यह काम करेगा और हम देख रहे हैं कि २४ घंटे उन्हें काकाजी की स्मृति है।** अपनी साधुता रखकर बहनों के साथ काम करना सचमुच मुश्किल है। पर, उन्होंने बहनों को तैयार किया। आज डॉ. नीलम ने आनंदी दीदी की बात की। सचमुच! गुरुजी की खुद की भी तबियत इतनी अच्छी तो नहीं ही है। पप्पाजी की आज्ञा से **उनका ड्रैस भी थोड़ा अलग है। फिर भी किसी को प्रश्न नहीं होता। कारण? उन्होंने भगवान अखंड रखे हैं।**

महाराज, स्वामी, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, पप्पाजी, काकाजी और बा से मैं प्रार्थना करती हूँ कि आपका यह विरला दीर्घायुषी बने। अमृतपर्व तो है ही; ७५ वर्ष तो देखते ही देखते हो गए। तो आँख के झपकते दूसरे २५ वर्ष वो सबका कल्याण करते हुए प्रत्यक्ष रहें–ऐसी कृपा करना...

प.पू. आनंदी दीदी

सबसे पहले सभी स्वरूपों और मुक्तों का योगी परिवार आनंदोत्सव में खूब-खूब स्वागत है। हम तो क्या स्वागत करेंगे, लेकिन **ये स्वरूप ही इतने जन्मों से हमारा स्वागत करते आए हैं** और... **हम कैसे भी हैं, तब भी इन्होंने अपनी गोद में बिठाया है।** आज आनंद करने का दिन। कल से तीन दिन के उत्सव की मंगलकारी शुरुआत होगी। उसकी पूर्व संध्या पर यह लेडीज़ सेशन है। श्रीजी महाराज ने काकाजी, पप्पाजी, सोनाबा और सभी गुणातीत स्वरूपों का जो हमें जोग दे दिया; काकाजी, पप्पाजी, सोनाबा ने स्त्री जाति को जगत में जो सम्मान दिलाया, जो धन्य किया है, उसका ऋण तो हम कभी चुका नहीं पाएँगे। **योगीजी महाराज ने भी, मानो आउट आफ धी वे जाकर गुणातीत समाज की फेवर करते हुए काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, गुरुजी, साहेब, दिनकरभाई, भरतभाई, बहनों में सोनाबा, ज्योतिबहन, ताराबहन, दीदी, देवीबहन, पदुबहन, जसुबहन, प्रेम दीदी, योगिनी दीदी के जोग में रख दिया।** हमें तो, काकाजी जैसे कहते, पल-पल धन्यवाद करने जैसा है।

कल काकाजी के साक्षात्कार के हीरक जयंती का पर्व – ३ फरवरी! काकाजी की महिमा हम तो क्या गाएँगे, लेकिन बड़े पुरुष कृपा करके ऐसा कुछ चरित्र करते हैं, तब हम उसकी महिमा समझ सकते हैं। जैसे कि – पत्र संजीवनी बुक में एक जगह मैंने पढ़ा था कि **योगीजी महाराज** जब काकाजी को पोस्टकार्ड लिखते, तो पोस्टकार्ड में एड्रेस की जगह पर लिखते – ***'ताड़देव साक्षात् सोनावाला बिल्डींग अक्षरधामरूप तखत।'*** हम सभी समझ सकते हैं कि अक्षरधामरूपी तखत पर कौन बैठ सकता है? श्रीजी महाराज ही बैठे होंगे। तो, बापा हमें ये इशारा देना चाहते थे कि काकाजी के रूप में साक्षात् श्रीजी महाराज का स्वरूप मिला है। **स्वामिजी** हमेशा ताड़देव को ***'आत्मीयता की गंगोत्री'*** कहकर नवाज़ते हैं। गंगोत्री यानि ओरिजीन – रूट; जहां से आत्मीयता और कुटुंबभाव की शुरुआत हुई कही जाए। **गुरुजी** ने एक बार बताया था कि काकाजी पर जब केस हुआ तो योगीजी महाराज कपोलवाड़ी में ऐसा बोले थे –

दादुभाई के लिए तो गोंडल की अक्षरदेरी गिरवी रखनी पड़े तो रख देंगे।

गोंडल की अक्षरदेरी कोई सामान्य स्थान नहीं है। अनादि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी का वो समाधि स्थान और बोचासण संस्था का तो आज वो 'लोगो' है। **इसी बात से पता चलता है कि बापा के दिल में काकाजी का क्या स्थान होगा!** पर हमारी मायिक बुद्धि इन बातों को समझ नहीं पाती। जैसे गुणातीतानंदस्वामी जब जूनागढ़ मंदिर छोड़ कर गए, तब बोले कि अब जूनागढ़ में पत्थर और डूंगर ही हैं। जबकि वहां पर मंदिर भी था, जिसमें हरिकृष्ण महाराज की मूर्ति थी! तब भी गुणातीतानंदस्वामी ऐसा बोले! तो वे हमें समझाना चाहते थे कि **स्थान की महिमा से भी अधिक प्रगट सत्पुरुष की महिमा समझो।**

काकाजी की ऐसी विशेषताओं का जितना-जितना हम मनन-चिंतन करते रहेंगे, उतनी वो महिमा हमारे जीव में ठहरती जाएगी, जमती जायेगी। **बड़े पुरुषों की भाषा समझनी भी बहुत कठिन है।** महाराज के समय के एक भक्त – लालजी सुथार को महाराज ने बोला था कि मैं तुम्हें अपना 'अक्षरधाम' बख्शिश दूंगा। लालजीभाई सुथार तो तब यही समझे होंगे कि अंतकाल में महाराज शायद लेने आएँगे, वही – 'अक्षरधाम'।

लेकिन सोरठ के मुक्तों को महाराज ने जब गुणातीतानंदस्वामी बख़्शिश में दिए, तब पता चला कि वे 'अपना अक्षरधाम' गुणातीतानंदस्वामी के लिए कह रहे हैं।

काकाजी जब १९८५ दिसंबर में पंजाब स्थूल देह से आख़िरी बार गए थे, वहां उन्होंने गुरुबख़्शजी से कहा – *अब मैं पंजाब दोबारा नहीं आऊंगा। आपको मुझसे मिलना हो तो दिल्ली आना।*

तो, वे क्या कहना चाहते थे ? **वे हमें इशारा देकर गए कि मैं दिल्ली में तुम्हारे लिए गुरुजी के रूप में प्रगट रहूंगा। पप्पाजी** ने २००३ में या २००४ में पंचगीनी से गुरुजी के नाम काग़ज़ लिखा था, उसमें लिखा था – *फिलहाल मैं आना भी चाहूं, तो फंक्शन में आ नहीं सकता, लेकिन बाद में मैं हमेशा के लिए वहाँ आ जाऊंगा और तब सोने में सुगंध होगी।*

...मैं सत्संग में १७ साल की उम्र में आई थी। तब काकाजी से तो बहुत अधिक परिचय नहीं था। काकाजी साल में २-३ बार दिल्ली आते थे। सत्संग की बहुत समझ भी नहीं थी, फिर भी **काकाजी ने मेरे सारे प्रारब्ध अपने माथे पर ले लिए ! ऐसे गुणातीत पुरुष कहाँ मिलेंगे ?** जो बिना किसी मतलब, बिना किसी स्वार्थ के हमारे सारे प्रारब्ध अपने सिर पर ले लें। घर पर भगवान भजने के बारे में बहुत विरोध चल रहा था। एक दिन ए-१०३ में ठाकुरजी के पास काफी सारे फूल रखे हुए थे, मैंने पंजाबी ड्रेस पहना था। काकाजी ने ठाकुरजी के सामने खड़े रह कर मुझसे कहा – *ये सारे फूल तुम्हें देने हैं।*

मैंने चुन्नी की झोली बनाई। उसमें काकाजी ने वे सारे फूल समेट कर मेरे झोली में डाले और बोले –

गुड्डी आज से सब घर वालों के साथ तुम्हारा सारा लेन-देन पूरा हो गया। अब तुम्हारी सारी जिम्मेदारी मेरी है, तो कोई चिंता नहीं करना।

पप्पाजी के साथ एक बार पधरामनी पर जाना था, तो पप्पाजी ऐसा बोले –

मैं मेरे कंधे पर बिठा कर आनंदी को ले जाऊँगा।

ऐसे सत्पुरुष जब आशीर्वाद देते हैं, तब हम उसकी महिमा की गहराई समझ नहीं पाते। लेकिन, बाद में गुरुजी ने बताया था –

बड़े पुरुष हमारी ऐसी सारी जिम्मेदारी सामने से लें, वो कोई सामान्य बात नहीं, बहुत बड़ी बात है।

मैं ये सब बातें इसलिए कर रही हूँ कि अभी **तीन दिन की शिविर** होगी। इस तीन दिन की शिविर में स्वरूपों का ही लाभ लेना है। तो **हम सब खूब अलर्ट होकर उनकी बातें सुनें और उन पर अमल करेंगे, तो आध्यात्मिकता में एक कदम जरूर आगे जाएँगे।** हम अलर्ट होकर इनकी बातें सुनेंगे, तो जरूर ख्याल आयेगा कि हमें क्या जीवन जीना है। जैसे कि मैंने पहले भी बताया कि हमें जो स्वरूप मिले हैं, उनकी ही बात आख़िर में सच्ची रहने वाली है। महाराज हम से पहले उन लोगों का सुनेंगे। महाराज ने वचनामृत में कहा है – *सत्पुरुष जो बातें करें - गुणातीतभाव को पाए हुए संत जो बातें करें, वो ऐसी ही हैं* – यूँ दिल की सच्चाई से हमें मानना पड़ता है।

हमने भी गुरुजी की बातों में यहां सुना है और आपने स्वरूपों की बातों में अक्सर सुना होगा – ***ये जो सारा टोला है, वो अक्षरधाम का टोला है, वो टोला पूरा अलग है।***

उसका अनुभव भी स्वरूप हम सबको कराते भी हैं।

मुझे याद आता है कि **हंसा दादी** एक बार गुरुजी के साथ रुद्रपुर गए थे। वहां पर विजय शर्मा नामक भक्त हैं, जो उत्सव में अभी ट्रांसपोर्ट की सेवा में भी हैं। निवेदिता उनकी वाइफ है। हंसा दादी ने रुद्रपुर से

आकर मुझे बताया कि ये निवेदिता से मैं जब बात कर रही थी, तो जितनी देर मैं उससे बात करती रही, उतनी देर प्रकाश का एक गोला उसके पीछे लगातार दिखाई दे रहा था। यूं, जो बात हमें स्वरूपों द्वारा कही जाती है कि ये सब अक्षर के मुक्त हैं, उसकी प्रतीति भी वे कराते हैं। **हमारा तो सौभाग्य है कि ऐसे स्वरूप हमें पल-पल जाग्रत भी करते रहते हैं, कहीं फंसने नहीं देते।**

लास्ट ईयर हमें एक हरिभक्त के यहां दुबई जाना था। उनका खूब आग्रह था। जिस फेमिली में जाना था, उनके जो पहले गुरु थे, वे दुबई उनके यहां जाने वाले भी थे। लेकिन एक्सीडन्ट हुआ और वो गुरु स्वधाम सिधार गए। फिर जब उनके शिष्यों ने उनके कुर्ते की जेब देखी, तो उसके अंदर से दुबई का एड्रेस निकला।

गुरुजी को तो ये सारी बात का ख्याल भी नहीं था, लेकिन गुरुजी ने सामने से उनसे कहा कि मैं आपके यहां दुबई आऊंगा। दरअसल **आऊट ऑफ इंडिया जाने के लिए गुरुजी तैयार नहीं होते।** पर, उसको मानो प्रतीति कराने के लिए गुरुजी ने दुबई जाने का प्रोग्राम बनाया। दुबई जाने से चार-पांच घंटे पहले गुरुजी ने छोटी सभा की और उसमें कहा भी था कि **दुबई जाकर वहां की रौनक-शौनक में मत पड़ना। वहां से कुछ सामान लाने-करने की लालसा मत रखना। हाँ, अगर तुम्हें कुछ लाना ही है, तो वहां से निष्ठा वाले हरिभक्त लाना। कहीं भी जाएँ तो हमारा एक ही उद्यम होना चाहिए कि सामने वाले के जीव में प्रभु कैसे बस जाएं।**

यह मंदिर पर पत्थर लगने की शुरूआत ७ अगस्त से हुई। तब भी **गुरुजी की एक ही भावना** अंतर की लगातार दिखाई पड़ती रही कि **यहां जो कोई भी आए, चाहे वो मुंबई से आए, चाहे शिकागो से आए, चाहे हरिधाम से आए, चाहे विद्यानगर से आए, चाहे ब्रह्मज्योति से आए, चाहे सांकरदा से आए–उन सभी को यहां आकर लगना चाहिए कि–'यह हमारा मंदिर है।'** यह बात उनके दिल में इतनी गहराई तक चली गई है कि अभी दिल्ली मंदिर की हिस्ट्री की एक किताब जो इन तीन दिनों में रिलीज़ होगी, उसका नाम भी उन्होंने रखा है–**'हमारा मंदिर'**–**'आपणुं मंदिर'**।

गुरुजी मज़ाक-मज़ाक में भी बहुत रहस्य की बात कर जाते हैं। थोड़े समय पहले एक पुरानी पिक्चर याद कर रहे थे–'गीत गाया पत्थरों ने' और कहते हैं–यहां मंदिर का एक-एक पत्थर यूँ 'आत्मीयता, आत्मीयता, आत्मीयता' गा उठेगा। **इस मंदिर की दीवारों में से ही आत्मीयता की भावना रेडियेट होगी।**

काकाजी ने मुझे बहुत सालों पहले एक काग़ज़ में लिखा है–***सौ कला करके भी स्वभाव को जीतना।*** तो, आज जो ये गुरुजी की भावना है कि इस मंदिर का एक-एक पत्थर आत्मीयता-आत्मीयता बोले, वैसा हमारा वर्तन हो–ऐसे आज सभी गुणातीत स्वरूप जरूर आशीर्वाद दे जाएँ।

यह पंडाल बन रहा था तो गुरुजी ने काकाजी का एक-एक शब्द याद करके, उनके एक-एक सिद्धांत को आत्मसात् किया है। उत्सव के तीन-चार दिन पहले ही वे बोले– *काकाजी स्थूल रूप से आज होते, तो वे जरूर दोहराते–धन्यवाद हो, मेरे साथीदारों को; ये सब अकेले हाथ नहीं बना है।*

और... तुरंत आशीष को बुलाकर कहा–

बापा के समय के और काकाजी से जुड़े हुए पुराने मुक्तों के फोटोग्राफ्स ढूंढो, वो पंडाल में लगाने हैं। हम भी आज वो पुराने जोगियों का अभिवादन करना भूलें नहीं।

अभी एक सोविनियर प्रकाशित करना था। इन तीन दिनों में वह रिलीज़ होगा। गुरुजी अपनी मूर्ति प्रकाशित करवाने के लिए जल्दी तैयार नहीं होते। हमें भी पता है कि उनकी मर्जी ही नहीं होती। हमें भी पल-पल उनकी मर्जी में ही रहना है; सो हम आग्रह भी नहीं रखते। लेकिन यह ७५वां बर्थडे था, तो सबने गुरुजी से प्रार्थना की कि गुरुजी इस बार आपकी ऐसी मूर्ति निकालने दीजिए। तो उसमें उन्होंने आइडिया निकाला, पंडाल के द्वार पर वह मूर्ति लगी हुई है। सब स्वरूपों के चरणों में वे बैठे हैं। असली स्वामीसेवकभाव का दर्शन! **वे अपने वर्तन से पल-पल जीकर बताते हैं कि हमें कैसा जीना चाहिए।** उस पर उन्होंने सेन्टेन्स लिखवाया है –

'इन स्वरूपों की सेरेछाया में ही मेरी रक्षा और मेरा सम्मान समाए हैं।'

अभी ये फंक्शन होना था, तो सारे गेस्ट हाऊस, गुजराती समाज, महावीर भवन, खण्डेलवाल भवन खुद पर्सनली जा-जाकर देख कर आए हैं। सारी धर्मशालाओं में टॉइलेट भी ठीक से क्लीन है कि नहीं, वो भी वे खुद इनक्वायरी कराते रहे हैं।

तो आज गुणातीत स्वरूपों के चरणों में यही प्रार्थना करनी है कि जैसे गुरुजी जीते हैं, जैसा आप सबने जी कर बताया है, हमारे जीवन में भी ऐसी महिमा – भक्ति का उदय हो और... स्थूल मंदिर तो बनकर तैयार होने ही आया है, पर हमारे भीतर का मंदिर आप ऐसा तैयार कर दो कि आपको आनंद से उसमें बैठने का मन हो...

प.पू. प्रेम बहन (हरिधाम)

जितनी हमने बातें सुनी, वो साथ लेकर जा पाएं, वो भगवान की कृपा। सबसे पहले १९७१ में काकाजी के दर्शन हुए थे। पूर्वाश्रम में जैसे आनंदी दीदी का विरोध था, वैसे मेरे पूर्वाश्रम में भी बहुत विरोध था कि साधु नहीं होना। उस वक्त स्वामिजी को एक पत्र लिखकर भेजा था और थोड़े दिनों में अकोटा, नटुभाई शेठ के घर एक छोटी-सी सभा थी। उसमें काकाजी और स्वामिजी दोनों हाज़िर थे। तब स्वामिजी ने कहलवाया था कि काकाजी से बात कर लो। तब काकाजी ने खूब शूरवीरता की बात की थी। **'स्वरूपयोग' किसे कहते हैं, वो उन्होंने मुझे वहाँ सिखाया था।**

इन पुरुषों ने इतना परिश्रम किया है कि हमारी आत्मा की यात्रा निरंतर प्रभु सम्मुख स्पीड में जाए। **स्वामिजी बहुत बार कहते हैं कि इन्हें काकाजी के साथ जो प्रीति हुई हो, वो था उनका निरपेक्षभाव।** उन्होंने लाखों भक्तों की सेवा की इसलिए नहीं। **उन्होंने देह और देह के सगे से ज्यादा भगवान और उनके भक्त प्यारे रखे। उससे ज्यादा, उनकी आज्ञा में कोई रहे कि न रहे, कोई वर्ते कि न वर्ते, पर काकाजी ने कभी किसी से कोई अपेक्षा नहीं रखी!** निरपेक्ष स्वरूप – निरपेक्षता से समग्र समाज में वे ओतप्रोत हो गए... काकाजी कहते कि भरी बँदूक से रहना। **भरी बँदूक क्या ? अपनी आत्मा को आध्यात्मिक बातों से भरपूर रखना।** काकाजी सिखाना चाहते थे कि साधना मार्ग पर चलता साधक कभी भी अटके नहीं। कैसे भी प्रसंग खड़े हों, **भगवान के भजन का बल और आध्यात्मिक बातों की निरंतर जुगाली की हो, तो कभी भी जिंदगी का समय बिगड़ेगा नहीं...**

स्वामिजी कई बार गुरुजी की बात करते हुए प्रवचनों में कहते हैं कि बुद्धि और दिल का समन्वय कभी भी मुमकिन नहीं है। **पर, गुरुजी प्रचंड बुद्धिशाली, दिल प्रधान और साथ में भजनीक!** रात को दो-दो बजे उठकर भजन करते।

बंसरी एक बार मंदिर गई होगी और उसने गुरुजी की प्रसादी की माला मांगी। गुरुजी ने भेजी और कहलवाया कि भजन करे। उस माला से वो भजन कर रही थी। फिर एक हफ्ते के बाद उसने गुरुजी को कहलवाया कि इस माला में से रात को २ बजे आवाज़ आती है कि उठ! भजन कर, उठ! भजन कर। तो गुरुजी ने कहलवाया कि उस माला को आदत पड़ गई है, क्योंकि उसका मालिक रोज रात को उसे फिराता है। हम विचार करें कि माला में गुरुजी के भजन का कितना प्रभाव प्रवेश कर गया होगा! **कैसे भी प्रसंग बनें, पर उसमें भजन का उपाय लेना, वो कुछ बात अलग है** और उसमें भी **बुद्धिप्रधान व्यक्ति भजन का आसरा ले सके, वो तो भगवान की कृपा हो तो ही यह बात संभव है।**

दीदी ने बात की वैसे **गुरुजी पराभक्ति का स्वरूप!** यहाँ आने वाले भक्तों को ज़रा भी तकलीफ न हो, इसलिए टॉयलेट तक स्वच्छ है कि नहीं, वो पूछताछ सेवकों से करवाते तो भी हो जाता, पर ख़ुद ध्यान रखते हैं। यह उनकी पराभक्ति की बात है। काकाजी जब सालों पहले लंडन में विचरण करते, ७४-७५ में, उस वक्त **नटुभाई 'डॅडी'** के घर काकाजी ठहरे थे। उनकी लड़की, **सुरभि,** अभी वो साधु है और उसका नाम **'सोपान'** रखा है। वो काकाजी को विचरण में ले जाती। बहुत उमंग से–बहुत भक्ति से गाड़ी चलाने की सेवा करती थी। तब से काकाजी की दृष्टि पड़ गई होगी, तो भगवान भजने के मार्ग पर आई। उसे लिन्ट की एक्सेलन्स-डार्क चॉकलेट पसंद थी। इस बात को सालों हो गए और अभी २००७ में पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा के उत्सव में वो यहाँ आई थी। गुरुजी को कहीं से पता चला कि इसे यह चॉकलेट पसंद है। आधे घंटे के अंदर गुरुजी ने वो चॉकलेट मंगाई और उसे भिजवाई। **बड़ों की, स्वरूपों की भक्ति तो सब कर सकते हैं; पर ऐसे छोटे सेवकों–जो साधना मार्ग पर चलते हों, उनकी भक्ति करनी वो बहुत अलग बात है। गुरुजी के जीवन में छोटे से छोटे सेवक की ऐसी अप्रतीम महिमा है...**

...आज मल्कानी अंकल के साथ बैठने का हुआ, सारी आध्यात्मिक बात चल रही थी। वे बोले कि प्रेम दीदी, आज आप सभा में यह प्रसंग जरूर बोलना।

एक घर था। उसमें आग लग गई। उस घर में एक कुत्ता था। उस कुत्ते ने भौंक-भौंक कर सबको जगाया। सब जागकर घर के बाहर निकल गए। सब बच गए, पर कुत्ता जल गया। वो नहीं बच पाया। क्यों? वो जंजीर से बंधा हुआ था, इसलिए जल गया। यूँ **हमारे जीवन में भगवान के सिवा और किसी जगह बंधन नहीं होना चाहिए। भगवान के सिवा हमारे जीवन में यदि कहीं बंधन रहा, तो हम भी बच नहीं पाएंगे...**

पू. सुमन बहन (हरिधाम)

सभी स्वरूपों ने सचमुच खूब लाभ दिया। उसकी जुगाली करते-करते उसे हम अपना बनाएँ। प्रेम बहन ने उभराट की स्मृति की बात की। मुझे काकाजी के एक प्रसंग की स्मृति हो गई। हम शुरुआत में भगवान भजने आए थे। अभी पृष्ठभूमि पर जो दृश्य देख रहे हैं, वैसे हम दक्षा में बैठे थे। काकाजी अंगूर का प्रसाद दे रहे थे। जब मेरी बारी आई, तो मुझे यूँ विचार आया कि जो बहुत छोटे-छोटे अंगूर हैं, वो काकाजी मुझे दें। तो अंगूर का प्रसाद देते हुए काकाजी ने एक वाक्य कहा था–

काम, क्रोध, लोभ, मोह को जीतने के लिए साधु हुए।

जब ये बात की, तो मैंने दो हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि आप आशीर्वाद देना कि जीत पाएं। वे बोले–

हरिप्रसादस्वामी बहुत बलवान हैं, वे जीता देंगे...

सबने गुरुजी की बहुत अच्छी बात की। **गुरुजी का तो जीवन ही ऐसा है।** शीला आंटी के ऑपरेशन के वक्त डेढ़-**दो साल तक दिल्ली में रहना हुआ था। एक दिन भी हमें ऐसा लगने नहीं दिया कि हम हरिधाम से दूर हैं।** आनंदी दीदी रोज फोन करके पूछतीं कि–

आपको किसी चीज की जरूरत है? आपको कुछ चाहिए? कुछ भी सेवा हो तो कहना।

मुझे आज ही एक प्रसंग याद आ रहा था। जब यहाँ थे, तो एक दिन सुकेतु का जन्मदिन था। वह मेरी जोड़ में आई थी। जैसे अभी प्रेमबेन ने बात की कि हर एक की रूचि के मुताबिक भक्ति करनी उन्हें याद होती है। वे कभी भी नहीं चूकते। बड़ौदा वालों को खमण (ढोकला) बहुत पसंद होता है और हमारी सुकेतु बहन बड़ौदा की हैं। तो, सुबह साढ़े सात बजे खमण की एक बड़ी ट्रे और साथ में फाड़ालापसी देने के लिए प्रभाकरभाई आए थे। **भक्ति करना तो गुरुजी कभी चूकते ही नहीं। बहुत उदार, बहुत जिन्दादिल!**

गुणातीतानंदस्वामी के समय का एक प्रसंग कि स्वामी जूनागढ़ के मंदिर में बैठे थे और गरासिये के बेटे की चेन खो गई। जिसे वह चेन मिली, वह देने के लिए आया। थोड़ी देर बाद जिसकी चेन खो गई थी, वह लेने आया। जब वह लेने आया तो गुणातीतानंदस्वामी ने उससे पूछा–*यह चेन तूने बनवाई थी या तेरे पिताश्री ने बनवाई थी?*

लड़के ने जवाब दिया– *मेरे पिताजी ने बनवाई थी।*

तब गुणातीतानंदस्वामी एक वाक्य बोले– *तभी तूझे इसकी कदर नहीं है और तू खो देता है।*

परंपरा पकड़े रखनी, वो तो ऐसे **गुरुभक्त बनें, तो ही हो सकता है। गुरुजी ने अपने जीवन में काकाजी की जो परंपरा, मैत्रीभाव, सुहृद्भाव, जिन्दादिल, वो सब कुछ इदम् पकड़े रखा है... सभी स्वरूपों की प्रसन्नता की क्यू में गुरुजी का पहला नंबर है।** काकाजी के जीवन में देखें, पप्पाजी के जीवन में देखें या स्वामिजी के जीवन में देखें, तो हरेक स्वरूपों के दिल में वो सहज बसे हुए हैं। ऐसा उनका जीवन है...

प.पू. ज्योति बहन (गुणातीत ज्योत)

पाँच उत्सव इकट्ठे होने वाले हैं– मंदिर पर कलश चढ़ने वाले हैं। मंदिर पर ध्वजा लहराने वाली है। न भूतो, न भविष्यति जैसा कार्य आज यहाँ दिल्ली की राजधानी में हो रहा है... हमने साकार देखा है कि **गुरुजी ने सचमुच खुद अपना न रहकर दास के भी दास बनकर, दिल्ली मंडल को 'गोकुलिया मंडल' बना कर सच्ची स्वरूपनिष्ठा करा दी।** कोटी, कोटी, कोटी, कोटी धन्यवाद! हम ये जो काकाजी का ६०वां साक्षात्कार दिन मना रहे हैं, तो यूँ होता है कि अहोहो! भगवान को पहचाना था, पर साधु को नहीं

पहचाना, तो एक पैर अक्षरधाम में था। पर, **भगवान और साधु दोनों को पहचाना, तो दोनों पैर अक्षरधाम में हो गए।** ऐसा कार्य – भगवान और साधु दोनों की पहचान कराकर अक्षर सहित पुरुषोत्तम की पक्की निष्ठा कराई और मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम की जय कराई। सचमुच आज दिल्ली में डंका बज रहा है। **कार्य बोल रहा है।** २४ घंटे जो स्वरूप का, काकाजी का मनन-चिंतन रहना, वो गुरुजी के रोम-रोम में दिखाई देता है। यह उनकी सच्ची स्वरूपनिष्ठा! साक्षात् काकाजीमय हो गए और सचमुच काकाजी की शोभा बढ़ाई। सचमुच! कोटी, कोटी, कोटी, कोटी धन्यवाद! गुरुजी और उनके साथ मंडल – आनंदी दीदी, वे भी बहनों में इतनी जाग्रतता से लगी हुई हैं। महिला मंडल भी ऐसा ही है। गुरुजी के वचन पर क्या नहीं हो सकता? यह सोच कर जो लगा हुआ है, वो उनकी स्वरूपनिष्ठा बताता है। तो आज के दिन सबको कोटी, कोटी, कोटी, कोटी धन्यवाद! सबको जय स्वामिनारायण! विद्यानगर से मुझे जरूर आना था, पर उसमें भगवान ने कुछ निमित्त बनाकर यहाँ बैठा कर, चिंतन करने के लिए मुझे यहाँ रखा; तो ज्यादा चिंतन होगा...

प.पू. साहेबजी

काकाजी और पप्पाजी की अभिवंदना के साथ बहुत ही सुंदर कार्यक्रम हुआ। गुरुजी के अमृतपर्व और काकाजी के हीरक साक्षात्कार दिन पर बहनों के खूब अद्‌भुत आशीर्वाद सुने। गुरुजी के हृदय में काकाजी के साक्षात्कार की हीरक जयंती मनाने का जो अद्‌भुत आनंद और उत्साह था, उसमें यहाँ के संतों, गृहस्थों, युवकों ने गुरुजी के अमृतपर्व को जोड़कर चार-चार दिन का आनंदोत्सव मनाने का आयोजन किया। **स्वामिजी के सान्निध्य में हम सबको ये चार दिन अनोखा आनंद प्राप्त होगा।** तो, हम सब इकट्ठे होकर ये चार दिन वो आनंद लूटें, उसके लिए हम सबको बल, बुद्धि, प्रेरणा, जाग्रतता अर्पण करें – ऐसी प्रभु के चरणों में, गुरु के चरणों में प्रार्थना। जय स्वामिनारायण।

प.पू. दिनकरभाई

... आज सब स्वरूपों के जो भी आशीर्वाद लिए, वो हमारे अंदर स्थिर हों और वो आनंद लेकर हम ये चार दिन बहुत-बहुत मनाएँ। गुरुजी का जो भी कार्य है, उसके अंदर हम पूरी तरह से शामिल होकर सेवा में लग जाएं। जैसे गुरुजी ने सबको गरम-गरम सूप पिलाया और जिनको कोल्ड काफी चाहिए वो पिलाई, वो ही भावना से हम बाकी के तीन दिन भी आनंद करते रहें। गुरुजी की नई-नई टेक्नीक्स आने ही वाली हैं, उसका हम एक होकर, आत्मीय होकर लाभ लें। कल स्वामिजी के भी दर्शन होंगे, साहेब, अक्षरविहारीस्वामी सबका बहुत लाभ मिलने वाला है। आज बहनों ने बहुत अच्छी तरह से गुरुजी और आनंदी दीदी की महिमा गाई है; वो हम भी हमारे दिल में रखें और ला सकें – ऐसी आज के पवित्र दिन पर सबको जय स्वामिनारायण और प्रार्थना।

पाटोत्सव और कलशविधि - 3 फरवरी 2012

मुकुंद ! हमारे इस मंदिर के कलश बहुत बढ़िया हैं।

– प.पू. स्वामिजी

इन बहनों के द्वारा सत्संग के माहात्म्य का
इतना ज़ोर-शोर से जो काम हुआ है– इसका दर्शन हम कर रहे हैं।

– प.पू. साहेबजी

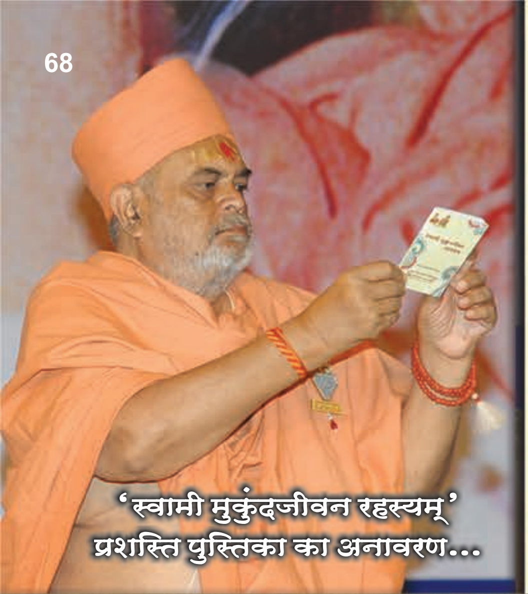

‘स्वामी मुकुंदजीवन रहस्यम्’
प्रशस्ति पुस्तिका का अनावरण...

दिल्ली मंदिर की ‘शिलान्यासविधि’ की
डी.वी.डी. का अनावरण...

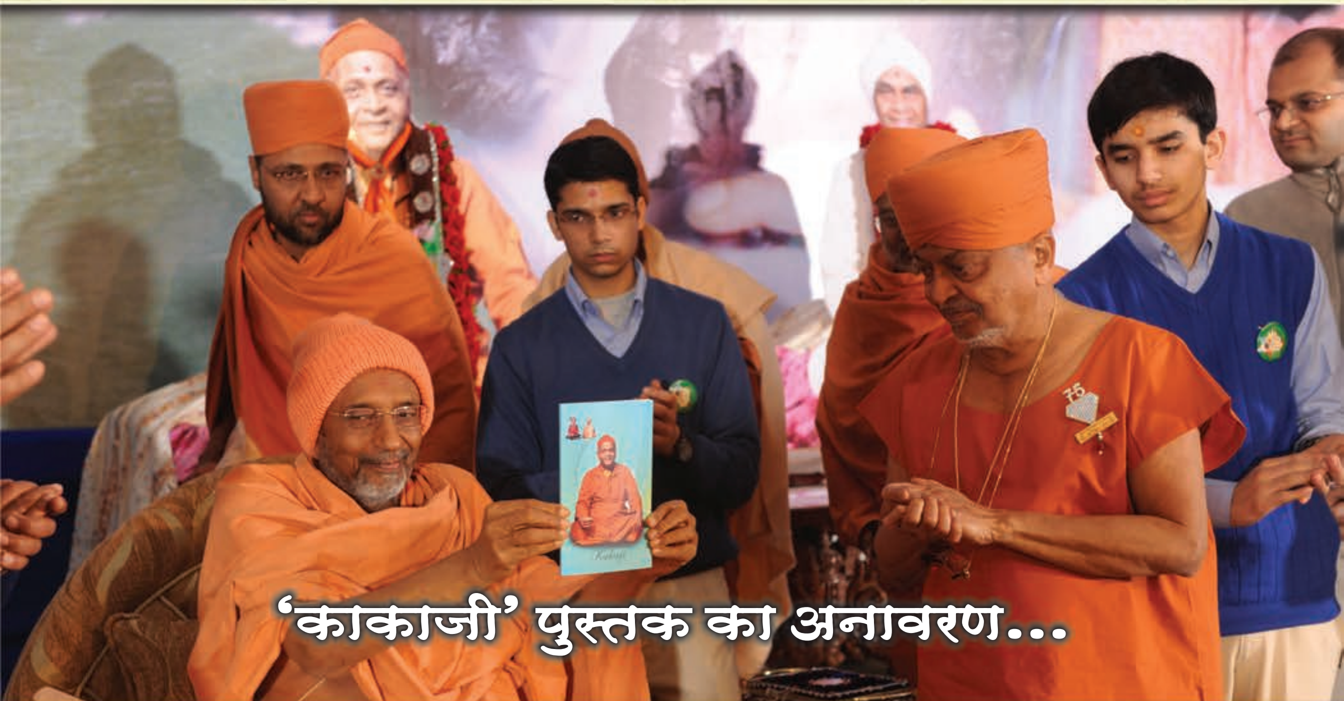

‘काकाजी’ पुस्तक का अनावरण...

3 फरवरी 2012

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज साक्षात्कार हीरक जयंती सभा

प.पू. गुरुजी को आशीर्वाद देते हुए प.पू. स्वामिश्री...

सुहृद्भाव और निर्दोषभाव, लिया आत्मबुद्धि का उठाव...

अक्षरपुरुषोत्तम का है संबंध मिला, गुणातीत संत द्वारा प्रगट मिला
जय हो... जय हो...

'ताड़देव-साक्षात् सोनावाला बिल्डींग,

खेवैया 'योगी परिवार' के तुम
धारे स्वामिश्रीजी तुमने अंगोअंग...

मुकुंदजीवन के साथ मुझे पहले से हेत!
– पू. शास्त्री नर्मदाशंकरजी

विरोध प्रकृति वाले के साथ मैत्री...
– प. पू. काकाजी

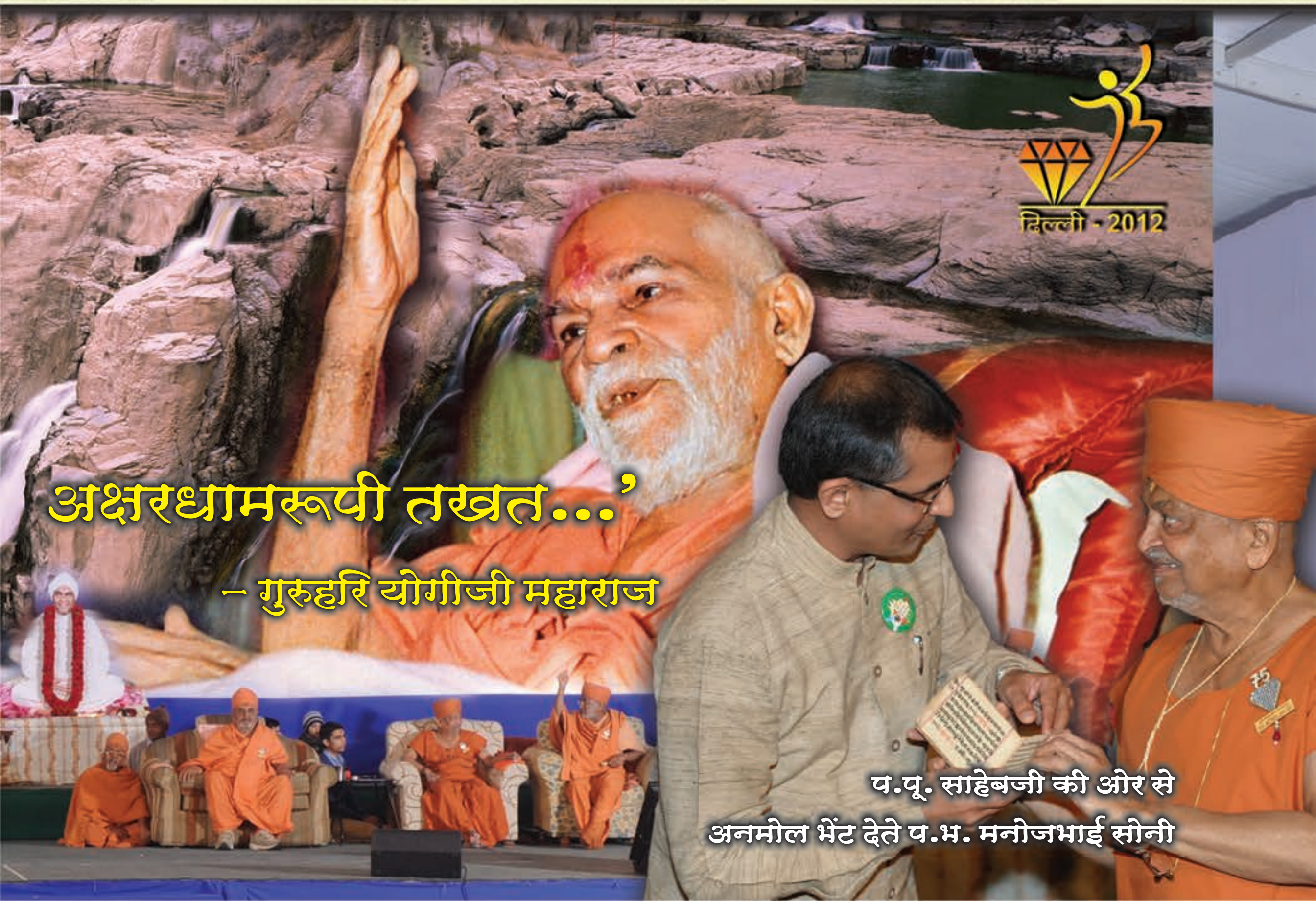

अक्षरधामरूपी तखत...'
– गुरुहरि योगीजी महाराज

प.पू. साहेबजी की ओर से
अनमोल भेंट देते प.भ. मनोजभाई सोनी

सुहृद्भाव का कलश चढ़ाएँ हम काकाजी का संकल्प साकार होगा,
स्वरुपों का संकल्प साकार होगा...

'तीन फरवरी पार्क' में 'कल्पवृक्ष'-सभा मंडप

4 फरवरी 2012 - ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज साक्षात्कार हीरक जयंती शिविर

यहाँ से गुज़रते लोगों को भी इस मंदिर का
एक-एक पत्थर 'आत्मीयता' से अपनी ओर खींचता रहेगा...
– प.पू. गुरुजी

'अक्षरतीर्थ' में प.पू. काकाजी की पुष्प समाधि
यह हमारे लिए 'अक्षरदेरी' ही है...
– प.पू. ज्योति बहन

'अर्चिमार्ग' यानि...?

भगवान की उपासना के दो मार्ग हैं–

१. धूम्रमार्ग– जिसे भगवान या संत नहीं मिले हैं, ऐसे मुमुक्षु अपने मन से–अपने ढंग से खूब परिश्रम उठा कर यज्ञयागादि द्वारा जो साधना करते हैं, इसे 'धूम्रमार्ग' कहते हैं; और कर्म द्वारा मुक्ति–'कर्ममुक्ति' प्राप्त करी कही जाती है। पर, यह खूब कठिन एवं जटिल मार्ग है।

सो, इसे पिपिलीका मार्ग–चींटी की गति का मार्ग कहा जाता है।

इससे 'देवलोक' की प्राप्ति होती है।

अर्चिमार्ग की ओर...

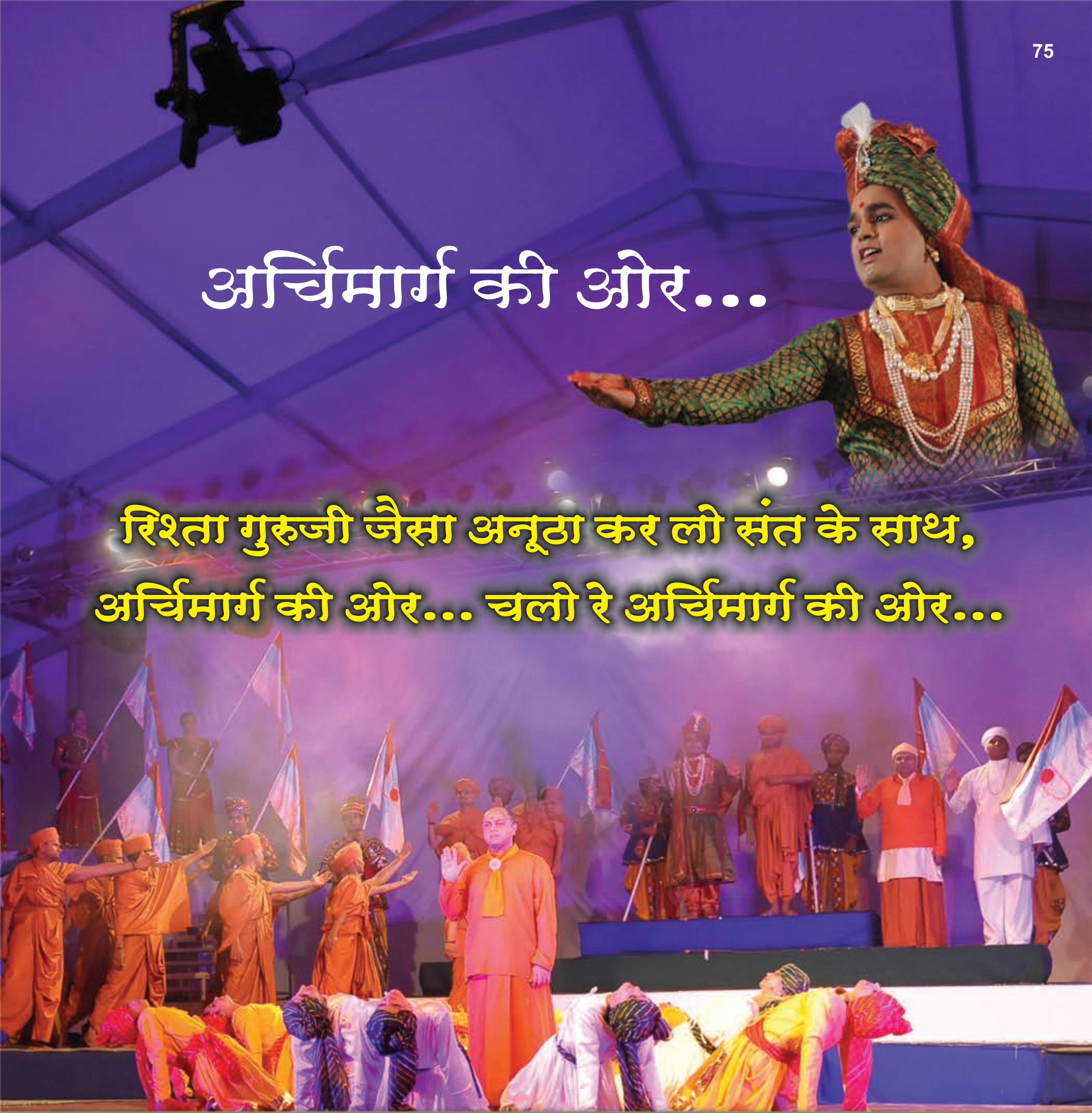

रिश्ता गुरुजी जैसा अनूठा कर लो संत के साथ,
अर्चिमार्ग की ओर... चलो रे अर्चिमार्ग की ओर...

२. अर्चिमार्ग – जिसे भगवान या संत मिले हैं, उनकी गोद में बैठ जाए यानि–उनका पूरा भरोसा करके वे जो कहें वो किया करे, इसे मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने 'अर्चिमार्ग' कहा है। इसे उन्होंने 'विहंग मार्ग' यानि पक्षी का मार्ग–आकाश मार्ग (बाइ एयर) भी कहा है और 'सद्यमुक्ति' प्राप्त करी कही जाती है।

इससे मुमुक्षु को भगवान के धाम की-'अक्षरधाम' की प्राप्ति होती है।

प.पू. पप्पाजी ने इसे 'पद्ममार्ग' कहा

एवं

प.पू. काकाजी ने इस 'संतमार्ग' को बेचैनी-तकलीफ-विघ्नरहित साधना मार्ग बताया है।

घनश्याम बाल तेरी लीलाओं पर
जन-जन वारि जाई...

मोहमाया का बंधन छोड़ा... निकल पड़े घनश्याम
वेश धरा नीलकंठ वर्णी का...

जोगीबापा ने दिलीपभाई के भाग्य को यूं मोड़ा,
काकाजी ही बनेंगे राहबर, बता के उनमें जोड़ा...

इतनी भीड़ और व्यस्तता में भी बापा ने मुझे याद किया
खाना खाने के लिए बुलाया !
– दिलीपभाई (प.पू. गुरुजी)

1952 श्री नंदाजी
के चुनाव प्रचार में
प.पू. काकाजी

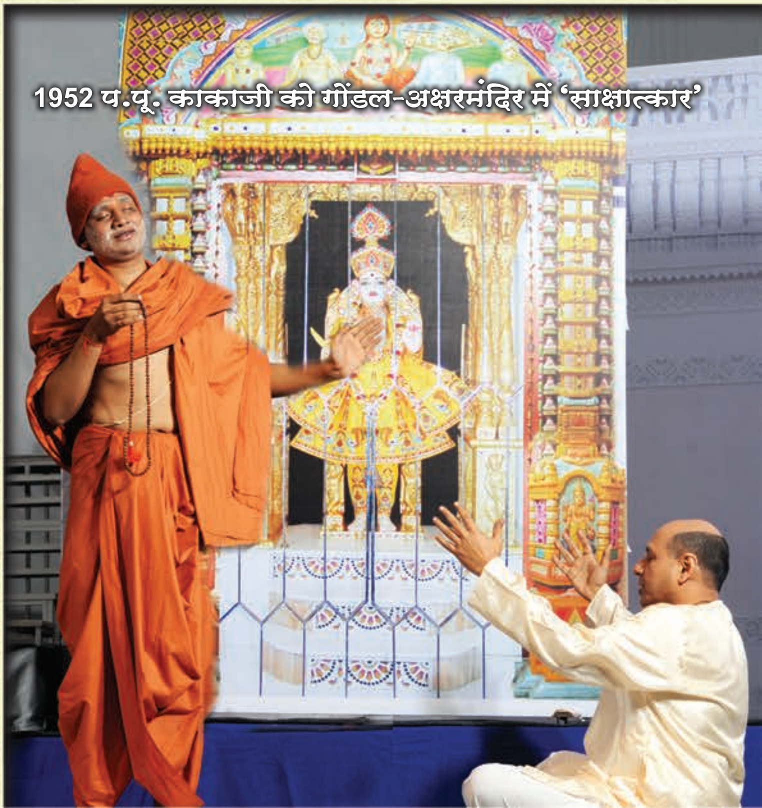

1952 प.पू. काकाजी को गोंडल-अक्षरमंदिर में 'साक्षात्कार'

सभी गुणातीत स्वरुपों के साथ अक्षरधाम के अधिपति
श्रीजी महाराज–असली नारायण के दर्शन करके मैं धन्य हो गया!
– प.पू. काकाजी

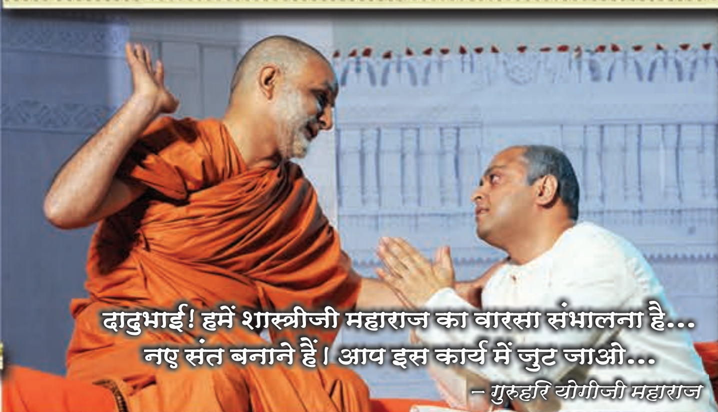

दादुभाई! हमें शास्त्रीजी महाराज का वारसा संभालना है...
नए संत बनाने हैं। आप इस कार्य में जुट जाओ...
– गुरुहरि योगीजी महाराज

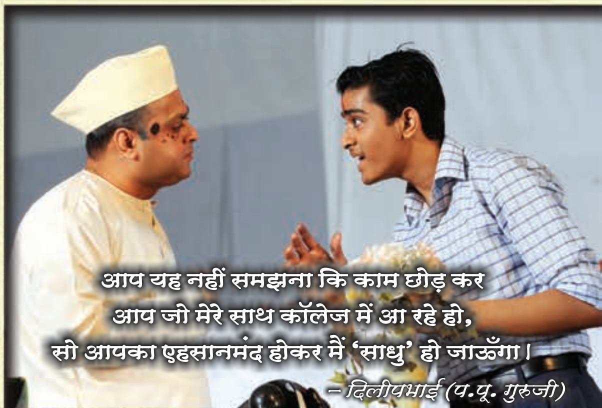

आप यह नहीं समझना कि काम छोड़ कर
आप जो मेरे साथ कॉलेज में आ रहे हो,
सो आपका एहसानमंद होकर मैं 'साधु' हो जाऊँगा।
– दिलीपभाई (प.पू. गुरुजी)

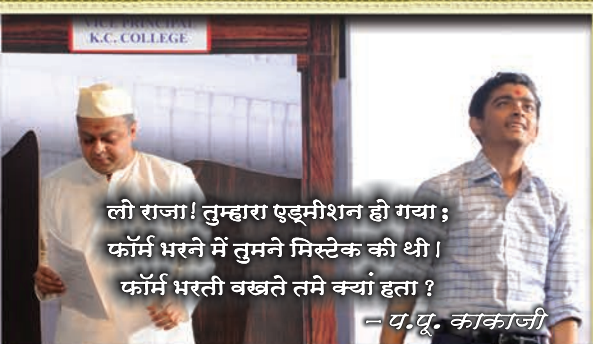

लो राजा! तुम्हारा एड्मीशन हो गया;
फॉर्म भरने में तुमने मिस्टेक की थी।
फॉर्म भरती वखते तमे क्यां हता ?
– प.पू. काकाजी

जा रड्या, तुझे पैसे-बैसे कुछ नहीं मिलेंगे।
– प.पू. सोनाबा

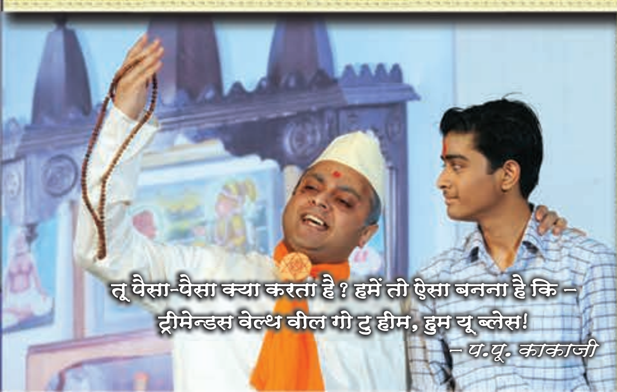

तू पैसा-पैसा क्या करता है? हमें तो ऐसा बनना है कि –
ट्रीमेन्डस वेल्थ वील गी टु हीम, हुम यू ब्लेस!
– प.पू. काकाजी

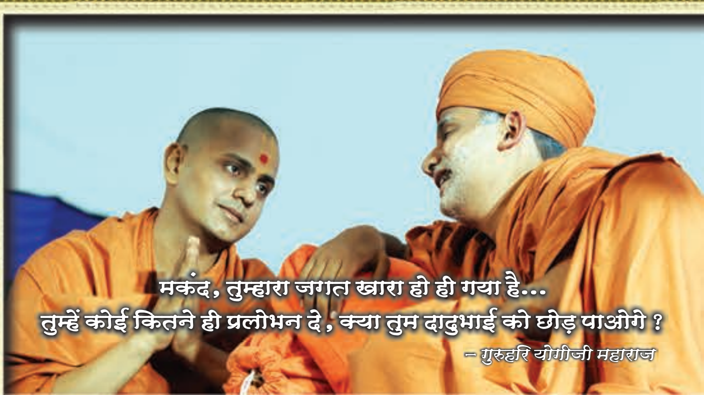

मकंद, तुम्हारा जगत खारा हो ही गया है...
तुम्हें कोई कितने ही प्रलोभन दे, क्या तुम दादुभाई को छोड़ पाओगे ?
– गुरुहरि योगीजी महाराज

दादुभाई–बाबुभाई! अब हमें बहनों की भगवान भजने की व्यवस्था अलग करनी होगी।
– गुरुहरि योगीजी महाराज

सत्पुरुष की मरजी में ही जो कोई भी रहता है,
विमुख भले कोई घोषित कर दे, विमुख नहीं वो होता है...

यूं मत समझना कि यह मैं तुम्हें दिल्ली भेज रहा हूँ;
बापा का संकल्प है और तुम्हें जाना है।
– प.पू. काकाजी

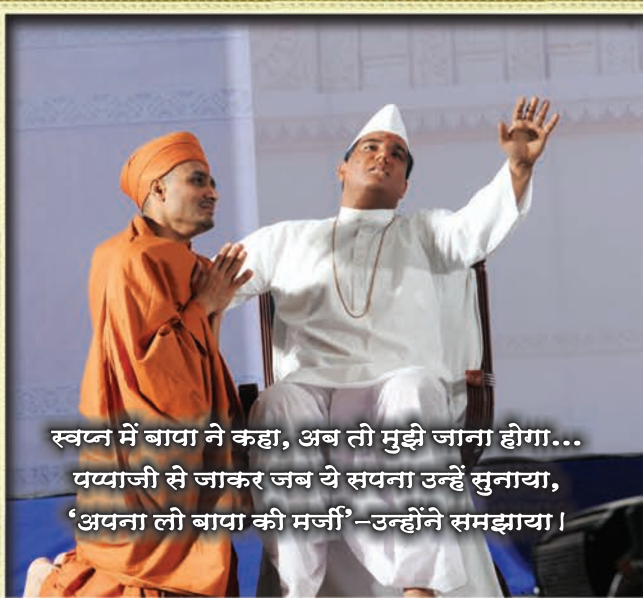
स्वप्न में बापा ने कहा, अब तो मुझे जाना होगा...
पप्पाजी से जाकर जब ये सपना उन्हें सुनाया,
‘अपना लो बापा की मर्जी’–उन्होंने समझाया।

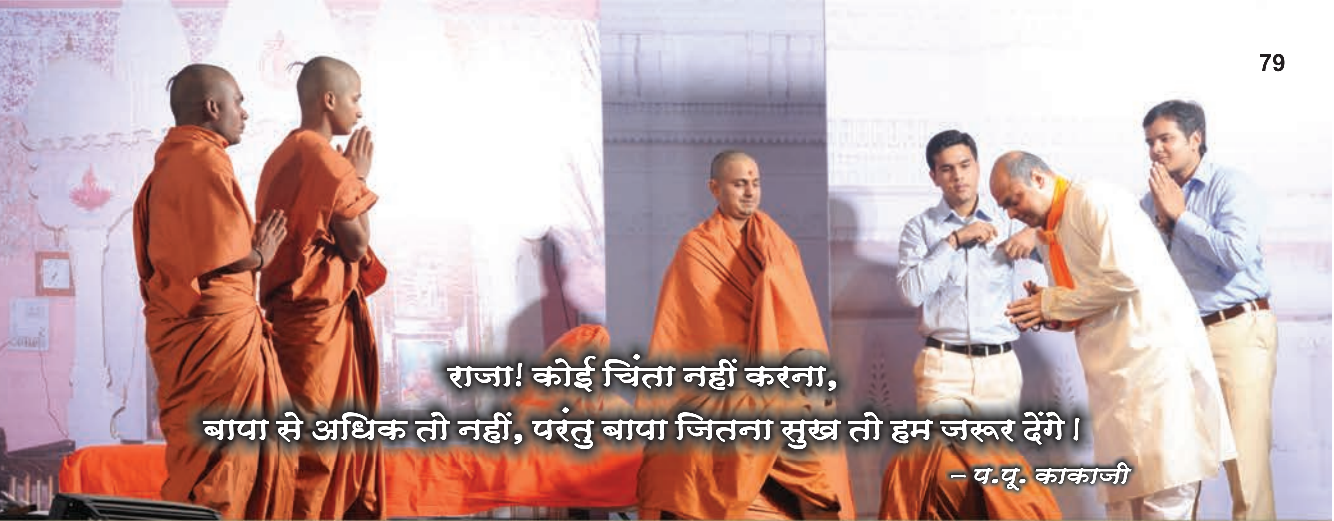

राजा! कोई चिंता नहीं करना,
बापा से अधिक तो नहीं, परंतु बापा जितना सुख तो हम जरूर देंगे।
– प.पू. काकाजी

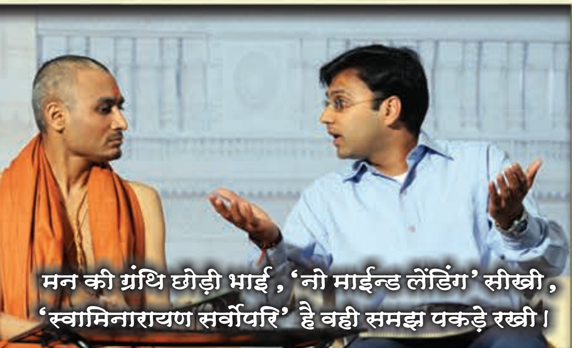

मन की ग्रंथि छोड़ी भाई, 'नो माईन्ड लेंडिंग' सीखी,
'स्वामिनारायण सर्वोपरि' है वही समझ पकड़े रखी।

प.पू. काकाजी की लाक्षणिक अदा!

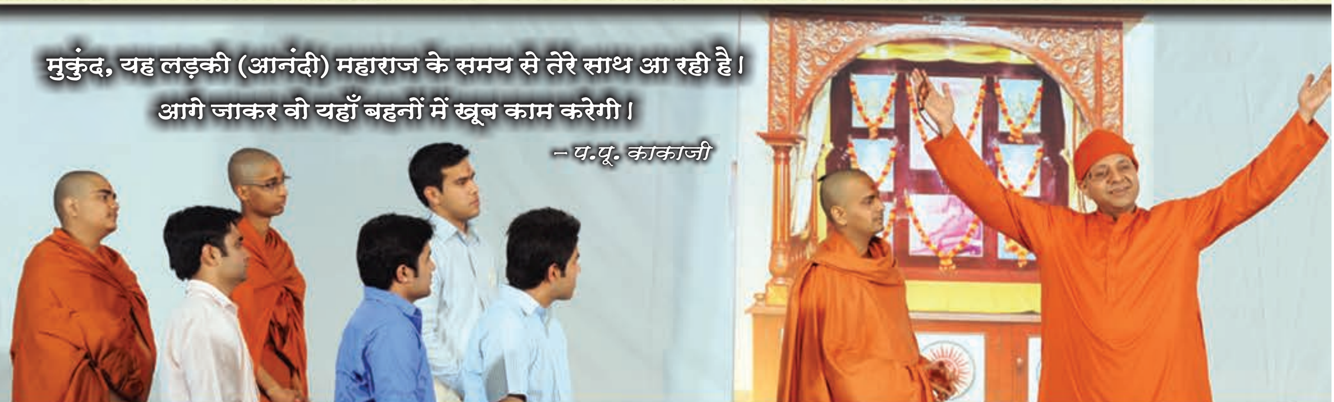

मुकुंद, यह लड़की (आनंदी) महाराज के समय से तेरे साथ आ रही है।
आगे जाकर वो यहाँ बहनों में खूब काम करेगी।
– प.पू. काकाजी

गुड्डी! घरवालों से तेरा सारा लेन-देन पूरा हो गया।
अब तेरी पूरी जिम्मेदारी मेरी है, चिंता मत करना।
– प.पू. काकाजी

काकाजी महाराज को मथ्था टेक, पुत्तर।
– मनोहरलालजी

नारायण हरे... सच्चिदानंद प्रभु !
कृपया एक कटोरी चीनी भी दे दीजिए।

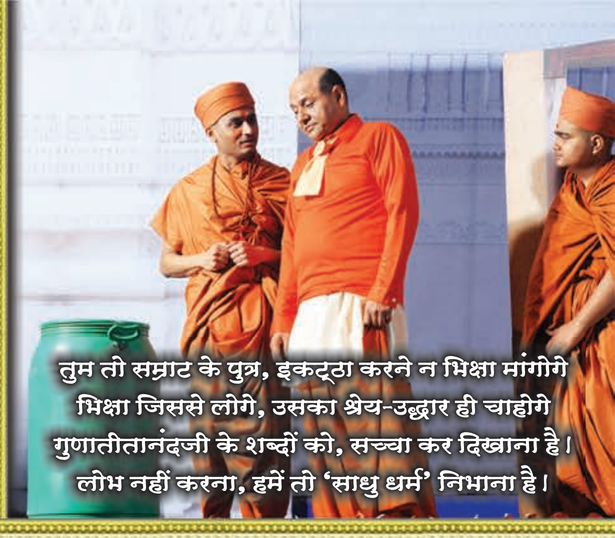
तुम तो सम्राट के पुत्र, इकट्ठा करने न भिक्षा मांगोगे
भिक्षा जिससे लोगे, उसका श्रेय-उद्धार ही चाहोगे
गुणातीतानंदजी के शब्दों को, सच्चा कर दिखाना है।
लोभ नहीं करना, हमें तो 'साधु धर्म' निभाना है।

मुल्लापुर में प.भ. झांझी साहेब के शॅडर पर महापूजा...
मुकुंद, यह सारी भागदौड़ तेरे लिए है !
– प.पू. काकाजी

देखो, ये 'तुम्हारे गुरुजी' !
– प.पू. काकाजी, डीसें. 1985

आओ कोठारी!

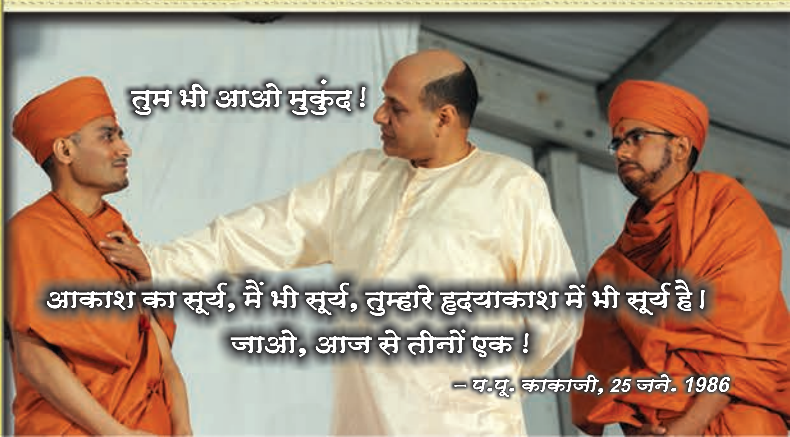
तुम भी आओ मुकुंद !
आकाश का सूर्य, मैं भी सूर्य, तुम्हारे हृदयाकाश में भी सूर्य है।
जाओ, आज से तीनों एक !
– प.पू. काकाजी, 25 जने. 1986

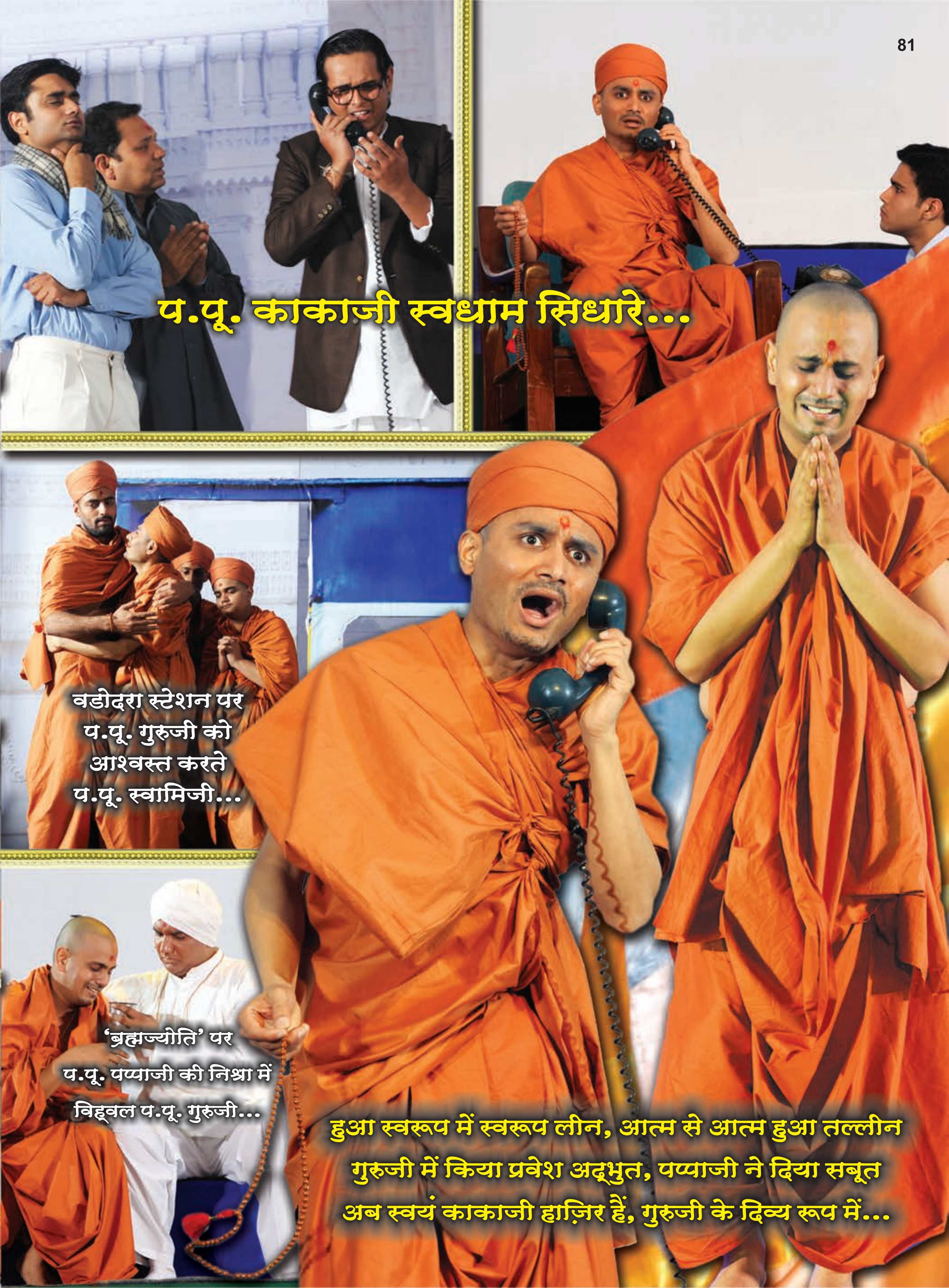

प.पू. काकाजी स्वधाम सिधारे...

वडोदरा स्टेशन पर
प.पू. गुरुजी को
आश्वस्त करते
प.पू. स्वामिजी...

'ब्रह्मज्योति' पर
प.पू. पप्पाजी की निश्रा में
विह्वल प.पू. गुरुजी...

हुआ स्वरूप में स्वरूप लीन, आत्म से आत्म हुआ तल्लीन
गुरुजी में किया प्रवेश अद्भुत, पप्पाजी ने दिया सबूत
अब स्वयं काकाजी हाज़िर हैं, गुरुजी के दिव्य रूप में...

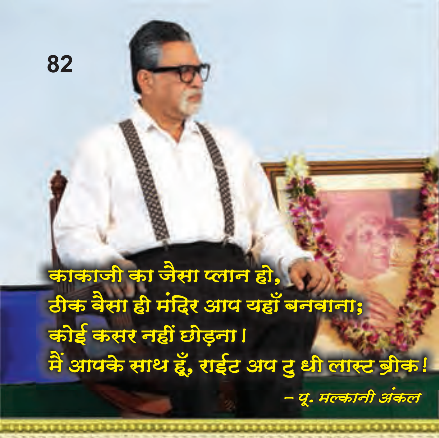

काकाजी का जैसा प्लान हो,
ठीक वैसा ही मंदिर आप यहाँ बनवाना;
कोई कसर नहीं छोड़ना।
मैं आपके साथ हूँ, राईट अप टु धी लास्ट ब्रीक!
– पू. मल्कानी अंकल

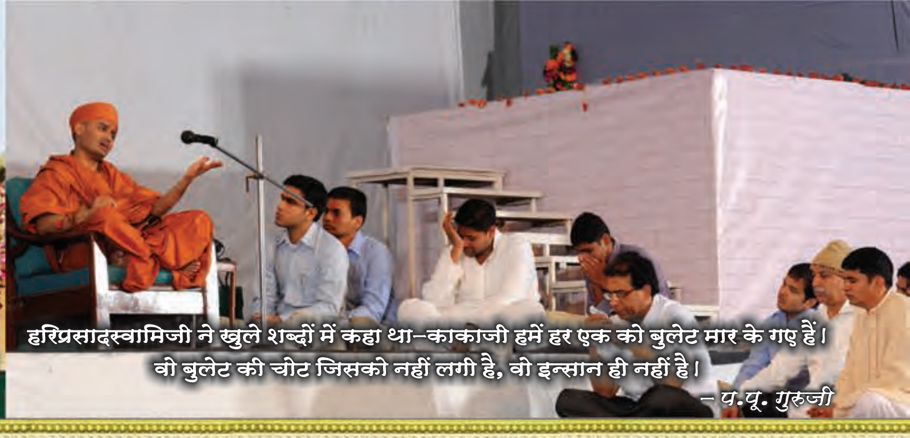

हरिप्रसादस्वामिजी ने खुले शब्दों में कहा था–काकाजी हमें हर एक को बुलेट मार के गए हैं।
वो बुलेट की चोट जिसको नहीं लगी है, वो इन्सान ही नहीं है।
– प.पू. गुरुजी

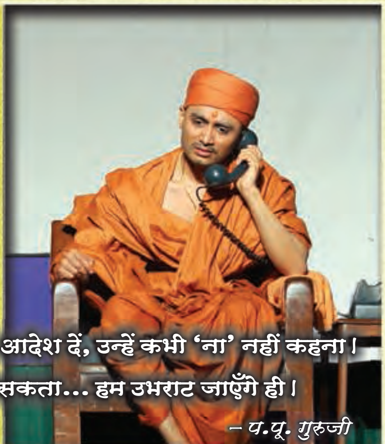

काकाजी ने कहा था–पप्पाजी या स्वामिजी तुम्हें जब जो आदेश दें, उन्हें कभी 'ना' नहीं कहना।
सो, स्वामिजी के बुलावे को मैं अस्वीकार नहीं कर सकता... हम उभराट जाएँगे ही।
– प.पू. गुरुजी

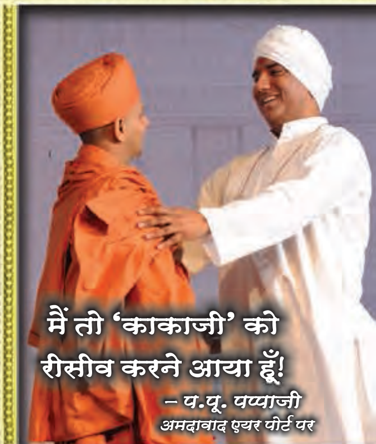

मैं तो 'काकाजी' को
रीसीव करने आया हूँ!
– प.पू. पप्पाजी
अमदावाद एयर पोर्ट पर

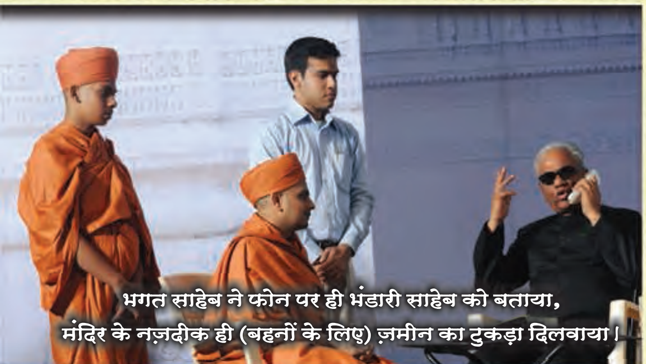

भगत साहेब ने फोन पर ही भंडारी साहेब को बताया,
मंदिर के नज़दीक ही (बहनों के लिए) ज़मीन का टुकड़ा दिलवाया।

मान-अपमान का भेद नहीं, तिरस्कार से खेद नहीं,
करा बेईज्जत जिसने, उसके लिए भजन है कराया...

गुरुजी ने काकाजी को अमर कर दिया...
गुरुजी में सांगोपांग काकाजी का दर्शन कर लेना...
– प.पू. पप्पाजी

हरिभक्तों की कैसी भावना! इनके मन तो काकाजी और पप्पाजी में कोई फर्क नहीं है।
यह देख कर काकाजी आज कितने राजी होते होंगे!

– प.पू. गुरुजी

स्वामी के सेवक अरविंद सेठ की सेवा स्वामी जैसे ही करी,
सर्वदेशीयता से गुरुजी की ऊँचाई और गहराई देखी।

काकाजी और पप्पाजी
गुणातीत समाज के सर्जक हैं,
आद्यसर्जक मंगलमूरत
युगल बंधु को वंदन है...

कुटुंबभाव की अलख जगा के, **काका को प्रगटाया,**
निष्ठा, प्रीति, माहात्म्य से एक दिव्य समाज रचाया,
'ताड़देव' में काकाजी और पप्पाजी पधराए...
धन्य गुरुजी, काकाजी का नाच उठा मन मोर
अर्चिमार्ग की ओर चली रे...

5 फरवरी 2012 - ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज साक्षात्कार हीरक जयंती शिविर

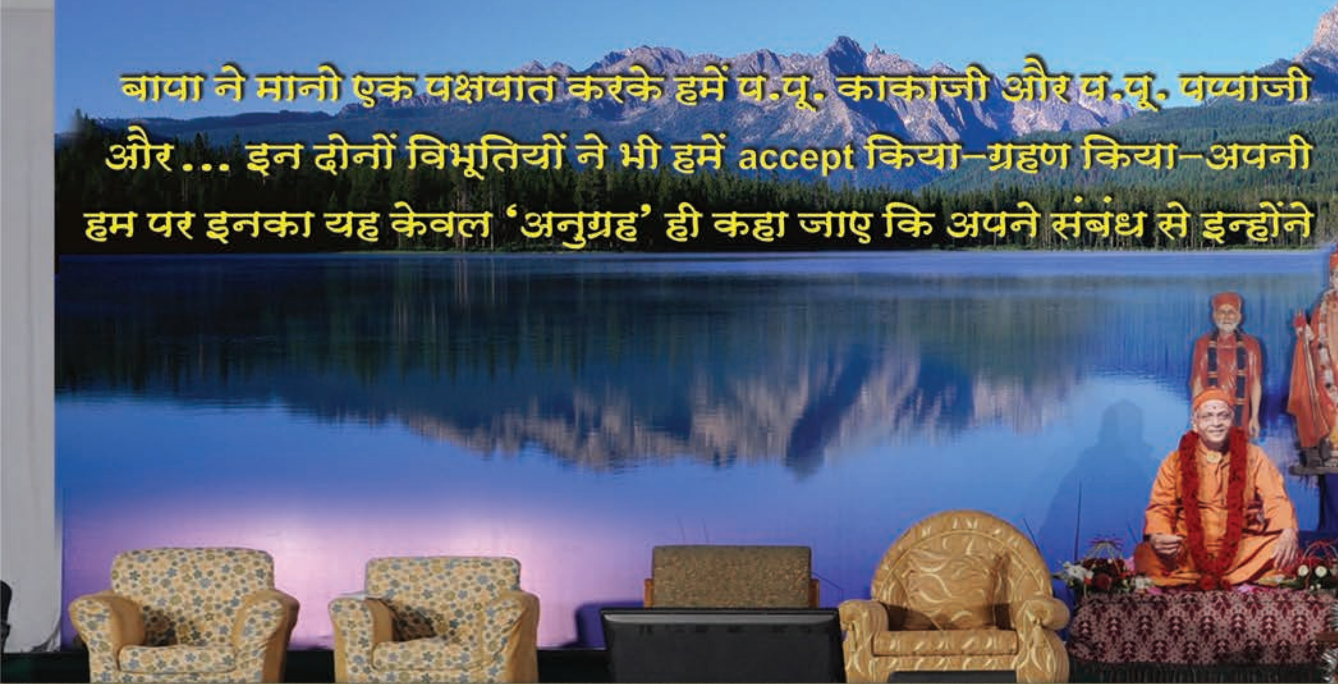

'स्वर्णस्वर' सी.डी. का अनावरण...

'गुरुभक्ति यज्ञ' (प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती) डी.वी.डी. का अनावरण...

'मार्गदर्शिका' सी.डी. का अनावरण...

'कोई, सत्पुरुष की मर्जी में रहकर,
उनकी ही ओर निगाह रख कर केवल घंटी ही बजाए
तो वह 'आत्मसत्ता रूप' वर्ता कहा जाए'-
इस बात का दर्शन इस उत्सव में
पू. नित्या दीदी में सभी को हुआ।

का Exclusive जोग दे दिया
सेरेछाया देकर संबंध दिया।
इस प्रकार हमें 'अर्चिमार्ग की ओर' मोड़ दिया।

बस! मौज में संबंध देकर जीव को ब्रह्मरूप करते हैं
जन्म-मरण के फेरे काकाजी-पप्पाजी तो टालते हैं...

तीन फरवरी पार्क में 'पुश पीन आर्ट' से प.पू. काकाजी

एवं प.पू. गुरुजी की मूर्ति...

3 फरवरी 2012 – कलशविधि एवं पाटोत्सव निमित्त सभा

प.पू. शांतिभाई साहेब (अनुपम मिशन)

...'हमारी निष्ठा है, प्रभु प्रगट हैं, सर्वोपरि हैं, हितकारी हैं, मंगलकारी हैं। पल में चाहे सो कर सकते हैं और वे हमारे हैं, सो वे हमारा अहित होने ही नहीं देंगे'–

यह जो सूत्र यहाँ लिखा है, वह गुरुजी का जीवन है...

काकाजी स्वरूपनिष्ठा की जो बात करते थे कि सुहृदभाव, निर्दोषबुद्धि से अपनी साधना करें और प्राप्ति कर लें, तो ऐसा समाज बनता है; **वो दर्शन आज यहाँ होता है।** काकाजी और पप्पाजी को शत्-शत् प्रणाम करते हैं एवं गुरुजी को अनंत प्रणाम करते हैं...

सबके हृदय में गुरुजी के प्रति जो अनुभूति या भाव है कि उनके रूप में पूर्ण भगवान आज हमें मिले हैं, उतना ही भाव स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, साहेबजी, दिनकरभाई, भरतभाई के स्वरूप में है। **यहां के समाज में 'वो महिमा' जब देखते हैं, तो बहुत आनंद आता है। काकाजी को जो करना था, वो हो गया है** – ऐसी अनुभूति यहाँ होती है... मैं गुरुजी को इसलिए वंदन करता हूँ कि काकाजी ने जो कहा, वो बहुत असंभव लगता था। लेकिन, गुरुजी ने पूर्ण विश्वास से यहाँ ये काम किया है... गुरुजी को जब साधु बनाया, तो जो आशीर्वाद दिए होंगे, आज वो सब पूर्ण हुए हैं। काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, साहेबजी की महिमा यहाँ सारे समाज में, जो सबके हृदय में है, सबके मुखारविन्द पर जो भक्तिभाव है, सब स्वरूपों के प्रति जो भक्ति है-माहात्म्य है, वो दर्शन करके प्रणाम हो जाता है...

आज तक जो बातें काकाजी, पप्पाजी करते थे या योगीबापा के पास जो सुनी हैं या स्वामिजी, साहेबजी कर रहे हैं कि – यहाँ कोई छोटा-बड़ा नहीं है, सब अच्छे हैं, सब भगवान के भक्त हैं, भगवान के स्वरूप हैं, ऐसा स्वीकार करो – **ये जो बात होती थी, उसका आज यहाँ दर्शन करके बहुत आनंद होता है** और प्रार्थना भी होती है कि गुणातीत समाज में काकाजी-पप्पाजी को जो ऐसा संबंध कराना था, योगीबापा ने जब ये संत बनाए तब से जो कराना था, आज यहाँ साकार हो रहा है। **सच्चे अर्थ में 'गुणातीतभाव का जो संबंध' होना चाहिए,** उस संबंध का दर्शन यहाँ करके मैं प्रार्थना करता हूँ कि **हम सब यह ज्ञान समझकर हमारे जीवन में पल-पल जीएं।** ऐसे दिव्य पुरुषों का माहात्म्य जैसा है, संबंध वाले सब भक्तों के प्रति भी हमारा ऐसा ही माहात्म्य का संबंध हो जाए। यहाँ **बहनों का** जो समाज है, जब सब मिलते हैं तो **वंदन करना नहीं पड़ता, अपने आप हो जाता है** क्योंकि हृदय में ऐसा दिव्यभाव, ऐसा माहात्म्य का भाव सबके हृदय में आज प्रगट हुआ है।

तो, गुरुजी मैं आपको प्रणाम करता हूँ। आपने काकाजी के साथ जो संबंध पक्का किया, काकाजी के प्रति आपका जो भाव था, उसी भाव से ये सब छोटे-बड़े सब भक्तों के साथ आप जीते हैं, दासत्वभाव से जीते हैं। **आपका दर्शन जब करते हैं, तो आपकी प्रत्येक क्रिया, वर्तन में दासत्वभाव-महिमा का भाव है। ऐसा भाव जब होता है, तब सब दोष चले जाते हैं...**

प.पू. दिनकरभाई

...आज 'आपणु मंदिर'-'हमारा मंदिर' के आनंद का दिन है। जब मैं दो हफ्ते पहले यहाँ आया था, तो गुरुजी इस पुस्तक की कुछ प्रूफ रीडिंग कर रहे थे। ब्लेक एण्ड व्हाइट कॉपी थी। उसमें पिक्चर्स इतने क्लीयर दिखाई नहीं दे रहे थे, जितने अब दिखाई दे रहे हैं। सब गुणातीत स्वरूपों के दर्शन इतने क्लीयर हो रहे हैं कि ऐसा होता है कि उन्हें ही देखते रहें–दर्शन करते रहें। गुरुजी इसे इंग्लिश में भी ट्रांसलेट कर रहे हैं और होगा भी। जितनी भी भाषाएं होगीं, उसमें वो होता ही जाएगा। जो-जो हरिभक्त के दिल में ऐसा है कि ये हमारा मंदिर, ये देह हमारा मंदिर–उसके बारे में इसमें से बहुत प्रेरणा मिलती रहेगी।

गुरुजी के बारे में सबसे पहले हरिभक्तों ने एक भावना बताई है और उसमें लिखा है– ***'कॅरिंग' धाय नेईम इज़ गुरुजी।*** गुरुजी मीन्स हमारी केयर करने वाले। जब मैं पढ़ रहा था तो मुझे लगा कि अकेला 'कॅरिंग' शब्द शायद प्रभुता द्योतक शब्द है। फिर भी है भक्ति वाला, मगर प्रभुता वाला होगा। हमारी उपासना तो भक्त और भगवान की है। अकेले प्रभुता से काम नहीं होता है। स्वामिजी भी 'दास का दास' बनने पर बार-बार समझाते हैं। **प्रभुता सहज आ जाएगी, मगर इन गुणातीत स्वरूपों के आशीर्वाद के बिना दासत्व आना संभव नहीं है।** तो मेरी एक प्रार्थना है कि ***'टेंडर कॅरिंग धाय नेम इज़ गुरुजी'*** –ऐसा लिखा जाए। अंग्रेजी में ऐसा कोई शब्द नहीं है कि गुणातीतभावना का दर्शन हो सके। मगर फिर भी *'टेंडर'* शब्द से थोड़ा-सा दर्शन होता है। तो, मैं गुरुजी से ये प्रार्थना करता हूँ कि इंग्लिश में जब हो, तो ऐसा लिखा जाए। आप तो नहीं करवाएँगे, आप तो कहेंगे कि मेरे बारे में मत लिखो...

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी

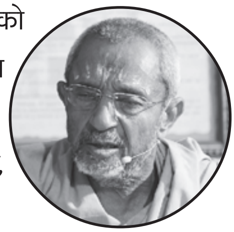

आज ३ फरवरी का अद्‌भुत मंगलकारी दिन है। काकाजी ने एक बात हम लोगों को बताई थी। भगवान स्वामिनारायण ने वचनामृत लास्ट सेक्शन के सेवन्थ और इलेवन्थ में लिखा है–

देह और देह के सगे-संबंधी के साथ जैसी आत्मबुद्धि और प्रीति है, ऐसी प्रीति भगवान, भगवत्स्वरूप संतों के साथ करनी चाहिए।

ये देह के साथ कितना लगाव है, ये देह का हम कितना जतन करते हैं, टाईम पर खिलाते हैं, टाइम पर सुला देते हैं, ये देह के लिए हम सब कुछ करते हैं और देह के सगे- संबंधी के साथ भी कितनी प्रीति है।

...ऐसी भगवान, संत, भगवत्स्वरूप भक्तों के साथ हो जाए, तो **'निर्विकल्प समाधि'** का सुख प्राप्त हो जाए। एक भगवान श्री कृष्ण ने, दूसरा भगवान स्वामिनारायण ने और अद्‌भुत संत गोपाळानंदस्वामिजी ने **'अष्टांग योग'** सिद्ध किया था।

...भगवान स्वामिनारायण ने वचनामृत में कहा है– *जितना समुद्र में पानी है, इतना हमने माता का दूध का पान किया है।* मतलब, कई जन्म हमारी आत्मा ले चुकी है, ले चुकी है, ले चुकी है। अब हमें अद्‌भुत अवसर मिल गया है।

...**वचन में विश्वास बहुत कठिन चीज है**, बहुत कठिन चीज है। कृष्ण परमात्मा को अर्जुन ने तीन बार कह दिया था कि मुझे युद्ध नहीं लड़ना है, युद्ध नहीं लड़ना है। विश्वास अलग चीज है। **बुद्धि पर का विश्वास आज गुरुजी ने रखा हैं। गुरुजी, काकाजी का एक पनौते पुत्र हैं।** गुरुजी के वचन में विश्वास सम्यक् होना बहुत कठिन चीज है। **गुरुजी जैसे संत के वचन में यदि सम्यक् विश्वास आ जाए, उसका रिज़ल्ट है 'निर्विकल्प समाधि' का सुख...**

...गुरुजी के संबंध वाले भक्तों के साथ जो ऐसी प्रीति हो जाए, तो हम 'निर्विकल्प समाधि' का सुख प्राप्त करेंगे। **आत्मा काम-क्रोध-लोभ की जकड़ से मुक्त होगी।** आत्मा, भगवान और संत की दृष्टि से, हठ-मान एवं ईर्ष्या से मुक्त हो जाती है। हम सबकी जिम्मेदारी है–देह में और सगे संबंधी के साथ जैसी प्रीति है, ऐसी प्रीति भगवान और भगवान के भक्तों के साथ हो जाए... **गुरुजी के साथ इतना अद्भुत लगाव करो, इतना अद्भुत लगाव करो जितना काकाजी ने योगीजी महाराज के साथ किया।**

...आज के मंगलकारी दिन ३ फरवरी जब आप मना रहे हो, गुरुजी जैसी व्यक्ति को काकाजी ने यहां रखा है... तो, आप सबको बल, बुद्धि, शक्ति ऐसा संबंध देने के लिए देते ही रहें, देते ही रहें, देते ही रहें।

3 फरवरी 2012 – ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज साक्षात्कार हीरक जयंती सभा

प.पू. अश्विनभाई (अनुपम मिशन)

३ फरवरी - ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन। जब से हमें सत्संग की समझ आई, तब से हम मनाते आए हैं। इस बात को ६० साल बीत गए, उसकी स्मृति हम लगातार हर साल कर रहे हैं। काकाजी महाराज को साक्षात्कार हुआ, मतलब क्या हुआ और कैसा साक्षात्कार था, उसके बारे में सवाल भी हमारे मन में उठे हैं। काकाजी ने लंडन में उसका बहुत सुंदर वर्णन किया और वहाँ के भक्तों ने कैसेट में रिकॉर्डिंग भी की है, पर वो बात हमारी कल्पना में बैठती नहीं है। एक बात इतनी समझ में आती है कि–

काकाजी के शब्दों में–

मैं दर्शन करके आया कि अक्षरधाम के तख़्त पर जो स्वरुप विराजमान है, वो ही स्वरूप ये योगीजी महाराज हैं और... जिन्हें मेरे साथ प्रीति थी, उन्हें मैंने जोर-शोर से इस साक्षात्कार की झांकी और प्रतीति कराई।

काकाजी महाराज के साक्षात्कार की विशेषता यह हैं कि जिस दिन से उन्हें दृढ़ हो गया कि साक्षात् पुरुषोत्तम नारायण का स्वरूप मुझे मेरे योगी बापा के द्वारा मिला है; साक्षात्कार की यह बात और दर्शन वे कभी भूले नहीं। ६० साल से हम प्रगट और प्रत्यक्ष सत्पुरुष की ये बातें सुनते आए हैं, पर फिर भी अपने व्यक्तिगत जीवन के साधना के प्रसंग में **हम यह** बात **भूल जाते हैं। यानि हमें उनका साक्षात्कार नहीं है।** काकाजी वो बात कभी भूले नहीं और हम भी वो भूलें नहीं, उसके लिए उन्होंने हमें अनेक चाबियाँ भी बताईं। काकाजी के जीवन के प्रसंग से देखें, तो काकाजी के जो शब्द, **योगीजी महाराज के प्रति उनका जो कर्ता-हर्ता और प्रगट का भाव–सदा दिव्य साकार प्रगट और प्रत्यक्ष होने का भाव उनके**

जीवन में सदैव रहा था, है। और... इसीलिए वे इतनी ख़ुमारी से हर एक प्रसंग पर बात कर सकते थे, बरत सकते थे और जहाँ हम कमज़ोर पड़ते, हमें भी उस बात का सहारा दे सकते थे।

कई प्रसंग पर पुरानी बातें होती हैं। इस साक्षात्कार दिन पर **एक बात गुरुवर्य साहेबजी के जीवन की** कहता हूँ–

१९६५ की साल में गोंडल में जब साहेबजी ने शरद्पूर्णिमा की सभा में काकाजी द्वारा बताई हुई बातें और अनुभूति की बात की, तो दूसरे दिन सुबह कुछ वड़ील साहेबजी के इर्द-गिर्द इकट्ठे हो गए। उनसे पूछा–ऐसा ज्ञान कहाँ से सीख कर आए हो? ऐसी बातें की जाती हैं क्या? साहेब को खूब खड़काया! यह प्रसंग हमने साहेबजी के श्रीमुख से सुना है... यह प्रसंग गुरुवर्य साहेबजी से सुनने का लाभ लेने जैसा है।

काकाजी को १९५२ में साक्षात्कार हुआ। उन्होंने सत्संग में यह बात जोर-शोर से की। साहेबजी बताते हैं कि **१९६५ में जब यह बात की, तब भी उसका इतना जोर-शोर से विरोध हुआ, इससे हम समझ सकते हैं** कि **प्रगट और प्रत्यक्ष स्वरूप की बात हृदय में धारण करनी और जीवन के वर्तन में लानी,** वो गुणातीतानंदस्वामी ने जैसे अपनी बातों में कहा है कि **कलेजा टूटने जैसी बात** है **और वो बात काकाजी ने अनहद् कृपा करके गुणातीत समाज के मुक्तों के लिए इतनी सुलभ, सहज और स्वाभाविक बना दी कि–** आज तो हमारे समाज के छोटे-छोटे बच्चे इस बात के मुताबिक बरतते और जीते हैं। **काकाजी द्वारा हमें मिली वो अनहद् अमूल्य भेंट है।**

आज काकाजी का ६०वां साक्षात्कार दिन मनाया जा रहा है। ऐसे ही षणमुखानंद हॉल में काकाजी का ६०वां प्रागट्यदिन मनाया था–उस प्रसंग की भी स्मृति होती है। उस प्रसंग के भजनों का हिन्दी अनुवाद आज हम सबको यहाँ सुनने को मिला। आज भी–**इतने सालों के बाद भी हम वही बात कर रहे हैं कि काका रे! काका रे! आज आव्युं टाणुं नजराणुं तमने देवानुं...।** उन्होंने हमें जो कुछ भी दिया है, **उनके ऋण का स्वीकार हमने किया, पर हम उसे चुका कैसे सकेंगे,** जो हमारे लिए बिल्कुल नामुमकिन है।

तब, **यहाँ से पू. गुरुजी का माहात्म्य शुरु होता है,** जिन्होंने इसे सत्य और संभव बनाया और परिणामस्वरूप आज ये गुणातीत समाज का आनंदोत्सव हम काकाजी के ६०वें साक्षात्कार दिन पर यहाँ मनाने के लिए भाग्यशाली हुए हैं। **जैसा साक्षात्कार योगी बापा का काकाजी को हुआ कहा जाता है, वैसा ही साक्षात्कार काकाजी का गुरुजी को हुआ है, ऐसा कहा नहीं जाता–ऐसा दिखता है और अनुभव होता है।** सभी बातों में इसी बात का घोष उठता है– 'काकाजी लेन' नाम दिया, 'ताड़देव' नाम दिया, एक-एक बात में काकाजी-काकाजी के साथ की स्मृतियाँ और काकाजी का ही हर प्रकार का अनुसंधान और काकाजीमय ही जीवन बना कर, **उन्होंने केवल काकाजी का नहीं; बल्कि काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी और सभी का माहात्म्य अपने जीवन के साथ ऐसा गूँथ लिया कि उनके साथ प्रेम से जुड़े हुए संतों, भक्तों, संत बहनें, सभी के जीवन में इस बात को स्वाभाविक बना दिया।**

आज सुबह शांतिभाई ने अपने प्रवचन में कहा कि इसके लिए हम गुरुजी को **'अनंत वंदन'** करते हैं। लाख-लाख वंदन करें, तो लाख की संख्या में गिना जा सकता है; पर यहाँ तो अनंत वंदन करते हैं, ऐसा सुंदर शब्द का प्रयोग उन्होंने किया, वो सचमुच सार्थक है। **काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी और प्रगट सत्पुरुष की महिमा, गुरुजी ने सच्चे अर्थ में हम सबको जीकर बताई।**

हम सबके लिए, नई पीढ़ी के युवक साधकों के लिए **गुरुजी प्रेरणारूप हैं।** उनके जीवन समक्ष दृष्टि रखकर, हम जो जहाँ जिस सत्पुरुष के आश्रय में रहकर साधना कर रहे हैं, उन्हें अपने सत्पुरुष के साथ का ऐसा ही संबंध दृढ़ करना है, जिसे कहा जाता है गुणातीत सत्पुरुष के साथ की 'असाधारण प्रीति'। **गुरुजी की काकाजी के प्रति असाधारण प्रीति के फलस्वरूप यह सब सत्य हुआ है।** काकाजी उनके लिए सर्वस्व, तो **काकाजी ने भी बार-बार ऐसा कहा है कि मुकुंद का मैं ज़मानती हूँ।** 'काकाजी मेरे सर्वस्व हैं' –गुरुजी ने यूँ कहा; तब काकाजी ने भी कहा कि *'मुकुंद की जिम्मेदारी मेरी है।'* पुराने सालों की बातों में **काकाजी के मुख से हमने खुद ये बातें सुनी हैं, उसकी अब विशेष स्मृति होती है** और **विशेष दृढ़ता होती है कि प्रगट सत्पुरुष के साथ की असाधारण प्रीति के फलस्वरूप ही जीवन का रूपांतर होता है, स्वभाव का रूपांतर होता है।**

सचमुच, मुकुंदजीवनस्वामी अक्षरपुरुषोत्तम के सिद्धान्तों को ही मुख्य और केन्द्र में रखकर, जिस तरह जीवन जी रहे हैं, उस पर 'गुणातीत समाज' के हम सब मुक्तों, साधकों, संतों गौरव कर सकते हैं, हम सबके लिए प्रेरणारूप है।

आज मंगल दिन है, तो हम सब उनसे प्रार्थना करें कि आप कृपा करके हमें हमेशा ऐसी सूझ, समझ, दृष्टि और भक्ति देते रहना कि जैसे आपने गुणातीत का दासत्वभाव आपके जीवन में साकार किया, काकाजी-पप्पाजी की महिमा का जितना विस्तार किया, उतना आज आपकी महिमा का विस्तार होता दिखता है। **पू. आनंदी दीदी** ने गुरुजी की महिमा का जितना विस्तार किया, इतना आज आनंदी दीदी की महिमा का विस्तार हम सबको दिख रहा है और यही तो मूलभूत सिद्धांत है। शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज ने अनेक प्रकार की कसनी, कष्ट सहकर श्री अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना के प्रवर्तन का कार्य हम सभी के लिए सुलभ बनाया। काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, सोनाबा, इन सबने मिलकर हमारे लिए उसे उससे भी ज्यादा आसान बनाया और **काकाजी के शब्दों में** कहें तो–

उसकी 'मास्टर की' मैं तुम्हें बताता हूँ...। ऐसा कहते हुए काकाजी टकोर भी करते–

मुझे पता है कि तुम चाबी खो देने वाले हो। पर फिर भी तुम हमारे कहे जाते हो, तो हम तुम्हें अपने जैसा सुखी करेंगे।

उनका ऐसा वरदान हम बार-बार याद करें और उनकी ओर लगातार दृष्टि रखें; उनका साक्षात्कार हम सबको हो– ऐसी आज साक्षात्कार दिन की मंगल प्रार्थना।

पू. शास्त्री नर्मदाशंकरजी (मुंबई)

...आज **दादुकाका का साक्षात्कार दिन** है। आज **मुकुंदजीवन उनके मानसपुत्र हैं, इस हक़ीक़त से कोई अनजान नहीं है।** जब वहाँ दादर में मैं संस्कृत पढ़ाता था, तब मेरा संबंध सभी संतों के साथ था, पर मैं और मुकुंदजीवन बहुत बातें करते थे और निरंतर संबंध हो गया। पर **ज्यादा वियोग, वो ज्यादा संजोग का काम करता है।** मुकुंदजीवन को मैं आज बहुत सालों के बाद मिला, पर वो प्रेम और जो सद्भाव था, उससे सौ गुना आज उनका मुझ पर है...

इस प्रसंग पर मुझे हुआ कि मुझे कुछ लिखना चाहिए, क्योंकि उन्होंने मुझे बुलाया और यहाँ आकर जो यह देखा, उनका बायोडॅटा मंगाकर जो मुझे सूझा वो मैंने लिखा है। उनके आख़िरी श्लोकों में मैंने कहा कि जैसे अर्जुन ने भगवान को कहा था कि 'करिष्ये वचनं तव'। यूँ मुकुंदजीवनस्वामी ने भी दादुकाका से कहा कि 'करिष्ये वचनं तव' और यह किताब जब पढ़ेंगे, तब ख्याल आएगा कि मेरा मुकुंदजीवन के प्रति कितना सद्भाव है। आज एक बात और मुझे कहनी है कि आज जो यह हो रहा है, वो खाली ज्ञान और ध्यान से नहीं होता। ज्ञान और ध्यान के साथ हृदय का संबंध है...

...यहाँ के सज्जनों को मैं विनंती करता हूँ कि **मुकुंदजीवन जो काम करें, उसमें आप उदारता से जितना हो सकें, उतना सहकार देना।** मुकुंदजीवन को मैं आशीर्वाद देता हूँ, यूँ तो आशीर्वाद देने जैसे नहीं हैं, पर मैं उनका गुरु हूँ इसीलिए आशीर्वाद दे रहा हूँ कि आप जो कार्य कर रहे हो, वो करते रहो। आज मैं 'अक्षरधाम' जाकर आया हूँ; वैसे आप भी ऐसा काम करो कि आपको भी लोग मानें, आकर्षण हो और महान बनो वो मेरी आशा है।

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी

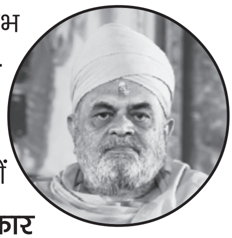

...काकाजी ने अपनी जिंदगी, अपनी आयु समर्पित करके, हम सभी को खूब लाभ दिया है। उसमें विशेष रूप से **काकाजी को आत्मसात् करके - साथ रहकर, गुरुजी काकास्वरूप बन गए। उनके रोम-रोम में आज काकाजी के दर्शन होते हैं।** एक-एक कार्य में केवल 'काकाजी-काकाजी' के अलावा कोई चीज़ देखने को नहीं मिलती है। अभी अश्विनभाई ने बहुत अच्छी बात की कि **गुरुजी को काकाजी का साक्षात्कार हो गया है, आज उनके द्वारा काकाजी हाज़राहज़ूर ही हैं, ऐसा हम सब मानें।** क्योंकि हम सब को यह प्रतीति हुई है कि काकाजी उनके द्वारा हाज़िर ही हैं, गए ही नहीं हैं, ऐसा यहाँ बिराजे हुए हम सबको उनका अनुभव है। हम सबके जीवन के अंदर भी... **काकाजी की गैरहाज़िरी उन्होंने महसूस नहीं होने दी** और... उन्होंने **ऐसा सुंदर कार्य किया है कि जिस कार्य की काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी और ऐसे दिव्य स्वरूप, हमसे आशा रखते हैं...**

गुरुजी ने सचमुच खूब शोभा बढ़ाई है... **आज सबके हृदय में काकाजी को विराजमान कर दिया, वो सचमुच बहुत बड़ी बात है... काकाजी का जो संकल्प है, वो गुरुजी द्वारा साकार हो रहा है।** वे जो भी प्रार्थना-संकल्प करें या कार्य उठाएँ, उसमें हम सब अपने आपको याहोम करके उनका ऋण अदा करें। **हम कितना भी करेंगे, काकाजी का ऋण तो चुका पाएं ऐसा है ही नहीं, वो नामुमकिन ही है। परंतु सचमुच, यत्किंचित् जो कुछ भी हमसे हो पाए, उतना गुरुजी के वचन से हम सब काकाजी को जो अपने हृदय के अंदर विराजमान करे हुए हैं, उन काकाजी को आज मुकुंदजीवनस्वामी की आज्ञा पाल कर प्रत्यक्ष करें—बाहर लाएँ,** ऐसा हम सब आज संकल्प, प्रार्थना और भजन करें... जैसे अश्विनभाई ने कहा कि आपको काकाजी का साक्षात्कार हुआ है, वैसे सबके हृदय के अंदर साक्षात्कार हो...

श्री हरिशंकर गुप्ताजी (दिल्ली)

...सबसे पहले तो मैं इस मंच को प्रणाम करता हूँ कि आज इतनी महान और पुण्य आत्माएं हमारे बीच में इस मंच पर विराजमान हैं। दूर से इनके दर्शनमात्र से जीवन सफल हो जाता है और आज हम लोगों के बीच में साक्षात् हैं। यह हम सब लोगों का बहुत बड़ा सौभाग्य है। मैं तो गुरुजी का हृदय से कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने मुझे अपना आशीर्वाद और स्नेह दिया है। जब-जब भी इस प्रकार की पवित्र गंगा यहां पर गुरुजी के प्रयासों से बहती है, तो उसमें मुझे भी वो आशीर्वाद में शामिल कर लेते हैं। मैं ज्यादा कुछ नहीं कह पाऊंगा; इतने महान लोगों के बीच में मेरे पास कहने के लिए कुछ नहीं है। गुरुजी हमेशा अपना स्नेह और आशीर्वाद मुझ पर बनाए रखें। कोई न कोई कार्य मुझे सौंपते रहें और इसी विधानसभा क्षेत्र में जहाँ ये कार्यक्रम आयोजित हो रहा है, उसका मैं प्रतिनिधित्व करता हूँ। उसमें अपना प्रताप, अपना आशीर्वाद सभी लोगों के लिए इसी प्रकार बिखेरते रहें। यहाँ मंच पर बुलाकर मुझे गुरुजी ने बहुत सम्मान दिया है, मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

प.पू. साहेबजी

बहुत आनंद का दिन– ३ फरवरी! प.पू. काकाजी के साक्षात्कार का हीरक जयंती पर्व! दिल्ली के आँगन में **प.पू. गुरुजी ने** सचमुच खूब परिश्रम करके **उमंग से संतों, संत बहनों, व्रतधारी भाइयों एवं गृहस्थों को एकत्र किया। समग्र सत्संग में गुणातीतभावना प्रकटा कर भक्ति करने की काकाजी की भावना थी।** काकाजी को ३ फरवरी को जो साक्षात्कार हुआ, हम सभी के लिए योगीजी महाराज ने सच में खूब कृपा की। हम सब जानते हैं, **बापा भोले-भाले, सीधे-सादे, सरल साधु।** सबसे प्रेम करते, सबका रखते। सबको मानते और सभी के आगे झुकते रहते, सबकी सेवा करते, सो खूब जँचते। पर, **योगीजी महाराज स्वयं प्रभु का स्वरूप हैं, यह बात काकाजी ने साक्षात्कार के बाद की। तत्पश्चात् जिस-जिसने उन्हें ऐसा मान कर उनकी आज्ञा पाली या उनके साथ रहे, उन सभी का जीवन सच में बदल गया।**

शास्त्रीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना के द्वारा मानव मात्र को सुखी होने का मार्ग दिया। भगवान भजते हैं, भगवान की भक्ति करते हैं, उनका होकर सेवा करते हैं, लेकिन उसका परिणाम नहीं आता। यदि सच में उस **सेवा और भक्ति का परिणाम लाना हो, तो प्रभु सदा साकार, दिव्य और प्रकट हैं, यह बात** सच में **जीवन में स्थापित करनी पड़ेगी।**

दादुकाका को साक्षात्कार हुआ, **समाधि हुई।** महाराज के समय कइयों को समाधि होती थी। शास्त्रीजी महाराज ने भी समाधि का प्रकरण चला कर कइयों को समाधि कराई। इस समाधि में काकाजी पर योगीजी महाराज की अपरंपार कृपा; **जो एक अनोखी समाधि थी। जिसे हम 'ज्ञानसमाधि का साक्षात्कार' कहेंगे।**

काकाजी ने समाधि में से आकर जो बात की कि अक्षरधाम के तख़्त पर मैंने योगीजी महाराज के दर्शन किए। उनका कहने का तात्पर्य यह था कि देह को छोड़ कर जिन्हें पाना है; जैसे गुरु गुणातीत की बात है कि – करोड़ यज्ञ, करोड़ दान करके जिन्हें पाना है, वो मानवरूप में योगीजी महाराज के द्वारा मिले हैं। योगीजी महाराज सामान्य

साधु नहीं हैं। सच में उनके द्वारा प्रभु दर्शन, आशीर्वाद एवं प्रसाद देते हैं, बातें और प्यार करते हैं। काकाजी ने उनके प्रति लगाव-भाव के वश इस बात का स्वीकार करके सभी के जीवन को धन्य किया।

काकाजी ने बहुत परिश्रम किया। काकाजी शूरवीर, बहुत पढ़े हुए और सच में उन्होंने जो देखा, वो हमें बात की, वो हम पर उनकी बहुत बड़ी कृपा। सुबह हम लोग बातें कर रहे थे, तो स्वामिजी ने कहा– **१९६१ में बापा ने ५१ संत बनाए। फिर १९६५ में अन्य १५ संत बनाए।** कुल ६६ संत बापा ने बनाए। **उसमें ५७ युवकों के माँ-बाप को समझाने में काका का परिश्रम अजोड़ था।** अब साधु बनना-भगवान भजना बहुत सानुकूल हो गया है। तब तो कोई भी माँ-बाप अपने बेटे को साधु बनाने के लिए तैयार नहीं थे। गुजरात में सुखी-संपन्न व्यक्ति हो, तो यूँ कहे कि जिसके घर में खाने को न हो और किसी को लड़की न मिले, वो साधु हो जाए। तेरे घर में क्या खाने को नहीं या लड़की नहीं मिलती है क्या? साधु होने की क्या जरूरत है? ऐसी एक ग्रंथि में जीते समाज के बेटों को **साधु बनाने के लिए उनके माँ-बाप को समझाना और उनके बापों के गुस्से को डाईल्यूट करके शांत करना, वह सच में काकाजी ने अद्‌भुत कार्य किया।** हम सब साक्षी हैं। **हम सभी जो बापा के समय के बैठे हैं, उन सभी को योगीजी महाराज के सच्चे स्वरूप का दर्शन कराया। बापा का माहात्म्य हमारे दिल में काकाजी ने भरा और उसे लेकर हम बापा को राजी कर लेने के मार्ग पर चले हैं।** सच में **काकाजी ने बापा, पप्पाजी, प्रमुखस्वामी, महंतस्वामी, स्वामिजी का अनोखा माहात्म्य गाकर हमारे अंदर अनोखा दिव्यभाव भर दिया। हरिप्रसादस्वामिजी तो उनके साथ बहुत रहे हैं, उनकी गोद में पले-बड़े हुए हैं। उन्होंने काकाजी का माहात्म्य गाकर, हमें काकाजी में जोड़ा।**

काकाजी जब माहात्म्य की बात करते, तो पूरी सभा में पीन ड्रॉप साइलन्स हो जाता था। हमने सुबह काकाजी के आशीर्वाद का प्रवचन सुना। **'प्रगट'** और **'प्रत्यक्ष'** के माहात्म्य की ऐसी बात वे करते थे, सो उनके प्रति सबको भाव होता था। इनकी बात सुनने में आनंद आता। शुरू में काकाजी का दर्शन करते थे, लेकिन उनके नजदीक नहीं गए थे।

१९६४ का प्रसंग मैं कई बार कहता हूँ। विद्यानगर में सायन्स कॉलेज के हॉल में युवकों की बहुत बड़ी सभा रखी थी। बापा और काकाजी ने आशीर्वाद दिया। हमारे कॉलेज के कई युवकों ने मुझे बताया कि योगीजी महाराज को **'वन टु वन'** पर्सनल मिलना है। हमने योगी बापा से प्रार्थना की।

बापा बोले– *कल आओ, आप सबको एपोईन्टमेन्ट देता हूँ।*

बापा ने इंगलिश शब्द बोला। ८ बजे हम सब गए, करीब ४०-५० युवा थे।

बापा के साथ २-३ मिनिट बात करके युवक निकलते गए। फिर बापा के पास मैं गया,

तो बापा बोले– *मैं सब कुछ जानता हूँ, आप निर्दोष हो, आपकी बात मुझे नहीं सुननी। आप मेरी बात सुनो।*

मेरे रोंगटे खड़े हो गए।

बापा बोले– *दादुभाई को तुरंत बुलाओ।*

मैं जाने लगा, तो बोले– *तू मत जा, किसी को भेज।*

काकाजी महंतस्वामी के घर रुके हुए थे, तो वहां थे। जो युवा दौड़कर बुलाने गया, उसमें थोड़ा टाइम लगा। तो बापा ने मुझे बैठाए रखा और मुझसे बातचीत की–

दादुभाई से कहना, उनसे प्रार्थना करना कि आप हम युवाओं का काम हाथ में लो। विद्यानगर का काम हाथ में लो – ऐसे बात करना।

बापा मुझे सिखा रहे थे। काकाजी आए; मुझे तो कुछ बोलना ही नहीं था, बापा के सामने ही देखता था, तो बापा हंस पड़े। फिर **मेरा और काकाजी का हाथ ऐसा रखकर बापा बोले–**

दादुभाई युवाओं का काम आपको करना है और आप विद्यानगर आते-जाते रहना, वहां बहुत बड़ा काम करना है।

तब से **काकाजी हम सब युवाओं को इतना प्रेम करते, हमारे साथ हम जैसे बन कर रहे, हमारे हॉस्टल में रहते।** अभी तो हॉस्टल अच्छी हो रही है, उस समय गर्मियों में छात्रालय की नींव रखी जा रही थी। गुजरात की गर्मी आप जानते हो, विद्यानगर में हाईएस्ट गर्मी होती है। **उस समय हॉस्टल में पंखा भी नहीं था और कोई वेहीकल भी नहीं था।** हम तो पढ़ने वाले स्टूडन्ट-लड़के थे; तो हमेशा **दो-दो किलोमीटर हमारे साथ काकाजी चलकर आते-जाते और उसी हॉस्टल में रहते। हम जो खाना पकाते वही खाना खाते।** उस समय **काकाजी हमारे साथ खूब ओत-प्रोत हो गए, हमें प्रेम में डूबोकर योगीजी महाराज के माहात्म्य में डाल दिया। अश्विनभाई, शांतिभाई, रतिभाई, सनंदभाई सबने योगीजी महाराज के लिए जीवन समर्पित कर दिया, सब त्यागी हो गए।** मालूम नहीं कैसे, वो काकाजी जानें।

अभी काकाजी का प्रवचन हमने सुना, गुरुजी और हम बात कर रहे थे कि **काकाजी इतनी सहजता से बात हमें कह देते कि वो पकड़नी बहुत मुश्किल होती।** काकाजी ने आज सुबह भी बताया कि **भगवान के मार्ग पर चलने से ऐश्वर्य-प्रताप, रिद्धि-सिद्धि, प्रभुता सब कुछ आता है, लेकिन सबसे अधिक 'साधुता' है।** हमें भीतर में साधुता जगानी है, **हमें साधु बनना है, साधु मतलब – हमें गुणातीतभाव प्रगटाना है;** ऐसी बात करते थे। अगर **हम जाग्रत होंगे तो हमें मालूम पड़ेगा कि यही करना है।**

काकाजी मेरे साथ बात करते-करते बोलते–

आप छात्रालय का काम कर रहे हो, बहुत मेहनत कर रहे हो, उसके लिए समर्पित हो रहे हो; लेकिन यह काम हम केवल ही केवल योगीजी महाराज की प्रसन्नता के लिए कर रहे हैं, वो कैसे मालूम पड़ेगा?

जब यह छात्रालय छोड़ने का समय आए, योगीबापा बोलें छात्रालय छोड़ दो, उस समय भीतर से कोई हिचकिचाहट न हो, कोई रोष भी नहीं आना चाहिए, विचार भी नहीं आए कि ऐसा होना चाहिए। तुरंत आज्ञा पाल लो, तो मानना कि योगीजी महाराज की प्रसन्नता के लिए कार्य हुआ है। यदि मान के लिए, अपनी प्रसिद्धि के लिए करेंगे, तो छात्रालय छोड़ तो देंगे, लेकिन भीतर में दर्द होगा-दुःख होगा। तो मानना कि योगीजी महाराज की प्रसन्नता के लिए नहीं है और... ऐसा ही हुआ।

यह तो सोचा ही नहीं था कि ऐसा हो जाएगा। १९६६ के प्रसंग में मैं तो गोंडल था। हमें काकाजी ने बुलाया और कहा– *योगीबापा से मिलो, उनकी क्या आज्ञा है, वह पूछ लो।* मैं गोंडल गया, तो बापा ने मुझे बताया – जब हम दोनों ही थे; सारी बात की, बापा बहुत प्रसन्न हुए और बोले–

प्रमुखस्वामी जो बोलें आप वही करना, ज़िद्द मत करना और हम आपके साथ ही हैं। ब्रह्मविद्या की कॉलेज खोलनी है।

बापा बोले– *मैंने भगवा कपड़े पहने हैं, इसलिए मुझे संस्था में ही रहना है, नहीं तो आप सबके साथ मैं भी होता।*

बापा इतना प्रेम से बोले। हम छात्रालाय में आए तो अश्विनभाई, शांतिभाई सब छात्रालय में थे। उन सबको मालूम था, सामान पैक करके बैठे थे। जैसे ही मैं आया, तो छात्रालय से निकल गए। भीतर में किसी को कुछ नहीं हुआ।

शास्त्रीजी महाराज ने जिस उपासना के लिए प्रवर्तन किया, काकाजी की कृपा और माहात्म्य के सिंचन से हमारे भीतर निष्कामभाव प्रगट हुआ। कई लोगों ने देह को गिने बिना काम किया, घर-बार छोड़ा। **काकाजी जैसे दिव्य पुरुष से सहज जुड़ जाने से, प्रभु को प्रसन्न करने की सहज बात एक्शन में आती है।** तो छात्रालय छोड़कर निश्चिंत हो गए कि हम योगीजी महाराज की आज्ञा से निकले हैं। **बापा ने बताया कि दादुभाई और बाबुभाई के साथ रहो और वहीं आपकी साधना पूरी होगी।** बापा की यह आज्ञा मानकर निकले; तो मेरे जीवन में बापा का आशीर्वाद काम आया और काका, पप्पा, बा और स्वामिजी की कृपा से भगवान के मार्ग पर चल रहे हैं। **काकाजी ने इतना-इतना दिया है।**

दूसरी बात – वे सबके अंग के बारे में बात करते हुए बताते थे कि किसी में भाव-फेर नहीं करें, अभाव नहीं लें, तो हम निर्दोष। काकाजी के प्रति तो बहुत प्रेम था, बहुत भाव। अटलादरा में बापा के सान्निध्य में वसंतपंचमी का उत्सव मना रहे थे। १९६५ में बापा खुद बैठे थे और एनाउन्समेंट हुई। बालुभाई टीटी नाम के बॉम्बे के सत्संगी थे, वो सभा संचालन करते थे। काकाजी का प्रवचन आया, उन्होंने योगीजी महाराज के माहात्म्य की इतनी बातें की। शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज की महिमा और ऐसे दिव्य पुरुषों को प्रसन्न करने के लिए वे अपने एकांतिक भक्त के साथ – अच्छे साधु के साथ जोड़ते हैं... यह मर्म समझाया। हरिभक्तों के साथ जीव बांधना पड़ता है, इस विषय पर भी बात की।

दूसरी – हर्षदभाई दवे नाम के बहुत बड़े भक्तराज की बारी आई। वे भी शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज की प्रसन्नता के पात्र थे। हम सब बैठे हुए थे, उन्होंने जो बात की - प्रवचन किया, काकाजी ने जो बात बताई, उससे उल्टी बात थी और काकाजी ने जो मुद्दा रखा था, उससे उल्टा उन्होंने रखा। **मुझे भीतर में इतनी आग लगी, क्योंकि काकाजी के साथ मुझे प्रेम था।** विचारों का बड़ा प्रवाह बहने लगा।

उस प्रवचन के बाद मेरी बारी थी। कार्यक्रम एनाउन्स हो रहा था, तो मैंने सोचा कि यदि मैं प्रवचन करने के लिए खड़ा होऊंगा, तो वो जो बोले उसका मुँह तोड़ जवाब दूँगा – ऐसा विचार आया। मैंने योगीजी महाराज की ओर देखा और सोचा कि मेरे जैसे छोटे हरिभक्त को ऐसा नहीं करना चाहिए। दोनों सच में शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज के प्रसन्नता वाले हैं; **उनके बीच में मैं ऐसा करूंगा, तो मेरा ही नुकसान हो जाएगा। दादुकाका बहुत बार यह कहते हैं,** तो ऐसा नहीं करना है। विचार पर मेरा कंट्रोल नहीं था; मैं तुरंत खड़ा तो हो गया। बालुभाई से मैंने रिक्वेस्ट की कि मेरा प्रवचन ड्रॉप कर दो, मैं नहीं बोल पाऊंगा। तो बालुभाई ने मुझे बताया कि जसभाई, ये पूरा कार्यक्रम योगीजी महाराज ने दिया है; अब आपको प्रवचन ड्रॉप करवाना है, तो आप योगीजी महाराज से कहो। वे बोलेंगे तो मैं ड्रॉप करूंगा, वर्ना मैं ड्रॉप नहीं कर सकता। काकाजी ने हमें सिखाया था कि उनके पास तो हम कुछ बोल ही नहीं सकते। मैंने सोचा अब क्या करूँ और मैं सभा के बाहर निकल कर स्टेज के पर्दे के पीछे थोड़ा छेद था, वहाँ बैठ गया। **काकाजी ने सिखाया था कि कुछ भी हो, तो धुन करना।** तो मैंने 'स्वामिनारायण' धुन करके योगीबापा को प्रार्थना की, महाराज को प्रार्थना की कि आपको राजी करना है, आपकी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए हम निकले हैं और ये जो बात हो रही है, उससे भीतर से मुझे खूब नॅगेटिव भाव आ रहा है। तो बोलने में कुछ अंटशंट बोल जाऊंगा और आप राजी नहीं होंगे,

तो मैं क्या करूंगा ? मेरा पूरा कंट्रोल आप ले लो या प्रवचन ड्रॉप करवा दो। आपकी प्रसन्नता प्राप्त हो, ऐसा मेरे जीवन में वर्ताव होना चाहिए। १०-१५ मिनिट मैं पीछे बैठ कर धुन करता ही रहा। सडनली एनाउन्समेंट हुई कि लालबहादुर शास्त्री का ताश्कंद में देहांत हो गया है। अटलादरा में नंदाजी के साथ पहले बापा के दर्शन करने के लिए वे आए थे। योगीजी महाराज ने बालुभाई को कहा कि जसभाई का प्रवचन ड्रॉप करो और बड़े भाई रमेशभाई चेतना का प्रवचन रखो और उसे कहो कि लालबहादुर शास्त्री इधर आए थे, उसके बारे में बातें करें। जब एनाउन्समेंट हुई तो मैं रिलॅक्स हो गया। **काकाजी ने ये जो टेक्नीक बताई – यूँ काकाजी जो बात करते थे, वो अपने जीवन के प्रसंगों में लगाई जाए।** उसके बाद मुझे ऐसा बहुत कम हुआ है। वर्ना मैं बात-बात में एक्साइट हो जाता था। **किसी के बारे में कुछ नकारात्मक सोचने से पहले सोचना कि भगवान सदा दिव्य साकार प्रगट हैं। साथ ही साथ वे कर्ता-हर्ता और हमारे हितकारी हैं।** यूँ प्रगट की उपासना हम समझे हैं। तो **काकाजी ने हमें इतना दिया – इतना दिया है कि जैसा सबने बताया, उसका ऋण हम चुका नहीं पाएंगे।** दासस्वामी ने इतना अच्छा भजन बनाया कि सुनते रहें, सुनते रहें।

काकाजी ने हमें बहुत दिया, पर उससे आगे जो अश्विनभाई ने बताया कि काकाजी को योगीजी महाराज का साक्षात्कार हुआ और बाद में काकाजी ने सबको ज्ञान समाधि करवाई। योगीरुप बनने के लिए, योगीजी महाराज को स्वयं प्रभु का रूप मानकर जीने का तरीका बताया, तो हम ऐसे जीते रहे हैं...

...**गुरुजी ने काकाजी का साक्षात्कार किया।** कई लोग बोलते हैं साक्षात्कार क्या ? **गुरुजी का जीवन वही साक्षात्कार। हर पल जो सोचते, बोलते हैं या क्रिया करते हैं, उसमें यही भाव है कि काकाजी का अभिप्राय क्या, काकाजी की रुचि क्या होगी ? काकाजी राजी होंगे ? चौबीस घंटे और बारह महीने काकाजी की स्मृति में, काकाजी को राजी करने के भाव से जीवन जीते हैं। इसलिए वे काकारूप हो गए।** उनसे जुड़े हुए दिल्ली के सब, पंजाब, यू.पी. के भक्तों को हम देखते हैं, उनमें कितना माहात्म्य है। युवाओं को देखो, बहनों में आनंदी दीदी को देखो, बुज़ुर्गों को देखो – सब में माहात्म्य ही माहात्म्य भरा है। काकाजी ने योगीजी महाराज का साक्षात्कार किया। योगीजी महाराज स्वयं गुणातीतभाव में रहते; सो, प्रभु का जैसा स्वरूप था, वैसे ही प्रकाश से **काकाजी हमारे लिए प्रभु का स्वरुप बने और काकाजी ने, पप्पाजी, स्वामिजी सबके माहात्म्य का सिंचन करके हम सबको उनके साथ जोड़ा। तो उन्हें मानने, स्वीकारने, आज्ञा पालने या उनमें निर्दोषभाव रखने में हमें असुविधा या तकलीफ नहीं हुई।** गुरुजी १९६९ में पहली बार दिल्ली आए, तो पप्पाजी ने विदाई समारोह रखा था। श्रीजी कॉलोनी के टॅरेस पर गुरुजी तब बोले थे –

मुझे जाना नहीं है, लेकिन काकाजी ने आज्ञा की है इसलिए मैं दिल्ली जा रहा हूँ, आप आशीर्वाद दो।

पप्पाजी ने आशीर्वाद दिया – *वही करने के लिए तो आपको साधु बनाया है।*

यूँ अक्षरपुरुषोत्तम उपासना और मंदिर बनाने के लिए नंदाजी को मिले आशीर्वाद को गुरुजी के द्वारा काकाजी ने साकार किया... काकाजी के वचन को हमेशा जीवन बनाकर जीते रहे, तो देखते हैं कि एक अद्‌भुत गुणातीत समाज की स्थापना दिल्ली में गुरुजी के द्वारा हुई। ये चार दिन गुरुजी के सान्निध्य में यही दर्शन करने का हम सबको मौका मिला है। सबकी भक्ति, सेवा, हलन-चलन, भाव देखो। काकाजी के जीवन में जैसे 'योगीबापा-योगीबापा', गुरुजी के जीवन में वैसे 'काकाजी-काकाजी' और ये दिल्ली वासियों के जीवन में 'गुरुजी-गुरुजी'। **उपासना का यह अद्‌भुत रहस्य है।** काकाजी-पप्पाजी गए नहीं हैं। ऐसे संतों को हम आगे

रखकर जीयेंगे, तो वही तत्त्व–काकाजी का तत्त्व हमारे साथ है। सबका माहात्म्य समझो, निर्दोषभाव रखो, प्रभु को कर्ता-हर्ता मानो, सब में प्रभु देखो और गुरुजी ऐसा करके खुद काकाजी रूप बन गए। दिनकरभाई और भरतभाई खुद काकाजी रूप बन गए। ऐसे काकाजी रूप संतों की हमें भेंट मिली। हम सब भाग्यशाली, नसीबदार हैं। सच, **स्वामिजी जैसे गुणातीत संत के सान्निध्य में रहकर पूरा गुणातीत समाज बहुत-बहुत प्रगति कर रहा है, यह देखते हैं।**

गुरुजी में दूसरा गुण दासत्व है। वे काकाजी रूप, प्रभु के धारक बन गए हैं, तब भी सबके प्रति उनका दासत्व नेचरल है, दिखावा नहीं... संतों में सिरमौर कोई हो, तो गुणातीतानंदस्वामी। एक-एक परमहंस आप देखो तो भगवान जैसे ऐश्वर्य प्रताप वाले थे। गोपाळानंदस्वामी कितने अद्‌भुत साधु थे, लेकिन ५०० में **गुणातीत ही प्रभु के धारक बने। क्योंकि उनमें श्रेष्ठ गुण दासत्व का था।** प्रभु की मर्जी-इच्छा के बिना उन्होंने कुछ नहीं किया, कुछ नहीं बोला–ऐसा है दासत्वभाव।

वैसे भी गुरुजी गुणातीतानंदस्वामी जैसे दिखाई देते हैं। मेरे साथ परदेश से आदमी आया था, तो गुणातीत की मूर्ति को देखकर बोला–गुरुजी ने खुद की मूर्ति इधर बना ली है। मैंने बोला नहीं, ये गुणातीतानंदस्वामी हैं। ये गुणातीत रूप संत के द्वारा प्रभु प्रगट हैं। दिल्लीवासियों पर काकाजी ने बहुत बड़ी कृपा की कि ऐसे साधु की भेंट दी। दिल्लीवासी भी बहुत पुण्यशाली, पूर्व के जबरदस्त मुक्त हैं कि गुरुजी का स्वीकार करके, गुरुजी की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए सभी प्रकार की भक्ति कर रहे हैं। ऐसे समाज का दर्शन करने का हमें ३-४ दिन मौका मिला है। हम भी भाग्यशाली हैं। **मैं भरी सभा में स्वामिजी से प्रार्थना करता हूँ कि हम सब हिल-मिल कर, काकाजी ने स्वामिजी को नेता बनाया–तो ऐसे नेता की निश्रा में रहकर संत, व्रतधारी भाई, संत बहनें, गृहस्थ सब इकट्‌ठे होकर काकाजी, पप्पाजी ने सब में गुणातीत भावना प्रगटाने का जो कार्य शुरू किया, वह करते हो जाएँ।**

काकाजी ने जैसे सुबह आशीर्वचन में कहा कि **साधुता प्राप्त करना, वही हमारा अल्टीमेट गोल है, वही हमारा ध्येय है।** यह प्रगटाने का बहुत अद्‌भुत मौका इस बार हमें मिला है। ऐसा समाज, ऐसे संत, ऐसा वातावरण, इतना माहात्म्य का माहौल है कि किसी को कोई गलत बात करने-सुनने वाला नहीं मिलता है। इतना माहात्म्य से भरपूर बन गया है। तो गुणातीतभाव प्रगटाने का ऐसा अच्छा माहौल हमें मिला है; बहुत आसान हो गया है।

तो यह समय हम गंवा न दें और आपकी प्रसन्नता के पात्र बनकर महाराज, गुणातीत, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी का कार्य सफल करें... ऐसी ३ फरवरी काकाजी के साक्षात्कार दिन की हम सबकी ओर से प्रार्थना, सबको जय स्वामिनारायण।

प.पू. महेन्द्र बापु (शिकागो)

...एक बार गुरुजी ने पत्रिका में भी लिखा था; *'थोड़ी-सी नहीं, लेकिन ज्यादातर बेवफाई...'* काकाजी ने इस तरह से निभाए हैं। तो, काकाजी का ऋण हम अदा नहीं कर सकते। मैं इतिहास का साक्षी हूँ...

जब विमुख प्रकरण की बात आई, तो **मैंने पूज्य हरिप्रसादस्वामिजी को देखा हुआ है कि किस तरह से उन्होंने काकाजी और पप्पाजी का पक्ष रखा** और हम

उनके साथ चले आए। **आज यदि हम गुणातीत ज्ञान की बात करते हैं, तो स्वामिजी ने हमारा नेतृत्व इस तरह से किया हुआ है। वर्ना हम एक कोने में बैठकर रह जाते।** आज अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की निष्ठा से गुणातीत भावना की बात और गुणातीत भावना को व्यापक बनाना है। इस हेतु काकाजी-पप्पाजी ने जो योगदान दिया, उसे व्यापक बनाना है। उसमें पूज्य हरिप्रसादस्वामिजी, पूज्य अक्षरविहारीस्वामिजी, पू. साहेब, पू. गुरुजी का जो ऋण है, वो हम भूल नहीं सकते हैं। मुझे मालूम है, युवक लोगों को ये दीक्षा दी गई। हम युवक नेकटाई साधु बोले जाते थे। **'कर्मयोगी संन्यासी'–उसकी शुरुआत साहेबदादा, अश्विनभाई, शांतिभाई और सब भाइयों ने की।**

...जैसे साहेब ने हमें सब बात बताई कि **यदि काकाजी नहीं होते, तो 'प्रगट' और 'प्रत्यक्ष' की बात नहीं होती...** यह ज्ञान बहुत दुर्लभ था; **हमारा ज्ञान आसरा और निष्ठा तक का था।** एकांतिक धर्म की सिद्धि की तो बात ही अलग थी। **हरिप्रसादस्वामिजी कई बार कहते हैं कि यदि शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज काकाजी को अपने साथ में नहीं लाए होते, तो उनके गुणातीत ज्ञान के पोटले बंधे के बंधे वैसे ही चले जाते। वे तो जानते हैं कि काकाजी की सत्संग में कितनी जरूरत है और काकाजी का ऋण हम कदापि अदा नहीं कर सकते हैं।** आज हम साधना भी क्या करेंगे? हमारी साधना में कहाँ तक दृष्टि पहुंचती है? लेकिन काकाजी की कथा में से **स्वामिजी** ने एक बात पकड़ ली थी– **'भुलकू बनो' और उन्होंने उस बात का इस तरह से नारा लगाया कि आज हमारे सबके हृदय में चाहे हम कैसे भी हों, फिर भी हमें एक अंतर्दृष्टि होती है कि–'मुझे भुलका बनना है।'**

आज गुरुजी द्वारा यहां आत्मीयता बह रही है। जब दिल्ली आते हैं, तो मैंने एक भजन सुना था– *तरुवर की शाखा बोले–जय काकाजी जय काकाजी, आम की शाखा बोले, कोयल बोले–जय काकाजी जय काकाजी।*

कण-कण में एक ही आवाज़ उठे जय काकाजी, जय काकाजी... ऐसा ये हमारा दिल्ली का समाज है। गुरुजी, काकाजी का ऋण चुकाना नहीं भूले हैं और अपने सहृदयी मित्रों को भी नहीं भूले हैं। आज देखो यहाँ संत लोग बैठे हैं, पुराने हरिभक्त सब इस तरह से बैठे हैं, जैसे एक राजदरबार में हमारा सम्मान हो रहा है। गुरुजी हमारा इस तरह से सम्मान कर रहे हैं। उनकी इतनी महिमा की दृष्टि है। आज गुरुजी की भी जन्मजयंती के दिन मैं और क्या बोलूं? गुरुजी ने तो काकाजी को प्रगटा ही दिया है। **जहां गुरुजी हैं, वहां काकाजी हैं ही–वो बात सत्य है। उनकी रग-रग में से, रोम-रोम में से एक ही आवाज़ उठती है–काकाजी, काकाजी, काकाजी।** आज सुबह दिनकरभाई गुरुजी के श्लोक की एक कड़ी बोले थे। लेकिन उसमें मुझे समझ में नहीं आया, तो मैंने मेरे तरीके से दो-तीन घंटे में जो कुछ लिखा है, वो मैं गुरुजी के लिए प्रशस्तिरूप में बोलता हूँ–

जेनी वाणी विषे रणकार काकाजीना ऋण स्वीकारनो, ने हृदय वंदे माहात्म्यसभर गुणातीत स्वरूपोने।
जतन करे भक्तजनोंनी बनी चैतन्य मावतर, एवा काका–योगीना मानसपुत्र गुरुजी ने स्नेहे करूं वंदन, करूं वंदन।।

प.भ. मनोजभाई सोनी साहेब (वडोदरा)

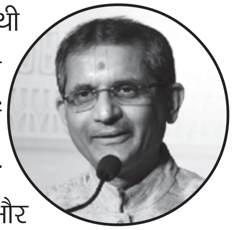

एक ऐसा बालक जो कभी अपने बाबूजी की उंगली थामकर ताड़देव की चौथी मंज़िल पर हर रविवार को जब संध्या सभा होती थी, तब जाता हो। बाबूजी अन्य हरिभक्तों के साथ कभी मंदिर में, कभी लॉबी में, कभी किसी और खण्ड में, सभा में हों और वो बालक अपने और दोस्तों के साथ बाहर रखे गए जूतों की लाइन को ठीक-ठाक कर रहा हो। उस सेवा के पश्चात् पू. महेन्द्रबापु-पू. अरुणभाई उस बालक और उसके सारे दोस्तों को रसोई घर में बुलाकर सेव-मुरमुरा और कुछ मिठाई का प्रसाद देते हों; ऐसे एक बालक को आज ३७-३८ साल के बाद काकाजी महाराज के हीरक महोत्सव के प्रसंग पर कुछ शब्द कहने का मौका मिले, तो आप शायद समझ सकते हैं कि उसके हृदय के भाव क्या होंगे? बहुत सारी स्मृतियां हैं। मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली समझता हूँ कि आज इस धरती पर 'कल्पवृक्ष' में आप सबके साथ सांस लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

आज सुबह जब मैं 'ताड़देव' आया, मंदिर में श्री ठाकुरजी महाराज और कलशविधि की महापूजा में सम्मिलित हुआ, **तो न जाने क्यूं मुझे एहसास हुआ कि मैं दोबारा ताड़देव में 'सोनावाला बिल्डिंग' के उसी छोटे-से मंदिर के रूम में पहुंचा हूँ, जहां काकाजी महाराज ने करीब अपना पूरा जीवन व्यतीत किया। उस रूम का साइज़ शायद हम लोगों के बाथरूम के साइज़ से भी कम होगा।** इतने एक छोटे-से रूम में वे रहे हैं–ऐसा एक एहसास हुआ।

जब मैं इस मंदिर में बैठा था, तो एक दूसरा एहसास यह भी हुआ कि जैसे मैं अपनी माँ की गोद में बैठा हूँ। यह एक अनोखा मंदिर है। इसमें भक्ति और वात्सल्य का महासागर है और... **एक महत्वपूर्ण बात** यह है कि **हमारे मंदिरों में से शायद केवल यही एक ऐसा मंदिर है, जिसने – मान लीजिए अपने आंचल में पूरे इतिहास की झांकी को संजोकर रखा है। अपने इतिहास को यह भूला नहीं है।**

अपने आपको मैं तो बहुत भाग्यशाली समझता हूँ कि ऐसी कई बातें जब-जब स्मृतिपट पर आती हैं, तब हमेशा गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज और विशेषतः गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रति शत-शत कोटि प्रणाम होते हैं, नतमस्तक हो जाता हूँ, हृदय भक्तिभाव से भरपूर हो जाता है। योगीजी महाराज एक ऐसे संत–जिनका जन्म १८९१ में हुआ। ७७-७८ साल की आयु तक रहे। जिसमें ५७-५८ साल तो इस तरह गुज़ारे कि–जब उनका न कोई तन था, न कोई मन। १९५१ से १९७१ तक केवल **दो दशक में इस सत्पुरुष ने–** इस संत ने – इस गुणातीत पुरुष ने जो कार्य किया है; अगर हम कोशिश भी करें तो **मैं समझता हूँ कि उस कार्य की एक झांकी को समझने के लिए कम से कम दो सहस्राब्दियां लगेंगी।**

ऐसे संत ने आज से ६० साल पूर्व काकाजी महाराज को साक्षात्कार कराया। हाल ही में नड़ियाद में काकाजी महाराज के जन्मतीर्थ पर बहुत अद्भुत उत्सव हुआ। उस समय पूज्य भरतभाई मेरे साथ बैठे थे और मैंने वहाँ भरतभाई से कहा था कि श्री ठाकुरजी महाराज यहाँ विराजमान हैं। श्री ठाकुरजी महाराज के सर्वप्रत्यक्ष स्वरूप यहाँ भी विराजमान हैं और **प्रसन्नता की बात यह है कि इसे 'कल्पवृक्ष' नाम दिया गया है।** जब

कल्पवृक्ष की छाया और श्री ठाकुरजी महाराज की निश्रा में बैठे हैं, तो वही बात प्रार्थना के रूप में मैं दोहराना चाहूँगा। लेकिन, उससे पहले जरूरी है – एक प्रसंग का छोटा-सा वर्णन।

गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज वड़ताल संस्था से जब महाप्रस्थान करके चले थे, तो बीच में एक ऐसा समय भी आया था कि यह कोशिश की गई थी कि गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज लौट आएं। उन्हें समझाने का प्रयत्न किया गया था। जो काकाजी महाराज की जन्मतीर्थ की भूमि है और जहां पर अभी-अभी यह उत्सव संपन्न हुआ, इसी नड़ियाद नगर में उस समय वड़ताल ट्रस्ट कमिटी के एक सदस्य पूज्यवर परम विद्वान **दौलतराम कृपाशंकर पंड्या** रहते थे, जो कि बहुत ही सम्माननीय सदस्य थे। गुजरात और देशभर में एक विद्वान के नाते उनका बहुत सम्मान था और वे साक्षर कहलाते थे। इतिहास यह कहता है कि दौलतरामभाई ने गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज को अपने निवास स्थान पर बुलाया और उनसे काफी लंबे समय तक बातचीत करने के बाद उनसे ये कहा कि–

हे यज्ञपुरुषदासजी! जो बात – अक्षरपुरुषोत्तम के उपासना की इतने जोर-शोर से कह रहे हैं, अगर आप मुझे मध्य २१ के वचनामृत के आधार पर समझा सकें, तो शायद मैं आपकी बात पर विश्वास कर पाऊंगा।

कहते हैं, करीब ढाई घंटे तक अविरत उसी वचनामृत के आधार पर शास्त्रीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना के सिद्धांत को स्पष्ट कर दिया। दौलतरामभाई के हृदय के वज्रकपाट – वज्रद्वार खुल गए और तब उन्होंने जो कहा, वो इतिहास में निम्न शब्दों में लिखा गया है –

हे शास्त्री यज्ञपुरुषदासजी! आप जिस कार्य को कर रहे हैं वह एक ऐसा अद्वितीय कार्य है, जिसे करने के लिए हक़ीक़त में तो भगवान स्वामिनारायण को स्वयं इस धरा पर दोबारा अवतार लेकर आना पड़ता और... आज भले ही आपने आपके इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान और गुणातीतानंदस्वामी की धातु की मूर्तियाँ मध्य मंदिर में पधराई हैं, लेकिन एक ऐसा दिन भी आएगा जब आपके शिष्य हे शास्त्री यज्ञपुरुषदासजी! आपकी स्वर्ण की मूर्ति पधराएंगे...

और ऐसा दिन इतिहास में आया। इसी सहस्राब्दी के आरंभ में **धन्य है मुंबई और समस्त गुणातीत समाज के हरिभक्तों को कि पवई में न केवल शास्त्रीजी महाराज, बल्कि उनके परमप्रिय कृपापात्र शिष्य और उन्हीं के स्वरूप योगीजी महाराज स्वर्ण रूप में विराजमान हुए।**

मैंने अभी-अभी कहा कि योगीजी महाराज ने केवल दो दशाब्दियों में जो कार्य किया है, उसकी एक झांकी को समझने के लिए भी दो सहस्राब्दियां लगेंगी। ऐसे ही जिस दादुभाई नाथाभाई पटेल ने १९५२ में साक्षात्कार के बाद योगीजी महाराज के स्वरूप का हमें वास्तविक परिचय करवाया, **मैं समझता हूँ कि–**

एक ऐसा दिन भी आएगा, जब उसी दादुभाई नाथाभाई पटेल – प.पू. काकाजी की स्वर्ण मूर्ति इसी देश की धरातल पर विराजमान होगी।

आज 'कल्पवृक्ष' में मैं समझता हूँ यही भाव अर्पण है और कहते हैं कि कल्पवृक्ष की छाया में आप जो भी भाव करिए, वो जरूर साकार होते हैं। अंत में श्री ठाकुरजी महाराज के चरणारविंद में एक प्रार्थना है – पू. दासस्वामिजी अपनी भक्ति अर्पण करते हुए जब सुरावली छेड़ रहे थे, तो मुझे और हम सबको ऐसा लगा कि अगर जीवनपर्यंत भी यह सुनते जाएँ, तो भी शायद यह जीवन कम रहेगा। बहुत-बहुत कृपा रही कि हमेशा

आपने अद्‌भुत कीर्तन दिए हैं। तो उसी कीर्तन की आख़िरी दो पंक्तियां जो आपने प्रार्थना में कही, वही पंक्तियां मैं अपनी ओर से प्रार्थना में कहूंगा–

संप सुहृद्‌भाव एकता केरो जीवन मंत्र एज जीवन बने, अल्प संबंधना तव आभासे मम अस्तित्व विलीन बने, मम अस्तित्व विलीन बने।

प.पू. गुरुजी

...अपने फंक्शन्स में पंडाल के अकसर नाम दिए जाते हैं– अक्षरमहोल, ब्रह्ममहोल, अक्षरधाम वगैरह-वगैरह। यहां भी सब सोच रहे थे क्या नाम दिया जाए? फिर हमें विचार आया कि इस बार तकरीबन गुणातीत समाज का क्रीम जिसे कहते हैं– **'योगी परिवार'** दिल्ली आ रहा है और सब यहां इकट्‌ठा होंगे। वे यहीं बैठेंगे, तो इसका नाम **'कल्पवृक्ष'** रखा जाए; क्योंकि **काकाजी कहते थे**– *'गुणातीत समाज कल्पवृक्ष है।'* सो, **आज हम दिल की सच्चाई से–ट्रयुली-ऑनेस्टली मानें कि हम 'कल्पवृक्ष' के तले बैठे हैं।** यह मानने से फायदा हमें ही होने वाला है। निमंत्रण कार्ड में भी हमने लिखा है और...जैसे आज सुबह भी एक्सप्लेनेशन दिया था–

'कल्पवृक्ष' एक ऐसा स्वर्गीय वृक्ष है, जिसके नीचे बैठकर हम जो भी संकल्प करें, वो सिद्ध होता है। तो हमें यह बहुत अच्छा मौका मिला है। सबसे अधिक तो– **हमारी प्रार्थना को एन्डॉर्स करने वाले स्वामिजी यहां विराजमान हैं।** साहेब, अक्षरविहारीस्वामिजी, दिनकरभाई सभी हैं, लेकिन स्वामिजी की बात मैं इसलिए करता हूँ कि आप सबने नोट किया होगा कि **अब हरेक की निगाह स्वामिजी के ऊपर टिकी हुई है।** आज स्वामिजी से मेरी खास प्रार्थना है कि–

अब आप ध्यान में लें कि सभी आपकी तरफ निगाह लगाकर बैठे हैं। जो-जो अबकी बार पप्पाजी के प्राकट्‌य पर्व पर विद्यानगर आए होंगे, उन्होंने देखा होगा कि **बेन** सभा के अंदर आए। ऐसा तो है नहीं कि बेन को अपने संप्रदाय की मर्यादा का ख्याल नहीं है, फिर भी वो एकदम सभा में तेज़ आवाज से बोले कि– *'स्वामी आपकी जवाबदारी है।'* एक बार तो मैं विचार में पड़ गया कि इतने सारे लोग बैठे हैं, बेन स्वामिजी से ऐसे डायरेक्ट कैसे कह रहे हैं। **पर वो एक 'आत्मीयता' थी।** स्वामिजी के प्रति अपनेपन की एक भावना थी और **एक दर्शन भी था कि आज इन बहनों की निगाह भी स्वामिजी के ऊपर है।** आज तीन फरवरी है, **फिर से मेरी स्वामी से तहेदिल से प्रार्थना है कि स्वामी! आप हम सभी के शिरछत्र हो, इस बात को ध्यान में लेकर आप स्वस्थ-निरामय रहो, ताकि हमें आपका पूरा लाभ मिल सके।**

हम बात यह कर रहे थे कि तीन दिन हम यहाँ 'कल्पवृक्ष' के नीचे रहेंगे। **इस बार वक्ता भी ऐसे ही रखे हैं कि जो कुछ बोलें तो हमारे भीतर की कसर–जैसे काकाजी कहते थे कि कुछ प्रुडिंग का ख्याल पड़े, टालने का बल मिले-रास्ता मिले।** इन तीन दिन में हम ये आजमाएं।

लौकिक संकल्प तो हमें करने की जरूरत ही नहीं है, क्योंकि बिना हमारे कहे महाराज ने रोटी, कपड़ा, मकान की ऑलरेडी गारंटी दे ही दी है। हमारे लौकिक संकल्प इसी में होते हैं। वो तो हम नहीं कहेंगे, तब भी

महाराज ने दे दिया है। **अलौकिक संकल्प**, वो ढोंगबाजी-सद्‌गुरु के भाव में तो हमें जाना ही नहीं। वो सिद्धि की हमें कोई लालच नहीं है। तो, फिर **रहा आध्यात्मिक संकल्प**। एक विचार आया कि क्या संकल्प किया जाए? मैं भी सोच रहा था कि इस बार सब होंगे, सो मन में दृढ़ संकल्प करना है जो कि महाराज सिद्ध कर दें।

अब, एक बात खूब समझें कि **सभी सोच अच्छी है; लेकिन, 'मुझे भगवान को राजी करना है'– यह जो सोच है वो सबसे बढ़िया है।** हे महाराज, मुझे ऐसा बुद्धियोग दिया करो जिससे कि मैं आपको राजी कर सकूं। मेरे मन में वही विचार उठें कि मैं आपको किस तरह राजी कर लूं। काकाजी इसे अलग ढंग से भी कहते थे– *कोई एकाध स्वरूप को उल्लू बना लो, किसी तरह पटा लो।*

यहाँ एक सवाल यह भी उठता है कि **'राजी करना' – यह विचार श्रेष्ठ क्यों है?** मैंने करीब डेढ़ साल पहले **'स्वामिनारायण प्रकाश'** में पढ़ा था; मुझे वो आर्टीकल खूब पसंद आया। लेकिन अभी-अभी मेरी मेमरी में कुछ फर्क पड़ गया है। मैं भूल गया था कि वो कहां पढ़ा था। तो, मैंने भरतभाई को– वशी को फोन किया... आख़िर वो आर्टीकल मिला। उसके अंदर उस समय का मेरा अंडरलाईन किया हुआ है– **भगवान को राजी करना, वो विचार– 'गुणातीत विचार' है।** इस बात का **आदर्शजीवनस्वामिजी** ने अच्छा एनालिसिस भी किया है, लॉजिक से समझाया है। काकाजी अगर इस साधु को मिलते, तो उठा के गोल-गोल घुमाते। उन्होंने वचनामृत की साख भी दी है। मध्य के २७ वें वचनामृत में **महाराज ने मुक्तानंदस्वामी से कहा–**

भगवान कुराजी हों, ऐसा एक भी विचार नहीं रखना है; ऐसा जो विचार तुम्हारे हृदय में है, वह माया से परे गुणातीत विचार है।

इन दिनों हम **'गुणातीतभावना'** की बातें खूब करा करते हैं कि हमें गुणातीतभावना में रहना है। कई बार संत लोग ऐसी प्रार्थना भी करते हैं। जैसे हमारे यज्ञप्रियस्वामी ने अभी कहा कि गुणातीतभावना वाले साधु बनें। ये विचार रहेगा कि **मुझे ये स्वामी को राजी करना है– इन स्वरूपों को राजी करना है, वो गुणातीतभावना का विचार है।**

बोलने में यह बड़ी आसान चीज लगती है कि 'राजी कर लेना है-राजी करना है।' पर कई जगह पर हम स्लीप हो जाते हैं या माइंड की स्कीमींग भी आ जाती है। **हम सोचते हैं कि महाराज को राजी करते हैं, लेकिन भीतर में कहीं न कहीं अपने मन - इज़्म को राजी कर रहे होते हैं।** खूब बारीक भाव से सोचेंगे, तब यह चोर पकड़ा जा सकता है। देखो, मैं एक बात करता हूँ। यह बात करने का अधिकार हम सबका है भी नहीं, लेकिन यह बात योगीजी महाराज ने की थी, सो **प्रसंग के पीछे का मर्म हम पकड़ें – यह मेरी भावना है।** प्रसंग उस समय का है, जब हम नासमझ जैसे बापा के साथ घूमते थे। मुझे निम्न **दो प्रसंग** हमेशा याद रहते हैं।

एक बार बापा के साथ हम **जेतलपुर** गए थे, तो वहां **आनंदस्वामी** का चिमटा है। उसे दिखाकर बापा ने मुझसे पूछा था– *यह क्या है?* मुझे तो कुछ पता ही नहीं था कि क्या है। तो मैं कुछ बोला ही नहीं, पर मुझे ऐसा होता रहता था कि बापा ने मुझसे यह क्यों पूछा होगा। तो, मैंने काकाजी से पूछा कि *बापा ने मुझे यह क्यों पूछा कि यह क्या है?* तब काकाजी ने मुझे बताया था कि– *ये आनंदस्वामी यानि तुम, पांच जन्म से बापा के साथ आते रहे हो।*

दूसरा, अगर संतों को याद हो तो बापा के साथ हम वड़ताल गए थे। वहां सभा मंडप में बापा ने एक जगह बताई थी। बहुत समझने लायक प्रसंग है। **गोपाळानंदस्वामी** द्वारा लिखा हमारा **'स्वामिनारायण गीता भाष्य'** है। **भारतीय विद्याभवन के प्रींसिपल दीक्षीतारजी**–वेदांत के ऑथारिटी कहे जाएँ; उन्होंने जब यह गीताभाष्य पढ़ा, तो वे **खुद बोले कि अनपॅरेलल है। हरेक भाष्य में एक मत का खंडन करके अपना मंडन करा हुआ है। शांकरभाष्य वगैरह में तो एक दूसरे को बड़ी-बड़ी, टन-टन की गालियां दी हुई हैं। लेकिन ये गोपाळानंदस्वामी के गीताभाष्य में किसी का खंडन करे बिना स्वामिनारायण फिलॉसोफी–विशिष्ट अद्वैत का इन्होंने बखूबी मंडन किया है। नमनीय विभूति हैं।** गीताभाष्य की उन्होंने खूब तारीफ की थी।

इस गीताभाष्य का ज़िकर करते हुए **बापा ने वड़ताल मंदिर के सभा मंडप में एक जगह बताई थी** कि नित्यानंदस्वामी के सेवक ने गोपाळानंदस्वामी के सेवक से कहा था–

तेरा गुरु पूंछ से पानी चढ़ा लेता है, पर क्या ऐसा 'ब्रह्मसूत्र भाष्य' लिख सकता है?

तब गोपाळानंदस्वामी ने रोष में यह 'गीताभाष्य' लिखा और नित्यानंदस्वामी के सेवक के पास इस जगह पर आकर बोले थे–

तेरे गुरु को कहना कि यह पढ़ें, मैंने जो लिखा है इसे समझें भी, तो बहुत है।

फिर यह बात काकाजी ने समझाई थी कि–

इन दोनों ने शास्त्र लिखा, लेकिन महाराज को राजी करने के लिए लिखा–ऐसा तो नहीं हुआ न!

हम लोग ऐसा कर जाते हैं और मानते हैं कि हमने कितनी बड़ी सेवा की। सो, काकाजी बोलते–

सूरत की नौकरानी आठ आना में पूरे दिन काम करती है। यूँ हमारी सेवा मारी जाती है।

बेशक अबकी बार यहां जो सबने काम किया है, **काम नहीं बोला जाएगा-'सेवा' की है।** हर एक को एक ही भावना रही हुई है–

कुछ भी करके काकाजी को राजी कर लेना है। यह भावना, राजी करने का विचार, वो हमारे भीतर में ज्वलंत रहे और कोई भावना हमें स्लीप न करा जाए–यह सावधानी हम रखें।

इससे वो सेवा भी इतनी अच्छी होगी कि हर एक को लगेगा कि खूब अच्छा है, खूब अच्छा है, खूब अच्छा है। स्वामी, और तो कुछ मांगना नहीं है। पर, जैसे **पप्पाजी** अलग ढंग से बोलते थे–

कोई भी क्रिया करते हुए छन्नी रखो कि आप राजी होते हैं? यदि नहीं, तो भले ही विचार कितना अच्छा हो-हम उसे न पकड़ें!

कई बार ऐसे भी बोलते थे– *किसी भी तरीके से जोगी को राजी कर लो, तो आए पार...*

हमारी पूर्णाहुति और किसी तरीके से नहीं हो सकती, बस एक ही भावना कि–हम अपने मन को राजी न रखें, हम अपने इज़म को पटाए न रखें। भले भीतर में कचोटता हो या न जँचता हो, पर 'मान टले के भाव से' वर्तें। ये भी अजीब-सी चीज है। भीतर में मान हो, भले हो। पर, **राजी करने के लिए मान छोड़ कर वर्तें, तो सारी गुत्थियाँ अपने आप सुलझ जाएंगी। 'गुणातीतभावना' में प्रवेश भी आसानी से मिल जाएगा।** तो स्वामी, आज हम सबके लिए आप यह संकल्प करें, आशीर्वाद दें और ढलें इतनी प्रार्थना।

4 फरवरी 2012 – ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज साक्षात्कार हीरक जयंती शिविर

प.भ. वच्छराजजी (दिल्ली)

...नित्यप्रति होते इतने भव्य आयोजन का गुरुजी ने कम से कम आठ महीने पहले प्रारंभ किया। गुरुजी के साथ जुड़े हुए संतगण, आनंदी दीदी, अक्षरज्योति की सभी बहनें और हमारे सभी गृहस्थ भाइयों का ऐसा कोई दिन खाली नहीं गया होगा, जब इस बारे में विचारा न होगा कि **जैसे गुरुजी की रुचि हो, उस प्रकार आने वाले सभी हरिभक्तों की सेवा हम करें, जिससे गुरुजी को हम संतोष दे सकें।** गुरुजी या ऐसे बड़े स्वरूप कभी किसी के व्यवहार से नाराज नहीं होते, लेकिन आए हुए किसी भगत को ज़रा-सा भी कष्ट हो जाए, वो गुरुजी को नहीं जँचता। यह बात मैं करूं तो बैठे हुए समाज के दिलों को क्या इसका असर होगा, मुझे पता नहीं। लेकिन काकाजी के सिद्धांतों पर गुरुजी की भक्ति सदैव रही है... *'काकाजी की मूर्ति मानकर, आए हुए सभी भक्तों की हमें सेवा करनी है'*–यह बात गुरुजी ने दिल्ली के समाज की जड़ों के अंदर, हर एक के दिलों -दिमाग़ में बिठाई है; जिससे कि स्वामिजी, साहेबजी, अक्षरविहारीस्वामिजी राजी हो जाएँ...

आज इतने बड़े समाज के जब हम दर्शन करते हैं, तो ऐसा होता है कि काकाजी की कार्यशैली क्या रही होगी, उसका हम अंदाजा नहीं लगा सकते... इन सेवाओं से जितना भी हमारा ग्रुप जुड़ा हुआ है, उन सभी के प्रति दिल गद्‌गद् हो जाता है। मन करता है कि सभी को गले लगाकर खूब हर्ष के आंसू बहाएँ... गुरुजी ने हम सबको काकाजी की यह डायमंड ज्युबली मनाने के लिए निमित्त बनाया, उसके लिए हम गुरुजी के अधिक से अधिक ऋणी हैं...

इस शिविर के लिए नक्षु से लेकर हिंमतकाका तक... हिंमतकाका आज हमारे बीच करीब ९० वर्ष के हैं, कपूर साहब हमारे करीब ९० वर्ष के हैं और नक्षु एवं पुण्यम वो ५ साल और २ साल के हैं; इतने-इतने बच्चों ने भी इसमें कन्ट्रीब्यूशन दिया है। हम किस-किस का नाम गिनाएंगे। यहां जो प्ले करने वाले हैं, इतनी सारी जो तैयारियां हुई हैं, उसमें महाराज ने ऐसी कसौटी की कि मकरसंक्रांति के बाद तो यहां इतनी सर्दी पड़ी कि दिन का टेम्परेचर ७-८ डिग्री रहा होगा। लेकिन धन्यवाद हमारे सब साथी मित्रों को कि किसी ने न दिन देखा, न रात देखी, न किसी ने अपना शरीर गिना, न किसी ने पैसे को गिना। बस, **एक ही बात की लगन लगी रही कि किस प्रकार गुरुजी और दीदी को हम राजी कर लें।** हर एक ने अपने-अपने लेवल के ऊपर ज्यादा से ज्यादा समर्पित होने की भावना रखी...

स्वरूपों के चरणों में इतनी प्रार्थना करनी है कि जो कल गुरुजी ने मांगा, वो हमारे लिए मांगा। बस, हम सुख-चैन से ठाकुरजी का भजन कर सकें और अध्यात्म की ओर अग्रसर रहें। हमारे जीवन का माहौल सदैव ऐसा बनाए रखना, इतनी याचना के साथ सभी को जय स्वामिनारायण।

प.भ. दिलीपभाई भोजाणी (लंडन)

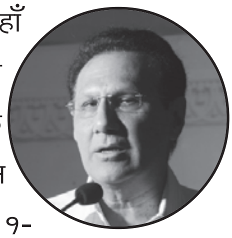

...सबसे पहले तो मैं गुरुजी का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ कि उन्होंने मुझे यहाँ बुलाया। मैं अपनी बात करूं तो १९९१ में पप्पाजी महाराज यहां पधारे थे। तब अंकल के फार्म पर रुके थे। उस समय मैं जापान जा रहा था, तो पप्पाजी को फोन किया कि पप्पाजी आप दिल्ली हैं, मुझे मेरी फ्लाइट दिल्ली से चेंज करनी है। मैं आपके दर्शन करने के लिए आऊँ? वे बोले आ जाओ और मेरे साथ ही रहना। मेरी फ्लाइट रात को १-२ बजे आ रही थी, उस समय **२० साल पहले गुरुजी मुझे एयरपोर्ट लेने के लिए आए थे।** कार में उन्होंने मुझे बताया कि–

पप्पाजी खुद आने के लिए कह रहे थे। मैंने पप्पाजी से कहा कि पप्पाजी आप आधी रात को मत जाओ, मैं जाता हूँ।

अंकल के साथ गुरुजी रात के २ बजे मुझे लेने आए थे। तब मैंने पहली बार उनका दर्शन किया, उससे पहले तो मुझे कुछ पता नहीं था। दो दिन यहाँ रहा और चला गया। फिर कोई मुलाकात या बातचीत नहीं हुई।

परसों मैं डायरेक्ट लंडन से आया, तो गुरुजी मुझे एयरपोर्ट लेने के लिए खुद आए थे। २० साल पहले की पप्पाजी की स्मृति हो गई। जैसे कि पप्पाजी मुझे लेने आने वाले थे और गुरुजी मुझे लेने के लिए आए थे। **वही माहात्म्य अभी भी गुरुजी ने जारी रखा है।** मैंने गुरुजी से कहा कि मैं तो टैक्सी करके आ जाता, आपको यहाँ आने की क्या जरूरत है? मैं तो घर का हूँ। तो उन्होंने कहा–

घर वालों के लिए ही घर की गाड़ी काम आती है न। घरवाले को ही घरवाले लेने जाते हैं।

मैंने कहा–गुरुजी, आपको कितना काम है। वे कहते हैं– *मैं एक ही आदमी हूँ जो फ्री हूँ, बाकी सब लगे हुए हैं।* लेकिन गुरुजी के ड्रॉइंग रूम में जब हम बैठते हैं, तो जो-जो बैठते हैं उन्हें पता होगा कि वे कितने बीजी हैं। हमारे साथ बात करते हैं; लेकिन सब पर, सबके काम पर, सब जगह उनकी नज़र होती है। **ही इज़ मल्टी टास्किंग ऑल धी टाइम... वे सबका ख्याल खुद रखते हैं।**

कौन किसे मानता है, कौन कितना बड़ा है, कौन कितना छोटा है, उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। योगी परिवार की हम जो बात करते हैं, गुरुजी खुद एक उदाहरण है। एक एग्ज़ाम्पल हैं कि–एक परिवार को कैसे ट्रीट करना चाहिए। माहात्म्य क्या चीज होती है। उनके वर्तन से हमें सब दर्शन होता है कि इस तरह भगवान को राजी करते हैं।

जैसे पप्पाजी ने कहा था– *'मुझे इसे एयरपोर्ट लेने जाना है'*– वो बात उनके दिल में आज तक इदम् हो गई है और... २० साल बाद भी उन्होंने वैसी ही मेरी आवभगत की। तो, **यही हमारा समाज है, यही हमारा परिवार है।**

दो-ढाई मास पहले पराभक्ति पर्व पर गुरुजी विद्यानगर आए थे। मैं उनके दर्शन के लिए गया, तो कहते हैं–*दिल्ली आ रहे हो न।* **उनकी आवाज़, उनकी आंखों में इतना प्रेम है कि तुम 'ना' कह ही नहीं सकते,** पर मैं इंडिया में दो मास में ही दोबारा कैसे आऊं? कुछ बोल नहीं सका।

जिस दिन मैं आया, तो गुरुजी मुझसे मज़ाक भी कर रहे थे।

वे मुझसे बोले– *मेरे कहने से तुम नहीं आए हो, आनंदी दीदी के कहने से तुम आए हो।*

दीदी ने मुझे दिसंबर की १६ तारीख को सुबह करीब साढ़े छः बजे फोन किया।

सो रहा था, तो दीदी ने फोन पर 'जय स्वामिनारायण' कहते हुए कहा– *दिलीपभाई उठाया तो नहीं।*

मैं उन्हें कैसे कहूँ कि मेरे सपने भी खत्म नहीं हुए थे, इतनी जल्दी आपने फोन किया।

मैं बोला नहीं-नहीं ऐसी कोई बात नहीं है। उन्होंने कहा– *आप आ रहे हैं न? फ्लाइट का नंबर क्या है?*

मैंने कहा अभी तो दिसंबर है, हम बता देंगे। फिर थोड़े दिन बाद गुरुजी का फोन आया।

पूछते हैं – *आप जब दिल्ली आओगे तो अहमदाबाद, विद्यानगर होकर आओगे या डॉइरॅक्ट आओगे?*

मैंने कहा मैं आऊंगा तो डॉइरॅक्ट आऊंगा।

'यदि मैं आऊंगा' का क्या मतलब है, आप आ रहे हो न?

मैं फिर से दोहरा रहा हूँ कि उनकी आवाज़ में इतना प्रेम है, सो जॅन्युईन! **वैसे मुझे गुरुजी का इतना अनुभव भी नहीं है। लेकिन वे मेरे साथ ऐसे बात करते हैं, जैसे वे मुझे वर्षों से जानते हैं। हम सब एक कुटुंब के हैं, एक परिवार के हैं। वे खुद अपने वर्तन से दिखाते हैं कि 'योगी परिवार' में हम कैसे जीएं।** कैसे सब में महाराज देखें।

काकाजी की बात करूँ तो– १९७३ में फर्स्ट टाइम वे इंग्लैंड में मेरे घर आए। मैं सत्संगी नहीं था, मुझे सत्संग का कुछ मालूम नहीं था। **साहेब भी साथ में थे। वे तो जैसे काकाजी के सेवक थे। एक शब्द बोलते नहीं थे, सिर्फ काकाजी की सेवा ही करते थे।** मैं तो जानता नहीं था। मेरी वाइफ बोली – इंडिया में मेरे गुरुजी हैं न, उन्होंने कहा है कि इन्हें भोजन के लिए इनवाइट करना। हमें तो कंट्री में छः मास भी नहीं हुआ था। एक छोटे से रूम में रहते थे। लेंडलॉर्ड ने हमें एक बेडरूम दिया था, बाकी और कुछ यूज़ नहीं कर सकते थे। सिर्फ बेडरूम, खाने के समय पर उसका किचन और बाथरूम शेयर करो। तब भी दोनों को इनवाइट किया था। मैं तो सत्संगी था नहीं, सो कुछ पता भी नहीं था। वे आए, उन्हें खाना खिलाया। हमारे लेंडलॉर्ड जो थे, वे सूरत के गुजराती थे, उनके साथ इंट्रोड्यूज़ कराया। **काकाजी ने उन्हें हलवा खिलाया और कहा– *ये लो, सुखी हो जाओगे।*** फिर काकाजी और साहबेजी तो चले गए। **वो मुझे आज जब भी मिलते हैं, तो बोलते हैं कि ये दादुकाका हमारे घर आपके यहाँ खाना खाने के लिए आए थे, उन्होंने पता नहीं क्या जादू किया कि तब से मेरे आर्थिक हालात बहुत सुधर गए हैं, बहुत सुखी हो गया हूँ।** मैंने सोचा मुझे तो ऐसा कुछ दिखाई नहीं देता है, दादुकाका उसे सुखी करके चले गए! फिर १९७३ में काकाजी आए और चले गए। १९७७ में दोबारा आए, तो सभा की।

काकाजी की स्टाइल तो सब जानते हैं... वे **सभा में सबको जाग्रत रखते थे** और पूछते थे कि कल मैंने क्या बात की थी? पर, **काकाजी के शब्दों की गहराई हमें पता ही नहीं थी। वे हम सबको भगवान देने आए थे।** लेकिन हमें तो इतना ही था कि –सभा है जाना है। काकाजी इंडिया से आए हैं, ठीक है जाएंगे।

...उनको था कि आप सब सुखी रहो, आगे प्रगति करो। जैसे पप्पाजी कहते – *तुम्हें जीतेजी अक्षरधाम का सुख देना है, हीयर एण्ड नाऊ...* **पप्पाजी-काकाजी ने रिलिजियन को मॉर्डनाइज़ किया... भगवान को कैसे भजना है? कैसे सुख लेना है? वो तरीका मॉर्डनाइज़ कर दिया... समझाया कि कल्याण के लिए साधु है, संत हैं, गुरु हैं।** उनसे जुड़े हुए हैं, तो उनके चरणों में बैठ जाएँ। कोई प्रॉब्लम हो, उन्हें बताएँ कि यह प्रॉब्लम है, आप शॉर्टकट बता दो। आप बोलो वो भजन करेंगे, आप बोलो वो सेवा करेंगे। एक ही बात 'योगी परिवार' में निश्चित है, सबको सत्पुरुष के साथ जुड़ना पड़ता है। बहनें हों, उन्हें बहनों के साथ जुड़ना पड़े, भाइयों हों, भाइयों के साथ जुड़ना पड़े। फिर चैतन्य के मुताबिक जहां जुड़ें। मेरा पप्पाजी के साथ जुड़ाव हुआ है। दिनकरभाई तो खुद स्वरूप हैं, लेकिन काकाजी के थ्रु सत्संग में आए हैं। उनके साथ जो जुड़ते हैं, उनकी सब रिस्पॉंसिबिलिटी वो ले लेते हैं। सब जिम्मेदारी ले लेते हैं, फिर हमें कोई चिंता नहीं है... हम हाथ जोड़कर प्रार्थना करें, सब चिन्ताएँ उनके ऊपर छोड़ दें। **काकाजी बोलते थे – *बालक बन जाओ।*** क्या करना है? आप जो कहो, वो हम करेंगे। हम खुश रहेंगे।

अभी देखो कैम्पस में सब जगह कितनी सेवाएं हो रही हैं। हमें तो पता ही नहीं लगता, हमें यहां अच्छी तरह खिलाते हैं, बिठाते हैं, कार में घर भेज देते हैं। वो गार्गी बहन – इतनी छोटी! रात को १२.०० बजे सबको कार में बिठाने के लिए बाहर खड़ी होती है!! **...धीस इज़ लेबर ऑफ लव फॉर गुरुजी, लेबर ऑफ लव फॉर काकाजी एण्ड पप्पाजी।** बस यही करना है।

पप्पाजी के साथ मैं बहुत साल रहा, बहुत कुछ जानने को मिला। **पप्पाजी के वर्तन-वाणी से जानने को मिला। उन्होंने कभी मुझे बिठा कर ऐसा नहीं कहा कि ये करो, वो करो, ये नहीं करो, वो नहीं करो। उनका खुद का लाइफस्टाइल, उनका खुद का डिसिप्लीन, उनकी बॉडी लँग्वेज ऐसी थी कि इफ यु आर इन्टॅलीजेन्ट, यू फील हीम सेइन्ट। मन में होगा कि जीना तो ऐसे जीना।** हम पप्पाजी-काकाजी जैसे तो नहीं हो सकते हैं, लेकिन उनके गुण के दर्शन तो कर सकते हैं कि ऐसे जीओ...

हमारा जीवन जगत वालों जैसा नहीं है। पप्पाजी से मैं पूछता था कि हम में और जगत के जीवों में बेझीक डिफरन्स क्या है? तो, बोले –

वहां तो जन्म लिया, जीए और मरे, वो साइकल जारी ही रहता है। यहां तो ऐसे सत्पुरुष के साथ जुड़ जाओ, वापिस गर्भाशय में आना ही नहीं पड़ता है। यदि भगवान का काम हो, तो वापिस कैसे लाएंगे – वो सब उनके ऊपर छोड़ दें। पॉज़िटिवली देख सकेंगे कि यहाँ जो हो रहा है, भगवान की मर्जी से हो रहा है (काल, कर्म और माया का कायदा नहीं चलता) दुःखी-दुःखी होकर डिप्रेस नहीं हो जाएँगे। दोनों में ये फर्क है, हमेशा आनंद रहेगा...

तो, अंत में एक बार फिर गुरुजी का शुक्रगुज़ार हूँ कि मुझे बुलाया। मैं छोटा हूँ, पप्पाजी का सेवक हूँ, फिर भी इतना सम्मान दिया, प्रेम से रखा। **माहात्म्य क्या होता है, वह अपने खुद के वर्तन से दिखाया।**

हरिभक्त के लिए क्या न हो, वो माहात्म्य दिखाया और दिखा रहे हैं। **हम संप, सुहृभाव, एकता की बातें करते हैं; गुरुजी बातें नहीं करते, करके दिखाते हैं।**

तो आज सब स्वरूपों के पुनीत चरणों में यही प्रार्थना है कि हम भी ऐसा सब सीखें, आपकी छत्रछाया में रहें। आप जो गरजु हुए हैं, आपको जो देना है, वो हम पॉज़िटिवली लें और आपके ऋणी रहें यही प्रार्थना। सहजानंद स्वामी महाराज की जय।

पू. विठ्ठलदासभाई [फुआ] (हरिधाम)

...गुरुजी ने आनंदोत्सव के माध्यम से हम सबको यहां एकत्रित किया है। हम आध्यात्मिक परिसीमा की अनुभूति कर रहे हैं।

'अखिल ब्रह्मांडमां एक तू श्रीहरि, जूजवे रूप अनेक भासे।
कबीरा कुँआ एक है, पनहारियाँ अनेक।
भिन्न-भिन्न सब घट भरे, पानी सब में एक।'

हमारे लिए भगवान स्वामिनारायण व गुरु गुणातीत का यह कार्य है। ऐसे सब स्वरूप हमें मिले हैं। चाहे काकाजी हों, पप्पाजी हों, स्वामिजी हों, अक्षरविहारीस्वामिजी हों, साहेबजी हों, गुरुजी हों या दिनकरभाई हों। ज्ञान एक ही है। **काकाजी भी बोलते थे–** *यही चने की दाल, यही चने की रोटी जब खाओगे, तभी भूख जाएगी।* कहने का मतलब हर एक के माध्यम से हमें जो गुणातीत ज्ञान मिल रहा है, वो एक ही है और हमारे लिए यह बहुत आनंद की बात है...

काकाजी ने मुझे कहा था– *राजा, आपको गुणातीत ज्ञान की बारहखड़ी सीखनी होगी। गुणातीत ज्ञान की बारहखड़ी यही है कि बारह साल का काम एक साल में होना चाहिए; बारह महीने का काम एक महीने में होना चाहिए, बारह घंटे का काम एक घंटे में होना चाहिए...*

आज भी मेरे कान में उसकी गूंज रहती है। तब से मेरे में भी एक स्पीड आ गई। कोई भी काम हो भगवान-सत्पुरुष हमारे साथ हैं। तो, कोई काम हम **काकाजी** जैसे सोचते हैं, वैसी स्पीड में क्यों नहीं कर सकते? **उनके पास एक वीज़न था, प्रभु की शक्ति थी और ये शक्तिपात मैंने काकाजी द्वारा उस दिन जो पाया है, वह मेरे हर एक काम में मुझे उपयोगी होता है। जब भी कोई कठिनाई आती है, तो मैं काकाजी को याद करता हूँ...**

काकाजी छोटी से छोटी बात का भी ध्यान रखते थे। उस समय में हमें **'अनुपम एड्हेझीव्ज़'** फैक्ट्री बनानी थी। उसके लिए हमारे पास फण्ड तो कुछ था ही नहीं... साहेब के साथ शांतिभाई, अश्विनभाई, डॉ. सनदभाई, पूनमभाई, रसिकभाई थे। सब ने खूब अच्छी पढ़ाई की हुई थी, मगर पैसे के बिना कोई बात बनती नहीं है। तो जी.आई.डी.सी. में से लोन लेने के लिए, प्लाट लेने के लिए जहां-जहां जरूरत पड़ी, वहां काकाजी हमारे साथ एक सामान्य व्यक्ति की तरह सब जगह आए। हम सब जानते हैं कि काकाजी को बहुत नॉलेज थी, उनके पास प्रभु की शक्ति थी। उन्हें बहुत इम्प्रेसिव तरीके से बात करने की प्रॅक्टिस थी और हर

जगह हमें सफलता मिली। इतना ही नहीं छात्रालय बनाते समय सीमेंट की बहुत तंगी थी, मिलता ही नहीं था। तो काकाजी खुद साहेब के साथ गांधीनगर विधानसभा में गए और भाईकाका को रिक्वेस्ट की कि आपके वल्लभ विद्यानगर में यह स्थान हो रहा है, तो आपको किसी भी तरह से हमें सीमेंट देना ही पड़ेगा। काकाजी की हर एक बात ऑथेंटिक होती थी और सामने वाले के हृदय में वो बात इतने प्रेम से जुड़ जाती थी कि वो उस चीज को 'ना' ही नहीं कहते थे। ऐसे **हर एक छोटे-मोटे, प्रसंग में काकाजी सबके साथ 'दास बनकर' रहे और हर एक कामों में वे साथ में जुड़े। यूं गुणातीत समाज का जो सर्जन हुआ है, उसमें काकाजी का बहुत बड़ा योगदान है।**

१९६५ के आख़िर में छात्रालय का काम चल रहा था। आणंद में मेरा छोटा-सा प्रिटिंग प्रेस था, तो हमने सोचा कि 'कपड़वंज' में भी एक ब्रांच लगा लें... मैंने योगीजी महाराज को खत लिखा कि मुझे 'कपड़वंज' में एक ब्रांच करनी है, छोटी-सी दुकान करनी है और उसका उद्घाटन आपके करकमलों द्वारा करवाना है। **योगीजी महाराज** ने मुंबई से खत लिखा कि काकाजी वहां छात्रालय के काम के लिए जाते-आते रहते हैं, तो आप काकाजी से मिलकर उनसे तारीख ले लेना, वे आपके साथ 'कपड़वंज' जाएँगे। **वे जो वहां आएँगे, तो उसमें मैं आ गया, ऐसा समझना।** कहने का मतलब कि **बापा ने भी प्रमाण दिया है कि काकाजी आएँगे, तो मैं आ गया**–ऐसी बात मुझे ऑथेंटिकली लिख कर दी... **काकाजी** वहां एक घंटे पहले आ गए और बोले–

यह तो रोड पर नहीं है। आप ऐसे कोने में दुकान क्यों बनाते हो... हमारी दुकान रोड पर होनी चाहिए। आपकी दुकान रोड पर हो जाए, आज इसके लिए धुन करेंगे।

काकाजी विज़नरी थे, उन्होंने १५ मिनिट धुन करवाई। सचमुच, मेरे एक-दो मित्र कांतिभाई और फकीरभाई जो तब मौज़ूद थे, उनके सहयोग से दो ही महीने में हमें रोड पर दुकान मिल गई और हमने वहाँ ट्रांस्फर की। **काकाजी से कोई चीज मांगनी नहीं पड़ती थी, वो इतने विज़नरी थे कि कौन-सी जगह क्या होना चाहिए, वो चीज हमें काकाजी ने दिखाई है... काकाजी की हर झलक में प्रभु की प्राप्ति, प्रभु के ज्ञान की प्राप्ति और उसकी खुमारी मिलती...**

पू. प्रेमस्वरूपस्वामी (हरिधाम)

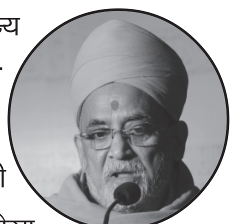

...काकाजी और स्वामिजी ने मुझे गुरुजी के साथ सेवा करने का मौका देकर धन्य किया है। एक बात हमेशा देखने को मिलती थी कि **काकाजी के साथ गुरुजी का संबंध खूब अद्भुत था। एक साधक के रूप में इनके जीवन का दर्शन है। गुरुजी ऐसे जुड़े थे कि वे कभी भी काकाजी को 'ना' शब्द नहीं बोले हैं।** इनकी दैहिक परिस्थिति बहुत नाज़ुक थी। जनरली हम सबकी बॉडी का टेम्परेचर ९६.४ ऐसा कुछ रहता है। यदि गुरुजी को ९९ का टेम्परेचर है, तो बहुत बीमार हो गए हों, ऐसा रहता था। ऐसी इनकी

दैहिक प्रकृति थी। फिर भी दिल्ली का कार्य करने के लिए गुरुजी को चुना। काकाजी महाराज ने आज्ञा की कि आपको दिल्ली जाना है। गुरुजी खुद मानते थे कि मैं वो नहीं कर पाऊंगा। लेकिन वो 'ना' नहीं बोल सकते थे; क्योंकि वे काकाजी में खो गए थे। इन्होंने अपने जीवन में काकाजी का संपूर्ण स्वीकार किया था। **गुरुजी ने ऐसी प्रीति का दर्शन कराया कि काकाजी के वचन से जहां-जहां जरूरत पड़ी, वहां-वहां अपना सर्वस्व का याहोम कर दिया है। अकेले शरीर का नहीं, मन-बुद्धि का भी किया है, क्योंकि वे वैसे बहुत तेजस्वी बुद्धिशाली हैं।** लेकिन इनका जुड़ाव केवल बुद्धि से नहीं था, हेत और प्रीति से था... गुरुजी के जीवन में देखा है कि **बुद्धि की प्रतिभा होने पर कभी भी इन्होंने काकाजी, पप्पाजी और स्वामिजी के वचन में बुद्धि नहीं लगाई है।** हमें वो सीखना है...

गुरुजी का जो परिवर्तन हुआ, वो परिवर्तन केवल, केवल, केवल हम कह सकते हैं कि इनका संबंध योगीजी महाराज, काकाजी महाराज के साथ ऐसा निष्कपट भाव का था और इन्हें मन-बुद्धि से परे का ऐसा स्वीकार भी था, इसलिए हुआ...

कोठारीस्वामी और मुझे स्वामी ने ताड़देव भेजा था। हम दोनों ताड़देव गए तो वहां काकाजी विराजमान थे। बापु, रमेशभाई, वशीभाई, भरतभाई सब युवावर्ग भी वहाँ थे... बापु की स्टाइल हम जानते हैं; वो स्वतंत्रमुक्त हैं। इनका भी काकाजी के साथ एक अनुपम संबंध है। काकाजी के सामने वे पांव लंबे करके साथ में बैठे थे और **काकाजी** कह रहे थे–*बापु मेरा अर्जुन है, मेरा दर्शन है।*

तब मेरे और कोठारीस्वामी के मन में एक सरीखा विचार चल रहा था। बात पूरी होने के बाद काकाजी ने पूछा–*क्या चल रहा है?*

मैंने और कोठारीस्वामी ने कहा–काकाजी दर्शन जब तक छोटा है, वो कांतिकाका की गोद में भी बैठ जाए या ऊपर भी बैठ जाए; लेकिन जब बड़ा होता है, तो उसमें कुछ मर्यादा होती है। काकाजी ने वो बात पकड़कर सारा दिन मुझे और कोठारीस्वामी को झाड़ा और कहा–*आपने बापु में योगीजी महाराज के दर्शन क्यों नहीं किए?*

काकाजी हमें ये चीज देना चाहते थे। वो दृष्टि देना चाहते थे। **स्वामिजी** भी आज वही बात बता रहे हैं–*हमें संबंध वाली दृष्टि प्राप्त करनी है। हमें हर सेकेंड-हर पल संबंध में ही जीना है।*

पप्पाजी भी बताते थे–*हर एक में महाराज के दर्शन करो।*

तो बस आज यही प्रार्थना करनी है कि जिस चीज के लिए योगीजी महाराज ने मुझे साधु बनाया, जिस चीज के लिए काकाजी और स्वामिजी ने मुझे गोद में बिठाया और जिस चीज के लिए आज स्वामिजी हमारे पीछे पड़े हैं, वो संबंध वाली दृष्टि पाएँ।

जैसे **गुरुजी ने एक संबंध बनाकर, संबंध पक्का कर लिया और एक आदर्श साधक का दर्शन करवाया और आज एक महिमा की मूर्ति बन गए हैं। सबके पास वे दास बनकर काम कर सकते हैं। सबके पास हाथ जोड़कर काम कर सकते हैं और सबके लिए वे भजन भी कर सकते हैं। वो क्यों कर सकते हैं, क्योंकि इनके हृदय में कोई भेद दृष्टि नहीं है, बहुत बड़ी बात है।**

तो आज यही प्रार्थना है कि हे स्वामिजी ! हम सबको ऐसी एक संबंध वाली दृष्टि जो आप देना चाहते हैं, वो दृष्टि हम पकड़ सकें... 'संप, सुहृदभाव और एकता'–वो हमारा फंडामेंटल है। उस बेझ से सुहृद्भाव पकड़ कर हम **'योगी परिवार'** के सब साधकवर्ग एक बनकर आपके चरणों में खो जाएं...

प.पू. भरतभाई (पवई)

साक्षात्कार दिन की हीरक जयंती आज मना रहे हैं। मैं सबसे प्रार्थना करूंगा कि हम साथ में मिलकर एक मिनिट जोरदार धुन करते हैं।

गुरुजी ने करीब लास्ट इयर यहाँ सभा में बताया था कि नेक्स्ट इयर हमें काकाजी के हीरक साक्षात्कार दिन के अवसर पर बड़ा महोत्सव मनाना है... हमारे यहाँ थोड़े दिन पहले एक भक्त ने अपने दोनों घुटनों का आप्रेशन कराया है। उन्हें बताया भी कि भई, इधर से ही इतने सारे भक्त लोग हो गए हैं, तो व्यवस्था नहीं हो सकती। यदि आपको नहीं आना है, तो मत आओ। यहां रह कर आप देखना। पर, उसने बताया नहीं-नहीं, कुछ भी हो मुझे आना ही है और वो भी साथ जुड़ गए। चार महीने का छोटा बच्चा और हमारे दिनकरभाई की १०४ साल की माँ भी इस समैया में शामिल हैं। नर्मदाशंकर शास्त्रीजी भी हमारे साथ ट्रेन में थे। वे भी ९४ साल के हैं। तो ऐसे सभी छोटे से लेकर बड़े तक इस उत्सव-इस फंक्शन में पाने के लिए आए हैं।

गुरुजी ने एक दूसरी भी बात बताई थी कि हमें दो दिन शिविर करनी है, जिससे कि यहाँ जो आएँ, वो कुछ लेकर जाएँ... यहाँ से गुरुजी ने एक पत्र भी लिखा था कि भरी हुई बन्दुक लेकर आना, ताकि हमें कुछ सोचना न पड़े कि हमें क्या करना है, क्या कहना है ? सो, यहाँ से हमें कुछ प्राप्त करना है। यहाँ भी बार-बार कहा गया है कि हम जब **सभा में बैठें तो एकाग्र होकर, प्रार्थना से भरे हुए हृदय से बैठें।** काकाजी कहते थे–
हमारी एक मिनिट भी की हुई प्रार्थना भगवान को पहुंचती है और हमारे कैसे भी स्वभाव को वो पिघाल देती है। हमारे कैसे भी पंच विषय के राग को पिघाल देती है।

ऐसी एक ही मिनिट की प्रार्थना की जरूरत है और... **ऐसे माहौल में जब हम बैठते हैं, ऐसे स्वरूपों के सानिध्य में बैठते हैं, तो सहजभाव से ऐसी प्रार्थना हृदय से हो जाती है और हमारा काम बन जाता है।** तो, आज हम ऐसे माहौल में बैठे हैं। हमारे अंदर से ऐसी प्रार्थना सहज उभरती है, मगर वो सच्चे हृदय से, सच्चे दिल से हो जाए। लेकिन **बहुत डीपली, डीपली, डीपली ऐसा होता ही है, यह मेरा स्वभाव है वो मेरे लिए अच्छा है। अगर वह नहीं रहेगा, तो मैं क्या करूंगा ?** मगर उससे आगे जाने के लिए काकाजी हमेशा हमें जाग्रत करते थे...

काकाजी कहते थे–*मेरा साक्षात्कार सामान्य नहीं है। मेरा साक्षात्कार, ज्ञान समाधि का साक्षात्कार हुआ...*

काकाजी ने ६.४.१९५१ को पप्पाजी को पत्र लिखा था। उसमें यह बात लिखी थी कि मुझे ऐसा साक्षात्कार करना है। १९५१ में कितनी भावना होगी? काकाजी हमेशा कहते थे–*हमारा इन्टेन्स एस्पीरेशन होना चाहिए।*

विठ्ठलदासभाई ने भी बहुत अच्छी तरह से बात बताई कि इन्टेन्स एस्पीरेशन होना चाहिए कि हमें क्या करना है?

आज इतना बड़ा माहौल देख रहे हैं। मगर उसके पीछे गुरुजी, दीदी और सबकी ऐसी एक भावना है कि काकाजी का हमें ऐसा कुछ महोत्सव मनाना है। आज शाम को हमें काकाजी का ड्रामा देखने को मिलेगा, वो बहुत बढ़िया है। गुरुजी ने काकाजी से जो पाया है, वो सब उसमें बताया है। काकाजी कहते थे–

दुनिया का तंत्र झूठ पर चल रहा है। विश्व की गतियाँ, नई दुनिया के मंडल हमारे सेन्सिस देख नहीं सकते। इसलिए हमारा आभास ज्ञान अधूरा रहने वाला है... जो सत्य है उस पर जाओ। जो सनातन सत्य है, वो कभी असत्य नहीं होता है, वो परमॅनेन्ट सत्य है। मैंने वो सत्य जाना है। मुझे यह लिमिटिड लाईट नहीं चाहिए। मुझे तो ऐसा तेजोमय धाम देखना है और उसके लायक बनना है। फिर जो भी हो...

उस समय काकाजी की उमर ३३ साल होगी। तो **कहने का मतलब यह है कि काकाजी ने** उस समय **१९५१ में ऐसा संकल्प किया और १९५२ की फरवरी में यह साक्षात्कार हुआ।** इतने कम समय में केवल ८-१० महीने के टाइम में... काकाजी उस साक्षात्कार से जीए। उनके पास ऐसी शक्ति, ऐसी पावर थी।

एक बार ऐसे ही ताड़देव में काकाजी के पास एक भाई आए। उस समय इलेक्शन का दौर चल रहा था और इलेक्शन कैम्पेनिंग के लिए सोनावाला बिल्डींग में आए। तो किसी ने बोला होगा कि ऊपर जाओ, दादुकाका रहते हैं, वो संत हैं–स्वामिनारायण का मंदिर है, आप दर्शन करो। वो ऊपर आकर काकाजी से मिले। काकाजी ने आशीर्वाद दिया– *जाओ, तुम जीत जाओगे।* दो दिन के बाद किसी दूसरे का भी कैम्पेनिंग चल रहा था। वो भी आया, तो काकाजी ने कहा– *देखो भाई, जीतने का आशीर्वाद तो मैंने किसी और को दे दिया है, पर आपकी डिपोज़िट नहीं जाएगी इतनी प्रार्थना मैं जरूर करूंगा।*

काकाजी इतने स्पष्टवक्ता थे। जो भी है, वो सामने बोल देते थे... ऐसे ऑथेन्टिक काकाजी हमें मिले और उन्होंने हमें कई आशीर्वाद दिए। **'पत्र संजीवनी'** में आशीर्वाद की कितनी झड़ी लगा दी है। **वो आशीर्वाद सबको दिया है, जो उसे माने कि ये आशीर्वाद मेरे लिए हैं, तो वो उसके पास है।** काकाजी हमेशा चॅलेन्ज देते थे। जैसे अभी स्वामी ने गाया–

जिसने किसी को आज तक सजदा नहीं किया, वो सिर भी मैंने आपके दर पर झुका दिया।

एक भक्त–**राजन ठाकुर** फिल्म प्रोड्यूसर थे। वे सनातन धर्म को मानते थे। **एक व्यक्ति में भगवान हैं या ऐसा व्यक्ति भगवान का स्वरूप है, यह मानने के लिए उसका दिल कभी तैयार नहीं होता था।** मगर उनके फ्रेंड सिंग साहेब जो थे, उन्हें काकाजी का बहुत अनुभव था। एक बार वे उन्हें ताड़देव लेकर आए कि हमें काकाजी के साथ डिस्कशन-बातें करनी है। वे काकाजी के पास आए, काकाजी ने उन्हें बिठाया। उन्होंने काकाजी के पैर नहीं छुए और सीधा कुर्सी पर सामने बैठ गए। जो दूसरे दो लोग थे, उन्होंने काकाजी के पांव छुए और बैठ गए। काकाजी पैर लंबे करके बैठे थे। **राजन ठाकुर ने मन में संकल्प किया** कि काकाजी के लिए बोलते हैं कि ये धाम का स्वरूप हैं और साक्षात् स्वरूप हैं। मानवरूप में भगवान होना, वो तो

मैं नहीं मानता हूँ। ऐसे संत में भगवान हैं, ऐसा नहीं मान सकता। फिर भी **अगर इनमें कुछ है, तो इनके पांव हिलने नहीं चाहिएँ।** जब तक हम बैठे हैं, तब तक काकाजी के पांव नहीं हिलने चाहिएँ। काकाजी तो ऐसे ही बैठे रहे। **काकाजी मुंह हिलाते–करते, बात करते, डिस्कशन करते, सब करते, मगर पांव नहीं हिल रहे थे** और उसकी नज़र पांव के ऊपर रहती थी। **इसी तरह करीब ३०-३५ मिनिट काम चला** और बातें चलीं। बाद में काकाजी ने प्रसाद दिया। वो दो जनों ने तो उठकर प्रसाद लिया, फिर **राजन ठाकुर को भी थोड़ा लगा कि काकाजी का पांव हिले ही नहीं हैं, तो जरूर कुछ है। तो वो प्रसाद लेने के लिए आए, लेकिन उसकी दृष्टि पांव के ऊपर थी। काकाजी ने प्रसाद दिया और कहा–** ***राजन साहब ये पांव नहीं हिलने वाले हैं, ये लो प्रसाद।***

वो राजन साहेब अभी भी मंदिर आते हैं और यह बातें करते हैं।

काकाजी के पास कोई भी भक्त आए, उसका इमीजियेट सोल्यूशन था। एक बार **शास्त्रीस्वामी** काकाजी के पास आए और काकाजी ने उन्हें कहा– *देखा, मैंने कैसी तंत्र की बुक लिखी। आपने पढ़ी?*

शास्त्रीस्वामी बोले कि यह इंग्लिश में है। आप गुजराती में लिखो, तो कुछ समझ में आए। तो काकाजी बोले कि– ऐसा है तो तुम्हें मैं एक वाक्य में पूरी बुक समझा देता हूँ। इतनी बड़ी बुक को एक वाक्य में बोलना कितना कठिन है। वो भी तंत्र की किताब! **काकाजी बोले–**

तुम में ९९ गुण हैं, १०० गुण हैं मगर भगवान नहीं है तो ज़ीरो और ९९ अवगुण है, मगर एक भगवान साथ में हैं, तो १००; वो तंत्र है।

एक ही वाक्य में इतनी सारी बात बता देनी, वो कला काकाजी के पास है। जैसा समय और जिस तरह की व्यक्ति, उसे उसकी तरह से वे समझा देते थे।

साधकों से उनकी बहुत ही एक्सपेक्टेशन्स थी। हम एक बार काकाजी के साथ कार में जा रहे थे और कार में काकाजी हमेशा एक जना ज्यादा बिठाते थे। ज्यादातर सेवक को ही काकाजी के बराबर में बैठना होता था। तो, मैं काकाजी के साथ बराबर में बैठा था और लोनावाला तक जाना था। एम्बेसेडर कार में शिविर का बहुत सारा सामान भी साथ में था। आगे मैं, काकाजी, ड्राइवर और एक छोटी-सी बैग; वो भी काकाजी के पांव के पास रखी थी। पीछे अरुणभाई वगैरह दो-तीन जने बैठे थे। साथ में एक दो बहनें भी थीं, तो उन्होंने काकाजी से कहा कि बैग पीछे दे दो, हम इधर कर्म्फटेबल हैं। तो मैंने सोचा कि दे दें। पर, काकाजी एकदम पीछे मुड़कर बोले–

ये बैग मुझे डिस्टर्ब नहीं कर रही है, ये बैग मुझे तकलीफ नहीं दे रही है। मगर आपके अंदर जो संकल्प-विकल्प चल रहा है, वो मुझे बहुत दिक्कत देता है। इसलिए आप जब मेरे साथ बैठो, तो नीरव बन कर रहो, अपने विचार बंद करके रहो, आपकी मन-बुद्धि को बंद करके रहो।

काकाजी ने कल सुबह के प्रवचन में भी बताया था कि ऐसे गुणातीत स्वरूपों के पास हमारी बुद्धि बंद करके रहें... आज हम इतने भाग्यशाली हैं कि काकाजी के साक्षात्कार कराए हुए पुरुष हमें मिले हैं। उनके

संबंध में आने से ही हमारा साक्षात्कार हो गया। एक बार वशीभाई से किसी ने प्रश्न पूछा कि आप काकाजी के साथ इतने साल रहे, तो आपने काकाजी से कभी बोला नहीं कि हमें साक्षात्कार करा दो। तो **वशीभाई** ने बहुत अच्छा जवाब दिया था कि **काकाजी का दर्शन था न, वही साक्षात्कार था।**

वाकई, ऐसे गुणातीत पुरुषों का दर्शन, वही हमारा साक्षात्कार है। आज हम ऐसा साक्षात्कार कर रहे हैं। तो... ऐसे बड़े संत पुरुष की प्राप्ति के कैफ़ और ऐसे साक्षात्कार में निरंतर रहें...

प.पू. निर्मलस्वामिजी (समढियाळा)

...काकाजी ने बहुत अच्छी बात की थी – *जीवन में चार प्रकार की प्रतिष्ठा होती है, तब साक्षात्कार होता है।*

काकाजी ने गिनवाया - *पहले शास्त्र की प्रतिष्ठा, फिर मंत्र की, फिर मूर्तिप्रतिष्ठा और चौथी संत की प्रतिष्ठा होती है, उसे साक्षात्कार होता है।*

काकाजी के जीवन में या यहाँ जो स्वरूप बैठे हैं, उनके जीवन में चारों प्रतिष्ठाएँ हैं। यह मैं इसलिए कह रहा हूँ कि शास्त्र की प्रतिष्ठा काकाजी में थी, उसके दर्शन सबको हुए हैं कि काकाजी २४ घंटे शास्त्र पढ़ते थे। मंत्र की प्रतिष्ठा अगर मैं कहूँ, तो २४ घंटे काकाजी मंत्र का जाप करते थे। मूर्ति प्रतिष्ठा तो थी ही और चौथी योगीजी महाराज जैसे पुरुष की प्रतिष्ठा थी। यूँ काकाजी में ये चारों थे, इसलिए उन्हें साक्षात्कार हुआ था।

यहाँ जो स्वरूप बैठे हैं, वे सभी साक्षात्कार किए हुए पुरुष ही बैठे हैं।

मुझे एक बात इसलिए करनी है कि रामजीभाई को ध्रोड़ के ठाकुर साहेब की बात तो पता है। योगीजी महाराज, काकाजी और ठाकुर साहेब के साथ मैं भी था... योगीजी महाराज ने ध्रोड में सभा की, तब ठाकुर साहेब प्रवचन करने के लिए खड़े हुए... **ठाकुर साहेब इतना ही बोले – योगीजी महाराज जब चलते हैं, तब उनके पीछे सच्चे फूल बिखरते हैं और योगीजी महाराज में से चंदन की खुश्बू आती है।** तब काकाजी बोले थे – *साहेब! चंदन ऐसे ही नहीं मिलता, वो तो विरासत में मिलता है, शालीनता आशीर्वाद से मिलती है।* योगीजी महाराज और काकाजी ऐसे पुरुष थे।

स्वामिनारायण भगवान जब जेतलपुर में ५०० परमहंसों के साथ बैठे थे, तो दूर से ही एक साधु को बड़े क्रोध में आता देख कर **श्रीजी महाराज बोले – *अगले जन्म में यह इन्द्र बनेगा।***

तब **ब्रह्मानंदस्वामी बोले –**

न तो उसने कोई साधन की, न ही आपका भजन किया, ऐसा कुछ भी नहीं किया

और आप कह रहे हैं कि यह इन्द्र का अवतार लेगा!

तब **स्वामिनारायण भगवान बोले –**

इसने २० मिनिट तक मेरी मूर्ति अपने हृदय में उतारी, इसलिए इसे इन्द्र का अवतार मिलेगा।

...योगीजी महाराज जामनगर गए थे, वहाँ 'खारवा' नाम का एक गाँव है। वहाँ अजा पटेल थे और वे योगीजी महाराज के बड़े भक्त थे, बहुत प्रीति के पात्र थे। वे नहाते नहीं थे, पर योगीजी महाराज के साथ उनकी खूब प्रीति थी। सब हरिभक्तों ने योगीजी महाराज से शिकायत की कि ये अजा पटेल कभी नहाते नहीं हैं... तब योगीजी महाराज ने पूछा– *आओ गुरु! क्यों नहाते नहीं हो?*

तो कहते हैं कि मैं नहाता हूँ, तो मुझे ज़ुकाम हो जाता है। तब योगीजी महाराज ने नहाने के लिए उन्हें अपना कपड़ा दिया और कहा – *यह कपड़ा पहन कर नहाओगे, तो आपको ज़ुकाम नहीं होगा।*

योगीजी महाराज का दिया वो कपड़ा पहनकर वे नहाते थे, तो उन्हें कभी भी ज़ुकाम नहीं हुआ। वो तो ठीक है, पर योगीजी महाराज ऐसे कपड़े पहनते थे कि वो कपड़ा दस साल पुराना था और उसके बाद दस साल तक अजा पटेल ने इस्तेमाल किया!

अब मुझे यह बताना है कि एक बार योगीजी महाराज 'खारवा' जाने वाले थे, सो काकाजी पहले दिन पहुँच गए। काकाजी को इस कपड़े के बारे में कुछ पता नहीं था। पर काकाजी ने कहा–

मेरे गुरु की सुगंध आज इस गाँव में आ रही है।

लोग विचार में पड़ गए कि गुरु की खुश्बू और गाँव में से कैसे आ रही है? पर कोई समझ नहीं सका। काकाजी ने फिर से कहा–

मानो न मानो पर इस गाँव में मेरे गुरु की सुगँध आ रही है।

फिर पता चला कि योगीजी महाराज ने यहाँ के एक पटेल को नहाने के लिए कपड़ा दिया था, उसकी खुश्बू आ रही है। **एक कपड़े में खुश्बू आती हो, तो हमारे पास भगवान, गुरु या स्वरूप स्वयं बैठे हैं!**

...काकाजी-पप्पाजी जब गोंडल से मुंबई जा रहे थे, तो उन दोनों को योगीजी महाराज ने बुलाया कि आओ, मुझे आपसे एक बात करनी है। तब मैं साथ में खड़ा था और **योगीजी महाराज** ने कहा–

दादुभाई साहेब, बाबुभाई साहेब – हमने साधु बनाए हैं। अपने साधु हैं, उन्हें चारित्र के पाठ पढ़ाना, शालीन और भजनीक बनाना। हमारे गुणातीत कुनबे की लाज रखें, ऐसे साधु बनाना...

...गुरुजी के साथ तो मैं बहुत रहा हुआ नहीं हूँ। एक जगह टेबल पर शराब की बॉटल पड़ी थी। ऊपर से बिल्ली कूदी और बॉटल टूट गई। चार-पाँच चूहों ने एक-एक बूँद चखी। खाली एक-एक बूँद ही चखी थी। उसमें तो बोलने लगा कि मैं दिल्ली की गद्दी पर बैठूँगा। दूसरा कहे – मैं गुजरात की गद्दी पर बैठूँगा। एक कहता है – मैं तो बिल्ली के साथ शादी करूँगा। खाली एक बूँद ही चखी थी! यूँ काकाजी ने एक चुटकीभर ही दिया है, तो भी हम फलेफूले घुमते हैं। पर, **गुरुजी के ऊपर काकाजी खूब ढले हैं। हमारे तो मित्र हैं, हमारे बाल स्नेही हैं, पले भी हमारे साथ। हमें बहुत आनंद होता है, हम गौरव लेते हैं...**

5 फरवरी 2012 – ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज साक्षात्कार हीरक जयंती शिविर

प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी (मुंबई)

...गुणातीत स्वरूपों का प्रगट संबंध; गुणातीत मतलब–गुणों से परे। मैंने पहली बार यह शब्द सुना, तो समझ नहीं आता था कि इसका क्या अर्थ हो सकता है। सद्‌गुण की बातें तो हमेशा सुनी कि अच्छे काम करना, अच्छी बातें, अच्छे बोल ये सब। लेकिन, 'गुणों से परे'–ये भी कोई एक अवस्था होती है!

इन गुणातीत स्वरूपों के संबंध मिलने से हमें यहां ऐसी प्राप्ति हुई है। यह कोई मामूली घटना नहीं है। जिसे ये संबंध मिला है, उन सभी के जीवन की यह बहुत ही सुखद और अलौकिक घटना है... गुरुजी ने हमें एक-एक बात खोल कर की है। एक वचनामृत में–**'यही हमारी नात है, यही हमारी जात है...'** ऐसी बातें आती हैं। तो, आज **सच में मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली मानता हूँ कि गुरुजी ने हमारे परिवार के साथ दीदी का एक दिव्य संबंध बना दिया** और साथ में ही ये जो सूत्र है कि यही हमारी जात है, नात है...

जब भी दिल्ली आता रहता हूँ, तब गुरुजी के पास क्लोज़ली बैठता हूँ। शुरुआत में जब आता था और ऐसे बैठता था, तो मुझे ही बड़ा अचरज-अचंभा लगता था कि यह क्या यहाँ ऐसे आकर खाली बैठे हैं और कुछ काम नहीं, कुछ बात नहीं, कुछ हो नहीं रहा है। ऐसे ही अपना समय खराब हो रहा है। पर, धीरे-धीरे समझ में आया कि **गुरुजी के सान्निध्य में पॉजेटिव वाइब्रेशन्स हमारे अंदर आती हैं।** कैसे हमारे अंदर वाइब्रेशन पहुंच जाते हैं, हमें मालूम ही नहीं पड़ता। अब यहाँ बैठकर मैं उनकी एक-एक क्रियाओं को देखता हूँ, तो बाकी सब कुछ बेकार लगता है... अभी **जैसे इस मंदिर पर जो स्टोन क्लॅडींग, पत्थर पर जो गढ़ाई-कारीगरी हुई है, ऐसे ही गुरुजी हम सभी को गढ़ते रहते हैं।** इस सत्संग में जुड़े हुए आज मुझे १८ साल हो गए; १८ साल के बाद कलश चढ़ा है। इस दौरान मंदिर की एक-एक फेमिली को, उनके जो संपर्क में जो आया उन्हें गुरुजी गढ़ रहे थे, बना रहे थे और मंदिर की तरह उनका सर्जन कर रहे थे। तो, उसी सर्जन का आज हम यहाँ दर्शन कर रहे हैं...

आजकल गुरुजी **'गुणातीत विचार'** के बारे में बातें करते रहते हैं कि भगवान और संत को राजी करने का विचार 'गुणातीत विचार' है। तो **सब बातों का निचोड़ एक ही है कि किस तरह से हम भगवान और संत को राजी कर सकें।** कल भोजाणी साहब ने जो बातें कीं, उसे सुनकर जैसे मेरी बैटरी रीचार्ज हो गई। उन्होंने अपना एक सूत्र बताया, वो हम सबके लिए एप्लीकेबल है कि किसी भी तरह मैं आनंद में ही रहूं, मेरा आनंद न चला जाए। **गुरुजी ने हमारे जीवन में इतना प्यार और कॅयर की है कि बाकी सब कुछ भुला दिया जाए ऐसा है...**

पू. विज्ञानस्वामिजी (कंथारिया)

हम सबके दिल में ऐसा हो रहा है कि यह महोत्सव चलता ही रहे, यह शिविर चलती ही रहे। यहाँ पीछे सूत्र लिखा है – काकाजी और पप्पाजी, इन दोनों की हमें जो भेंट मिली, वो बापा की बेहद कृपा या करुणा कही जाए। **भगवान स्वामिनारायण की पहचान करके प्रगट पुरुषों के साथ संबंध करना जीवन के एक जरूरी हिस्से की अनोखी चीज कही जाए...**

ऐसा कहा जा सकता है कि ऐसे सत्पुरुष की दृष्टि पड़ जाए, तो कृपा से ही वो सुख उसे मिल सकता है। मेरा नंबर कुछ उसमें लग गया है कि कोई साधन किए बिना, केवल कृपा में मुझे इन पुरुषों ने ग्रहण किया और यहाँ तक लाए हैं। **जब कोई विभूति अपना ध्येय पक्का करके पृथ्वी पर आती है, तब वह अपने ध्येय से कभी विचलित नहीं होती।** तो, **महाराज अपना अक्षरधाम सबको देने का जो संकल्प लेकर पृथ्वी पर आएं, काकाजी और पप्पाजी ने जो संकल्प किया कि स्वर्ग पृथ्वी पर लाना है, उनके संकल्प से हम कैसे वंचित रह सकते हैं?**

जंगल में मंगल हो, यूं शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज का संकल्प था कि दिल्ली में मंदिर बनाना है, अक्षरपुरुषोत्तम की ध्वजा लहरानी है। उस वचन के पात्र के रूप में **काकाजी ने गुरुजी को सिलॅक्ट किया। सिलॅक्शन बहुत क्रिटिकल पॉईन्ट कहा जाए।** अर्जुन का सिलॅक्शन जब युद्ध के लिए हुआ, तब बहुत सारी मान्यताओं और सत्यों को उसे छोड़ना पड़ा था। उसे कृष्ण के साथ ऐसा असाधारण प्रेम था ही; फिर भी, बहुत कुछ छोड़ने के बाद, वो 'नर-नारायण देव' की तरह पूजे गए। ऐसा ही कुछ गुरुजी के साथ बना है। उनके अंदर रही हुई शक्तियों और सामर्थ्य का दर्शन काकाजी को था। वो दर्शन जगजाहिर करने के लिए जो दिन गुज़रे, वो कुछ कठिन थे, पर उसका सुख आज पूरा समाज ले रहा है।

राजधानी दिल्ली में अक्षरपुरुषोत्तम की सबसे पहली मूर्ति के निमित्त के रूप में गुरुजी को महाराज ने निमित्त बनाया। हम आज देख रहे हैं कि गुरुजी के द्वारा अनंत चैतन्य तैयार हो गए हैं और होंगे। ऐसे गुरुजी के लिए क्या कहें, वो बहुत अटपटी बात है। फिर भी काकाजी और पप्पाजी ने सुहृद्‌भाव, निर्दोषभाव, मिलजुलकर रहने की जो बातें की हैं, तो इतना ही याद आता है कि **गुरुजी एक ऐसे अनोखे पात्र हैं, जो हम सबके लिए प्रार्थना करते हैं। जब स्वामिजी के पास उन्होंने प्रार्थना की, तब मुझे लगा कि वो अपने लिए नहीं है, पर सबके लिए कर रहे हैं** और सबसे सच्ची आत्मबुद्धि और प्रीति यही कही जाए कि **उन्होंने स्वामिजी के पास इतना ही मांगा कि स्वामिजी, हमारी सबकी जवाबदारी आपकी है। ऐसा कौन कह सकता है? जिसे पूरे समाज के लिए आत्मबुद्धि और प्रीति हो, उसी के मुँह से ऐसी बात निकल सकती है।** वो कुछ एबनॉर्मल प्रार्थना मुझे लगी थी कि **गुरुजी ने अपना कुछ नहीं रखा, तो आज भगवान संपूर्णरूप से उनमें रहते हो गए।** वे चैतन्य मंदिर बन गए, उनकी हर क्रिया चैतन्यस्पर्शी बन गई, ऐसा हमें लगता है, ऐसे दर्शन होते हैं।

बड़ी बात यह है कि **योगीजी महाराज के वचन, आदेश और आज्ञा से, काकाजी और पप्पाजी दोनों ने जो बहनों की प्रवृत्ति स्टार्ट की, उसके फलस्वरूप आज यह 'गुणातीत ज्ञान' हमें संपूर्णरूप से**

विचारने को मिला है। वर्ना यह ज्ञान केवल कोने में ही रह जाता, ऐसा लगता है। उस ज्ञान का काकाजी, पप्पाजी और स्वामिजी ने आज जोर-शोर से बिगुल बजाया और आत्मीयता में हम सभी को डूबो दिया। उनके संकल्प के फल हम चख रहे हैं, उसका सुख हम ले रहे हैं। अभी जो उनका कार्य चल रहा है, वो ऐसा चल रहा है कि दुनिया के अंदर कुछ अनोखा सर्जन हो रहा है और वो सर्जन मतलब 'गुणातीत समाज'। वो जो सुख हमें देना चाहते हैं, उसका सहजावस्था में हम आनंद करते हो सकें, ऐसी कक्षा पर इसी माध्यम से सामूहिक रूप से हमें ले जाना चाहते हैं... **शुरुआत की स्थिति-परिस्थिति का ख्याल है और... आज कौन-सी कक्षा पर हम सबको रख दिया, वो हम सब समझ-विचार कर देख सकते हैं और अनुभव कर सकते हैं**... वी हॅव बीन सिलॅक्टेड फॉर धॅट एचीवमॅन्ट, ऐसा हम कह सकते हैं। तो **ये अचीवमॅन्ट की प्राप्ति सहजता-सुलभता से हमें कराने के लिए ही सारे 'गुणातीत समाज' की रचना और स्थापना हुई।**

काकाजी और पप्पाजी जब दादर मंदिर में पधारते, तब ऐसी थोड़ी-थोड़ी बातें होती थी, पर वो ज्ञान कोने में ही रहा था। उसके बजाय काका, पप्पा, स्वामिजी और इन सब स्वरूपों को मैदान में रख दिया, तो हम देख सकते हैं कि कितना गहरा ज्ञान होगा। ठोक-ठोककर देने के बाद – कितने आशीर्वाद देते हैं, हमारे लिए कितनी प्रार्थना करते हैं, तब जाकर हमारे दिमाग़ में धीरे-धीरे, थोड़ा-थोड़ा उतरता है और **संबंध से स्वरूप मानने की बात हमारे दिमाग़ में थोड़ी बैठी**, वर्ना वो ज्ञान कोने में ही रह जाता।

ज्ञान नया नहीं है, यह ज्ञान महाराज के समय से चला आ रहा है। महाराज ने कहा कि मेरे दर्शन कितनों को होंगे ? सो बोले – मेरे संत का दर्शन करे, उसका कल्याण। फिर बोले – मेरे संत के दर्शन कितनों को होंगे ? आगे बोले – मेरे हरिभक्तों के दर्शन करेगा, उसका भी कल्याण। महाराज ने उस हरिभक्त की किस कक्षा-हद की कल्पना की होगी कि महाराज जैसा ही सुख वो हरिभक्त दे सकता है! **यूं गुणातीत समाज की स्थापना का संकल्प तो महाराज ने तब से कर ही लिया था।** उस संकल्प में हम सब आ गए। हम सबको ऐसा चान्स मिल गया कि इस समाज का सुख मिल रहा है। तो, गुरुजी ने जो संकल्प किया हुआ है कि स्वामिजी हम सबके लिए हैं, वो सचमुच हम सबके स्वामिजी हो सकें, वर्ना तो जिलॅटीन पेपर जैसा अंतराय रह जाता है, वो न रहे यही इन पुरुषों के चरणों में प्रार्थना...

पू. दासस्वामिजी (हरिधाम)

शुरुआत में श्लोक गाने की प्रेरणा हुई, वो **काकाजी की स्मृति से हुई है।** मुंबई में काकाजी के सान्निध्य में कोई भी ऐसी सभा, उत्सव या कार्यक्रम का प्रारंभ होता, तो काकाजी अचूक मुझे बुलाकर वेदगान करवाते, वो स्मृति जुड़ी हुई है। **अद्‌भुत उत्सव हम मना रहे हैं।**

मेरी खुद के लिए बात करूँ, तो **काकाजी** को बापा ने साक्षात्कार कराया, उसके बाद एक-दो साल बीते होंगे कि काकाजी और कांतिकाका कोल्हापुर पधारे थे। कौन काकाजी, कौन पप्पाजी, क्या स्वामिनारायण भगवान, कुछ पता नहीं था। उस वक्त मेरी उम्र शायद ८-९ साल थी और महापुरुषस्वामी – मुकुंदभाई की उम्र १३-१४ साल होगी। परिवार के सब सदस्य बैठे थे। **देखते ही काकाजी पसंद आ गए**

थे। गुलाबी सूट पहनकर आए थे और मरकारा जा रहे थे... मुंबई से बाय रोड कुर्ग जाना और गोरधनकाका तो योग में थे ही, इसलिए कहा होगा कि एक दिन कोल्हापुर रहकर जाओ तो अच्छा; इस तरह आए थे। उस वक्त श्रीखंड भी गुलाबी रंग का था और मुझे अच्छी तरह से याद है कि उन्होंने दो चम्मच लिया। उसमें से मुझे व मेरे पूर्वाश्रम के बड़े भाई को खिलाया और **कहा– *ये दोनों हमारे हैं।***

फिर जाते-जाते भी मेरे कान में कहा –*तुम दोनों हमारे हो और हमारे रहने वाले हो।*

आज जो मैं यहाँ खड़ा हूँ, योगी बापा कौन, मुझे पता नहीं था। काकाजी ने योगीबापा की गोद में बिठाया, योगीबापा ने स्वामिजी की गोद में बिठाया, खास करके मुझे और प्रेमस्वामी को। तो, उन पुरुषों का ऋण करोड़ों भजन गाने, करोड़ों प्रवचन करने या करोड़ों साल तक सेवा करने से अदा हो सके, ऐसा नहीं है।

उन्होंने जो कार्य किया, वो कोई कर नहीं सकता। मूल वृत्ति, मूल स्वभाव, हठ, मान, ईर्ष्या को पिघलाना और 'बालक' के मार्ग पर चलाकर, ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म की भक्ति करता करने, उसका मूर्तिमान दृष्टांत हमारे सामने गुरुजी, निर्मलस्वामी, कोठारीस्वामिजी, प्रेमस्वामिजी और शास्त्रीस्वामिजी हैं। ऐसे और भी बहुत हैं, पर जिनके साथ मेरा निकट का संबंध है, उन पात्रों की मैंने बात की। ऐसे अश्विनभाई और शांतिभाई हैं। गुणातीत समाज के सारे केन्द्रों में ऐसे मुक्त हैं ही, जो ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म की भक्ति कर रहे हैं।

...करोड़ों के जीवन में जो कोई काम करा हो, वो तो काकाजी-पप्पाजी और स्वामिजी जानें, पर मेरे जीवन में जो काम किया, वो आज तो मुझे कहना ही चाहिए कि उस पुरुष का ऋण मैं कैसे अदा करूँगा। इसलिए जब भजन बना रहा था, तब निम्न पंक्ति मानो काकाजी ने मुझे सुझाई थी। आज मैं वो कड़ी गा रहा हूँ–

नमी खमीने , सहुनुं गमाडी सुहृद्भावना भाण बन्या, सुहृदभावना भाण बन्या;
बुद्धि निर्दोषे सहुने मस्तकना सिरछत्र गण्या,मस्तकना सिरछत्र गण्या।
स्वरूप पिछाणी मैत्रीभावमां लीन करवा तत्पर तो रह्या;
यज्ञ, प्रेमने पुरुषोत्तमजी रसबस शास्त्री गुरुजी कर्या।
हे जोगीना प्राणज्योति तम मम अभिप्सा उरमां धरो,
आशिष आ शुभ अर्पी दासने आरजू आ साकार करो।

...दूसरी अद्भुत बात आज सुबह जानने को मिली। यहाँ ३० मुक्तों के फोटोग्राफ लगाए हैं। मैं और प्रेम स्वामी विचार कर रहे थे कि यह क्या है ? उसमें दूर से दो-पाँच के फोटोग्राफ की शास्त्री स्वामी और प्रेमस्वामी ने पहचान कराई, इतने में गुरुजी पधारे। बहनों को हटाकर मुझे और शास्त्रीस्वामी को वहाँ ले गए और वो सारे फोटो दिखाए। ३० महामुक्तों के फोटोझ हैं। वो तो ठीक कि काकाजी या पप्पाजी या स्वामिजी या अक्षरविहारीस्वामिजी या साहेब–इन स्वरूपों के योग में रह कर 'गुणातीत समाज' की नींव में समाए हैं, उनके फोटो गुरुजी ने रखे। **गुरुजी ने छगनभाई और हर्षदभाई के फोटो रखवाए, वो मुझे बहुत छू गया।** तब **गुरुजी ने कहा–**

तीन दिन पहले ही मुझे हुआ कि काकाजी होते तो कहते–'यह सब अकेले हाथ नहीं बना, पर साथीदारों के साथ से बना है।' इसलिए उन्हें अंजली देने–उनको हृदय के भावपूर्वक अभिनंदन देने के लिए, यह गुणातीत समाज जिनकी देन है, उनकी स्मृति करने के लिए ये फोटो रखे हैं।

विचार करो काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामी और साहेब ने गुरुजी के या हमारे सबके जीवन में क्या काम किया – समझने जैसी बात है... मैंने कहा कि गुरुजी, आपने मास्टर स्ट्रोक किया। तो बोले –
नहीं, दासस्वामी मास्टर स्ट्रोक लगाने की भावना नहीं है।
तब मैंने भी कहा कि मैं नहीं समझता कि यह कोई आपने चालाकी की है। पर, काकाजी ने यह कितना जबरदस्त परिवर्तन किया। यह काकाजी का कार्य है। **गुरुजी ने कहा –**
जिस तरह भावपूर्ण हृदय से देवशीबापा या गोरधनकाका के फोटो रखे हैं, उतने ही भाव से यह फोटो रखने की मुझे प्रेरणा हुई।
एक ही लाईन में समझना हो तो, यह है काकाजी का युगकार्य!

काकाजी ने गुरुजी को तो यहाँ दिल्ली की जिम्मेदारी सौंपी इसलिए ठीक है, उन्हें यहाँ विशेष रहना हुआ है। **काकाजी ने कभी भी किसी को अपने में जोड़ा नहीं है।**
अश्विनभाई और शांतिभाई से गोष्ठी करते होंगे, तो साहेब के साथ कैसे सर्वोपरि संबंध दृढ़ करना, यूँ उन्हें सिखाया होगा।
जब-जब सांकरदा पधारे होंगे, तब अक्षरविहारीस्वामिजी को योगीजी महाराज का स्वरूप मानकर कैसे उनके साथ संबंध करना, वही सिखाया है।
जब-जब सोखड़ा पुराने मंदिर में पधारे हैं या ताड़देव भी हमें लाभ मिला है, तब एक ही चीज उन्होंने हमें कही है कि हमने जैसे शास्त्रीजी महाराज और योगी बापा के साथ एक अद्‌भुत, अलौकिक, अद्वैत संबंध किया, यूँ तुम हरिप्रसादस्वामी के साथ एक अनुपम संबंध करो और पाँच जने तो ऐसे तैयार हो जाओ कि स्वामिजी उनके दिल का दर्द शेयर कर सकें। तुम उनकी कसनी के भागीदार बनो। सुख के भोक्ता वे बनाएंगे। इस प्रकार काकाजी हमें बिठा-बिठाकर, ठोक-ठोककर कहते –
तुम हरिप्रसादस्वामिजी की कसनी के भागीदार बनो, उनके दिल के दर्द को समझो, उनकी मर्जी में वर्तने का प्रयत्न करो, वे जो कहें उनके बल से करने लग पड़ो, तो वे अपने सुख के भोक्ता बनाएंगे...
आज मैं कितना सुख का भोक्ता हुआ, वो तो मैं नहीं कह सकता। पर कोठारीस्वामी, शास्त्रीस्वामी, प्रेमस्वामी और गुरुजी सुख के भोक्ता बने हैं, वो हम देख सकते हैं, अनुभव कर सकते हैं...
तो, आज विशेष तो कुछ कहना नहीं है। इन युगपुरुषों का कार्य क्या? तो यह कार्य है...
१९६६ तक के इतिहास के लिए तो काकाजी और पप्पाजी का अनंत ऋण है, उसे हम कभी भूला नहीं पाएंगे। अगर एक क्षण के लिए भी भूल जाएं, जैसे विज्ञानस्वामी ने कहा, तो हम महाकृतघ्नी और घोर पापी कहलाए जाएं।

पर, साथ-साथ दूसरा भी एक इतिहास है। १९६६ से आज २०१२, ५ फरवरी तक का इतिहास। उसे नज़र में लेकर **हरिप्रसादस्वामिजी** की जो भूमिका है कि **३२ साल की उम्र में ३९ संतों का उन्होंने नेतृत्व किया। हम संतों की – 'गुणातीत समाज' की वे ढाल बने, उसका तो वर्णन हो सके ऐसा नहीं है।** जब अक्षरभुवन में से निकलना था, तब १५-२० मिनिट अक्षरविहारीस्वामी और सबको बुलाकर उनके सान्निध्य में अद्‌भुत सांत्वना दी, आश्वासन दिया। ऐसे शिरछत्र खुद बने और कहा कि **हम योगीबापा से विमुख नहीं**

हुए हैं, हम काकाजी-पप्पाजी का पक्ष रखने जा रहे हैं, योगीबापा से पूछने जा रहे हैं। **हम किसी के विरुद्ध नहीं जा रहे।** हम किसी का विरोध नहीं कर रहे हैं। **हम विमुख नहीं, पर सदा सन्मुख के मार्ग पर आगे जा रहे हैं।** ये इतिहास है कि स्वामिजी और अक्षरविहारीस्वामिजी संतों के लिए ढाल-छत्र बनें हैं, गालियाँ खाईं, अपमान सहे, तिरस्कार सहे हैं। विथ टोटल ड्यु रिस्पेक्ट फ्रॉम धी बॉटम ऑफ धी हार्ट फॉर काकाजी एन्ड पप्पाजी कि उनका ऋण तो चुका सकें, ऐसा है ही नहीं। पर, **ये भी इतिहास का एक गौरवभरा पहलू है– १९६६ से अभी तक का।** इसे लक्ष्य में रखकर ही मैं ऐसा दिल से मानता हूँ कि अक्षरविहारीस्वामिजी, साहेब, दिनकरभाई, सबने स्वामिजी को नेतृत्व सौंपा है... स्वामिजी आज प्रत्यक्ष रूप से यहाँ विराजमान नहीं हैं, फिर भी **काकाजी ने हमें पर्टिक्यूलरली चार संतों को आदेश दिया था कि तुम ब्रह्मस्वरूप से उनका सेवन करना–जो आज स्वामिजी भी लग पड़े हैं।**

गुरुजी ने ऐसे ब्रह्मस्वरूप मानकर काकाजी का सेवन किया, तो इतना अद्‌भुत परिवर्तन हो गया कि जिस आदमी का नाम लेने तक राजी नहीं थे, उसकी मूर्ति अंतर के भाव से रखवाई और वो भी ऊपर की रो में रखवाई। हम और प्रेमस्वामी तो गुरुजी के सेवक हैं। **ब्रह्मस्वरूप होकर बरतने का हमारे लिए भी काकाजी का आदेश था।** उसकी पर्सन्टेज में दिन-प्रतिदिन वृद्धि हो। मैं और प्रेमस्वामी ६६ साल के हो गए, काकाजी के साक्षात्कार को ६० साल हो गए और स्वामिजी को खुद को ७९वां साल चल रहा है। तो, अब कितनी राह देखनी? हमारी तरफ से उन्हें राह न देखनी पड़े और उन्हें निरंतर ठंडक अर्पण कर सकें। जहाँ रखें वहाँ, जिस कोने में रखें वहाँ। मैं तो कहता हूँ कि सालों तक समढ़ियाळा रखें या सांकरदा, विद्यानगर रखें या शिकागो, **जहाँ रखें वहाँ पर ब्रह्मस्वरूप होकर हम सेवन करते हो जाएं–यही काकाजी और गुरुजी के मंगलपर्व पर प्रार्थना है।**

एक और प्रार्थना है। **हमें आने-जाने के लिए बस की व्यवस्था करने में आई है। उसमें** मैं पहली सीट पर ही बैठता हूँ। वहाँ आगे **एक सूत्र लिखा है।** वो सूत्र मुझे बहुत अच्छा लगा। **'हम सब एक हैं, क्योंकि हमारा मालिक एक है।' शिरडी के सांई बाबा का यह सूत्र है।** दिन में दो बार आना-जाना होता है, तो सोचता रहता हूँ कि 'हम सब एक हैं, क्योंकि हमारा मालिक एक है।' चलो! **मैं सोखड़ा के लिए सोचूँ , प्रसंग तो बनने ही वाले हैं,** बार-बार प्रसंग बनते हैं। **तब मुझे सोचना कि हम सब एक हैं, क्योंकि हमारे मालिक हरिप्रसादस्वामी है। तो हरिधाम तक ही सुहृद्‌भाव रहेगा।** फिर मैं **पवई** जाऊँगा तो? **दिल्ली** आऊँगा तो? **विद्यानगर** जाऊँगा तो? **शिकागो** जाऊँगा तो? तो गड़बड़ होगी। वहां **मुझे मानना पड़ेगा कि अक्षरविहारीस्वामिजी, हरिप्रसादस्वामिजी, जसभाई साहेब, दिनकरभाई साहेब, गुरुजी, निर्मलस्वामी–सब एक हैं, क्योंकि सबके मालिक योगीबापा हैं।** यह **समझदारी दृढ़ कराना चाहते थे,** राईट गुरुजी? यह समझदारी काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, साहेब, अभी भी दृढ़ कराना चाहते हैं, **जो बात काकाजी ने कह-कहकर खुद का खून बहा दिया। वे यूँ कहते हैं कि तुम इन सबको एक मानो–सभी केन्द्रों में, क्योंकि सबके मालिक योगीबापा हैं।**

इस समझदारी को यदि हम सब नहीं पकड़ेंगे तो हम कितनी भी शताब्दी मनाएं या कितने भी सोने के सिहाँसन बनाएँ, पालकियाँ बनाएंगे या कितनी भी कैसेटे, ऑडियो-विडियो, सीडी, डीवीडी प्रकाशित करेंगे, पर यदि यह बात दृढ़ नहीं करेंगे, तो यह महोत्सव सार्थक नहीं होगा।

आख़िर में मुझे एक ही प्रार्थना करनी है। कल्पवृक्ष में बैठे हैं न! प्रार्थना यह है कि कल्पवृक्ष में बैठे हैं और परम आदरणीय, **परमश्रद्धेय पू. नर्मदाशंकर शास्त्रीजी** ९४ साल की उम्र के हैं और गुरुजी ७५वें साल में प्रवेश कर रहे हैं। शास्त्रीजी ९४वें वर्ष में अब भी स्वयं खाना बनाते हैं, ख़ुद कपड़े धोते हैं। किसी के मानने में न आए ऐसी बात है। आज अक्षरपुरुषोत्तम महाराज, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी सभी प्रत्यक्ष स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना करें कि उनकी शताब्दी उनके समर्थ शिष्य की हाज़िरी में, ऐसे ही, इसी माहौल में मनाई जाए। गुरुजी को तो जितने साल पृथ्वी पर महाराज और बापा रखना चाहें, पर उनका स्वास्थ्य बहुत निरामय, स्वस्थ और प्रफुल्लित रहे। बोलने में कुछ भी अविवेक हुआ हो, संदर्भ बिना का बोला गया हो तो क्षमा करना। मेरी यह प्रार्थना स्वीकारना। जय स्वामिनारायण!

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी

दो दिन से बहुत अच्छी गोष्ठी-शिविर का कार्यक्रम चल रहा है। **जिस हेतु से शिविर का आयोजन किया, इसमें दासस्वामी ने कलश चढ़ा दिया।** बात हक़ीक़त है, सच्ची है। साहेबजी, निर्मलस्वामी, गुरुजी, दिनकरभाई हम **सब ऐसा ही चाहते हैं** कि पप्पाजी और काकाजी का जो संकल्प था कि **सारा गुणातीत समाज एक हो,** संप, सुहृद्‌भाव और **एकता से एक होकर वर्ते,** वो संकल्प साकार करने के लिए, बार-बार प्रसंग आएँ तब, **सांकरदा में स्वामिजी के सान्निध्य में** स्टेज पर स्वामिजी, साहेब, दिनकरभाई, मुकुंदस्वामी, निर्मलस्वामी, सबने इकट्ठे होकर एक दूसरे के हाथ में हाथ देकर प्रार्थना और **संकल्प किया था** कि **हम सभी एक होकर रहें, एक होकर जीएं और बापा का वो संकल्प साकार करें।**

उसके मुताबिक धीरे-धीरे ऐसा उठाव आता जा रहा है और **उसके अनुसंधान में ही हर साल जब भी गुरुजी की जन्मजयंती होती है, तब गुरुजी का हमेशा यही प्रयत्न रहता है कि पूरे गुणातीत समाज-योगी परिवार को खुद इकट्ठा करें, ताकि इस तरह अंदर-अंदर एकता और आत्मीयता बनी रहे।** इसलिए यह चीज मुमकिन है ही और धीरे-धीरे इसका विकास होता जाएगा। **साहेब ने भी स्वामिजी से खास विनती की थी कि स्वामिजी आप हम सबका नेतृत्व लेकर जो भी हमारी भूल होती हो, तो हमें टोककर, डाँटकर, कुछ भी करके आप लीडिंग करो।** साथ-साथ उस दिन सभा के अंदर स्वामिजी को चिट्ठी भेज कर **ज्योत की बहनों की तरफ से दीदी ने** भी प्रार्थना की थी कि हमें भी साथ लेते जाना।

मतलब यहाँ जो चार पंखुडियों के सत्संग का सिम्बॉल बनाया है–उसमें संतों, युवकों, बहनों, गृहस्थ समाज का उल्लेख है। हक़ीक़त है कि अपना चार पंखुड़ी वाला सत्संग है और चारों पंखुड़ियों में बापा, काकाजी और पप्पाजी का संकल्प है। २६ तारीख के काकाजी के संदेश का अनुसंधान रखकर, सब प्रयत्न तो कर ही रहे हैं और भविष्य में उनका संकल्प तो साकार होने ही वाला है। **बड़े पुरुष का संकल्प, समय लग सकता है, पर वो संकल्प कभी निष्फल जाता ही नहीं है।** इसलिए श्रद्धा और विश्वास रखकर हम सब आज ऐसा संकल्प करें कि वो जल्दी से जल्दी हम सबके जीवन में साकार हो। काकाजी और पप्पाजी का संकल्प था कि जीतेजी अक्षरधाम धरती पर उतारना है। हम सब एक होकर वर्तेंगे, तो ही जीतेजी अक्षरधाम का सुख-आनंद

हमें लाभ मिलेगा। ऐसा करने, ऐसा जीवन जीने की हम सबको खूब-खूब प्रेरणा, शक्ति, बल, बुद्धि मिले और वो चीज जल्दी से जल्दी साकार हो। काकाजी और पप्पाजी हम पर अनहद् राजी होकर कृपा बरसाएं, ऐसा हम सबको खूब-खूब बल मिले।

अभी गुणातीत समाज में गुरुजी का सोने का सूरज मध्यान में चमक रहा है, तो वे हम सबके लिए संकल्प करें कि हम सबके हृदय में वैसी प्रेरणा मिले और उस तरह की हम सबके अंदर एकत्वभावना, आत्मीयता की ऐसी भावना जाग्रत हो...

प.पू. भरतभाई (पवई)

...तीन दिन से हम सभी आनंद में डूबे हुए हैं। कथावार्ता और ऐसे सत्संग के आनंद में दिव्य पुरुषों का हमें दर्शन प्राप्त हो रहा है। इस दर्शन के साथ भक्तिभाव से जो भी संवाद, नृत्य, डांस वगैरह हुआ, उसका भी हमने आनंद उठाया। इसलिए सही अर्थ में इस पर्व का नाम दिया है– **'योगी परिवार आनंदोत्सव'**! जैसे कल दिलीपभाई ने बताया था कि गुरुजी ने एक-एक को, पूरे 'योगी परिवार' को ऐसे आग्रह करके बुलाया है कि यहाँ आनंद मनाने के लिए सबको आना है।

उत्सव से पहले दीदी ने मुझे दो सी.डी. भेजी थी कि इसका आपको अनावरण करना है। रिलीज़ करने के लिए गुरुजी की कथावार्ता की सी.डी. है। जैसे हमारे यज्ञप्रियस्वामी ने बताया कि गुरुजी इतनी बारीक-बारीक बातों को अच्छी तरह फिल्टर करके बताते हैं कि हम कहाँ किस तरह से जीवन जीते हैं और ऐसे मुक्त किस तरह से जीवन जीते हैं। किस तरह भक्तों के साथ ओत-प्रोत होकर जीवन जीया जाए, किस तरह सत्पुरुषों की आज्ञा का पालन किया जाए–वो सब बातें अलग-अलग ढंग से स्वामिनारायण भगवान, गुणातीतानंदस्वामी और काकाजी महाराज जैसे सभी गुणातीत स्वरूपों के अलग-अलग प्रसंग बताकर हमारे सामने रखी हैं। **ये मार्गदर्शिका सी.डी. में बहुत ही वॅल्युएबल बातें हैं। आप आधा घंटा धुन करके इसे सुनना, आपके किसी भी प्रश्न का जवाब इसमें मिलेगा। इस सी.डी. में ऐसी कथावार्ता है।**

गुरुजी का जीवन ही ऐसा है। इसी तरह गुरुजी रीफ्रेशिंग कोर्स हमेशा करते रहते हैं। एक महीने की यहाँ धुन रखते हैं। एक महीने की धुन–१२ या १५ मई से लेकर काकाजी के प्रागट्य दिन तक, एक महीना रोज शाम को एक घंटा धुन और फिर कथावार्ता या काकाजी की कथावार्ता की सी.डी. भी सुनते हैं। ये सब कथावार्ता हमारे अंतर को टच करती है।

गुरुजी की बहुत बातें हमने कल देखीं। कल बहुत अच्छा ड्रामा था। **ड्रामा या संवाद गुरुजी के जीवन का ही नहीं था, मगर जो भी चाहे उसके लिए एक संदेश था।** जो भी जहां है, उससे आगे जाने का एक संदेश था।

गुरुजी का भाव यही रहा है कि हम भजन करें, भजनीक बनें। बहनों की सभा में एक प्रसंग बहुत

अच्छा बताया कि एक बहन ने गुरुजी से माला मांगी, तो गुरुजी ने अपनी माला उसे प्रसादी के रूप में भिजवा दी। दो चार दिन के बाद वो बहन कहती है कि ये माला रात को २.०० बजे मुझे बोल रही है कि उठो और भजन करो। यूँ रात को २.०० बजे जगाती है। तो, गुरुजी बोले कि ये माला हमने इस तरह से फिराई है कि इसे रात को २.०० बजे भजन करने की आदत पड़ गई है, इसलिए वो रात को आपको भी जगा रही है। गुरुजी ऐसे भजनीक हैं। ऐसी बहुत सारी बातें हमने सुनी हैं।

गुरुजी का एक भाव यह भी रहता है कि **हम कुटुंबभाव बढ़ाएँ।** काकाजी भी बहुत बार कहते थे – *कम्युनीज़म प्लस गॉड = स्वामिनारायण* और यहाँ गुरुजी के कुटुंबभाव का हमें पूरा दर्शन होता है। लास्ट इयर मैंने यहां सुना था कि एक भक्त के यहाँ गुरुजी पधरामनी के लिए गए और वहाँ किसी भक्त का फोन आया कि मैंने नया टी.वी. खरीदा है, उसका पूजन कराना है। गुरुजी ने कहा कि तुम ऐसा करो, वो टी.वी. लेकर यहाँ आ जाओ और हम यहीं पूजन कर लेते हैं। इस बीच में जहाँ बैठे थे, उससे गुरुजी ने ऐसे ही पूछा कि आप कब टी.वी. खरीदने वाले हो? तो, उसने कहा कि गुरुजी, इस साल तो मेरे बजट में नहीं है; ऐसा प्लानिंग किया है कि नेक्स्ट इयर खरीदेंगे। जो भाई टी.वी. लेकर पूजन कराने के लिए आए, गुरुजी ने पूजन किया और कहा कि तुम एक काम करो; तुम ये एल.सी.डी. इधर रख दो और तुम अपने लिए दूसरा ले लो। वो भक्त सक्षम होगा – कॅपेबल होगा तो उसने तुरंत 'हाँ' भी भर दी। यह कुटुंबभाव है। गुरुजी की आज्ञा के प्रति कैसा भाव है, वो हमें दिखाई पड़ता है...

गुरुजी ने ये मार्गदर्शिका में एक **राम भंडेरी** का बहुत अच्छा प्रसंग बताया है कि एक हरिभक्त को कुछ पैसे की जरूरत थी। राम भंडेरी एक सामान्य भक्त था; उनके पास क्या पैसा होगा? मगर उसने कुछ पैसा जमा किया था, वो उस भक्त को दिया। उस भक्त ने वो गठरी बांध ली और अपने गाड़े में दूसरे सामान के साथ उसे भी डाल दिया। उसके ऊपर बैठ कर गाड़े को लेकर चला। रास्ते में वो गठरी कहीं गिर गई और उसने घर पहुंच कर देखा तो गठरी नहीं थी। वो वापिस आया और आकर पूछा कि आपने जो दी थी न? वो इधर तो नहीं रह गई! तो वो बोला – अरे भाई, आपको मैंने उसके ऊपर बिठाया था, रह कैसे जाएगी। पर, साथ ही उसने इतना ओथेंटिकली बोला कि ये पैसे मैंने मंदिर के लिए रखे थे और मेरी भावना थी कि ये पैसा सेवा में जाए; मगर आप जैसे भक्त को जरूरत थी, इसलिए आपको दिया है। तो, वो पैसा कहीं जाएगा नहीं, वो हमें वापिस जरूर मिलने वाला है। वहाँ क्या हुआ कि वो गठरी जहाँ पड़ी थी, वो किसी भक्त को मिली। उसने देखा कि ऊपर चद्दर तो जूनागढ़ मंदिर की है। तो उसे हुआ कि ये तो मंदिर की है, इधर कैसे गिरी पड़ी है? वो गठरी जूनागढ़ मंदिर में लाकर गुणातीतानंदस्वामी को दी कि स्वामी यह आपकी है। स्वामी बोले – मेरी नहीं है, मगर जिसकी होगी वो लेने के लिए आएगा। बाद में राम भंडेरी आते हैं और सब बताते हैं। तो **भक्तों में ये जो भावना है, वो गुरुजी ने यहाँ सब में प्रगटाई है।**

गुरुजी वैसे बहुत स्ट्रीक्ट हैं। कल हमने वो प्रसंग देखा था कि उन्होंने वो बहनजी को कहलवाया कि आपको सेवा देनी है, तो इसी तरह से दो, वर्ना मुझे नहीं चाहिए। इससे भी आगे वे हर एक भक्त से चाहते हैं

कि आप ऐसा वर्तो। मुंबई में **कनुभाई दवे** हैं। उसकी बेटी की शादी का प्रसंग था। **उन्होंने गुरुजी से पूछ कर, लेकिन अपने तरीके से शादी की तैयारी कर ली कि इतने आदमियों को बुलाना है, इतने भक्तों को बुलाना है, ऐसे धामधूम से करनी है।** उन्होंने कार्ड भी छपवा दिया और शायद कइयों को बांट भी दिया था। पर, जब **दीदी** ने उन्हें बताया कि **गुरुजी की इच्छा है कि अपनी गुंजाईश के मुताबिक आप सादगी से ही शादी करो और किसी को बुलाना-करना नहीं है। सिर्फ भक्तों को बुलाना है, भक्तों को साथ में रख कर कार्य करना है।** उन्होंने सोचा कि कार्ड भी बाँट दिए है, रिश्तेदारों की टिकिट भी बुक हो गई है; तो अब क्या करें? लेकिन **उन्हें भी ऐसा था कि गुरुजी की इच्छा के मुताबिक जीना है।** इसलिए दूसरा कार्ड छपवाया और सादगी से शादी करने का पक्का किया। यह अपनी बुद्धि से परे की बात है, ऐसी बात बुद्धि में नहीं बैठेगी और बाद में जो प्रसंग हुआ, वो तो अलग ही हुआ; फिर तो पवई मंदिर में ही शादी हुई। कहने का मतलब यह है कि भक्तों की भावना भी ऐसी होती है कि गुरुजी जैसा कहें, वैसा करना है।

यहाँ इतना सारा सत्संग जाग्रत हो गया है और **संत को आगे रख कर जीना, हमारी ये सबसे बड़ी उपलब्धि है।** ये मार्गदर्शिका में ऐसे बहुत सारे प्रसंग बताए हैं। इससे भी आगे **गुरुजी की भावना हमेशा रहती है** कि **हम भगवान में रहते हुए जीएँ।** कल हमने प्रसंग देखा था कि डी.डी.ए. के अफ़सर ने गुरुजी का अपमान किया और बाद में गुरुजी ने कहा कि हमें १२ घंटे की धुन रखनी है। धुन रखने से पहले सबको बताते हैं कि हमें धुन इसलिए नहीं करनी है कि हमें ज़मीन वापिस मिल जाए। हमें धुन इसलिए करनी है कि हमें जो डांटा है, जिसने हमारा ऐसा अपमान किया है, उसके प्रति हमें कोई नेगेटिव भाव न आए, बल्कि उसके प्रति हमारा ऐसा ही सद्भाव बना रहे। उसका भला हो, ऐसी ही भावना हमारे अंतर में प्रकट हो वो करना है।

ऐसा ही दूसरा प्रसंग – बहनों की सभा में सुना था कि जब दुबई जाना था, तो सब भक्त साथ में गए। गुरुजी ने बोला कि हम दुबई जा रहे हैं, लेकिन किसी को कुछ भी परचेज़िंग नहीं करनी है। हम कुछ खरीददारी करने नहीं जा रहे हैं, मगर वहाँ से ऐसे निष्ठावाले भक्तों को ढूंढने के लिए जाना है और ऐसे निष्ठावाले भक्तों को हमें लाना है। यह सबसे बड़ी बात है और इनकी यह दृष्टि हमेशा ऐसी ही रही है कि हम किसी भी तरह से भगवान में जीएं। **ऐसे गुणातीत स्वरूपों की दृष्टि हमेशा यही होती है कि हम भगवान में रहते हुए जीएं।**

एक और बात, **गुरुजी को सबका खूब माहात्म्य है।** एक बार हम मुंबई से आ रहे थे। हमारे साथ में हरिभाई साहेब भी थे। आनंदी दीदी और हरिभक्त हमें लेने के लिए आए थे। स्टेशन पर करीब दो बस थीं और तीन-चार गाड़ियां आई थीं। **हरिभाई साहेब** सब भक्तों के साथ बस में बैठ गए; पर, दीदी उन्हें ढूंढ रहे थे कि हरिभाई साहेब कहां हैं? हरिभाई साहेब तो बस में थे। हरिभाई साहेब तो एकदम नेचरल वे में बोले भी कि मैं यहाँ आराम से बैठा हूँ। पर, दीदी ने कहा कि साहेब, आपके लिए गाड़ी भेजी है; आप गाड़ी में ही आइए, वर्ना गुरुजी हमें मंदिर में घुसने नहीं देंगे और मैं गुरुजी को क्या मुँह दिखाऊंगी। इस तरह से माहात्म्य की भावना है कि ये कोई सामान्य पुरुष नहीं हैं, ये बहुत बड़े हैं और इसके लिए हमें उनका इसी तरह से सम्मान करना चाहिए; तो ही दीदी ने रोकर आंख में आंसू भरकर प्रार्थना की। ये सबसे बड़ी बात है।

ऐसी सारी बातें इस सी.डी. में है। तो **जब भी समय मिले तो सी.डी. की कथावार्ता खूब सुनने लायक है और इस सी.डी. से आपके हृदय में ऐसी भावना होगी कि इन गुणातीत स्वरूपों को ठंडक हो हमें ऐसा करना है।**

लास्ट में एक प्रसंग बताता हूँ जो गुरुजी ने बहुत अच्छी तरह से समझाया है और वो प्रसंग मुझे बहुत ही टच कर गया। एक राजा था वो शिकार खेलने के लिए जंगल में गया था। जंगल में सब लोग आगे-पीछे हो गए, तो वो अकेला हो गया और उसे प्यास लगी। उसने सोचा कि अभी यहां पानी कहाँ मिलेगा? इतने में उसे जंगल में एक झोपड़ी दिखाई दी। वहाँ एक आदमी बैठा हुआ था और बाहर एक मटका था। राजा ने सोचा कि इसके पास से पानी पीऊँगा और मैं उसे एक गांव बख्शिश में दूंगा। पर, जैसे ही राजा वहां जाता है कि उसे देख उस आदमी के मन में क्या आया कि उसने वो मटका फोड़ दिया और पानी बह गया! राजा तो वहां से वापिस चला जाता है। मगर उसका नाम वगैरह नोट कर लिया। जब 'एन्युअल डे' पर बहुत लोगों को एवॉर्ड दिया जाता है, तब राजा ने उसका नाम भी लिखवाया कि मुझे इस आदमी को एवार्ड में एक गांव देना है। उसे वहां बुलाया गया, तो वो तो डर गया था कि मैंने राजा को पानी नहीं दिया था; अब मुझे कुछ सजा होगी। पर राजा का बुलावा था और वो न जाए, ऐसा तो हो ही नहीं सकता है। वो वहां गया, सबको एवार्ड दिया जा रहा था; उसमें उसे भी एवार्ड दिया गया और उसमें लिखा गया कि राजा को प्यास लगी थी और राजा ने ऐसा-ऐसा संकल्प किया था, पर इसने मटका फोड़ दिया। फिर भी, पानी न देने के बावजूद भी राजा के संकल्प के मुताबिक उसे एक गांव बख्शिश दिया जाता है। वो **एवार्ड लेने के लिए आया, मगर वह लेते हुए उसका मुंह नीचे हो गया कि किस मुंह से यह एवार्ड लूँ।**

इसी प्रकार **इन गुणातीत पुरुष का संकल्प है कि हमें 'अक्षरधाम' में बिठाना ही बिठाना है और वे हमें बिठाएँगे ही बिठाएँगे, उसमें कोई शक नहीं है। मगर हमारा जीवन–विचार, वाणी और वर्तन उनके मुताबिक–उनकी जो इच्छा है, उस तरह का नहीं होगा, उनके संकल्प के मुताबिक हम जीवन नहीं जीएँगे, तो जब एवार्ड लेने के लिए जाएँगे, तब जैसे उसका मुंह नीचा हो गया था, इसी तरह हमारा मुंह नीचा हो जाएगा**–जब हमें अक्षरधाम में ले जाएँगे।

तो, सभी संतों और सभी दिव्य गुणातीत स्वरूपों के चरणों में, सभी दिव्य बहनों के चरणों में प्रार्थना करनी है कि हमारा जीवन हर पल-हर क्षण आपकी ओर दृष्टि रख कर बना रहे और कभी भी आपके सामने हमें मुंह नीचा न करना पड़े।

प.पू. कोठारीस्वामिजी (हरिधाम)

दो दिन से दिव्य पुरुषों का हम सब लाभ ले रहें हैं। **स्वामिजी** ने योगीबापा की स्मृति करते हुए बात की थी कि बापा के साथ हम विचरण में जाते, तब बापा को कोई सुविधा नहीं थी। बापा को तो गाँव में चरागाह में ठहराते, जहाँ बैल बाँधते थे, वहाँ पलंग डाल देते। मूत्र की बदबू आती हो, ऐसे में बापा ठहरते थे। पानी का ठिकाना नहीं होता

था। स्नान करने की भी तकलीफ हो, ऐसी परिस्थिति में बापा ने विचरण किया है। स्वामिजी साथ में थे, तब बापा से प्रार्थना की कि बापा! इतनी कसनी सहने की आपको क्या जरूरत है? तब **बापा** एक बात सहज बोले– ***शास्त्रीजी महाराज का संबंध और दर्शन ऐसा है कि हज़ार साल की कसनी एक मिनिट जैसी लगती है।***

तब स्वामिजी ने फिर बापा से पूछा– *बापा, हज़ार सालों की कसनी एक मिनिट की लगे, ऐसी महिमा कब प्रगट होती है?*

तब बापा ने कहा– *बड़े पुरुष की दृष्टि से ऐसी महिमा प्रगट होती है।*

फिर बापा ने कृपा बरसाते हुए कहा– ***अगर बड़े पुरुष को अधिकार सौंपे, तो वे कृपा करके महिमा प्रगटा देते हैं।***

हम सब दर्शन कर रहे हैं, **गुरुजी ने काकाश्री को ऐसा अधिकार सौंपा तो गुरुजी के जीवन में ऐसी महिमा प्रगटी है। आबाल, वृद्ध सबको संबंध की महिमा से देखते हैं। संबंध की महिमा से सबका स्वीकार करते हैं। यह काकाजी को अधिकार सौंपा उसका यह फल है।**

बड़े पुरुषों का जीवन देखें, तो काकाजी ने कितनी कसनी सही और हम सबको सुख दिया। स्वामिजी और काकाजी 'वासणा' गाड़ी से आते थे, तब बापा को याद करते कि बापा तो बैलगाड़ी और धूल में घूमे। उनके प्रताप से हमें गाड़ी मिली है। **बड़े पुरुषों ने कसनी सही और हम सबको भजन, भक्ति और भगवान का सुख अर्पण कर गए।**

स्वामिजी दिल्ली पधारे थे, तब हरिधाम में सभा की और सभा में गुरुजी को खूब याद किया। **स्वामिजी** बोले–

प्रीति का लक्षण वो कि सत्पुरुष का वचन माना जाए। गुरुजी ने काकाजी के साथ ऐसी प्रीति बाँधी, तो उन्हें कसनी कसनी नहीं लगी।

प्रीति थी तो वे और प्रेमस्वामी दिल्ली पधारे। पर, तब इतनी ठंड थी कि कपड़े बर्फ जैसे हो जाते थे। तब प्रेमस्वामी ने तो स्नान कर लिया, पर गुरुजी से कहा कि आप स्नान मत करना, मैं पानी लाता हूँ और वहाँ-लाईब्रेरी में जो कुछ किताबें थीं, जलाकर गुरुजी को गर्म पानी दिया। ओढ़ने-बिछाने की भी व्यवस्था नहीं थी। यह सब **गुरुजी ने एक लगाव की वजह से सहन किया, उन्हें कसनी नहीं लगी।** गुरुजी का देह ऐसा कि सह न सकें, फिर भी देह से सहन किया, केवल काकाजी को राजी करने के लिए। पहले तो दो रूम में रहते थे। कोई सुविधा नहीं थी, कोई व्यवस्था नहीं थी, कोई पदार्थ नहीं थे। वो सब काकाजी के साथ लगाव के कारण सहन किया।

काकाजी ने उन्हें एक काग़ज़ में लिखा था–

जिन मुक्तों ने प्रत्यक्ष स्वरूप की खास आज्ञा से सुहृद्भाव के सर्जनात्मक सिद्धान्त से हमारे कार्य में सहायता की हो, उनसे रत्तीभर भी अलगाव रखना, वो सब पापों में महापाप है– जो सर्वोपरि प्रभु चला नहीं लेते। तो, ऐसी आत्मबुद्धि और प्रीति का संबंध करना और अन्य मुक्तों के लिए एक आदर्श रखें।

काकाजी ने यह बात जो गुरुजी को लिखी थी, **आज मुक्त समाज में वो आत्मीयता की भावना गुरुजी ने जाग्रत कर दी है।** आपस में एक-दूसरे के साथ रसरूपता बनाई है। काकाजी को जो पसंद थी, वो **आत्मबुद्धि और प्रीति का अच्छी तरह सर्जन किया है।**

तो, हे गुरुजी, हम सबके लिए भी आप प्रार्थना करना, दिव्य पुरुषों को जो पसंद है–आपस में आत्मबुद्धि और प्रीति, वो हम सबके हृदय में प्रगटे। आपने तो सिद्ध कर ली है और **स्वामिजी** ने तो यहाँ तक आपको याद करके बात की है–***गुरुजी ने काकाजी का ऋण अदा कर दिया।***

तो हमें भी ऐसा बल, बुद्धि और शक्ति मिले कि वो ऋण हम भी अदा कर सकें। आज के मंगल दिन पर साहेब, अक्षरविहारीस्वामिजी, दिनकरभाई, गुरुजी, निर्मलस्वामी हम सब साधकों को ऐसा बल, बुद्धि और शक्ति मिलें–ऐसी कृपा करना, इतनी ही सबके चरणों में अंतर से प्रार्थना।

प.पू. शांतिभाई साहेब (अनुपम मिशन)

... दो, तीन, चार, पांच–चार दिन से आनंदोत्सव में हम लाभ ले रहे हैं। **जो ज्ञान सुना था, वो पक्का कर रहे हैं...** यह हमारी समझ में आया, अब **क्षण-प्रतिक्षण वो जो समझ है, वो जीने का प्रयत्न करना है। जैसे-जैसे जीते जाएंगे अंतर में सुख-शांति का अनुभव होता जाएगा। गुरुजी का जीवन यह बता रहा है।**

कल **'अर्चिमार्ग की ओर...' का प्रेज़न्टेशन बहुत ही अच्छा था। बहुत सीखने को भी मिला**; गुरुजी के बारे में बहुत जानकारी भी प्राप्त हुई। **जो माहात्म्य था, वो और बढ़ गया, सबको ऐसा अनुभव हुआ होगा।**

काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, साहेबजी **सब दिव्य पुरुषों का हमें अनुभव है; गुरुजी को भी वही अनुभव था। लेकिन ५०-६० साल का उनका जो जीवन देखें,** तो **जब-जब जीवन में जो प्रसंग आए, तब-तब भगवान और ऐसे दिव्य पुरुषों का उन्होंने पूरा विश्वास किया।** ऐसे दिव्य पुरुष हमारे जीवन में आते हैं, सत्पुरुष हमें स्वीकार करते हैं। बहुत कृपा करके ज्ञान भी देते हैं। उनकी कृपा से ज्ञान समझ में भी आ जाता है और यह ज्ञान हमें जीवन की पल-पल जीने का बल भी देता है। **जब-जब ऐसे प्रसंग गुरुजी के जीवन में आए, तब भजन किया है। आज हमें यह करना है, भजन करने की प्रेक्टिस करनी है।** इसलिए ये तीन-चार दिन की जो शिविर हुई है।

तो, हमें यही प्रार्थना करनी है कि आप दिव्य गुणातीत स्वरूप हमें प्राप्त हुए हैं... वही **ईश्वरीय दिव्य शक्ति सहजानंद की** थी, जो शक्ति **गुणातीतानंदस्वामी की थी। वही शक्ति हमें जो सत्पुरुष मिले हैं, उनमें है।** यह हम जानते हैं, समझ में तो आ गया है, लेकिन **उस शक्ति का प्रभाव हमारा जीवन बदल सकता है। कई लोगों का जीवन बदला है, हमारा भी बदल जाएगा। इस बात का हमें विश्वास करना है। सो, प्रसन्न करने के लिए जीना है, वो हर पल जाग्रतता से होता है।** जिसे हमारी सत्संग की भाषा

में कहते हैं–अंतर्दृष्टि करो। **काकाजी** यह शब्द बहुत यूज़ करते हुए बार-बार कहते थे–***अंतर्दृष्टि करो।*** अंतर्दृष्टि यही कि आज मेरा जो जीवन है, वो मेरे सत्पुरुष जिन्होंने मुझे स्वीकार किया, उन्हें प्रसन्न करने के लिए है या नहीं है, वो देखकर हर पल चलना है... **इन स्वरूपों ने हमारा स्वीकार किया, तब से उनका एक ही संकल्प है कि हमारा अपनापन ('स्व' का भाव) जो भाव है, वो छोड़ दें और वे चाहते हैं कि ऐसा हमारा जीवन बना दें।** हमेशा कहते हैं कि संबंध वाली सब आत्माएँ पवित्र हैं। उनके साथ जो व्यवहार करना है, वो पवित्र आत्मा की तरह करना है। किसी का देखना नहीं, वो तो हम सब जानते हैं। लेकिन जब व्यवहार करते हैं, जब तक अपनापन है–'मैं' हूँ, तब तक पूर्णरुप से जो हमारे सामने हैं, उन्हें ब्रह्मस्वरूप मानकर व्यवहार नहीं हो पाता है।

ऐसे बड़े-बड़े आनंदोत्सव आप आयोजित करते हैं, हमें यह दिखाने के लिए, जैसे यहाँ ये आनंदोत्सव में हुआ है, जो हम देख रहे हैं। **एक-एक भक्त की भक्ति का हमें स्पर्श इसलिए होता है कि गुरुजी प्रसन्न हों, केवल वही इनका भाव है।** यहाँ बहनें जो काम करती हैं–दीदी के प्यार से वो बहनें भी हमेशा यही एक प्रसन्न करने का भाव रख कर प्रार्थना करती हैं। **परिवर्तन तभी होता है।** सत्पुरुष के प्रति लगाव, उसे प्रसन्न करने का भाव, सर्वोपरिभाव से उनका स्वीकार, अंतर्यामी सर्वज्ञ मानकर जब हम किसी के साथ बोलते हैं, कोई भी बात या व्यवहार करते हैं, तो ये हमारे सत्पुरुष–गुरुजी जानते हैं कि व्यवहार कैसे होना चाहिए। **यहाँ आज सबको तभी आनंद आया, बाकी तो हम गाते हैं**–तेरी मर्जी के बिना कुछ भी नहीं होता है। हृदय से हम जानते हैं, बार-बार बोलते हैं। लेकिन जब कोई हमारे साथ व्यवहार करता है, तब आपकी मर्जी के बिना कैसे हो सकता है, ये समझ में आ जाए तो काम बन जाए। प्रति पल हमें यह याद रखना है। **हमारे जीवन में कुछ भी होता है, तो उनकी मर्जी से होता है, इनकी कृपा से होता है। हमें आगे लेने के लिए होता है, अपनापन (स्व का भाव) छुड़ाने के लिए होता है, वो समझकर हमें जीवन जीना है...** गुरुजी को प्रसन्न करने के लिए यहाँ जो काम हुआ है, हमारे सब केन्द्रों पर, सब स्वरूपों के साथ हमारा ऐसा ही संबंध रहे... **४५ साल में यहां दिल्ली में गुरुजी के प्रति ऐसा दिव्यभाव सबने रखा, तो आज सबके मुखारबिंद पर दर्शन हो रहा है।** उन्होंने जो प्राप्ति की है, उसका दर्शन हो रहा है। **गुरुजी ने पूर्ण दिव्यभाव से काकाजी का सेवन किया और साथ में पप्पाजी, स्वामिजी एवं सभी स्वरूपों के साथ ऐसा संबंध दृढ़ किया, तो आज गुरुजी हमारे लिए आत्मस्वरूप बन गए हैं। हमारे हृदय में विराजे हैं और हमें मार्गदर्शन-प्रेरणा देकर 'अर्चिमार्ग' पर चला रहे हैं।**

हम सबको आज यह आशीर्वाद प्रदान करें कि पिच्चहत्तरवां प्राकट्य दिन है, तो गुरुजी आप ऐसा संकल्प करें कि योगीबापा के साथ काकाजी ने, आपने योगीबापा और काकाजी की ही तरह काकाजी, पप्पाजी सब स्वरूपों के साथ जो पक्का संबंध किया, ऐसा संबंध दृढ़ करने के लिए सबको शक्ति मिले, समझ मिले और जीवन के वर्तन में हमेशा ऐसा जीवन जीने के लिए आपकी कृपा हमेशा बनी रहे, स्वरूपों की ऐसी कृपा हमेशा बनी रहे–यही प्रार्थना है। जय स्वामिनारायण।

हम तो केवल कृपादृष्टि वाले ही नहीं, बल्कि
इतना ही नहीं, इन्होंने भी हमें ग्रहण किया है, सो वे हमारी

गुणातीत स्वरूपों का हमें तो निरंतर जोग रहा है।
व्यावहारिक व आध्यात्मिक हर प्रकार से रक्षा करेंगे ही।

5 फरवरी 2012 - प.पू. गुरुजी का 75वाँ प्राकट्योत्सव

सब स्वरूपों के आज दर्शन, करते कुटुंब के मुक्त ये सारे,
अब तो नज़र जहाँ भी देखे, वहाँ गुणातीत कुनबा है...

ब्रह्मस्वरूप संतों – मुक्तों की परंपरा एक अखंड दी

एक मन हो भेद मिटे सब, अरज ये करते हैं...

परब्रह्म की उपासना को गति आपने नवखंड दी

देता है हर दिल यही गवाही, (गुरुजी के रूप में) पाया हमने समर्थ सारथी...

साधु जेही नहीं उच्ची पदवी, इह तां अक्षरधाम दी है डिगरी ...

तेरा मज़हब मुक्तों की महोब्बत,
कई दिलों पर तेरी हुक़ूमत...

आनंदी दीदी ने दिल्ली में
भक्ति-माहात्म्य और सेवा का इतना उत्साह-उमंग जगाई...
देह के भाव से ऊपर उठ कर सेवा करने
युवा लड़कियों में माहात्म्य डाला,
तो इतना अद्‍भुत काम इधर हो रहा है।

– प.पू. साहेबजी

वालम तमे पधार्या, थई गई धरा सुहावन...

मुझ में हैं जो वही विराजे, गुरुजी में भी सदा आपके...

हे भजनीक सुहृद् गुणातीत, गुरुजी जीयो सौ-सौ शरद्...

5 फरवरी 2012 – प.पू. गुरुजी का 75 वाँ प्राकट्योत्सव

प.पू. वशीभाई (पवई)

... हीरक आनंदोत्सव की आख़िरी सभा... २, ३, ४, ५–पांच की शाम कैसे आ गई, पता ही नहीं चलता है। हर एक हरिभक्त के फेस पर देखो तो अवर्णनीय आनंद है। कई भक्त तो पहली बार आए हैं। अहमदाबाद से पहली बार आए हमारे दो भक्त-नितिनभाई और पंड्या साहेब तो जैसे समाधि में डूब गए हैं। उन्हें मालूम ही नहीं है कि हम कहां हैं? तारीख कौन सी है? दिन क्या है? तो, **तीन दिन से हम समाधि में हैं। गुरुजी ने अपने आनंदोत्सव का नाम अपने लिए नहीं, लेकिन जो भी यहाँ आए, उन सबको आनंद, आनंद, आनंद मिले इसलिए इसका नाम 'आनंदोत्सव' है।** तो एक बार प्रेम से बोलते हैं–गुरुजी के आनंदोत्सव की जय।

यह गुरुजी का ७५वां प्रागट्यदिन है, पर गुरुजी ७५ साल के नहीं दिखते हैं। दूसरी तरफ देखो, तो जैसे कल ड्रामा देखा, सीन बदलता रहता है, यूँ **ये स्वरूप बदलते रहते हैं। पर, उन्हें आप कहीं पर भी पुकारो, चंद्र पर पुकारो, पृथ्वी पर पुकारो, वे प्रगट हो जाते हैं।** तो आप कैसे कहोगे कि ये ७५वां है? और... तीसरा वे तो हर पल धामरूप जीते हैं। उस हिसाब से भी यह टाईम कॅक्यूलेशन से बीयोन्ड की बात है।

गुरुजी ने यहाँ हम सबको बुलाया। गुरुजी के दिल की भावना है। ये जो पूरा सेलीब्रेशन हुआ है, ड्रामा में जैसे बताया कि गुरुजी की २५-३० साल की यात्रा का रिज़ल्ट है, जो हमें आनंदरूप में बांट रहे हैं। रिटर्न गिफ्ट देने का गुरुजी का एक स्वभाव है। कुछ भी प्रोग्राम होता है, तो हमें पूछेंगे कि रिटर्न गिफ्ट में क्या चीज चाहिए? हम यहाँ से जाएँ, तो क्या लेकर जाएँगे?

पहली रिटर्न गिफ्ट दी है कुटुंबभाव, आत्मीयभाव। महाराज के समय से देखो, तो स्वामिनारायण भगवान की फिलॉसॉफी–गुणातीतानंदस्वामी की बात से ख्याल पड़ता है कि त्याग-वैराग्य की टॉप कक्षा पर वे थे। उनके ब्रह्मचर्य से जूनागढ़ के नागर ब्राह्मणों का कलेजा थर-थर कांपता था। सब टॉप कक्षा का था, फिर भी उन्होंने चौथा प्रकरण की १४०वीं बात में बताया कि चार बातें जीव का जीवन हैं और उसमें भी क्रीम जैसे 'भक्तों से सुहृद्भाव' को अधिक बताया। तो, 'कुटुंबभाव' की बात महाराज के समय से आई है। महाराज जब १८६१ में गढड़ा आए, तो दादाखाचर के घर को अपना मान कर पूरी जिंदगी गढड़ा में बिताई। दादाखाचर मेरा परिवार, उसके सगे-संबंधी मेरा परिवार–वही मेरा कुटुंब। स्वामी की एक बात है– गुणातीतानंदस्वामी एक गांव में इसलिए गए थे कि मेरा फलां भक्त और उसका भाई यहाँ रहता है, उसके घर जाना है। उन्होंने कहा कि किसी दूसरे के यहाँ पधरामनी करने के लिए नहीं जाना है। वही बात शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज... और काकाजी भी बोले कि–हमारा और कांति का कुटुंब एक हुआ, तो इतना बड़ा **'गुणातीत समाज'** हो गया। ऐसे ही गुरुजी ने यहां दो-चार कुटुंब से शुरु किया था। जानी कुटुंब, नवीनभाई, दालिया साहब,

वच्छराज वगैरह ऐसे कई-कितने कुटुंब डेवलप किए हैं... **गुरुजी ने ये कमाल की कुटुंबभावना प्रगटाई है।** ऐसे ही संतों में **सुहृद्स्वामी।** सुहृद्स्वामी जब से साधु हुए, तब से हमने उन्हें देखा है। उन्हें इस तरह डेवलप किया है कि **भाईस्वामी जब धाम में गए, तब सुहृद्स्वामी इस कदर उठ गए कि भाईस्वामी की कमी गुरुजी को महसूस नहीं होने दी।** एक संत, संत की तकलीफ जानता है। लेकिन सुहृद्स्वामी खूब झुक कर, छुप कर रहते हैं। गुरुजी का तो बड़ा काफिला चलता रहता है...

संत को क्या पसंद, भगवान को क्या पसंद है? ऐसे भाव से डिसीज़न लेना, भक्तों का ख्याल करना वो उनमें इम्प्लांट किया है। मैं यह कहना चाहता हूँ कि २५ साल से हम ये सब देख रहे हैं। सब अच्छा दिखता है, लेकिन दिखने के पीछे गुरुजी की कितनी मेहनत है, कितना खून-पसीना एक किया। कल जो इंट्रोडक्शन में बताया था कि खून की नदी बहती है, ऐसी २५ साल की यात्रा है।

ये तो मानो कर सकते हैं, लेकिन लेडीज़ सेक्शन का कितना मुश्किल है। खुद दीदी बताती हैं कि बहनों को भगवान भजवाना बहुत मुश्किल बात है। तो ये गार्गी या नित्या जैसी नई-नई बहनों को डेवलप करना और **'टु धी पोईन्ट ऑफ सॅटिस्फेक्शन'** तक ले जाना कि गुरुजी को यह नहीं पसंद है, तो नहीं करना है। आज हम यहाँ से पहली सीख **कुटुंबभाव** की लेकर जाएं, जो

काकाजी की एक भावना रहती थी कि तुम जहां रहते हो, जहां सत्संग करते हो, जहां नौकरी करते हो, वहां एक ऐसा एटमोस्फीयर-एक सुसंवादिता, हारमनी तैयार करो कि आपको 'अक्षरधाम' वहीं लगे। तो सचमुच **गुरुजी ने ऐसे बहुत पात्र की-ऐसा पूरा समाज तैयार करके काकाजी के चरणों में भेंट रखी है।** उन्होंने हमें यह **पहला रिटर्न** गिफ्ट दिया।

गुरुजी ने कल और पहले भी कथावार्ता में बात की थी, वो उन्होंने **दूसरा रिटर्न** गिफ्ट दिया है। गुरुजी की भावना यह थी कि हम तीन दिन सिर्फ अच्छा-अच्छा खाना खाकर, कॉफी पीकर भूल जाएँ ऐसा नहीं। एक बहुत ब्रिलियंट बात बताई है कि **'राजी करने का विचार, गुणातीत विचार है।'** राजी करने का विचार, मुझे मेरे गुरुजी–मेरे भगवान को राजी करने का विचार–इट इज़ बियॉन्ड माया, इट इज़ अक्षरधाम का विचार। बुद्धि की सीमा जहाँ काम करती हुई रुक जाए, उसके बाद की भूमिका को संतों ने श्रद्धा बताया है। ऐसे भाव से आप सब आपके जो गुरु–आप जिसे मानते हो, उन्हें हंड्रेड परसेंट मानकर, हंड्रेड एण्ड फिफ्टी परसेंट मानकर जब भी कुछ करो, तो राजी करने के विचार से करो। देखो, मोर के ऊपर दृष्टि पड़ गई, तो मोर आज नेशनल पक्षी बन सकता है, तो क्या हम नहीं बन सकते? **गुरुजी की ऐसी भावना कि आप यहाँ आए हो, तो यह 'विचार' लेकर जाना।**

तीसरी रिटर्न गिफ्ट गुरुजी ने दी है, जो पहले ही दिन शोभना बहन ने अपने प्रवचन में बोला था कि गुरुजी से हमने पूछा कि *भजन कैसे करें या भजन की अनिवार्यता क्या?*

...एक बात है कि अंतर में हमेशा भजन करते रहना सीखना। ऐसे भजन का गुरुजी ने भक्तों में इम्प्लांट किया है। स्वामिजी भी जब आते हैं, तो कहते हैं–**जब तक साधक निर्विकल्प रूप से आधा घंटा भजन**

नहीं करेंगे, तब तक कसर है... तो यहां से हम यह लेकर जाएं कि– 'हम भजन करने की आदत डालें।'

तो **गुरुजी की –**

पहली गिफ्ट हुई 'कुटुंबभाव' की,

दूसरी गिफ्ट हुई 'राजी करने के विचार' की,

तीसरी गिफ्ट हुई 'भजन' की

और

चौथी – यूनिक गिफ्ट उन्होंने हमें दी, वो है– 'साक्षात्कार' !

दो दिन की शिविर के पीछे गुरुजी की ये जो भावना थी कि हम आएँ, इतना अच्छा-अच्छा आनंदोत्सव किया, सेलिब्रेशन किया, डांस किया, ठीक है; लेकिन यहां से जो लेकर जाना है, वो है– **'साक्षात्कार'।** जैसे काकाजी को भगवान का साक्षात्कार हुआ, ऐसे हमें भक्तों के दर्शन करके आनंद हो। **भगवान के भक्तों की सेवा करने की आदत हो जाए, भगवान के भक्तों के साथ मिलजुल कर काम करने की, उनकी सेवा, उनकी मूर्ति लेने की आदत पड़ जाए।** गुरुजी ने ये हॅबिट डाली हुई है। **कोई भी भक्त आए उसका काम कर देना। हाउ टु मेक हीम कम्फर्टेबल – धेट इज़ गुरुजी।** कल ड्रामा में देखा; रात को एक बजे फोन आया कि भई वो बहुत बीमार है। यहाँ हम आते हैं, तो मैं तो कई बार सोचता हूँ कि बारह, साढ़े बारह, एक बजे तक गुरुजी जागते हैं और ६.०० बजे हमें उठाते हैं– चलो, धुन करनी है– ६.४० से ७.१५। **उन्होंने ये जो सहज बना दिया है,** तो हम भी हमारे जीवन में इसका 'साक्षात्कार' कर लें।

काकाजी के साक्षात्कार का रीयल मीनिंग क्या है कि भगवान के भक्तों को देख कर हमें आनंद हो। अहोहो! आप कहाँ से!! **ऐसा साक्षात्कार का हमें रिटर्न गिफ्ट मिला है।** तो ऐसी जो चार गिफ्ट हमें मिली है, वो चार गिफ्ट यहां से ले जाएं, बाकी सब तो आनंद ही आनंद है...

बहुत-बहुत बधाई गुरुजी को ७५वें बर्थडे की और गुरुजी आपने जैसा आनंद कराया, हर पल-हर क्षण हम ऐसा आनंद करें और हमारे साथ जो भी हैं, उन्हें आनंद कराते रहें– ऐसा सबको आशीर्वाद देना यही प्रार्थना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.भ. काशीरामभाई राणा साहेब (सुरत)

...पिछले तीन दिन और आज चौथा दिन। मंदिर में हम सभी जिन दिव्य स्वरूपों को मानते हैं, ऐसे दिव्य स्वरूपों के श्रीमुख से जो वाणी निकली, वो हमने सुनी। यहाँ पर मानो 'ज्ञान की गंगोत्री' बह रही है, स्नेह का माहात्म्य छलक रहा है और भक्तिरस का अस्खलित प्रवाह हमारे अंतर को छू रहा है... जो प.पू. काकाजी के बताए हुए मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए हमें प्रोत्साहित कर रहा है।

आज हमारे गुरुजी का ७५वाँ प्रागट्य दिन है, तो हम चाहेंगे कि सौ साल तक ऐसे ही हम आनंद मनाएँ। मैं इसलिए कह रहा हूँ कि वेद की वाणी है कि **जिसका अंत नहीं, वो ही संत है।** जैसे हम काकाजी के लिए

आज भी मानते हैं कि यहाँ हमारे बीच में वे हैं। हमारे दिव्य पुरुष हमें याद कराते हैं कि काकाजी **'अजर-अमर'** हैं, वैसे ही हमारे प.पू. गुरुजी और ये सभी दिव्य पुरुष अजर-अमर हैं। सदा के लिए-सनातन धर्म के लिए हमारे बीच रहेंगे–यह हमारा सौभाग्य है।

जहाँ तक **प.पू. गुरुजी** के बारे में कहना है– **बहुत सीधे-सादे, अति शुद्ध मार्गदर्शी हैं।** मैं जब-जब मंदिर में आता हूँ, उनके साथ बैठता हूँ–भोजन लेता हूँ। **मैंने कभी नहीं देखा कि कोई आडंबर हो...** ऐसा कुछ भी नहीं लगता है। प्रेम-प्रेम बस यही।

जब मैं मिनिस्टर बना, तब प.पू. गुरुजी अन्य सत्संगियों के साथ हमारी कोठी पर आए, मुझे हार पहना कर आशीर्वाद दिया और मंदिर में आने का निमंत्रण दे गए। राष्ट्रीय जीवन में तो यही होता है कि बहुत सारे संत, महंत–सब आ जाते हैं। तो मैंने पहले ऐसा माना था कि वैसे ही गुरुजी आए हैं। लेकिन जैसे-जैसे दिन बीतते गए, मंदिर में आना-जाना होता रहा, तो मैंने देखा कि ये **गुरुजी औरों जैसे गुरुजी नहीं हैं, कोई अलग चीज हैं।** धीरे-धीरे इतना स्नेह बढ़ा, इतना स्नेह बढ़ता ही गया, जब-जब जाओ स्नेह बढ़ता ही गया और **आज मन में अंदर-अंदर मुझे ऐसा लगता है कि जैसे प.पू. गुरुजी काकाजी के प्रति समर्पित होकर कुर्बान हो गए, वैसे हम भी प.पू. गुरुजी के पास हो जाएँ। गुरुजी सीधे-सादे नहीं हैं; उनकी आँखों में आंख मिलाकर देखो, तो एक नई दृष्टि मिलेगी, दिव्य दृष्टि मिलेगी। उसका मुझे अनुभव है।** वह हमारी आत्मा को उनसे जोड़ने की कोशिश करते हैं। हमारे अंतर को-आत्मा को वे छूते हैं। वेद में जैसे कहते हैं– आत्मा ही आत्मा का उद्धार कर सकता है और कोई इस तरह उद्धार करता नहीं। तो हमारे गुरुजी एक दिव्य आत्मा हैं-दिव्य स्वरूप हैं, **वे हमारे अंतर को छूकर हमें अपने जैसी दिव्य आत्मा बनाने की कोशिश करते हैं।** यह बहुत बड़ी बात है कि बिल्कुल सिम्पल, सीधे-सादे, पर **इनमें न जाने ऐसा क्या जादू है कि जो हरेक को अपना बना लेते हैं।** यहां का परिवार–**'योगी परिवार'** जो बढ़ता गया, उसका मेइन कारण यही है। ऐसे दिव्य पुरुष, आत्मीय जन मिले, वो हमारा सौभाग्य है, उनके पास बैठने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ, उनके द्वारा दिव्य वाणी सुनना, वो हमारे लिए परम सौभाग्य की बात है।

ऐसे **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी जैसे योगी का इस मायावी जगत में मिलना बहुत कठिन बात है।** मैं आपको एक उक्ति कहूँगा– **शैले-शैले न माणिक्यं, मौक्तिकं गजे-गजे। साधवो न सर्वत्र, चंदनं ना वने-वने...** हमारा सौभाग्य है, **मानव समाज का सौभाग्य है कि ऐसे साधु पुरुष हमें प्राप्त हुए हैं।** शायद हमारे पुण्य से उनका माहात्म्य गा सके। प.पू. गुरुजी ने ऐसा एक योगी परिवार यहाँ पर खड़ा किया है। मैंने कहा न कि जैसे-जैसे मिलते गए, वैसे-वैसे हमारा स्नेह बढ़ता ही गया। गुरुजी की दिव्यता का मुझे अनुभव भी है।

सामान्य पुरुष में-सामान्य संत में उनकी असामान्यता देखने का कभी-कभी मौका मिलता है, अगर बिल्कुल ध्यान से उनके साथ आप जुड़े रहो तो। हमारे यहाँ **परछाई दीदी** हैं, जिन्हें **मैं अपनी बेटी मानता हूँ।** संयोगवश शारीरिक तकलीफ के कारण उन्हें अमदावाद हॉस्पीटल में रहना पड़ा, ऑपरेशन हुआ, वह सफल भी हुआ। ऑपरेशन के तीन-चार दिन बाद वहाँ के **डॉ. एच.एल. त्रिवेदी**, जो बड़े सत्पुरुष जैसे ही हैं, उन्हें मैंने

पूछा कि डॉक्टर साहब कैसा है? इंप्रुवमेंट कैसा है? उन्होंने कहा– हमने भी पूरी मेहनत की है और **इस लड़की के ऊपर कोई दैवीय आशीर्वाद हैं, इसीलिए रिकवरी इतनी फास्ट है।** मैं भी अचरज में हूँ कि कैसे हो सकता है। मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और समझा कि ऐसे चमत्कार तो दिव्य पुरुष ही कर सकते हैं।

एक दूसरा भी मुझे अनुभव हुआ। न जाने क्यूं, पिछले जन्म का मेरा पुण्य हो या गुरुजी के साथ हमारी लेन-देन होगी। कहीं भी जाते हैं, तो मुझे साथ चलने के लिए कहते हैं। वे मुझे मनाली ले गए, एक बार नहीं दो बार। साथ में हमारे बहुत सत्संगी थे। जून का महीना था और जून के महीने में कभी मनाली में बर्फ गिरती नहीं। हमारी **गार्गी दीदी** को इच्छा हो गई की हमें बर्फ देखनी है और सब लोग गुरुजी की ओर देखने लगे। गुरुजी ने कहा चलो; हमने सोचा यहाँ बर्फ तो है नहीं, इधर तो गर्मी है। जब हमने रोहतांगपास पर देखा तो बर्फ ही बर्फ। जब हम नीचे आए, तो होटल वाले ने कहा कि साहब, मैं आश्चर्य में हूँ कि इस महीने में आपको यहाँ बर्फ मिली! ऐसी दिव्यता कभी-कभी दिव्य पुरुषों के ऐसे प्रसंग पर हमें देखने को मिलती है।

वैसे तो यहाँ **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** भी बैठे हैं, वे हम सबके वड़ील हैं। गुरुजी ने मेरे जीवन में प्रवेश किया, इससे पहले प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के साथ भी सत्संग होता था। कैसा स्नेह होता है? कैसा प्रेम होता है? और अपना बनाने के लिए उन्हें क्या-क्या मानव व्यवहार करना पड़ता है?

वैसे तो गुरुजी का प्रागट्य दिन है, फिर भी **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** के साथ जो घटना घटी, वो जीवन की यादगार घटना है। जब मेरी पत्नी ने मेरा साथ छोड़ दिया, भगवान के पास गई; बहुत सोचता था–कहाँ जाकर रोऊं? जिससे मेरा दुःख कम हो। ऐसे में प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, एक और आत्मीय जन के साथ घर पर पधारे। जैसे रोते हुए बालक को माँ अपनी गोद में ले लेती है और वो रोता हुआ बच्चा शांत हो जाता है; इसी तरह हरिप्रसादस्वामिजी के चरणों में मैं बैठ गया। उनकी गोद में इतना रोया कि मेरा दुःख, मेरा दर्द सब कुछ बह गया। स्वामिजी तो अपना हाथ मेरे सिर और पीठ पर फिराते ही रहे। आधा घंटा हो गया, तब मुझे लगा कि अब मैं बिल्कुल शांत हूँ। तो **ये भी उनकी दिव्यता की एक घटना है। हरिप्रसादस्वामिजी को मैं कभी भी नहीं भूलता, ये प्रसंग मैं कभी भी नहीं भूल सकता। ये दिव्य पुरुष हमें स्नेह देते हैं, हमारे जीवन को ऊर्ध्वगति से ऊपर ले जाना चाहते हैं।** आध्यात्मिकता की फिलॉसॉफी इतनी जटिल है कि आम आदमी कभी समझ ही नहीं सकता। लेकिन ये दिव्य पुरुष बिल्कुल सरल शब्दों में, सरल व्यवहार से आध्यात्म की इतनी ऊंचाई पर हमें ले जाते हैं... **परस्पर प्रेम, स्नेह, सुख-दुःख में हिस्सेदारी जो यहाँ मिलती है, मुझे लगता है कि कहीं नहीं मिलेगी। अपना सब कुछ लुटाने के बाद भी नहीं मिलेगी।** लेकिन **बिल्कुल सच्चाई और सरलता से सिर्फ आत्मा से आत्मा का मिलन कराना; आत्मा का परमात्मा से मिलन कराना, वो यहाँ 'योगी परिवार' में ही संभव है, अन्यथा कहीं नहीं है।**

मैं ज्यादा तो नहीं कहूँगा, पर प.पू. गुरुजी ने कहा है और... हमारे वशीभाई ने भी 'प्रसन्नता' की बात की, वो बहुत बड़ी बात है। वैसे **'प्रसन्नता'** बहुत सिम्पल शब्द है, मगर इसका भावार्थ बहुत गहन है। **'प्रसन्नता' वैसे नहीं आती है।** जब तक हम में इतनी सच्चाई न हो, संभव नहीं है। हमने जिसे गुरु माना, उसके पीछे बस भरोसे और विश्वास के साथ कुर्बान-समर्पित हो जाएँ, तो हम हमारा जीवन सार्थक कर सकते हैं।

आदमी जन्म लेता है, मौज-मजा करता है, मरता है; तब क्या पाया? क्या जीवन इसीलिए मिला है? हमारा जीवन बिल्कुल ऐसा नहीं हो, जो व्यर्थ में-पशु-पक्षी की तरह चला जाए। जीवन की नई राह जब मिलती है, तो आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहन मिलता है। **ऐसे दिव्य पुरुष अपने जैसा बनाने के लिए हम पर इतनी मेहनत करते हैं, इतना स्नेह बरसाते हैं। तो उन्हें राजी करना वो हमारी जिम्मेदारी है, वो हमारा कर्तव्य है।** राजी करने में क्या करना है? क्या कुछ देना है? प्रोपर्टी लुटा देनी? नहीं। **'प्रेम से प्रेम का मिलन'–वो दिव्यता का एक संदेश है और वही संदेश यहाँ पर मिलता है...**

प.पू. साहेबजी

...तीन दिन से सब देख रहे हैं–सब में बहुत माहात्म्य है। स्वामिनारायण भगवान, गुणातीतानंदस्वामी, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज ने जिस माहात्म्य का चिंतन करने का संकल्प किया है, वही काम काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामी, गुरुजी-सब संतों के माध्यम से बहुत भव्यता से हो रहा है, उसका दर्शन हुआ है।

काकाजी-पप्पाजी के द्वारा स्वामिनारायण संप्रदाय में नई घटना घटित हुई थी। २०० साल पहले जब स्वामिनारायण भगवान प्रगट हुए, तब पूरा समाज पुरुष प्रधान था। हम सब देखते हैं, अनुभूति करते हैं कि हम पुरुषों से ज्यादा भक्ति बहनों के हृदय में भाव, प्रेम, वात्सल्यता से होती है, जिसके कारण इस संसार में जीने लायक माहौल खड़ा हो जाता है। लेकिन स्वामिनारायण प्रगट हुए, उस समय बहनों के लिए ऐसी कोई सुविधा नहीं थी कि उनके लिए यह व्यवस्था अलग से कर ली हो।

जब भारत स्वतंत्र हुआ बहनें भी आगे आने लगीं, पुरुष के जैसा ही काम करने लगीं; तब योगीजी महाराज ने दादुकाका और पप्पाजी को आज्ञा की कि बहनें भी प्रभु भज करके संतत्व धारण कर सकती हैं। तो, **बापा की आज्ञा से सोनाबा, ज्योति बहन, तारा बहन, हंसा दीदी, देवी बहन के द्वारा एक नया माहौल खड़ा हो गया। बहनों के लिए संतत्व धारण करने का अद्भुत मौका इन बहनों के द्वारा शुरू हुआ।** हरिधाम में भी **प्रेम बहन** और सब बहनें भी कार्य कर रही हैं और दिल्ली में भी **आनंदी दीदी** के द्वारा संत बहनें कार्य कर रही हैं।

हम देखते हैं कि विद्यानगर में पप्पाजी के सान्निध्य में व्रतधारी संत बहनें, व्रतधारी भाइयों और गृहस्थों, हरिधाम में स्वामिजी के सान्निध्य में संतों, युवकों, व्रतधारी संत बहनों-युवतियों और इसी प्रकार पवई-सांकरदा में भी ऐसा ही माहौल-एक गुणातीत समाज में खड़ा हो गया है। सब में परब्रह्म की शक्ति काम कर रही है, लेकिन **इन बहनों के द्वारा सत्संग में माहात्म्य का काम इतना जोर-शोर से हुआ है, तो हम इसका परिणाम देख रहे हैं...** कल ड्रामा में हमने देखा कि एक लड़की ने अपने घर की छत से गुरुजी के दर्शन किए तो भीतर का द्वार खुल गया, प्रभु के मार्ग पर चल दी। काकाजी ने उसका साथ दिया और गुरुजी के सान्निध्य में पूरा जीवन प्रभु की सेवा में समर्पित करके वो जीने लगी। वो **आनंदी दीदी** ने गुरुजी की निश्रा में **दिल्ली में भक्ति-माहात्म्य और सेवा का इतना उत्साह-उमंग जगाई... देह के भाव से ऊपर**

उठकर सेवा करने युवा लड़कियों में, उनकी माताओं में ये आनंदी दीदी और बहनों ने माहात्म्य डाला, तो इतना अद्‌भुत काम इधर हो रहा है।

तो, स्वामिजी और गुरुजी की सम्मति से हम सबकी ओर से **बहनों के** भगवान भजने के मार्ग पर चलने के लिए जो **प्रेरणा रूप-आदर्श रूप बनीं, ऐसी हंसा दीदी** से मैं प्रार्थना करता हूँ कि **गुरुजी की प्रसादी का हार और मुकुट वगैरह आनंदी दीदी को पहनाएँ।**

प.पू. दिनकरभाई

...हम गुरुजी के आनंद पर्व पर जो अभी आनंद कर रहे हैं, वो सब योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, साहेब, अक्षरविहारीस्वामिजी, कोठारीस्वामी, दासस्वामी, प्रेमस्वामी, शास्त्रीस्वामी, शांतिभाई, अश्विनभाई, बापु, भरतभाई और सब गुणातीत स्वरूपों के संकल्प से कर रहे हैं। संस्कृत में **'आनंद' शब्द, एक अनोखा शब्द है।** हर एक शब्द का विरोधी शब्द मिलता है। सुख के साथ दुःख, हर्ष के साथ शोक, रात्रि के साथ दिवस, ठंडा-गरम सब एक-दूसरे के विरोधी शब्द हैं। **'आनंद' शब्द ऐसा है, जिसका कोई विरोधी शब्द नहीं है।** स्वामिनारायण भगवान ने ५०० परमहंस के–ब्रह्मानंद, मुक्तानंद, सुखानंद ऐसे नाम रखे। भगवान के समय में एक स्वामी थे–**आनंदानंदस्वामी; दुगुना आनंद!** जैसे कि हमने इधर सुना, **गुरुजी** ने ही बताया था कि **योगीजी महाराज ने संकेत से बताया था कि आप पूर्व के आनंदस्वामी हो।** इसलिए आज यह आनंद-आनंद से भरा हुआ माहौल दिखाई देता है। गुरुजी के प्रागट्य दिन पर हमारी सबकी एक ही भावना-प्रार्थना है कि गुरुजी की तबियत जो है, उससे और अच्छी हो जाए। अच्छी रहे और जैसे हमारी हंसा दीदी की भावना है कि १०० साल यही अवस्था में अच्छी तरह से हम फिर से मनाने के लिए आ जाएं। मेरी मातुश्री भी इधर आई हैं, वे १०४ साल की हैं; उनसे भी ज्यादा (आयुष्य का गुरुजी को) आशीर्वाद दें।

यह सब एक व्यावहारिक प्रार्थना है, मगर आज हम इधर पवित्र प्रसंग पर एकत्रित हुए हैं। ये सब गुणातीत स्वरूप हमें जो बहुत-बहुत देना चाहते हैं, उनके श्रीचरणों में एक दूसरी प्रार्थना सबकी ओर से रखना चाहता हूँ।

स्वामिनारायण भगवान ने वचनामृत में एकांतिक **भक्त के मुख्य चार अंग बताए हैं–धर्म, ज्ञान, वैराग्य और भक्ति।**

भक्ति में माहात्म्य ज्ञानयुक्त भक्ति। स्वामी की बातों में उसका पांचवां स्टेप भी बताया गया है। वो क्या, तो– **'महिमा'**।

ये चार बात भगवान ने अलग-अलग तरह से बहुत बार बताई हैं। कोई भी प्रश्न आए, तो भगवान ये चार बात का रिफरन्स लेकर ही बात करते थे और इन चार बातों में शास्त्रों-वेदों का रहस्य है। लेकिन, एक जगह वचनामृत में और स्वामी की बातों में कई बार बताया है कि अकेले **धर्म** की गति 'स्वर्गलोक' तक रहती है। हम

धार्मिक क्रियाएँ, दान-दक्षिणा, तप करें उससे हमारी गति 'स्वर्गलोक' तक होगी, 'अक्षरधाम' तक हमारी गति नहीं पहुंचेगी। धर्म हमारी व्यावहारिक और आध्यात्मिक जीवन में कीर्ति बढ़ाएगा-सहारा देगा। तो, भगवान ने धर्म की बात बता कर उसे इतना ही सीमित बता दिया।

ज्ञान की भी बात करते हुए भगवान कहते हैं कि ज्ञान से विवेक आता है और विवेक से हमें क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए, हमारे जीवन का क्या उद्देश्य है–वो समझ में आता है। फिर भी भगवान कहते हैं कि ज्ञानी भी अपनी प्रकृति के मुताबिक ही आचरण करेगा। जब टेस्टिंग टाइम आएगा, तब फेईल हो जाना भी संभव है। ज्ञान की भी अकेली अवस्था सीमित बताई है और अलग-अलग प्रकार के बहुत ज्ञान बताए गए हैं। हम जो स्कूल में पढ़ाई करते हैं, वो भी ज्ञान है। जैसे हमारे गुरुजी के गुरु आए हैं, उन्होंने भी संस्कृत की जो शिक्षा दी-ज्ञान दिया, वो उससे भी ऊंचा ज्ञान है और हमारे सत्संग में जो वचनामृत, शिक्षापत्री, स्वामी की बातों से जो ज्ञान लेते हैं, वो हाईएस्ट लेवल का 'गुणातीत ज्ञान' है। मगर भगवान ने यह भी बताया कि सिर्फ ज्ञान हमें अक्षरथाम का सुख नहीं देगा।

वैराग्य हमें भगवान में जुड़ने के लिए जगत की तरफ से मोड़ता है, जगत की तरफ हमारा जो ढलाव है, उससे दूर करेगा। आज हम सुबह भांगड़ा नृत्य में सुन रहे थे और उसमें काकाजी से यही मांग रहे थे कि हमारा जन्म-मरण का चक्कर छूट जाए। जन्म-मरण का चक्कर छूटने के लिए हम मांगते हैं, मगर कैसे छूटे वो एक बड़ा सवाल है... जन्म-मरण के चक्कर की बात तो खूब गहरी है। **भक्ति** जैसी उसमें भी ताक़त नहीं है। भक्ति के अंदर जो भाव है, भगवान की भक्ति का जो प्रभाव है, वो भगवान ने बताया है कि उससे हम अक्षरधाम पा सकते हैं। हमारी गति अक्षरधाम तक पहुंचती है।

भक्ति के अंदर भी गुणातीतानंदस्वामी और महाराज ने अलग-अलग प्रकार बताए हैं। स्वामी की बात में स्वामिजी ने बहुत अच्छा संकेत दिया है। गुणातीतानंदस्वामी कहते हैं कि भक्ति से स्वामिनारायण भगवान राजी होते हैं। स्वामी, पहले स्थूल भक्ति की बात बताते हैं कि भगवान की आज्ञा है, इसलिए हम **स्थूल भक्ति** करते रहते हैं। मगर **स्थूल से ऊपर उठा हुआ मार्ग अलग है।**

इसलिए जो भक्ति करें, वो करते हुए आत्मा के अंदर भगवान और गुणातीत संत की अनुवृत्ति रखनी चाहिए। यह **सूक्ष्म भक्ति** है। हम सब इधर आए हैं, सेवा-भक्ति करते हैं, लेकिन यह अनुवृत्ति का अनुसंधान रख कर भक्ति करें, तो स्वामिजी, साहेब, अक्षरविहारीस्वामिजी, गुरुजी और ये सब गुणातीत संत राजी हो जाएँगे। वो अनुवृत्ति की भक्ति की बात स्वामी इधर बता रहे हैं और बोलते हैं कि 'आत्मनिष्ठा' जैसी तो कोई बात ही नहीं है। अब जो भक्ति की बात स्वामी बता रहे हैं, वो **आत्मनिष्ठा** है। गुरुजी ने यह भी बताया था कि संतों को भगवान ने प्रश्न पूछा था कि आप क्या-क्या कर सकते हो और 'भक्तचिंतामणी' में बताया भी गया है कि संतों ने जवाब भी दिया कि हमारी पलकें एक मिनिट में ४०-५० बार झपकती हैं, मगर आप कहो तो सारी जिंदगी स्थिर आंख से आपका दर्शन करते रहें। यह सामान्य बात नहीं है और काकाजी उसमें तो और भी बता रहे थे कि नीम का रस पीएं, सिनेमा-नाटक न देखें... ये सब चीजें हमारे लिए बता रहे थे। मगर भगवान ने अंत में जवाब दिया कि ये सब बात आप कर सकते हैं; बहुत बड़ी और समझने वाली भी है। **मगर अब**

पी.एच.डी. लेवल की बात करो, फर्स्ट स्टैंडर्ड की बात मत करो। उन्होंने यह भी कहा कि जो मुझे नहीं मिले हों–गुणातीत को नहीं मिले हों, वे ऐसी बात कर सकते हैं। वो जब ऐसा जी सकते हैं, तो उनसे ऊपर उठी हुई अलग बात बताओ।

फिर भगवान ने ही बताया कि खुद को चैतन्य रूप मानो। हम सब देह रूप नहीं, 'चैतन्य रूप' हैं। **आज हम इधर ऐसे आशीर्वाद लेने के लिए आए हैं कि हमारी यह 'चैतन्य भूमिका' पक्की हो जाए। हम देह रूप से संपूर्णतया ऊपर उठ जाएं।** स्वामी उससे आगे कहते हैं कि 'आत्मनिष्ठा' जैसी तो कोई बात ही नहीं है और मनन द्वारा मैं 'अक्षर' हूँ, मेरे अंदर पुरुषोत्तम भगवान अखंड बैठे हैं, ऐसा करते जाइए। स्वामी बताते हैं कि हमारा यह सिद्धांत, भक्ति, धर्म और सेवा का है और महाराज ने तो बार-बार कहा है और यही सूक्ष्म भक्ति करेंगे, तो सचमुच गुरुजी राजी होंगे...

हमें ब्रह्मरूप होना है। ये गुणातीत पीढ़ी चली आई है, तो हम सब दिल से गुरुजी को 'गुरु' मानें। तो उनका संकल्प यह काम करेगा। काकाजी के साथ उनकी जो भी भक्ति बनी हुई है, वो काम करेगी। मगर हम सबको ऐसा आशीर्वाद लेना है।

फिर स्वामी कहते हैं–**सूक्ष्म भक्ति** से आत्यंतिक मोक्ष मिलेगा। आत्यंतिक मोक्ष के लिए हम लगे हुए हैं। आगे बताई गई जो **स्थूल भक्ति** है, उससे आत्यंतिक मुक्ति नहीं मिलेगी। ऐसी भक्ति तो चार जने करें, ऐसी मान की वृत्ति से अकेला करेगा। मान से चार हरिभक्त करें, ऐसी हम एक कर सकेंगे। स्वामी कहते हैं–वो सेवा करे, गोबर उठाए, रोटला करे–इन सब प्रकार की भक्ति में मान मिलता है। ऐसी भक्ति के अंदर कोई न कोई सूक्ष्म मान मिलता है। इसलिए वो होती है और करते भी हैं, मगर उससे सिद्धि नहीं मिलेगी। जो प्राप्त करना है, वो हमें नहीं मिलेगा। हम सब जानते हैं कि इसलिए **स्वामिजी को मान से बहुत लड़ाई है।** स्वामिजी हमारे अंदर थोड़ा-सा भी मान देखेंगे, तो वो तोड़ने की करामात सिखाएँगे। **वचनामृत मध्य २८ और ४१ भी स्वामिजी बार-बार दोहराते** हैं कि हमारे अंदर से मानरूपी राक्षस निकालना है... काकाजी धुन के मास्टर, गुरुजी धुन के इतने मास्टर।

हम गुरुजी के हैं, तो हम भी धुन मास्टर बन जाएं। तो, मान और गुस्सा दोनों भाग जाएँगे... जब हम इस बात को पकड़ कर ही आशीर्वाद मांगने के लिए आएंगे और उनके पास निष्कपट होकर ऐसी प्रार्थना करेंगे, तब ही हमारा 'सूक्ष्म भक्ति' का मार्ग खुल्ला हो जायेगा। आज **ऐसे कोठारीस्वामी, प्रेमस्वामी हमारे बीच में हैं। वे काकाजी–स्वामिजी के ऐसे लाड़ले हैं; ऐसे अत्यंत निर्मानी और स्वामिजी का हर एक वचन भी त्वरित झेलने वाले हैं।** उन्हें हम आगे रखकर, उनकी सेवा अंतर और आत्मा के भाव से कर सकें। ऐसे आशीर्वाद आज स्वामिजी, साहेबजी, अक्षरविहारीस्वामी, गुरुजी और ये सब गुणातीत स्वरूप हमें दें, ऐसी काकाजी, पप्पाजी, योगीबापा, शास्त्रीजी महाराज, भगतजी महाराज, जागास्वामी, कृष्णजी अदा, गुणातीतानंदस्वामी सब गुणातीत स्वरूपों और महाराज के चरणों में दिल से प्रार्थना।

प.पू. गुरुजी

... पिछले साल आप सब जो आए थे, तब मैंने कहा था कि अबकी जो आए हो, उससे ज्यादा अगले साल जरूर आना... **मेरी बात को ध्यान में लेकर, आप इतनी सारी संख्या में आए,** मैं थँक्स तो नहीं कह सकता, क्योंकि अपना एक 'योगी परिवार' है। लेकिन, एक बात जरूर है कि **यॉर सो कमिंग, इज़ ए प्लेज़र टु मी। ऐसे आते जरूर रहना...**

आप सब, सामने तीस मुक्तों के फोटोग्राफ्स देख रहे हो। यह विचार मुझे तीन-चार दिन पहले ही आया... मैंने आशीष को बुलाकर कहा कि– *आशीष, ऐसे फोटोग्राफ्स लगाने हैं; क्योंकि मुझे पता है कि अगर **काकाजी** स्थूल रूप से हाजिर हों और ऐसा फंक्शन हो, तो वे यह सेन्टेन्स जरूर बोलते– **धन्यवाद हो मेरे साथीदारों को, ये सब अकेले हाथ नहीं बना।***

और...काकाजी जब इतने चाव से याद करके हमेशा बोलते थे, तो **हम भी ऐसे मौके पर इन मुक्तों का अभिवादन करना चूकें नहीं।**

सायन्स की टेक्नोलॉजी भी इस सेवा में खूब हेल्पफुल हो गई है। ज्योत, मुंबई, माणावदर, जूनागढ़ सब जगह फोन कर दिए और कहा कि ई-मेल से आप ये फोटोग्राफ्स भेज दो। सभी ने भेज भी दिए! फिर मुझे विचार आया कि **हर्षदभाई और छगनभाई** का भी लगाएँ। **वे हैं तो हमारे 'योगी परिवार' के ही।** पर कई बार हमारा मन-दिमाग़ दुविधा भी खड़ी कर देता है। मुझे एक सेवक ने कहा–
गुरुजी, करेंगे तो वही, जो आप कहो। लेकिन, क्या आपको नहीं लगता कि हर्षदभाई और छगनभाई के फोटोग्राफ्स लगाएँगे, तो लगेगा कि – 'हमें कोई भेदभाव नहीं' – ऐसा हम शो-शॉ कर रहे हैं या इनके भक्तों के अंदर घुस मारने की हमारी ये टॅक्टीक है।

व्यावहारिक बुद्धि से देखें तो **उसकी बात सही भी थी।** लेकिन जो चीज मैं मानता हूँ, जो बात मेरे दिमाग़ में बैठी हो, उसे मैं बदलता नहीं हूँ। मुझे मेरा यह नेचर बहुत हेल्पफुल रहा है; पर, शुरुआत में मुझे नड़ा भी बहुत।

मैंने उसे कहा कि– *देखो, मेरा दिल साफ़ है। मैं शो-शा (दिखावे) के लिए नहीं रख रहा हूँ। मैंने इसीलिए रखा है कि मुझे एक प्रसंग याद है। छगनभाई बीमार थे, तो उनके आख़िरी समय पर काकाजी उनसे मिलने उनके घर गए थे। तब छगनभाई की आंखों में पानी आ गया और गले लग गए। जब काकाजी को कोई फर्क नहीं, तो हमें पुरानी गांठें याद करके क्यों फर्क रखना? **कोई ये बोलेगा, कोई ये सोचेगा, इसलिए हम अपने रास्ते से मुकर जाएं-बदल जाएं, तो फिर हमें ही अपने ज्ञान का गरूर नहीं है।** हमें अपना स्टेट्स समझना होगा। पप्पाजी-काकाजी शुरुआत में कहते ही थे कि **बापा ने ये पूरा स्पीरीच्युअली एलिवेटिड समाज अलग किया है।** तो फिर **हम ये कॉमन थिंकिंग पर चल ही नहीं सकते** और वैसे भी स्वामी की बातों में लिखा है– **जिसे केवल महाराज को राजी करना हो, वो केवल उनकी मरजी के मुताबिक ही बरत सकता है, सब की मरजी के मुताबिक नहीं बरत सकता।***

तब उसने कहा आपकी बात सही है। फिर भी, मुझे पूछा– *हर्षदभाई के बारे?* तो मैंने कहा – *हर्षदभाई का फेमिली यानि दवे फेमिली। अपनी दीदी का फेमिली। मुझे याद है– महिपतभाई के बेटे रमेश के तो*

काकाजी 'मामा' बने हुए थे। हम तो तब नये-नये सत्संग में आए थे। पर, यह सब मैंने देखा हुआ है। तो काकाजी ने इस परिवार को अपना ही गिना था। डिफरंसिस होने के कारण हम अलग-अलग रहने लगें, वो तो आज हर एक फेमिली में होता है। सो, ***वे भी हैं तो अपने योगी परिवार के ही।*** *जिन्हें जो मानना हो, वो मानें; अगर* ***किसी के कुछ मानने के डर से हम हमारे डीसिज़न बदलते रहते हैं, तो मैं मानता हूँ कि हमें प्रभु पर भरोसा ही नहीं है।***

दूसरी ऐसी एक बात – कल जो ड्रामा हुआ, उसके इन्ट्रोडक्शन में कहा था कि **गुणातीतानंदस्वामिजी द्वारा इन्ट्रोड्यूज़्ड नई स्पिरिच्युअल टॅक्नीक** से आध्यात्मिक विकास की प्रगति सरल हो गई। आज सुबह-सुबह ही मुझ से किसी ने पूछा कि उससे आप क्या कहना चाहते हैं। महाराज का शुक्रगुज़ार करो, कई बार मुझे जब कोई ऐसे सवाल पूछते हैं, तो कई फ्लॅश बॅक एकदम याद आ जाते हैं। यही सवाल एक बार काकाजी से मैंने किया था। काकाजी 'पंचयज्ञ' की अंग्रेजी किताब लिखवा रहे थे –

...धी होल प्रोसेस ऑफ स्पिरिच्युअल डेवेलपमेन्ट हॅज़ बीन टर्न्ड अप साईड डाऊन बाई धी इन्ट्रोडक्शन ऑफ 'अक्षरब्रह्म' इन धी परसोनीफाईड फॉर्म...

तब मैंने पूछा कि *काका, आपने ये क्या लिखवाया है? क्या पुराने सारे प्रोसेस निकम्मे हो गए?*

तो कहते हैं – *हाँ निकम्मे हो गए। गुणातीत ने सारे साधना मार्ग पर सेरे लगा दिए, मतलब धे आर कॅन्सल्ड – धे आर एबन्डन्ड।* काकाजी ने ये सारे शब्द ज़ोर से बोले थे।

मैंने कहा – *नई स्पिरिच्युअल टॅक्नीक में सरलता क्या है?*

तो बोले – *सब चीज इन्स्टन्ट हो जाती है।*

मैंने पूछा – *किस तरह? क्या विधाउट गोइंग इन टु एनी प्रोसेस?*

तब बोले – *सुन, पहले पानी को शुद्ध करने के लिए – प्यॉरिफाई करने के लिए हमें उबालना पड़ता था। अब नई टॅक्नोलॉजी से वो उबालने का प्रोसेस चला गया। बटन दबाओ और पानी प्योर होकर आता है न?*

मैंने कहा – *यह बात तो सही है।*

फिर, इसी तरह मैंने एक बार मेरी सारी बातें उन्हें की कि मुझे ये है, मुझे ग्रजिझ रहते हैं – वगैरह।

तब भी काकाजी एकदम बोले थे – *याद है? मैंने तुम्हें नई टॅक्नोलॉजी की बात की थी।*

तू चिंता ही नहीं कर, मैं तेरे द्वारा ऐसे सत्कर्म कराऊंगा, इससे ये सारी चीजें कहां धुल जाएंगी-पिघल जाएँगी, तुझे पता भी नहीं लगेगा; *तू मेरा भरोसा रख।*

मैंने कहा – *ये कैसे होता है?*

तो कहते हैं – *मैंने बताया था न कि पानी में केमीकल डालो, तो पानी प्योर हो जाता है।*

आज भी हम अभी नई एड्वान्समेन्ट देखें, तो हाथ धोने के लिए केमिकल मतलब सेनीटाईज़र यूज़ करते हैं। बेशक, हम अभी 'यूज़ टु' नहीं हुए हैं।

तो **ये गुणातीत विभूतियां जो हमें मिली हैं, इनकी बातों का हमें भरोसा करना पड़े।** पर, हम कई बार खाली ऊपर-ऊपर से बोलते हैं।

कल किसी ने **'एक देशस्थ ज्ञान-सर्वदेशीय ज्ञान'** के बारे में मुझ से बात की थी। हाँ, जो तीन मूर्तियां हॉल में रखी हैं– भगतजी महाराज, जागास्वामी, अदाश्री की-उनके नीचे जो लिखा हुआ है– उसे पढ़ कर। मुझे कहता है– *बात तो आपकी ठीक है, पर हम जिस स्वरुप को मानते हैं, वो तो दिल में रहेगा न? भले, समाज के साथ मिलजुल कर रहने के लिए-संवादिता बनाए रखने के लिए हम हर एक के प्रति ऐसे आदर से देखें।*

तब मैंने समझाया– ***यह बौद्धिक इन्टरप्रीटेशन है; अगर हमारे चैतन्य का विकास करना होगा, जैसे काकाजी कहते थे कि 'छलांग' लगानी होगी, तो हमें दिल से यह मानना ही पड़ेगा*** *कि अन्य जो स्वरुप हैं, वे भी ऐसे के ऐसे ही हमारे हैं। ये नहीं मानोगे, सिर्फ समाज में हार्मोनियस माहौल बनाए रखने के लिए सबको साथ में लेकर चलेंगे, तो हमारी चेतना का विकास नहीं होगा।* ***हाँ, समाज का विकास हो जायेगा!! पर, हम उसी 'स्क्वेर वन' पर खड़े रहेंगे।***

ये बात **काकाजी** ने मुझे समझाई थी–

शास्त्रीजी महाराज को भगतजी, जागास्वामी, अदा में ऐसा नहीं था कि– सबके साथ अच्छा मेल रख कर काम करना है, पर एक भगतजी ही मेरे गुरु हैं। 'जागास्वामी ही भगतजी हैं, अदा ही भगतजी हैं'– यह दिल की सच्चाई से मानकर वे जीते थे। ***तो ही, जब अदा ने कहा कि ये भगतजी बोल रहे हैं, तो शास्त्रीजी महाराज ने मान लिया और वड़ताल संस्था छोड़ दी।*** *भगतजी जैसे ही अदा हैं, इतना ही यदि मानते होते तो इतना बड़ा स्टेप नहीं उठा सकते थे। उन्होंने वाकई दिल से अदा को भगतजी ही माना, तब ये वड़ताल संस्था छोड़ी; वर्ना वे छोड़ते नहीं।*

यह बहुत गहरी बात है, पर **इस चीज को हम पकड़ेंगे, तब ही हम छलांग लगा पाएँगे। वर्ना अभी समाज एक ऐसा आ गया है कि अगर हम लोग नहीं वर्तेगें, तो हमें शर्मिन्दा होना पड़ेगा।** समाज ऐसा आया है, टॅक्नोलॉजी भी ऐसी है।

...देखो, ये टेन्ट– मैं मानता हूँ कि अगर इतना बड़ा और इस तरह का टेन्ट पुराने ढंग से हम बनाने जाते, तो अंदर कितने पिलर लगते ही लगते; खड़ा करने में भी कम से कम एक महीना तो लगता ही। जबकि ये सायन्स की नई टॅक्नोलोजी, क्रेन-वेन, मशीन लेकर आए तो डेढ़ दिन में पूरा टेन्ट खड़ा हो गया! इसी तरह महाराज ने ऐसे मुक्त भी तैयार किए हैं। अपनी ये किताब जो प्रकाशित हुई है – **'हमारा मंदिर'**। आशीष सारे कामों में बिज़ी था, तो उसका कम्पोजिंग-डिजाइनिंग वगैरह कर नहीं पाया था। सो, आख़िर टाइम पर वो सब लेकर आया। तो, मुझे विचार आया कि ये सारा सेटिंग करने में कम से कम १०-१५ दिन चले जाएँगे। फिर मुझे हुआ कि ये बहनों को सौंप दें कि तुम सेट करो, फिर मैं देख लूंगा। मुझे ऐसा था कि ये लोग कर लेंगे, तब भी मेरे चार-पांच दिन तो जाएँगे ही। लेकिन **दीदी और बंसरी ने इतनी स्कीलफुली सारा काम कर दिया** कि तकरीबन दो-ढाई घंटे में पूरी 'मेन्युस्क्रीप्ट' तैयार हो गई!

और... वो किताब भी देखो, तो हर एक को पसंद आ जाए। कल का ड्रामा भी देखो; जैसे ही तुम्हारा ड्रामा वहाँ खतम हुआ होगा, सबसे पहला फोन **मल्कानी** का आया कि गुरुजी, **प्ले इज़ 'सुपर्ब'**। सुबह तक लगातार फोन आते ही रहे... मैंने खूब सोचा कि ये सारी चीजें क्यूं टच कर जाती हैं। तो वशी ने बात की ऐसा है। ये बात असल में नई नहीं है। **गीताजी** में भी एक पंक्ति है–

'स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धं विन्दन्ति मानवाः'

मतलब अपने व्यावहारिक कार्य भगवान को अर्पण करने की भावना से यदि इस प्रकार करें कि यह भी भगवान का पूजन ही है, तो व्यक्ति को सिद्धि मिलती है। बहुत बड़ी बात है। हमें सामान्य पूजा भी करनी होती है, तो कहेंगे कि तुलसी पत्र पानी में धो लाओ, पुष्प भी पानी से साफ़ करके रखो। लेकिन व्यवहार का काम-काज करने में हबड़-तबड़ कर देंगे। काकाजी इसे बोलते थे– *'लाहरियुं काम थई जाय।'* पर वो ही **काम मैंने स्वामी को राजी करने के लिए किया है, प्रभु को अर्पण करने के लिए कर रहा हूँ– यूँ करेंगे तो वो काम भी इतना परफेक्ट करेंगे। अपनी भावना अंदर समा जाती है।**

इन सब में मैंने ये बात देखी है... **शुरुआत से एक ही भावना मैंने हर एक में देखी कि– किसी भी तरह राजी कर लेना है।**

हमारे बापूस्वामी सांकरदा से आए हैं, उन्होंने नोट किया है कि कुछ भी होगा, तो ये लोग पहले आपस में चर्चा कर लेंगे कि देखो, गुरुजी को दिखाना है, उन्हें १९-२० नहीं चलता। यह भी सोचते हैं कि २५-३० आइटम हो, तो उसमें से दो-तीन हम सिलेक्ट कर लें और वो गुरुजी को दिखा देते हैं, ताकि गुरुजी का टाईम इसमें न जाए। मैंने दोपहर को भी आपको बात की कि आशीष कुछ बनाकर लाता था, उसमें मुझे कुछ चेईन्ज करना ही नहीं पड़ता था, क्योंकि **अब ये लोग मेरी एप्टीट्यूड-लाइकिंग खूब भलीभांति समझ गए हैं।** इसी कारण मैंने कहा था कि **लोगों को लगता होगा कि इतना बड़ा फंक्शन है, गुरुजी भी थके हुए होंगे। लेकिन, मैं तनिक भी थका नहीं। इसकी वजह, हक़ीक़त में ये सेवक लोग हैं।**

तो, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामी, साहेब से मुझे आज यही प्रार्थना करनी है कि इन लोगों ने जो सेवा की, आप ऐसे आशीर्वाद देकर जाओ कि अब छलांग मारकर हम खूब आगे जाएं।

ऐसी भावना वाला समाज यहीं डेवलप हुआ, ऐसा नहीं है, हर एक जगह पर ऐसे सेवक हैं। शुरुआत में हम आए थे, तब की बात है। हम लोग देहरादून एक्सप्रेस से ६ दिसंबर, १९६८ को पहली बार आए थे। यहाँ आए तो खूब ठंडी थी। मैं तो एक जगह पर खड़ा ही रह गया, लेकिन नहाना तो पड़ेगा ही। **ठंडे पानी से सर्दी में नहाना, वो मेरे लिए तो अवतार खड़ा हो जाता है। प्रेमस्वामी की भावना देखो। बहुत समझने लायक प्रसंग है। कई सात्त्विक मूर्तियों को शायद अच्छा नहीं लगेगा।**

प्रेमस्वामी ने मुझ से कहा– *आप नहाना नहीं, मैं पानी का बंदोबस्त करता हूँ।*

मैंने कहा– *पर, तू गरम पानी लाएगा कहां से?*

कहते हैं– *मैं करता हूँ। पहले मैं नहा लेता हूँ, फिर ढूंढता हूँ।*

मुझे खूब स्ट्रीक्टली कह कर गए कि आप नहाना मत। वो जानते हैं कि ठंडे पानी से नहा कर अगर इसे नीमोनिया हो गया, तो और मुसीबत। मैं थोड़ी देर बैठा रहा। प्रेमस्वामी एक पतीले में गर्म पानी लेकर आए; एकदम गर्म, जैसा मुझे चाहिए–वैसा।

फिर नहा कर मैंने पूछा– *कहां से लाए?*

कहते हैं– *देखो, नीचे लाइब्रेरी है। उसमें से किताबें जला दीं।*

मैंने कहा –*ये किताबें तो पढ़ने के लिए होगीं...*

कहते हैं– ***वो पढ़कर भी 'संतों की सेवा करनी' – वही सीखना है न?***

लाइब्रेरी से दो अल्मारी की किताब जलाकर उन्होंने मुझे पानी गर्म करके दिया था! आज इतने साल के बाद इकरार कर रहा हूँ।

ऐसा ही एक दूसरा प्रसंग है। पैसे की तंगी रहती थी; स्कूटर में जाने के लिए थ्रीव्हीलर वाले के साथ खूब माथापच्ची करनी पड़ती कि भाई तीन जनों को ले जा, एक रुपया ज्यादा ले लो। एक बार **बॅरिस्टर** सेवक की भाँति हमारे साथ आए थे। हमें रात को ९.०० बजे जाना था। बॅरिस्टर ने हमें समझाया कि रात को बस में कोई होता नहीं है, लेडिज़-वेडिज़ कोई नहीं। तो, गन्दे नाले पर हम खड़े रहे। बस एकदम खाली आई। हम तो आराम से बैठ गए। बस थोड़ी आगे गई और दो-तीन लड़कियाँ चढ़ीं। उन्होंने देखा कि बस में कोई है नहीं; दो साधु महाराज और साथ में एक युवक है। वो हमारे आगे ही बैठ गईं कि कन्डक्टर पीया-करा हो, कहीं परेशान न करे-करके। बॅरिस्टर को हुआ कि संत लोग अनकम्फर्टेबल हो गए। मुझे पूछा– *इन्हें हटा दूँ।* मुझे हुआ कि इसे हिन्दी भाषा की प्रॉबल्म है, गड़बड़ करेगा-मुसीबत हो जाएगी। क्योंकि बाजार में नमक लेने जाएँ, तो वो बोले कि 'मीठा' दो। दुकानदार गुड़ देते, शक्कर देते। ऐसा तो उसका हिन्दी-गुजराती का चलता रहता था। मैंने कहा–कुछ कहना-करना नहीं, भले बैठी रहें। वो मेरे 'ना' करने की वजह समझ गया। सो, उसने कहा– *मैं कुछ बोलूंगा नहीं।* वो अपने आप उठकर चली जाएँगी। मुझे मन में हुआ कि ऐसा कैसे हो जाएगा कि बिना बोले लड़कियाँ अपने आप उठकर आगे चली जाएँगी। सो, मैंने कहा–हटा दे। बॅरीस्टर मेरे पास से उठकर उसके बराबर में जाकर चिपक कर बैठ गया। लड़कियों को हुआ, ये गलत नीयत से आया लगता है। वो उठ कर पीछे चली गईं। यह सुन कर **आप हंसते हैं, लेकिन इन्होंने अपने कॅरेक्टर–प्रेस्टीज इश्यु की परवाह किए बिना कैसी सेवा की है।** लोगों को जो भी सोचना है सोचें, मुझे काकाजी और साहेब ने सेवा करने के लिए भेजा है; मुझे मुकुंदस्वामी की सेवा करनी है। वर्ना, 'स्वधर्म' की आड़ आ जाती! ऐसा समाज पहले से है। **ऐसे समाज की पुष्टि करनी। साहेब, यह आप सबका काम है।**

ऐसे बहुत प्रसंग थे, पर हम ऐसे गुज़रे हुए हैं कि हमें कभी कोई मुसीबत लगी ही नहीं है, मीठा ही लगा है। आज भी मीठा लगता है। हम अकेले आते थे, तब भी मीठा लगता था। देखो, आज ये राणा साहेब दिखाई पड़ते हैं। राणा साहेब मुझे बहुत मीठे लगते हैं। सत्ता में नहीं हैं इसलिए, तीन दिन लगातार यहाँ आए हैं या एक साधु का बर्थडे है, इसलिए आए हैं–ऐसा नहीं। **'हमारे गुरुजी'** का बर्थडे है–यह जो भावना है न वो बहुत बड़ी चीज है। भागवत् में लिखा है कि **ऐसे संतों के प्रति–ऐसे भक्तों के प्रति अपनेपन की भावना हो, तो मोक्ष का द्वार खुल जाता है।** ऐसे ये बरार साहब भी हैं जो पंजाब से एम.एल.ए. हैं।

जैसे सभी ने बात की न कि हम खाली बातें सुनते न रहें। **कई जगह हमारी जो प्रगति नहीं हुई है, उसकी वजह ये है कि हम खाली 'हाँ-हाँ' करते हैं, चलते नहीं हैं।** ये 'हाँ-हाँ' करते रहने की बात कैसी है कि महाराज के समय में एक बुढ़िया थी।

महाराज ने उसे कहा–*बुढ़िया भगवान का नाम ले तो कल्याण हो जाए।*

तो बुढ़िया कहती है–*हाँ, नाम लूँ तो कल्याण हो जाए।*

महाराज ने फिर से कहा कि–*मैं वही कह रहा हूँ तू नाम ले–'स्वामिनारायण।'*

तब भी बुढ़िया कहती है– *आपकी बात सच है कि नाम लेने से तो कल्याण हो जाए।*

महाराज ने यूँ कम से कम ५-७ बार कहा बुढ़िया-माँ तू 'स्वामिनारायण' नाम ले, कल्याण हो जाएगा। तो वह यही कहती रही कि आपकी बात सच्ची है–नाम लेने से कल्याण हो जाएगा। पर, नाम ले नहीं। देखो, हम हंसते हैं। पर, हम सब भी ऐसे हैं–हक़ीक़त में ऐसे हैं।

हमारे सारे समाज का सर्जन एक ऐसी अंडरस्टेन्डिंग पर है कि–धाम, धामी और मुक्त ही सत्य हैं। हम भी गाया करते हैं कि धाम, धामी और मुक्त सत्य हैं। पर दिल की सच्चाई से, ऐन मौके पर हम मानते नहीं हैं कि हमारी मान्यता, सगे-संबंधी, व्यवहार से अधिक धाम, धामी और मुक्त सत्य हैं। जिस-जिसने माना, उनमें बरकत दिखाई देती है।

स्वामी से कोई और बात करनी नहीं है। आप इस बार ऐसे आशीर्वाद दे जाओ कि गुरु-चेला हम सभी ने जो आपसे सीखा है, जो हमने आपके पास से सुना है–इस तरह वर्तते हो जाएं। बाकी, **समाज तो ऐसा है कि हक़ीक़त में अब हमें शर्म आ जाती है।** हम मानें कि न मानें, बाहर के लोग भी समझते तो हैं।

अभी बेला रोड से जो संत आए थे, उनमें एक **धर्मस्वरुपस्वामी** थे। वे तो धाम में गए। वे एक बार यहाँ मंदिर में आए थे। उस समय हमारा यह मंदिर बना भी नहीं था, बाहर का तो प्लास्टर भी नहीं हुआ था। मुझे कहते हैं कि गुरुजी मंदिर बहुत अच्छा बनाया है। मैंने कहा– मंदिर तो स्वामी, आपका भी बहुत अच्छा है। पलट कर वे मुझे कहते हैं कि–*देखो स्वामी! हमारे मंदिर में और आपके मंदिर में खूब फर्क है।*

मैंने पूछा–*कैसे?*

वे कहते हैं– ***आपके यहाँ दादुकाका ने पहले एक समाज तैयार किया है और उस समाज ने यह मंदिर बनाया है। हमने तो अहमदाबाद से पैसे लाकर मंदिर बनाया, उसमें क्या किया?***

देखो, लोग सब समझते हैं कि यहाँ क्या हो रहा है।

पर, अब **हम पीछे न रह जाएं, चेले आगे न चले जाएँ इतना आप मेरा ध्यान रखना।** हक़ीक़त में कह रहा हूँ, फॉर्मली नहीं कर रहा।

अपने यहाँ **नक्षु** है। एक दिन सुबह-सुबह आया और मुझे कहता है– *गुरुजी दुआ में याद रखना।* मैं तो सोच में पड़ गया कि यह कहाँ से सीखा। फिर पता चला कि ये टी.वी. में इसने देखा था। 'वन्स अपॉन ए टाइम इन मुम्बई' में यह डायलॉग है– *'दुआ में याद रखना।'* आपको ख्याल होगा; रमणीकभाई अदा पप्पाजी से कहते थे कि– *मैं आपका पुराना ग्राहक हूँ।* ऐसे **हम स्वामी आपके पुराने ग्राहक हैं।** हक़ीक़त से-दिल से कहता हूँ। आपने हमें अपना माना है, तो **डाँट-फटकार कर भी आगे लेते जाना।**

नई जनरेशन तो इतनी इन्टेलीजन्ट आई है कि हमें विचार करना पड़े। अभी हम संक्रांति पर भिक्षा मांगने के लिए गए थे। तो नक्षु को इन लोगों ने मेरे जैसे कपड़े पहना दिए थे। सो, वह बहनों के पास जाता ही नहीं था। भिक्षा मांगने में यहाँ कैसा है कि आगे भाइयों, बहनें, भाभियाँ हो और हम तो एक कोने में खड़े रहें। थोड़ी देर में उसे तो कंटाला आया।

मुझे कहता है– *मुझे तो भिक्षा लेने का चांस ही नहीं मिलता, मुझे साथ में क्यों लिया है ?*

मैं उसके ड्रेस की सारी बात भूल गया।

मैंने कहा– *तू ऐसा कर, तू गार्गी के साथ चला जा, तो तुझे भी भिक्षा मिलेगी।*

वो, मुझे कहता है– *गार्गी के साथ जाना है, तो इसका क्या मतलब ? ये कपड़े पहनने का क्या मतलब ?*

अबकी बार कल्चरल प्रोग्राम में ये गार्गी को डांस करना था। भगवे कपड़े में तो डांस होगा नहीं। तो मैंने कहलवाया– *तू हंसा दीदी से परमीशन ले लेना।* इन लोगों ने हंसा दीदी से पूछ लिया। पर इस बात की नक्षु को कोई खबर नहीं थी। इसने कल्चरल प्रोग्राम देखा, तो आनंदी दीदी को वो कहता है– *ये गार्गी अच्छी तो लगती थी, पर किसकी परमीशन ली थी।* मतलब ये कपड़े की परमीशन ली थी ? बच्चों को भी इतना ख्याल है कि विधाउट परमीशन ऐसा काम नहीं करते। मैं मानता हूँ, वो **पूर्व का मुक्त होगा, वर्ना ऐसा विचार नहीं आए।**

यूँ समाज बहुत एडवांस आ रहा है, मैं पीछे न रह जाऊं; आगे बढ़ते रहें, ऐसा आशीर्वाद देना ताकि काकाजी की शोभा बढ़ाएँ... सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी

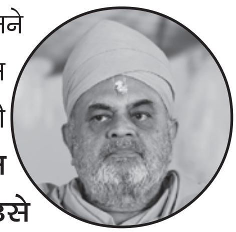

... मुझे कुछ विशेष बात करनी नहीं है। बस इतना ही कहना है कि तीन दिन हमने खूब ज्ञानगोष्ठी की, बातचीत सुनी। गुरुजी के बारे के सब प्रसंग, महिमा-गुणगान और सब सांस्कृतिक कार्यक्रम से हमें सारी बातों का ख्याल आ गया। अब हमें किसी को कुछ कहने की जरूरत नहीं है, परंतु **गुरुजी ने** अभी आशीर्वाद देते हुए **जो सूचन किया, उस पर हम ध्यान दें, खाली बोलने में इस ज्ञान को न रखें। वरन्, उसे हम अपने जीवन में उतारें। उसका अनुसंधान, जाग्रतता और उसके मुताबिक जीने का प्रयत्न करें।** ऐसे दिव्य स्वरूप हमें मिले हैं, उनके आशीर्वाद हमारे जीवन में साकार हों और ऐसे दिव्य पुरुषों के संकल्प को साकार करके इसी देह में अक्षरधाम का सुख, शांति और आनंद प्राप्त करते हो जाएं, ऐसा हम सबको खूब बल स्वामिजी भी दें। आज हमें ऐसे आशीर्वाद दें–यही अंतर से प्रार्थना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. निर्मलस्वामिजी (समढियाळा)

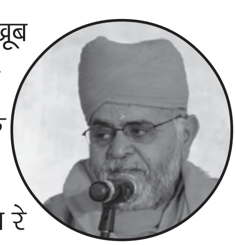

आज सुबह साहेब के साथ हम ऊपर खड़े थे। १५ से २० प्रसंग याद करके खूब आनंद किया। तो साहेब ने कहा कि ऐसे प्रसंग तो आपको सभा में कहने चाहिए। मैंने कहा– *ऐसे प्रसंग तो सभा में नहीं कह सकते।* तो साहेब बोले– *आप इतना कहना कि पहले ऐसे थे और अब ऐसे हैं।*

गुरुजी हमारे तो बाल स्नेही हैं। एक सुख की इतनी सीमा है कि सुख की सीमा रे

दिल्ली वाला माने; बाल स्नेही रे, गुरुजी हमें मिले... आज योगी बापा, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, साहेब–ये सभी स्वरूप हम पर खूब-खूब ढले हैं। योगी परिवार में हम गौरव महसूस करते हैं कि योगी बापा के संत गुरुजी हमारे साथ हैं। गुरुजी गोंडल में थे, योगी बापा और हम साथ में बैठे थे। तब मैं गोंडल में कोठारी की तरह था। बापा ने कहा कि *ये मुकुंद जब मुंबई जाए, तब प्रसाद बाँध देना।* मतलब, **बापा ने जो अंतर से आशीर्वाद दिए हुए हैं, उसका यहाँ दिव्य दर्शन होता है और भगवान स्वामिनारायण की एक दिव्य चेतना के दर्शन होते हैं... गुरुजी जैसी हृदय की भक्ति हम सब संतों, भक्तों कर सकें**–यही प्रार्थना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. साहेबजी

सचमुच, आनंदोत्सव में लगातार चार दिन तक हम सबने पू. स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, गुरुजी, **संतों के सान्निध्य में अनोखा आनंद किया। बहुत कुछ हम लेकर जा रहे हैं। गुरुजी ने कहा वैसे हम उस पर अमल करें।** सबने बहुत अच्छी बातें कीं, मार्गदर्शन मिला। सबको माहात्म्य से भरपूर किया। **गुरुजी ने आख़िर में बहुत आनंद कराया।** गुरुजी ने स्वामिजी के चरणों में हम सबकी तरफ से जो यह प्रार्थना की, वैसे आशीर्वाद स्वामिजी-आप हम सब पर बरसाओ। ऐसे आपके चरणों में हम सबकी ओर से प्रार्थना।

स्वामिजी आशीर्वाद बरसाएँ उससे पहले, यह कार्यक्रम देश विदेश में हमारे सारे हरिभक्त देख रहे हैं। इंग्लैन्ड से हिंमतस्वामी, जयेन्द्र, अश्विन, सतीशभाई, सबके फोन आ रहे हैं कि हमें बहुत मज़ा आ रहा है। यूँ अमेरिका में जयेश, जीतूभाई, विष्णुभाई, राजा, विनेश, सब देख रहे हैं। इन सबके फोन आएं हैं और इन सबने गुरुजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, स्वामिजी, संतों और सर्व भक्तों को भावभरे जय स्वामिनारायण कहे हैं। सबको जय स्वामिनारायण।

प.पू. स्वामिजी

...काकाजी और पप्पाजी ने वचनामृत लास्ट सेक्शन के **अंत्य. ७ और ११** के मुताबिक जीवन जीया और सबको जीने के लिए प्रेरणा करते गए... **इनके जीवन में एक चीज थी कि धाम, धामी और मुक्त के लिए जीवन जीना चाहिए।** भगवान स्वामिनारायण–एक ऐसा अद्‌भुत, अद्‌भुत, अद्‌भुत, अद्‌भुत व्यक्तित्व धरती पर आया, जिन्होंने अद्‌भुत वरदान दे दिया– *अंतकाल जब होगा, मैं जरूर आपकी आत्मा को मेरे साथ लेकर धाम में पहुंचाऊँगा...* **प्रभु का एक स्वधर्म है रक्षा करने का...** भगवान स्वामिनारायण ने वचन दिया है– *पवित्र माँ जैसा संत–द्वारा मैं पृथ्वी पर रहूँगा...* हम तो बहुत भाग्यशाली हैं।

काकाजी और पप्पाजी ने मुंबई की धरती पर अद्‌भुत समाज का सर्जन किया। **आत्मबुद्धि और प्रीति** के सत्संग की शुरुआत... काकाजी और पप्पाजी ने ये वचनामृत सारे समाज में व्यापक कर दिया। भगवान का संबंध वाला, योगीजी महाराज का संबंध वाला, स्वामिनारायण का नाम लेने वाला ताड़देव की धरती पर कोई भी

आ जाए, उसके लिए दरबार खुला था... काकाजी का एक दृढ़ ठहराव था–'भक्त मेरे देह से ज्यादा प्यारे, भक्तों की सेवा प्रभु की सेवा है, शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज की सेवा है।' हज़ारों हरिभक्त आए और उनकी सेवा वचनामृत **अंत्य. ७ और ११** के मुताबिक दोनों भाइयों ने ताड़देव की धरती पर की। वचनामृत में लिखा है– ***देह और देह के सगे संबंधी जैसा प्यारा भगवान और भगवान का भक्तों को रखें, तो 'निर्विकल्प समाधि' का सुख हमें संसार में रहते हुए प्राप्त होता है...***

एक बात मैं बताता हूँ, अच्छी तरह से सुनना... काकाजी का बहनोई और सौराष्ट्र के चार हरिभक्त– दोनों एक ही ट्रेन से बॉम्बे सेन्ट्रल पर उतरे। काकाजी और पप्पाजी ने लक्ष्मण (ड्राईवर) को कह दिया था कि हरिभक्तों को गाड़ी में बिठा के लाना और बहनोई को टैक्सी में ले आना...

यह देख कर बहनोई सोच-विचार में डूब गए कि मेरे लिए टैक्सी और गाँव में से आए हुए हरिभक्तों के लिए गाड़ी? उसके दिमाग़ में यह बात खटक गई और वे दु:खी हो गए। टैक्सी और गाड़ी दोनों ताड़देव पहुँची। बहनोई और हरिभक्त ऊपर काकाजी के पास पहुँचे। बहनोई की मशीन गरम थी, सो उन्होंने काकाजी से कहा– आप में कॉमन सेन्स नहीं है कि मैंने आपको इतनी हेल्प की, मैं आपका सगा हूँ; मेरे लिये टैक्सी और इन हरिभक्तों के लिए गाड़ी? पप्पाजी वहां बैठे थे; वे बोले–

रावजीलाल, आप मेरे सगे हो, आपने हेल्प की, मगर ये अक्षराधिपति पूर्णपुरुषोत्तम नारायण जिनमें अखंड प्रगट हैं, ऐसे योगीजी महाराज के ये सेवक- सत्संगी हैं, वे ही हमारे सच्चे सगे हैं। हम लोगों ने तो एक गाड़ी और साथ में टैक्सी भी भेजी थी।

पर, बहनोई बहुत गरम था कि मुझे टैक्सी में क्यों लाए...

...मैं तो स्वामिजी के साथ १० साल रहा। लेकिन, **समग्र समाज में ताड़देव की धरती पर काकाजी-पप्पाजी का यह एक ऐसा परिवार था, जिसने देह और सगे-संबंधी से प्यारा अपना सत्संगी भाइयों को रखा था...** हम सबको इस प्रकार जीना चाहिए।

इतनी ठंडी में आप सब बैठे हो। गुरुजी की निश्रा में आप अति दिव्य सच्ची समझदारी से जीवन जी रहे हो; मुझे बहुत आनंद है... **मैं दिल से कहता हूँ कि गुरुजी को कोई स्वार्थ नहीं, किंचित् स्वार्थ नहीं है...** गुरुजी के प्रति आप सबकी प्रीति भी अद्‌भुत, अद्‌भुत है। एक ही सूचन मैं आप सबको करता हूँ। **गुरुजी को कभी, कभी, कभी भी मोहताज़ मत करना। बलाईंडली फोलो हीम, हीम, हीम एन्ड ओन्ली हीम। हमारी जिम्मेदारी है, भगवान और भगवान के भक्तों को विशेष प्यारा रखना...**

वचनामृत अंत्य. ७ के मुताबिक भक्तों के साथ प्रीति हो जाएगी, तो **'निर्विकल्प समाधि'** का सुख प्राप्त होगा। प्रभु आपको बुद्धियोग देंगे, आप सबको महिमा में ले जाएँगे। प्रभु आप सबको भक्तों और संतों की महिमा समझाएँगे...

मेरी बात सुनना–अष्टांग योग एक भगवान कृष्ण ने और दूसरा गोपाळानंदस्वामिजी ने सिद्ध किया है। पर, वचनामृत **अंत्य. ७ और ११** में प्रभु ने कहा है–भगवान के भक्त, देह और देह के सगे-संबंधी से विशेष भगवान, भगवदी और भक्तों को हम रखेंगे, तो **'निर्विकल्प समाधि'** के सुख की प्राप्ति होगी। ये

बात इसलिए बतलाता हूँ कि **आत्मबुद्धि और प्रीति** बढ़ाते रहना। जितनी **आत्मबुद्धि और प्रीति** बढ़ती रहेगी, उतना प्रभु के साथ, संतों के साथ और गुरुजी के साथ हमारा संबंध हो जाएगा और विशेष प्यारा जब रहेगा, तो १०० परसेन्ट कहता हूँ कि 'निर्विकल्प समाधि' के सुख की प्राप्ति होगी। तो, आज मेरा एक सूचन है **दिल्ली के सब हरिभक्तों के लिए काकाजी ने गुरुजी को यहाँ रखा... गुरुजी जैसे पवित्र संत के हृदय में हठ, मान और ईर्ष्या जैसी कोई चीज ही नहीं है। ईगो जैसी कोई चीज नहीं है। ऐसा उनका जीवन, नीट और क्लीन।** काकाजी और पप्पाजी का आशीर्वाद के फलस्वरूप वे भजनीक है, संबंध से जीवन जीते हैं। बापा और काका–'तू ही तू ही पुकार' के साथ जीते हैं। गुरुजी के जीवन में एक ही है कि बापा को-काका को याद करें...

अष्टांगयोग से जितना सुख शांति और आनंद प्राप्त होता है, ऐसा ही **संसार में होते हुए भी, निर्विकल्प समाधि का सुख, शांति और आनंद प्राप्त हो जाएगा... मुक्ति के पवित्र स्वाद का अनुभव होगा। शुभ विचार प्रगटेगा...** आपके जीवन में चेइन्ज आएगा। प्रभु आपको बल बुद्धि देंगे और गुरुजी आपके लिए प्रार्थना करेंगे। **एक निश्चिंतता का जीवन प्रगट हो जाएगा। बुरे विचारों - बुरे संकल्पों की पूर्णाहुति हो जाएगी...**

काकाजी ने गुरुजी को दिल्ली की धरती पर रखा है। शास्त्री महाराज का संकल्प था कि दिल्ली की धरती पर एक अद्भुत, अद्भुत समाज का सर्जन हो जाए... **गुरुजी का स्वभाव** थोड़ा कड़क है, मगर स्वार्थ नहीं है। उनका स्वभाव **जैसे गरम है, उससे अनंतगुणा आप सबके साथ प्रीति है।** इसलिए मैं कहता हूँ... गुरुजी, काकाजी और पप्पाजी के लाड़ले संत हैं, आप सबके प्यारे हैं... गुरुजी को कोई स्वार्थ नहीं है। यह दिल से मानना कि उन्हें कोई अपेक्षा नहीं है... **एक ही स्वार्थ है कि आप काकाजी, पप्पाजी और योगीजी महाराज का पनौते पुत्र बनो। एक ही स्वार्थ है कि आप भक्तों का भक्त बनो।** एक ही स्वार्थ है कि आप जब भक्तों की सेवा करोगे, भक्तों का भक्त दास बनोगे तो जैसा सुख, शांति और आनंद मैं प्राप्त करता हूँ, ऐसा काकाजी और पप्पाजी आप सबको देंगे... **आप सबका देह मंदिर और घर मंदिर बने, ऐसी भावना से दिल्ली की धरती पर काकाजी और पप्पाजी ने गुरुजी को रखा है...** बुरा देशकाल-बुरा विचार चला जायेगा। निर्विकल्प शांति, सुख और हृदय में आनंद प्रगट हो जाएगा... **दिल्ली के हरिभक्तों पर कृपा करके काकाजी ने गुरुजी को यहाँ रखा है...**

एक लड़का, जिसकी उम्र १२ साल की होगी, उससे मैंने पूछा–मंदिर में आते हो? लड़के ने एकदम सरलता से कहा कि मैं गुरुजी का लड़का हूँ और बनने की इच्छा है, मुझे आशीर्वाद देना। उस लड़के में ऐसे संस्कार हैं। गुरुजी के साथ कैसी सच्ची प्रीति-सच्चा लगाव होगा? मैं भी विचार में पड़ गया... अच्छा एक मंदिर भी बना दिया... भगवान स्वामिनारायण, भगवान कृष्ण, भगवान राम, भगवान शिवशक्ति, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, महंतस्वामी, डॉक्टरस्वामी, प्रमुखस्वामी महाराज, गुरुजी, दिनकरभाई सबके चरणों में प्रार्थना, अक्षरविहारीस्वामिजी सबके चरणों में एक ही प्रार्थना है कि आप सब लोगों के जीवन में वचनामृत **अंत्य. ७ और ११** सहज बने। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

22 फरवरी 2012 — प.पू. गुरुजी की 75वीं प्राकट्यतिथि सभा

प.भ. राकेशभाई शाह (दिल्ली)

...पिछले एक साल से हम सभी के दिलो-दिमाग़ पर एक ही चीज छाई हुई थी–प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार की हीरक जयंती और प.पू. गुरुजी का अमृतपर्व... वो तो मानो एक सपने की तरह आया और चला भी गया, पता भी नहीं चला। पिछले काफी महीनों से हम सभी किसी न किसी तरह से इस फंक्शन में जुड़े हुए थे, लिप्त थे। कोई ड्रामा की प्रॅक्टिस कर रहा था; तो कोई कल्चरल इवेंट की प्रॅक्टिस कर रहा था, तो कोई मॅनेजमेंट में लगा हुआ है। अपने काम के अलावा, सभी किसी न किसी सेवा में लगे हुए थे, सो टाईम कहाँ जाता था, पता ही नहीं चलता था। अब जब उत्सव हो गया है, तो खालीपन-सा महसूस होता है कि अरे! शाम हो गई, अब क्या करें? हम सभी ने देखा, एक्च्युली **प.पू. गुरुजी के संकल्प से यह फंक्शन बहुत अच्छा हो गया।** जब इसकी तैयारी हो रही थी, तो अलग-अलग विभाग के मुक्त महसूस करते थे कि अपनी गाड़ी कैसे दिल्ली पहुंचेगी? लेकिन **सारी चीजें प.पू. गुरुजी ने अपने संकल्प से पार उतार दीं। कहने की बात नहीं है, अनुभव किया है।**

...नए साल की शुरुआत में जब महापूजा हुई, तो **प.पू. गुरुजी ने कहा था कि महाराज हमें खुले हाथों से देने के लिए बैठे हैं।** पूरे फंक्शन में हमें यह महसूस हुआ कि महाराज ने कहीं भी कोई अड़चन आने नहीं दी। **हमारे अपने हिसाब से–अपने दिमाग़ से इस इवेंट का मॅनेजमेंट करने जाते, तो यह पॉसीबल ही नहीं होता।** यह तो हमारे 'इतने ज़ीरो' के आगे प.पू. गुरुजी ने 'वन' लगा दिया, तो जो है उसकी क़ीमत बहुत ज्यादा हो गई...

हममें से तो सभी लोग सेवा में लगे हुए थे। सारे लोग शायद फंक्शन देख भी नहीं पाए होंगे। तो एक प्रार्थना यह है कि जैसे इस साल गर्मियों में धुन का कार्यक्रम होगा, उसमें पूरा एक हफ्ता हम इस उत्सव की विडियो देखें, तो शिविर भी हो जाएगी... एक रिविज़न भी हो जाएगा...

प.भ. भद्रायुभाई (दिल्ली)

...३, ४ और ५ फरवरी को गुणातीत समाज यहाँ इकट्ठा हुआ, पूरा योगी परिवार-गुणातीत कुनबा। **दीदी के शब्दों में इन तीन-चार दिनों के दौरान दिव्यता का एक अलग-सा माहौल सभी ने महसूस किया। एक-दूसरे के साथ सब इतने ओत-प्रोत थे कि ऐसा लग रहा था कि जैसे काकाजी और पप्पाजी का संयुक्त परिवार यहां पर इकट्ठा हुआ है।** पर, अभी जैसे राकेशभाई ने कहा कि वो काकाजी और गुरुजी का संकल्प काम कर गया है। **कुटुंबभाव से जुड़े हुए परिवार की योजना जो उन्होंने की थी, वो साकार होती हुई दिखाई दे रही थी।** इवन हमारे सेल काउंटर पर बाहर से आए हुए जितने भी हरिभक्त आते थे, वे इतने अपनेपन से जुड़ जाते थे कि लगता ही नहीं था कि वे बाहर से आए हैं। सभी का व्यवहार एक फेमिली मेम्बर्स जैसा था...

दिल्ली में हमारे जीवन का मेरे ख्याल से यह सबसे बड़ा फंक्शन था। सेवक थोड़े, व्यवस्थाएं बहुत अधिक डिमांड कर रही थीं। पर, सेवा करने का यह जो हमें मौका मिला था, उसे कोई भी खोना नहीं चाहता था। जैसा-तैसा करना होता, तो हम सब शायद बड़े टास्क को भी कर लेते। लेकिन **जैसा-तैसा तो गुरुजी को मंजूर नहीं है।** सब अच्छे से अच्छा चाहिए, सेवा अच्छे से अच्छी हो। **सब मिल जुल कर, एक-दूसरे का स्वीकार करके करें। सुहृद्भाव का खंडन उन्हें बर्दाश्त नहीं।**

वे कहते – ***जहां खंडन हुआ, की गई सारी सेवा पानी में। लेकिन ये भी सब प्रभु ने करवा लिया।***
मुझे लगता है सबने इस चीज का खास ध्यान रखा है कि कहीं पर भी हम एक-दूसरे की टीका-टिप्पणी में या कहीं भी सुहृद्भाव का खंडन होता हो, ऐसा न हो... **वाकई, गुरुजी ने ये सेवा करवा ली – ऐसा अनुभव किया...**

आज **गुरुजी के चरणों में यही एक प्रार्थना** है कि यह जो **ऐतिहासिक पर्व** हमारे जीवन में आया, उसकी **फलश्रुति के रूप में कहो, बख़्शिश के रूप में कहो हमें एक दिव्य दृष्टि दे दो। हमारा आपसे एक ऐसा संबंध बन जाए,** जैसा आपने योगीबापा और काकाजी के साथ खुल्ला व दृढ़ संबंध किया। **स्वरूपों के आगे बिल्कुल न्यून और वे ही सर्वस्व...** ऐसे अर्चिमार्ग की ओर आप ही कृपा करके हमें ले जाएं, ऐसी प्रार्थना।

प.भ. चांदप्रकाशजी (दिल्ली)

... सबसे पहले तो मैं गुरुजी को उनके जन्मदिन पर शत्-शत् मुबारक पेश करता हूँ और उनकी जितनी लंबी से लंबी आयु हो, वो हम सब हरिभक्तों के लिए बहुत फायदेमंद होने वाली है।

देखो, आज गुरुजी ने मुझे कहा मैं कुछ बोलूं। आप यह सुनकर हैरान होंगे कि ३, ४, ५ फरवरी के फंक्शन में मैं बोलना चाहता था। लेकिन, मैं कुछ संकोच कर गया और मैंने रिक्वेस्ट नहीं की। लेकिन मेरे मन में हसरत-सी थी कि मैं क्यों नहीं बोला। शायद मेरी यह भावना गुरुजी समझ रहे होंगे, इसलिए उन्होंने मुझे आज यह मौका दिया है।

आप सबको पता ही है कि गुरुजी दिल्ली में नहीं आना चाहते थे, वे भी इस बात को स्वीकार कर चुके हैं। लेकिन काकाजी के आगे किसी की चलती नहीं। उन्होंने इन्हें खींच लिया और फिर ऐसा खींचा कि **ये तीन-चार दिन का जो जलवा-उत्सव हुआ, उससे मैं भी हैरान हूँ।**

आप सब लोग भी हैरान होंगे कि **बड़ी से बड़ी इवेन्ट मॅनेजमेंट कंपनियां भी इतने बड़े पैमाने पर ऐसे फंक्शन नहीं कर पातीं।** ये तयशुदा बात है, मगर **यहाँ** जिधर देखता हूँ, उधर **'तू ही तू' है,** ऐसे सब लोग लगे हुए हैं। **किसी को कोई भेदभाव नहीं, किसी को कोई फिकर नहीं।** एक-दूसरे को पूछते हैं कि आपने खाना खाया कि नहीं खाया। ऐसी भावना काकाजी ने गुरुजी के थ्रू हम सब में कूट-कूट कर भर दी है और फिर **काकाजी** ने कहा था – ***देखो, मुकुंदजीवन तुम चिंता मत करो, मैं तुम्हारे साथ हूँ।***
मेंहदी हसन की एक पाकिस्तानी गज़ल है उसके बोल हैं–
'जिंदगी में तो सभी प्यार किया करते हैं, मैं तो मरकर भी मेरी जान तुझे चाहूंगा।'
स्थूल रूप से काकाजी नहीं रहे, मगर उन्होंने गुरुजी के प्रति ऐसा हिसाब रखा कि आज हम सब उनमें काकाजी को देखते हैं और ऐसा ये मंदिर मेरे ख्याल से हर लिहाज से संपन्न हो गया कि इसकी व्यवस्था में किसी तरह की कोई जरूरत नहीं है, ऑटोमेटिक सब चीजें आती चली जाती हैं।

जब काकाजी के साथ गुरुजी की बातचीत हुई, तब मैं भी था। गुरुजी थोड़े असमंजस में थे कि मंदिर कैसे होगा और काकाजी ने मेरी हाज़िरी में कहा था– *मुकुंद तुम क्यों परेशान होते हो, कोई सामने से आएगा...* और... वो सामने से जो आए, वो आपके समक्ष बैठे हैं–ये मल्कानी साहब। बाकी लोग भी बहुत जुड़े, लेकिन सबसे पहले इन्होंने अपना हाथ आगे बढ़ाया और आज यह सारा मंदिर आप लोग जो देख रहे हो, इसे देखकर तबियत खुश हो जाती है। यहाँ हर आदमी को काकाजी की तरफ से कुछ न कुछ मिला होगा। **काकाजी की शक्ति-मॅग्नेटिक पर्सनालिटी ऐसी थी कि वे जिसे एक बार देख लेते थे, वो उनके पीछे हो लेता था।**

मैं भी १९७५ से **काकाजी** के साथ जुड़ा हूँ, उनसे मुलाकात हुई। उसके बाद जब भी आते, तो मैं उनसे मिलने के लिए भागा-भागा चला आता था। **वे इतनी सादगी से-तरीके से प्यार करते थे कि लगता ही नहीं था कि ये संत हैं या बाहर के आदमी हैं।** मेरे भतीजे की डेथ हो गई, सो मैं मुंबई गया। उस रोज वहाँ जाने के बाद मैं काकाजी के पास ताड़देव गया। मैंने उन्हें ज़िकर किया कि काकाजी ऐसे-ऐसे हो गया। काकाजी बोले–

चलो, तुम्हारे भाई को शोक प्रगट करने के लिए मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ।

इतने बड़े संत, उन्हें दुनियाभर के और भी काम थे, मगर मेरे साथ उठकर चल दिए। इसी तरह जब हमारा जोईन्ट बिज़नेस था, तब पैसों की थोड़ी तंगी हुई। मैंने अलग बिज़नेस किया। मैंने काकाजी से कहा–पैसों की थोड़ी दिक्कत हो रही है, तो वे बोले–

कोई बात नहीं। तुम ऐसा करो कल सुबह ७ बजे आ जाओ। मैंने मिनिस्टर से तुम्हारी एपोइंटमेंट ले ली है, आठ बजे चलेंगे।

यह अशोकविहार–१०३ कोठी की बात है। मैंने कहा, ठीक है। तब मिनिस्टर ऑफ फाइनान्स सेल, मि. पटेल हुआ करते थे । वे तीन मूर्ति मार्ग पर रहते थे। मैं सात बजे आ गया। काकाजी मुझे उनकी कोठी पर ८ बजे तक ले गए, सारी बातचीत कराई। बताइए ऐसे संत जो हैं, उनके पीछे कौन नहीं लगेगा। मेरे ख्याल से– **जब तक वे रहे, उनके साथ मेरे ताल्लुकात रहे ही रहे और वे चले गए हैं, उसके बावजूद भी मैं उन्हें भूलता ही नहीं... तो, ऐसे काकाजी ने हमें गुरुजी दिए हैं।** हम सबका कल्याण होने वाला ही है, इसमें तो कोई दो राय नहीं है...

प.भ. काशीरामभाई राणा साहेब (सुरत)

...मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली मानता हूँ। मुझे पता नहीं था कि आज हमारे प.पू. गुरुजी का हिन्दु तिथि के हिसाब से जन्मदिन है। मैंने ऐसे ही सुबह सूरत से गुरुजी को फोन किया कि मैं अपने काम के लिए शाम की फ्लाइट से दिल्ली आ रहा हूँ। तो, गुरुजी ने बड़ी खुशी से कहा– *आज तो तिथि के मुताबिक मेरा जन्मदिन भी है।* मैं भी बहुत खुश हो गया। फिर गुरुजी ने कहा– *आप एयरपोर्ट से सीधे यहां आ जाना।*

कभी-कभी हमारे जीवन में ऐसी घटनाएं घटित होती हैं। मैंने न तो इसकी कल्पना की थी। लेकिन न जाने क्यों **गुरुजी का जब नाम लेते हैं, तब कोई न कोई खुशहाली, कोई न कोई आनंद, ऐसा दिन हो या ऐसा माहौल हो, ऐसा हमें महसूस होता ही है...**

यहां पर एक बहुत ही सुंदर शिखरबद्ध मंदिर खड़ा हो गया। सबने हंसते-हंसते अपनी सेवाएं दीं। आप सबको यहां पर मौका मिल गया। प.पू. काकाजी का जो साक्षात्कार दिन और इसके बाद गुरुजी का जन्मदिन वो भी पिचहत्तरवां अमृत महोत्सव – एक साथ करने के उपलक्ष्य में ये सब कुछ हुआ, विराट कार्य हुआ। मंदिर का काम और साथ में ये बड़े उत्सव का काम करना। **हम तो भगवान स्वामिनारायण-काकाजी और गुरुजी के हैं ही, सो हम तो कहेंगे कि बहुत-बहुत अच्छा काम हुआ।** लेकिन **जिन्होंने भी देखा, उन्होंने स्वीकार किया कि इतने कम समय में यह बहुत बड़ा काम करना इम्पोसिबल था।** लेकिन वो संभव बन गया... पर मन में सवाल उठता है कि यह कैसे हुआ ? आपने सुना होगा **गुरुजी** ने उसी दिन हमें कहा था कि –

ऐसी सेवा करना कि जिससे प्रसन्नता मिले। भरोसा किया तो, ऐसा भरोसा होना चाहिए कि उसमें से कुछ परिणाम निकले...

यहां न तो कोई स्वामिनारायण का नाम जानता था, न उन्हें कोई पहचानता था। ऐसे क्षेत्र में काकाजी ने गुरुजी को बहुत बड़ी जिम्मेदारी दे दी। गुजरात में तो यह बहुत सरलता से हो जाता, लेकिन यहां तो जैसे कच्चे घर में जाना... तब भी काकाजी के वरद् हस्त, वरद् नज़र और गुरुजी के संकल्प से बन गया। इससे कई सेवक भी खड़े हो गए और **जहां पर कुछ नहीं था, आज मानो जैसे खेत में हरियाली हो गई। खेत पर काम करने वाले फार्मर खुश होते हैं, ऐसे गुरुजी ने जो काम किया वो भी ऐसा ही चमत्कारी काम है। आम आदमी-सामान्य मानव यह नहीं कर सकता, लेकिन गुरुजी ने करके दिखाया** और यही मैं कहना चाहता हूँ।

काकाजी का साक्षात्कार दिन और गुरुजी का अमृतमहोत्सव का हमने तीन-चार दिन जो पूरा माहौल देखा, उसमें सेवकों का जरूर बहुत बड़ा योगदान भी है; और लोगों का भी इसमें योगदान होगा, लेकिन जैसे कहते हैं न सारी आफत में जैसे कृष्ण भगवान ने एक उंगली से गोवर्धन पर्वत को उठा लिया था और बाकी सब ग्वालों ने उसमें टेका दे दिया, ऐसे ये सब काम चाहे उत्तर भारत में स्वामिनारायण भगवान का संदेश पहुंचाना हो – चाहे इतना सुंदर टेम्पल बनाना हो और इतना बड़ा समैया करना हो, वो गुरुजी के संकल्प के बल का परिणाम है। जैसे गिलहरी ने लंका विजय में कुछ न कुछ योगदान दिया था, वैसा सब सेवकों ने, हमारे सब आत्मीय जनों ने काम किया और राम भगवान ने वैसे करने दिया। वर्ना वो ऐसे नहीं थे, जो नहीं कर पाते। भगवान राम की ऐसी कल्पना थी कि एक ऐसा नवनिर्मित समाज निर्मित हो, जहाँ कोई दुष्ट-असुर न हो। एक ऐसा सर्व संपन्न सुख-शांतिमय समाज हो, उनका यह विचार था; वो अपने आप न करते हुए अन्यों को उसके लिए प्रोत्साहित किया। आख़िर में लंका पर विजय प्राप्त की और मां सीता को भी लाए। रावण जैसे दुष्टों का नाश भी किया। यही उदाहरण मैं गुरुजी के लिए देता हूँ। गुरुजी ने हमें ऐसी क्षमता दी, हमें ऐसा पात्र बनाया। ऐसे गुरुजी के जन्मदिन पर आए हैं, तो हमें कितनी ख़ुशी होगी...

एक अच्छा-सा मंदिर उन्होंने यहां निर्मित किया। **आज के ज़माने में मंदिर बहुत से लोगों को अप्रस्तुत लगता होगा, क्योंकि कोई कुछ खोलता है, कोई चिकित्साल्य खोलता है, उसकी आवश्यकता भी है। लेकिन, आदमी को आदमी बनाने के लिए या आदमी, आदमी ही रहे, ऐसा माहौल तैयार करने के लिए –** उससे अधिक भगवान स्वामिनारायण, श्री गुणातीतानंदजी, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी और हमारे गुरुजी जैसे **संत सदा हमारे सामने रहें, उसकी जरूरत है।**

क्योंकि आज ज़माने में **कोई रोल मॉडल-आदर्श तो चाहिए न... मंदिर इसके लिए जरूरी है।** ये अलग बात है कि आज अन्य लोगों ने मंदिरों की ऐसी हालत बना दी कि किसी को उस पर भरोसा नहीं और... जो उसमें से मिलना चाहिए, वो मिलता नहीं। लेकिन **हमारे ऐसे कई मंदिर हैं कि जिसमें से हमें जीवन कैसे जीना चाहिए, इसका बोध मिलता है।**

तो आज ज्यादा तो मैं क्या कहूँ? गुरुजी जैसी हमारी तो नज़र है नहीं। लेकिन भगवान ने थोड़ी भी हमें जो बुद्धि दी है, उससे गुरुजी को पहचानें और वे सनातन काल तक जीएं– यही कामना करें... हमें कितनी खुशी है कि ७५ साल के हैं, फिर भी एकदम स्वस्थ...

इस मंदिर से ऐसा संदेश जाए कि गुरुजी ने हम पर जो भरोसा रखा, वो हम सार्थक कर सकें। हमें देखकर उन्हें लगे कि मेरा किया हुआ भरोसा आज संपन्न हुआ और इसीलिए उस दिन कहा था कि **हम ऐसी कोशिश करेंगे कि जिसने हम पर भरोसा किया, उन्हें हम राजी रख सकें।** सुनने में यह बहुत सरल है, पर करने में बहुत कठिन है, लेकिन वो हो जाएगा। गुरुजी की नज़र हुई, तो हो जाएगा। इनका आशीर्वाद मिला है, तो हो जाएगा। इसीलिए तो हम उनके प्रति हमेशा ऐसी आस्था-भरोसा रख कर यहां आते हैं और इसका हमने चमत्कार देखा हुआ है। मैंने तो जीवन में गुरुजी के दो-चार चमत्कार देखे हैं, लेकिन अभी-अभी ये अमृत महोत्सव और साक्षात्कार दिन मनाया, उसकी मुझे तो कल्पना ही नहीं थी। मैं तो जब काम जारी था, तब भी आता था, तो देखकर पूछता था कि गुरुजी यह कैसे होगा? पर, ये तो इतना सुंदर लगता है, मानो बहुत बड़ा तीर्थ बनाया है। **गुरुजी ने इस मंदिर को एक तीर्थ के रूप में परिवर्तित किया है** और ऐसे गुरुजी हमेशा हमारे साथ रहें, हम उनके पास रहें और उनके दो-चार शब्द हर रोज हमारे कान में अमृत घोलते रहें, तो जीवन सार्थक हो जायेगा। इन्हीं शब्दों के साथ सबको जय स्वामिनारायण।

पू. पुरी अंकल (दिल्ली)

... आज कितना बड़ा दिन, **यूँ कहा जाए कि हमारे लिए दीवाली का दिन!** अभी राणा साहेब ने मन को छू जाने वाली बहुत अच्छी-अच्छी बातें कीं। उसी संदर्भ में मैं यह कहना चाहूंगा कि हम लोग कितने भाग्यशाली हैं कि **बिना किसी रिजर्वेशन के गुरुजी हमारे लिए एससेबल है,** सुबह छः बजे से रात के ग्यारह-बारह बजे तक। उसके बाद भी सेवकों को यह सूचना दी हुई है कि वे आराम में हों और यदि किसी हरिभक्त का मॅसेज या फोन आए या उसे मेरी जरूरत हो, तो मुझे जगाया जाए। कितनी बड़ी संतुष्टि-कितनी बड़ी बात, यह अपने मन में विचारने योग्य है।

साथ ही यह भी सोचें कि गुरुजी तो खुद तीर्थ हैं और तीर्थ को मंदिरों की क्या जरूरत है? गुरुजी ने इस मंदिर का निर्माण करवाया है, तो किसके लिए? हम लोगों के लिए ही न! गुरुजी सुबह से शाम तक जो परिश्रम उठाते हैं, वो किसके लिए? वो हम सब लोगों के लिए। तो आज का दिन भगवान को धन्यवाद और प्रार्थना करने का दिन कि **हे प्रभु! हे काकाजी महाराज! हमारे गुरुजी को खूब-खूब दीर्घायु दें – स्वस्थ रखें, ताकि हम उनकी सेरेछाया में अपना जीवन खुशी-खुशी बिताते रहें...**

कितनी ख़ुशी की बात कि हम लोगों के लिए **गुरुजी एक गाइडिंग फोर्स हैं।** वर्ना साधु को तो यही होता है कि भगवान का भजन करो, व्रत रखो, धार्मिक अनुष्ठान करो। लेकिन जब-**जब हम गुरुजी के पास आते हैं, तो हमारी संसारिक विपदाएं-प्रॉबलम्स पर भी जो गाइडन्स, आशीर्वाद हमें मिलते हैं, वो एक रेयर बात है...**

जब इस फंक्शन की बात उठाई गई, तो हमारे मन में कभी-कभी शंका आती थी कि कैसे करेंगे? क्या होगा? गुरुजी के हर फंक्शन में **इंद्र देवता** तो हाज़िर हो ही जाते हैं। **मैंने गुरुजी के जन्मदिन का ऐसा कोई फंक्शन एटेन्ड ही नहीं किया, जिसमें वे आए न हों।** बड़ी दुविधा थी कि बाहर से भी हमारे भाई-बहन पधारने वाले हैं और... अबकी बार करीब दो महीने खूब ठंड पड़ी। लेकिन **उत्सव के समय मौसम ने जो अपना सहयोग दिया, वो भी एक करिश्मा था।** पांच तारीख को जब गुरुजी का जन्मदिन हम मना रहे थे, तो बाहर इंद्रदेव गड़गड़ाहट के साथ खूब आनंद में थे। मैं तो यही मानता हूँ, उनकी तरफ से वे तालियां बजा रहे थे। खूब ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ के साथ बादल गरज रहे थे, पर वे गरजते हुए निकल गए!

तो आज के दिन भगवान स्वामिनारायण से प्रार्थना कि प्रभु आप गुरुजी को निरामय, स्वस्थ ऐसे ही हंसती हुई मूर्ति हमारे दिल में विराजमान रहे, ऐसी प्रार्थना।

पू. मल्कानी अंकल (दिल्ली)

आज **काशीराम** राणा बहुत अच्छा बोले। वैसे तो वह हमेशा ही अच्छा बोलते हैं, पर **आज उन्होंने हमें बहुत गहरी बात बताई, उसके लिए मैं निजीतौर पर उन्हें धन्यवाद देता हूँ।**

इस वर्ष फरवरी महीना विशेष बना, जब हमने चार दिन प.पू. गुरुजी की जन्मजयंती मनाई। मैं हमेशा कहता हूँ कि गुरुजी का जन्मदिन हर रोज़ होता है। मुझे नहीं पता कि मेरी बात पर कितने लोग यक़ीन करते हैं। पर रोज़ सुबह, बिना चूके, मेरे मन में बहुत-सी चीज़ें महसूस करते हुए, बहुत स्ट्रॉन्ग वाईब्रेशन्स के साथ, मैं गुरुजी से 'जय स्वामिनारायण' कहता हूँ, क्योंकि मेरे लिए **'गुरुजी' शब्द अपने आप में ही बहुत मांगलिक और दिव्यता से भरपूर है।** हम अपने माँ-बाप, गुरु के बारे में इतनी बात करते हैं, पर उनकी महानता को कितनी बार महसूस करते हैं? मैं इस विचार में बहुत दिनों से काफी सालों से हूँ। तो, जब रोज़ सुबह मैं गुरुजी से **'जय स्वामिनारायण'** कहता हूँ, तो शब्दों में नहीं, पर खामोश रहकर उन्हें धन्यवाद कहता हूँ... **जो यहाँ इनकी सेरेछाया में बैठे हैं, इस समय उन सभी का नसीब है कि गुरुजी की ग्रेस का प्रभुत्व है।** ग्रेस से मेरा मतलब है **'डिवाईन ग्रेस**।'

हम सभी को कभी न कभी, किसी न किसी तरीके से, इस कृपा का लाभ हुआ है। पर, हमें हमेशा उस ग्रेस का कितना एहसास रहता है, वह मुझे नहीं पता। मेरे जीवन में गुरुजी पहले संत थे, जिन्हें मैं मिला। वो मेरी अच्छी किस्मत थी। इतने समय बाद भी, सब उतार-चढ़ाव के साथ मुझे लगता है कि केवल प्रभु और गुरुओं की कृपा से मेरी किस्मत-सौभाग्य ऐसा रहा, जो आज **भी प्रगति** कर रहा हूँ; जो मैंने देखी है या अनुभव की है। यह **स्थिर या निष्क्रिय नहीं है। गुरु की कृपा के मुताबिक वह बढ़ती है।**

आज का दिन और फंक्शन के वो चार शानदार-महान दिन भी उनकी कृपा का ही वर्चस्व था। व्यक्तिगत रूप से, मैं पहले से ही चमत्कारों से बहुत प्रभावित होता था। **यह पूरा फंक्शन भी गुरुजी के चमत्कार का ही परिणाम था। कोई शोर नहीं, कोई अनहोनी नहीं, संपूर्णरूप से एकता थी।**

मैंने बहुत हिन्दी मुवीज़ और सिरीयल देखे हैं, जिनमें दिव्य पुरुष दिखाए जाते हैं। वे दिव्य होते हैं, परंतु उनमें मानवीय दोष और वासना प्रबल होती हैं। आजकल मैं एक सिरियल देखता हूँ- **'देवों का देव-महादेव'। पर, महान निपुण या दैवी जिसे कहे जाते हैं, वे भावुकता-अंहकार या भावना में बह जाते हैं।** परंतु **यह चार दिन का फंक्शन एकदम अलग–गुरुजी की दिव्यता दर्शाता था।** हर पल के मार्गदर्शक थे। इस **सब में प.पू. आनंदी माई की भूमिका-योगदान धन्यवाद देने योग्य है। इनकी मेहनत, विनम्रता, मुस्कान ने चमत्कार किया, फंक्शन की तैयारी के समय और उसके बाद भी।** मैंने यह पहले भी बताया है। आज सब वक्ताओं ने गुरुजी के बारे में काफी बोला है और मैं उसके आगे कुछ नहीं कह सकता। सिर्फ इतना कह सकता हूँ- धन्यवाद! धन्यवाद! धन्यवाद! गुरुजी, हम सब आपको प्यार करते हैं। जय स्वामिनारायण।

प.पू. गुरुजी

... आप सबने जो बातें कीं, उससे एक बात की **मुझे खुशी है कि चलो हमारे दिमाग़ में ये बात बैठ तो गई कि हम नहीं करते, प्रभु सब करते हैं।** अकसर हम यह बोलते हैं, लेकिन **यह उत्सव तो महाराज ने जिस कदर पार उतारा है, उससे मानना ही पड़े कि हक़ीक़त में हम यह कर ही नहीं सकते।** जैसे अभी किसी ने बात की कि कौशिक ने कहा कि मैं ऐसा बीमार जैसा था, तो सोच रहा था कि सेवा कैसे करूंगा? लेकिन महाराज ने करवा ली–हक़ीक़त में करवा ली। आप लोग बोलते हो कि गुरुजी ने करवा ली। पर **गुरुजी की हालत भी उन दिनों ऐसी ही थी।**

हमारा फंक्शन २ तारीख से शुरु हुआ, मुझे तकरीबन ३१ से हार्ट के पास पेइन होने लगा, पर वो थोड़ा खिसकता रहता था। तो मुझे यह तो पक्का हुआ कि ये गॅस का है, हार्ट का तो प्रॉबल्म नहीं लगता। फिर भी, मैंने सोचा–मैं तनिक भी कहूंगा कि मुझे यहां थोड़ा पेइन हो रहा है, तो सबका टॅम्पो मर जायेगा। आप सब जानते हैं और मैंने बीच में ज़िकर भी किया था कि मुझे ९९ बुख़ार हो, तो आप लोगों को १०४-१०५ डिग्री बुख़ार हो, इतनी मैं हायतौबा करने लग जाऊँ। पर, मैंने सोचा कि ज़रा भी इशारा दूंगा, तो मुसीबत हो जाएगी। सबका मूड ख़राब हो जाएगा। डॉ. नीलम भी आई हैं, वो सुनेंगी तो मुझे हॉस्पीटल में ही डाल देंगी। सो, मैंने सोचा कि चुप बैठे रहो। बाकी मैं कभी तनिक भी बुख़ार क्या, अरे! थोड़ा सिर दर्द हो, तो चुप रह ही नहीं सकता। **यह महाराज ने करवा लिया** और फिर बाद में पता लगा कि वह हरपिस था। आप लोगों को ख्याल होगा–५ तारीख को मैं एक तरफ मुड़ कर बैठा था, क्योंकि कपड़ा भी अड़े तो दर्द होता। कइयों को ऐसा फील हुआ, जो बाद में मुझे किसी ने कहा भी कि सारी सभा तो बहुत अच्छी हुई, पर आख़िर में आप, साहेब और स्वामिजी आपस में जो बातें कर रहे थे न, वो मुझे बहुत पसंद आई। मैंने कहा भी कि अरे! वो मैं सभा में बोल रहा था,

न कि आपस में बात कर रहे थे। पर, मेरा बेठना ऐसा था कि उन्हें लगा कि गुरुजी सभा में साहेबजी और स्वामिजी के साथ बात कर रहे थे।

दूसरी बात देखो–**चार दिन प्रभु ने मौसम ख़ुशनुमा रखा**, न तो इतनी ठंड, न ही इतनी गर्मी, न बारिश। **वर्ना प्रॅक्टिस किन संजोगों में हुई है-सब जानते हैं। प्रेक्षक सिकुड़ जाते थे।** मैं कई बार सोचता भी था कि इस ठंड में ये लोग कैसे प्रॅक्टिस करते हैं, लेकिन सभी ने खूब लहेज़त से प्रॅक्टिस की। बेशक चाय-नाश्ता के जलवे भी होते रहते थे, पर वो मायने नहीं रखता। एक सेवा की भावना थी।

मेरा नेचर कह दो, कुछ भी कह दो; मैंने हमेशा हर चीज को मजे में लिया; क्योंकि मजे में नहीं लेते हैं, तो टेन्शन खड़ा हो जाता है। इतनी रौनक-शौनक ये सब आज दिखाई देता है, लेकिन **जब हम दिल्ली आए, तो यहां कोई था ही नहीं।** नंदाजी ने हमें बुलाया, काकाजी ने कहा था कि आप वहां जाना, नंदाजी ने 'भारत साधु समाज' में एरेंज किया है और नवलबा की एक फेमिली है। नवलबा के यहां सिर्फ लेडिज़ ही थी, कोई जेंट्स था ही नहीं। सो, इनके यहां कुछ ज्यादा आना-जाना होता भी नहीं था। १०-१५ दिन के बाद एक चक्कर मारते कि–चलो नाश्ता-वास्ता कर आएँ, यूं जाते थे। आप विचार करना हमने ऐसे दिन भी मजे से काटे हैं। उस समय काकाजी हमें ७०० या १००० रुपये वहां से भेजते थे। लेकिन मेरा हाथ हमेशा खुला जैसा ही रहा हुआ है।

एक बार पैसे एकदम खत्म ही हो गए। दूसरे दिन दूध कैसे लाना, वो प्रॉबल्म हो गई। नवलबा के यहां जाने के लिए रिक्शा के पैसे तो चाहिए न। वो भी नहीं थे। हम लोगों ने खूब विचार किया कि करें क्या, एक पैसा भी नहीं है। फिर हमने सोचा कि चलो, नंदाजी को कहें कि साहेब पैसे दो। आज मुझे काशीराम राणा को कहना हो, तो बहुत सोचना पड़े कि वे सोचेंगे कि ये कैसे हैं? कोई है ही नहीं इनका क्या यहाँ? हम लोग साधु समाज से (सरदार पटेल मार्ग से) तुगलक रोड तक चलते-चलते नंदाजी के यहां गए और थोड़ी देर बैठे। मेरा नेचर भी आप जानते हो, बड़ी मुश्किल से जुबान खुली–*साहेब थोड़े पैसे चाहिएँ।*

उन्होंने पूछा– *कितने चाहिएँ?*

मैंने कहा– *दो-तीन सौ, फिर तो काकाजी भेज देंगे।*

इनका पी.ए. था–मनसुखभाई, उसे इन्होंने कह दिया– *स्वामी को मेरे एकाउंट से ३०० रुपए दे दो।*

वे तो कह कर चले गए। पर, राणा साहेब जानते हैं कि सेक्रेटरी कैसे होते हैं?

वो बोला– *अरे! आपको पैसे चाहिए थे, तो मुझसे कहना था। तुम सीधा साहेब के पास पहुंच गए, वे तो कह कर चले गए, इनके पास बैंक में कोई पैसा थोड़े रखे हुए हैं।*

हम लोग भी सेक्रेटरियों को समझते थे। मेरा भी दिमाग़ तिकड़मबाज तो है ही। मैं समझ गया कि इसे पैसे नहीं देने हैं; पर, वो हमारा नंदाजी के साथ का रिलेशन जानता नहीं है या जानता होगा तो सोचता होगा कि अभी इन संतों को क्या पैसे देने हैं? वापिस तो आने वाले हैं नहीं। मैंने सोचा–अब इसका क्या करें।

मैंने कहा– *साहेब के एकाउंट में पैसा नहीं है ? रुको, मैं साहेब को कहकर आता हूँ कि साहेब पैसे तो हैं नहीं।*

मुझे पता था कि ये खाली-खाली कह रहा है, पैसे-वैसे तो अभी दे सकता है।

तो कहता है– *साहेब के पास मत जाओ, मैं कुछ करता हूँ।*

आख़िर उससे ३०० रुपये लेकर गाड़ी आगे चलाई, आप विचार करो। लेकिन ऐसे में भी, जैसे प्रेमस्वामी वगैरह की मैंने बात की, हम लोग खूब मजे से रहे।

...पर कई बड़े संत बोल जाते हैं न, उन शब्दों का हमें भरोसा नहीं होता है। **काकाजी** ने लिखा हुआ है कि **मंदिर का काम देवी-देवता आकर कर जाएँगे। आज हम सब यह अनुभव कर रहे हैं कि चार महीने के अंदर इतनी तोड़न-फोड़न, क्लॅडिंग... मंदिर की एक भी दीवार ऐसी नहीं होगी, जो टूटी न हो... लेकिन ये महाराज ने हमें अनुभव कराया कि सारा कुछ वे करते हैं।** मैं भी कई बार बाहर देखने निकलता था, तो मुझे भी होता था कि यह संघ काशी कैसे पहुंचेगा ? पर एक बात– राइट फ्रॉम १९५४ से हम देखते हैं, जैसे पप्पाजी–काकाजी बोलते कि ११.५९ मिनिट पर काम तो हो ही जाता है। मैंने भी सोचा काम महाराज को करना है, हम जितना यह सोचते रहेंगे, उतना दुःखी होंगे–टेन्शन में जाएँगे। इससे अच्छा है कि अंदर जाकर सोफे पर बैठ जाओ, भजन किया करो। जो होना होगा, होता रहेगा और आख़िर भगवान के भरोसे पर रहे; तो **भगवान का एक कायदा है। यूं तो वे स्वतंत्र हैं, पर अगर कोई उनका भरोसा करता है, तो वे उसका भरोसा तोड़ नहीं सकते।** बस, ये सारी चीज हमारे जीवन में बनी हुई है।

दूसरी एक बहुत ख़ुशी की बात यह हो गई कि हमने जो एप्रोच रखा हुआ है, वह एकदम सही ढंग पर है। इसका इस बार पूरा एहसास हो गया। आप लोगों ने भी देखा होगा–**स्वामिजी** ३ तारीख की सुबह आए; तो यहां सारे कलश रखे हुए थे। कलश देखते ही स्वामी मुझसे कुछ बात करने लगे थे। ये **आनंदी दीदी** ने स्क्रीन पर देखा होगा कि स्वामी, गुरुजी के साथ कुछ खास बात कर रहे हैं। तो, इन्होंने मुझसे पुछवाया था कि स्वामी आप से क्या कह रहे थे ? वो सारा जो डिस्क्रीप्शन मैंने लिखा हुआ है, इससे पता लगेगा कि हमें काकाजी ने ये जो रास्ता बताया है, उसी पर चलते ही रहना है।

...१९८६ में प.पू. काकाजी के शरीर छोड़ने के डेढ़ वर्ष के बाद तो मुझे होश आया। तब तक सुन्न मार गया था, चुपचाप बैठा ही रहा। सोचता रहा कि गुजरात लौट जाऊँ। पर, उसके बाद १९८६ की २६ जनवरी को विद्यानगर में काकाजी के दिए आशीर्वचन और उनके हर एक लेटर को खोज-खोज कर पढ़ा कि वे क्या कहना चाहते थे– वह समझूँ तो सही। पहले तो काकाजी के लेटर भी जो आते थे, उनमें लिखी कथा-वार्ता वगैरह पर मेरा कभी ध्यान ही नहीं गया। तो, मैंने सोचा कि अब ये पढ़ूँ कि वे क्या करवाना चाहते थे। **२६ जनवरी की काकाजी की वो कैसेट मैंने कम से कम ३५-४० बार सुनी।** क्योंकि ये पता था कि वो इनका **'गुणातीत समाज को मॅग्नाकार्टा'** था और खूब खुले दिल से बातें की थीं... आप अभी भी देखोगे, तो उस किताब की मेरी कॉपी में अंडरलाइनिंग खूब किया हुआ है।

जब काकाजी थे, तब तो मैं अपने आप में ही खोया रहा। उनकी बातों पर कभी ध्यान दिया ही नहीं। मेरे मन में एक कोने में ये बात भी थी कि भले इतने सब संतों में मैं सभी संतों में सबसे कमज़ोर हूँ; पर, कहते हैं न कि जो लड़का कमज़ोर होता है, मां-बाप उसका ज्यादा ध्यान रखते हैं। इस तरह **काकाजी ने हमेशा मेरा खूब ध्यान रखा हुआ है, परिश्रम भी खूब किया हुआ है। कई बार गुणातीत समाज में मेरे लिए अपने आपको बुरा भी दिखाया है।** इसलिए उनकी कथावार्ता, आर्टिकल्स, प्रवचन सुनता ही रहा। **२६ जनवरी के प्रवचन में से एक बात पता लगी कि उन्हें एक दर्द रहा था।** हरिधाम में जब कलशविधि हुई, तब काकाजी यह बोले थे कि एक कलश चढ़ गया, अब दूसरे कलश की बात करो। गुणातीतभावना वाले साधु बनो। मतलब, सोने के कलश वगैरह की इनको तनिक भी इम्पॉर्टन्स नहीं थी। **इनको तो बस एक लगन थी कि गुणातीतभाव वाले साधु बनो।**

...अपना फंक्शन जो कहते हैं न एकदम सक्सेसफुल गया, इसकी वजह यही है कि हर एक की भावना यह रही कि मिल-जुलकर, एक-दूसरे की सुनकर, एक-दूसरे का स्वीकार करना काकाजी को पसंद है। **हर सेवा में यह बात रही, इसकी यह कामयाबी है। मंदिर के काम में भी पुराने-नए, ये अनिलजी, दालिया साहेब, आशीष, मिलन, पुरी साहेब, चेतन वगैरह, भले व्यवहार-व्यवहार के ढंग से चला, लेकिन एक-दूसरों की बात का स्वीकार करके, सुहृद्भाव से जो सेवा की इसकी यह कामयाबी है।** बाकी मंदिर खूबसूरत बन जाए, वो टच नहीं करता। मैं दावे से कहता हूँ यह मंदिर अन्यों के मुकाबले तो कुछ नहीं है, एक थाली के अंदर चटनी जैसा है। लेकिन यह बात भी है कि **इस मंदिर की दीवार या पत्थर अपनेपन की जो गूंज देगा, वो और कोई मंदिर नहीं दे पाएगा।**

सुहृद्भाव के सिद्धांत को पकड़कर एक कुटुंबभावना कितना बड़ा काम करती है–इस बात का एहसास इस फंक्शन ने कराया। अपने परिवार का फंक्शन–अपने एक परिवार की शादी है, कुछ भी करके निबटा देनी है, यूं करके हर एक छोटे-बड़े लग जो पड़े और फिर ताक़त तो भगवान ने दी है।

मैं देखता था कि रात को दो-ढाई बजे तक काम करो, प्रॅक्टिस करो, दूसरे दिन फिर कहीं अपनी ड्यूटी पर लग जाओ या जॉब पर जाओ और फिर वापिस आओ, तब भी **आप लोगों को थकान नहीं लगी।** आप लोगों ने भी यह नोट किया कि नहीं वो तो मुझे नहीं पता। लेकिन मैंने नोट किया कि **डेढ़-डेढ़ महीने तक ये लोग लगातार काम करते रहे।** कहते हैं न एक मजदूर की तरह **राउंड धी क्लॉक और तब भी थकान न लगे,** तो **वो कोई और शक्ति काम कर गई**–यह एहसास हुआ।

सोचो, **काकाजी** ने मार्च १९८६ में शरीर छोड़ा। **१९८६ की जनवरी में वे बोले हैं कि एकता हमें स्थापित करनी है, मतलब हुई नहीं है।** आगे तो क्लीयरली ही कहते हैं कि हम अभी तक यह कर नहीं पाए हैं। **इन्हें यह दर्द था।** वो कलश कौन-सा? **गुणातीतभाव वाले साधु और सुहृद्भाव का कलश चढ़ाओ।** सोने का कलश चढ़ा–नहीं चढ़ा इसमें उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं थी; सुहृद्भाव का कलश चढ़ाओ। इन्होंने ही

बोला था कि–ये पांच संत एक होकर रहें, तो मूसल में से भी संगीत निकले, बाकी तो फ्ल्यूट में से निकलता ही है। हम अभी तक ये कर नहीं पाए, बातें बहुत की।

'जो विरोध करेगा, उसका तो हम पहले भला ही चाहेंगे'–यह भावना काकाजी का मूलभूत सिद्धांत था। कई बार वे जब ऐसी बातें करते थे, तो हम लोगों को लगता था कि जनरल समाज में ऐसी बात करके वे छा जाते हैं। **काकाजी तो अपने आप छा सकते थे, उन्हें बातें करके छाने की कोई जरूरत नहीं थी।** लेकिन **वो हमें उस रास्ते पर खींच रहे थे।**

देखो, इन्होंने **इतनी ज़ोर-ज़ोर से ये बातें की हैं। तब जाकर मेरे दिमाग़ के अंदर यह बात आई होगी कि छगनभाई और हर्षदभाई का फोटो भी लगाना चाहिए।** अगर इनका ये दबाव मैंने महसूस नहीं किया होता, तो मेरा दिमाग़ वो करे ऐसा है नहीं। मेरा दिमाग़ तो पहले से **'टिट फॉर टॅट'**। पर नहीं, यह काकाजी को पसंद नहीं है, सो **हमें सब कुछ भुला कर इनके प्रिंसिपल पर चलना है।**

कई बार ऐसा लगता है कि सुहृद्भाव की बात होती है, मगर सामने वाला तनिक भी नहीं रखता। हम कहां तक रखते रहेंगे? **स्वामिजी** ने कितना अच्छा सूत्र दिया है। कोई रखे न रखे–'कोई आत्मीयता रखे या न रखे, मुझे आत्मीय बनना है'–ये फर्स्ट स्टेज है। जब स्वामिजी ने सूत्र दिया कि कोई आत्मीय हो या न हो, मुझे आत्मीय होना है। तब मैंने सोचा कि स्वामी ने ऐसा क्यों कहा होगा? **इसमें एक रंज तो ऐसा है ही न कि कोई ऐसा है, जो आत्मीयता नहीं रखता है।** पर, एक-दो महीने में स्वामी ने यह नया सूत्र दिया कि–'**सभी आत्मीय हैं, मुझे आत्मीय होना है।**' दिमाग़ बाहर रख दें, तब यह सूत्र एक्सेप्ट कर पाएँगे। हमें नज़र आता है या व्यवहार में रहता है कि कुछ आत्मीयता नहीं; सिर्फ मतलब, स्वार्थ और... फिर भी मानना कि नहीं, वो हमारा आत्मीय है। वर्ना हमने अपना कुटुंबी माना नहीं है।

मैं जो कुटुंबभाव की बात करता हूँ, इसकी वजह यह है। एक कुटुंबभाव हो, तो आत्मीयता रहेगी कि हमारा फेमिली है, क्या करें? फेमिली में कोई अड़बंगा भी हो सकता है न? वहाँ हम सोचते हैं कि क्या करें, नहीं मानता है। लेकिन है तो अपनी फेमिली का, इसमें हम बाजी जीत जाते हैं। इसी तरह कोई सुहृद्भाव भले न रखे, मगर हम रखा ही करें। एक बार मैंने ही काकाजी से कहा था कि काकाजी दोनों हाथों से ताली बजती है क्या; एक हाथ से कब तक ठोक-ठोक किया करें? ये ताली बजने वाली ही नहीं है। तो काकाजी ने कहा था कि **'गुणातीतज्ञान' में एक हाथ से बजती है।**

काकाजी हम सबसे ज्यादा इंटेलीजेंट थे, उनका कोई मुकाबला नहीं है। जिन्हें तीन मिनिट की एपोईन्टमेन्ट के अंदर पंडित नेहरू ने जब यह कह दिया हो कि– *पटेल तुम आओ, केबिनेट में ले लूंगा।* कैसा दिमाग होगा? ये कोई फेब्रीकेटेड बात नहीं है। नंदाजी के थ्रू एपोईन्टमेन्ट मिली थी। नंदाजी तो काकाजी को जानते थे। नंदाजी ने कहा भी– *३ मिनिट की एपोईन्टमेन्ट मिली है, मतलब की बात कर लेना – 'स्वामिनारायण' की बात मत करने लगना।* काकाजी उनके साथ पौना घंटा बैठे और पंडितजी ने कहा कि *पटेल, तुम यहां दिल्ली आओ,*

हमारी कैबिनेट में तुम्हें ले लेंगे। छा गए होंगे न नेहरू के दिमाग़ के ऊपर। पर काकाजी ने कहा– ***मैं तो अक्षरधाम की कैबिनेट का मिनिस्टर हूँ।*** मेरा कहने का मतलब कि **इतने दिमाग़ वाला व्यक्ति जब हमें कहता है कि दिमाग़ एक तरफ रख कर भगवान का भरोसा रखो, तो बात में कोई दम होगा न।** बस, **इतना दिमाग़ हमें लगाना है।** कोई बुद्धू दिमाग़ छोड़ने की बात करे, तो हम समझें कि यह तो ऐसा ही कहेगा। पर, काकाजी जैसा व्यक्ति हमें जब कहे कि संत के पास दिमाग़ छोड़ दो, तब हम सोचें कि **कितना दिमाग़ लगाकर यह सेन्टेन्स उन्होंने बोला होगा।** मैं हमेशा यह सोचता हूँ। तब जाकर भरोसा बैठा है...

अब हमारा यह फर्ज़ है। जैसे किसी के फाधर का बिजनेस हो और लड़के को ख्याल पड़े कि उनका टार्गेट यह था कि बिज़नेस ऐसा एक्सपान्ड करना है। इसी तरह **काकाजी ने जब कहा हुआ है कि ये एकता जरूर, जरूर करेंगे, तो अब जरूर करनी है–लग पड़ना है। इसमें किसी की महोब्बत नहीं रखनी कि फलाना क्या कहेगा?** काकाजी ने ही कहा था–**हमारे लिए जगत है ही नहीं।** यह बात पहले ठान लेनी पड़ेगी। **गुणातीतभाव को पाने के लिए सबसे पहली बात तो दो चीज रखनी पड़े। धाम-धामी-मुक्त ही सत्य हैं और हमारे लिए जगत है ही नहीं।** 'झुकती है दुनिया, झुकाने वाला चाहिए'–ऐसी यह बात है। हम दिल से मानें कि–धाम, धामी और मुक्त ही सत्य हैं। बाकी हमारे लिए कुछ है ही नहीं, सब खोटे हैं। इसमें किसी की महोब्बत नहीं रखें। **अगर किसी की महोब्बत कोई स्वार्थ से रखी होती, तो बापा की मरजी का बहनों का काम काकाजी कर ही नहीं सकते थे।** पर इन्होंने देखा कि योगीजी महाराज की यह इच्छा है, भले कितना ही बुरा दिखना पड़े।

हमें यह करना है। **संस्था क्या कहेगी, वो क्या कहेंगे, सोचेंगे–इस उलझन में हम अपनी लाइन पर आगे नहीं जा पाएँगे।** शास्त्रीजी महाराज योगीजी महाराज का वारसा क्या? भीतर में गुणातीतभाव वाली साधुता प्रगटानी है।

पहले तो हमारे भीतर में, अपने ग्रुप में एकता होनी चाहिए और वो भी ऊपर-ऊपर की नहीं, दिखावे की नहीं, दिली-निजी एकता। यह खूब समझ कर रखना कि–तुम अच्छे, हम अच्छे–ये सयानापन नहीं चलेगा। वो **करने भी जाएंगे, तो महाराज पोल बाहर लाकर रख देंगे।**

जैसे **ड्रामा करना, नाचना खुद को पसंद हो, सो डेढ़ दो महीने तक यह प्रॅक्टीस की हो और मन को समझाए–दूसरों को भी मनवाएँ कि मैंने क्या सेवा करी–क्या हमारा काकाजी-गुरुजी के प्रति लगाव है। तो, महाराज तुरंत प्रसंग खड़ा करके बता देंगे कि तू जो नाचता था–वो सेवा रूप में नाचता था या अपनी वृत्ति के आधीन नाचता था।** प्रसंग खड़ा करके दिखा ही देंगे।

आज **सनी को मैंने वैसे ही हार नहीं पहनाया।** एक समझने की बात है। १३ मार्च को इसकी मौसी के लड़के की शादी है और मासा इनकी ही कंपनी का सी.ए. है। पर, इसने कह दिया कि मैं शादी में नहीं आ पाऊंगा, क्योंकि हमारे गुरुजी का बर्थ-डे है। **यह इसने सत्संग किया।** मैं उकसाता हूँ, ऐसी बात नहीं है। लेकिन **यह बात तो रखनी ही पड़ेगी।** वर्ना तो 'आया राम-गया राम'– ठीक है। **जनरल क्लास के**

सत्संगी हो तुम। फिर उम्मीद ना रखो कि हम एक टॉप रॅन्क के सत्संगी गिने जाएँ। सत्संगी नहीं हो ऐसा नहीं, जनरल क्लास के हो, ओर्डीनरी क्लास के। बाकी **साधु के दिल में बैठने का स्टेटस अलग है।** काकाजी कहते थे– *सूरत की मज़दूरन आठ आना के लिए पूरे दिन काम करती है...* वैसे ही हम **भले दो महीने तक ठंड के अंदर ड्रामे की प्रॅक्टिस में कितना ही पिस गए हों, लेकिन सूरत की मज़दूरन जैसे हैं।**

...एकता ऊपर-ऊपर की नहीं। हर संजोग में 'सर्वोपरि स्वामिनारायण' मानें। मतलब, किसी की नहीं चलने वाली, यह मानें और यह सिद्धांत हमारे जीवन में साकार हो। इसलिए काकाजी ने एक सूत्र दिया है– *'सर्वदेशीयता, सद्भाव और सुहृद्भाव।'* काकाजी का यह दर्द जब-जब पढ़ा, तो हुआ कि नहीं और कुछ हो या नहीं हो, हम एकता पर तो चलें।

मेरा डरपोक नेचर मुझे हमेशा काम आया। एक बार काकाजी ने लिखा था, मैंने बात भी की थी कि मैं इस बात से खूब डर गया था– ***'जो भेदभाव रखेगा, उसे आख़िरकार परेशानी आने वाली है।'*** मैंने जब यह पढ़ा, तो मुझे हुआ कि **भीतर के दोषों की पहले ही इतनी परेशानी है, तो भेदभाव रखकर यह नई परेशानी क्यों खड़ी करनी?** एक दरवाजा तो बंद रखें। काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, साहेब– इनको आपस में जो करना है किया करें, मेरे लिए तुम एक हो– यह सिद्धांत मुझे पकड़े ही रखना है। इस हेतु **बुद्धि का सयानापन ठुकरा कर 'सर्वोपरि स्वामिनारायण' मंत्र पकड़े रखेंगे, तो हमारा कुछ नहीं बिगड़ेगा।** क्योंकि 'सर्वोपरि स्वामिनारायण' के आगे किसी की नहीं चलेगी।

यूँ मिल-जुलकर सुहृद्भाव का ऐसा कलश चढ़ाना ही है। **काकाजी को जब रंज रहा है, तो जो छोड़ना पड़े– हमारा इज़म, मान, आकांक्षा छोड़ दें।** यहाँ **यह बात भी खूब समझ कर रखें कि फलां ने ऐसा किया था, वो भूल जाएँ।** इसके लिए **शॅक्सपीयर** का सेन्टेन्स मैं बार-बार दोहराता हूँ कि– **'लेट बाय गॉन बी बाय गॉन।'** मैं कई बार कहता हूँ कि **शॅक्सपीयर को तो भगवान नहीं मिले थे, तब भी वह बोला कि *चलो जो हो गया, उसे भूल जाओ* और... हमें तो भगवान मिले हैं, तो क्यों नहीं कर सकते?** ग्रुप में रहते होंगे, वहां भी ऐसा बनता होगा। यह तो मेरे साथ ऐसा ही रहता है। भले रहे, सर्वोपरि काकाजी हैं, सर्वोपरि आपका 'स्वरूप' है– सर्वोपरि स्वामिनारायण हैं, वो तेरा फेवर करेंगे।

तो, इस बार मंदिर के कलश विधि के लिए काकाजी को वो चढ़ाना था, वो चढ़ना चाहिए। देखो, **स्वामिजी** बोले– ***ये कलश अपने हरिधाम के कलश से अच्छा है।*** मैं नहीं मानता कि स्वामिजी कलश की चमक, पालिश, शेप देख कर बोल रहे होंगे। वैसे तो, स्वामी यह मंदिर कम्पलीट होने के बाद पहली बार आए हैं, हॉल में भी पहली बार आए हैं। मंदिर का नक्शीकाम भी बहुत अच्छा हुआ है। हम सब जानते हैं– इतना सफाईदार और कहीं नहीं हुआ है। पर **स्वामी ने उसकी कोई तारीफ नहीं की, सिर्फ कलश की करी।** सो, मेरे दिमाग में ये जो बात घूमती रहती थी; मानो हमें ये टॉर्च-डायरेक्शन दे दी कि– **तुम लोग सुहृद्भाव से एक होकर** सबके साथ– यहां और बाहर वालों के साथ– जो एप्रोच रखते हो, उसी ओर अग्रसर रहो।

8 मार्च 2012 — धुलेन्डी

प.पू. गुरुजी

... आज होली का त्यौहार, आप सबके चेहरे देख करके मुझे एक बात याद आई। ये सब जो करते हैं, वो एक प्रणालिका कहो या सिर्फ खुशी के लिए नहीं है। **ये सारी स्मृतियाँ हमारे साथ बनी रहेंगी और वो जीवन में आनंद प्रगटाती रहेंगी।** कई जगह होली खेली जाती है, लेकिन कहीं किसी को याद नहीं रहता होगा, जबकि अपने यहां एक बार भी कोई चंदन का टीका कह दो–अर्चा कह दो, लगवा कर जाता होगा, उसके दिलोदिमाग़ पर हमेशा के लिए छा जाता होगा। इसे मैं अलग ढंग से भी बताता हूँ कि रेईज़ की पीयरसिंग कॅपेसिटी होती है। कैमरा में फोटोग्राफ भी रेईज़ से लिए जाते हैं, लेकिन वो बॉडी तक ही सीमित है। ऐक्सरेज़, इन्फ्रारेड रेईज़ और अब लेज़र रेईज़ शरीर के अंदर तक पीयर्स कर जाते हैं। **भगवान, संत और मुक्तों की पीयरसिंग कॅपेसिटी मॅक्सीमम है, जो भीतर में चेतना तक चली जाती है–छा जाती है**; सो स्मृतिपट पर आ जाती है और हमें प्रभु का प्रोटेक्शन भी दे देती है। ये बहुत गहरी चीज है।

दलपतराम नाम के गुजरात में एक कवि थे। उन्होंने लिखा है–

‘भगवान स्वामिनारायण काठियों के साथ रहें, तो उनके जैसी वेष-भूषा, रहन-सहन से इनके जैसे होकर रहे। घुड़सवारी भी बहुत अच्छी कर लेते थे। लेकिन, काठियों को अपना बनाने के लिए इन्होंने यह सब किया। कई बार निकलते तो रेस भी लगाते थे कि देखो कौन पहले पहुंच जाता है। मैं (दलपतराम) पांच-छ साल का था और मैंने वड़ताल में सहजानंदस्वामी को घोड़ी पर बैठे हुए देखा था, जब उन्होंने घोड़ी को दो पांव पर खड़ी करके गोल घुमाई थी, वो मूर्ति आज ६२-६५ साल की उम्र में भी मुझे अभी तक याद है।’ कितनी बड़ी बात है यह?

वैसे ही सुबह से मुझे याद आ रहा था, एक्च्युली आज सुबह **आचार्यस्वामी** ने याद कराया। एक बार काकाजी-पप्पाजी वगैरह होली पर दादर मंदिर आए थे। हम लोगों ने तै करके रखा था कि जब फर्स्ट फ्लोर पर, जहां अक्षरविहारीस्वामी वगैरह रहते थे, वहां से वे गुजरेंगे तब इन पर रंग छांट देंगे। काकाजी को वैसे रंग-वंग ज्यादा पसंद नहीं था, पर सबको खुश करने वे जान बूझकर शामिल भी हो जाते थे। तो, वे जान बूझकर ही संतों के हाथ आ गए और संतों ने अच्छी तरह उन्हें गीला किया, रंग छांटा करा। पप्पाजी साथ में थे, हमने उन्हें भी पकड़ना चाहा था, लेकिन वो नज़र चूका कर सीढ़ी से उतर गए। हम लोग गॅलेरी में खड़े थे। वहाँ पप्पाजी ने जाते-जाते ठेंगा दिखाया कि मैं हाथ में नहीं आया। उस समय हम समझ तो गए ही थे कि ये क्या कह रहे हैं।

फिर भी हमने फोन करके पूछा– *बाबूकाका आप क्या कह रहे थे?*

उन्होंने कहा– *तुम्हारा काका पकड़ में आ गए, पर मुझे नहीं पकड़ सके; इसलिए अंगूठा दिखाया था।*

हमने कहा– *ऐसा नहीं है, आपको जाने दिया।*

तो वे बोले– *ओहो! गिर गए तो कहा कि पैर छू रहे थे।*

मैं क्या बताता हूँ कि आज इतने सालों के बाद भी वो प्रसंग हम सबके दिमाग़ पर हुबहू है। यूँ, हमें रंग वगैरह से भी बात तो यही लेनी है कि **भगवान, संत और ऐसे मुक्त हमें जगत के रंग से छुड़वा कर अपने रंग से रंग देने के लिए आए हैं।** पर, यह बात समझनी बड़ी मुश्किल है।

मैं कई बार कहता हूँ कि क्या अच्छा है क्या बुरा, हमें अपने आप में समझ नहीं आता। लेकिन एक बात समझ कर रखनी है कि **संत की हर एक क्रिया चैतन्यलक्षी होती है और उसी के लिए वे हमारे जैसी प्रकृति धारण करके हमारे साथ जीते रहते हैं।**

ये बात कैसी है कि– पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा पर सब इकट्ठे हुए थे। राजकोट की एक बहनजी ने तब यह बात यहां पर बताई थी–

'एक बार किसी उत्सव में काकाजी खाना खाकर हाथ धोने निकले और मैं वहीं खड़ी थी। जैसे ही काकाजी ने हाथ धो लिए, मैंने एकदम मेरा पल्ला आगे किया। काकाजी से वैसे मेरा ज्यादा परिचय भी नहीं था, लेकिन मैंने सुना था कि बड़े हैं-अच्छे हैं, तो मैंने अपना पल्ला आगे किया और... फट से वे हाथ पोंछ कर चले गए।'

आप ही सोचो कि फंक्शन में ये लेडीज तो कैसी सज-धज कर आती होंगी, तो वो साड़ी आर्डीनरी भी नहीं होगी। सेला पहना होगा, पर काकाजी बेहिचक... वर्ना बहनजी नई हो, तो कोई उसके पल्ले से हाथ नहीं पोंछेगा। काकाजी ऐसे भोले-भाले भी नहीं थे, लेकिन **वो चेतना ऐसी होगी, जिसे अपनी स्मृति देने के लिए काकाजी ने ऐसा चरित्र किया। कई बार अपना बनाने के लिए– जगत में से निकाल कर प्रभु में जोड़ने के लिए भी संत यह करते हैं।** हमें नहीं समझ आएगी।

हमारे यहां **मधुजीजी** नए-नए सत्संग में आए थे और उन्होंने ये बात सुनी होगी कि कुशलकुंवरबा की कलाई पकड़ कर महाराज ने उसका संकल्प पूरा किया था। सो, उन्हें ऐसा कि ये गुरुजी बोलते रहते हैं कि हमारे काकाजी भगवान का स्वरूप हैं। काकाजी स्वामिनारायण भगवान का स्वरूप हों, तो जैसे कुशलकुंवर बा का हाथ महाराज ने पकड़ा था, ऐसे वे मेरी कलाई पकड़ें। उस समय दिल्ली में तो नया-नया सत्संग। पर, एक बार काकाजी आए और इनकी इंट्रोडक्शन कराई।

काकाजी ने अलग ढंग से ही बात शुरू की– *ये मुकुंद को मधु का बहुत।*

फिर कहते हैं– *मधु का खून मीठा लगता है, लाओ देखें।*

मैं तो दूर ही खड़ा था। काकाजी रूम में थे, वो हॉल में थीं और बीच में दरवाजा था।

मुझसे कहते हैं– *जा, अंदर से छुरी ले आ, इसका हाथ काटकर खून देखें तो सही।*

मैं तो खड़ा रह कर सोच रहा था कि चाकू लाना कि नहीं लाना। क्या करना?

फिर बोले– *ये नहीं लाएगा।*

और... वहां टेबल पर पिन थी, उसे लेकर हॉल में जाकर मधुजीजी का हाथ पकड़ा और थोड़ी पिन चुभा कर वहीं रख दी।

मैं सोचूं कि ये बहनजी नए हैं, बड़ी मुश्किल से आते-जाते किए हैं... उसके हसबन्ड क्या सोचेंगे कि ये मंदिर में क्या चलता है? पर, मधुजीजी ने बाद में बताया कि मैंने विचार किया था कि काकाजी भगवान का

स्वरूप हों, तो मेरी कलाई पकड़े। इन्होंने इसी बहाने मेरी कलाई पकड़ कर मेरा संकल्प पूरा किया है। आज भी वो प्रसंग उसे हूबहू याद है।

मैं ये कहना चाहता था कि संत हमें अपने रंग में रंगना चाहते हैं। और... वो तो हम देखते हैं कि पूरी फेमिली को काकाजी ने अपने रंग से रंग ही दिया हुआ है। मधुजीजी सत्संग करें, इनके हसबंड करें, अन्नी (बेटी) करे; लेकिन ये रविजी (दामाद) कैसे सत्संग करेंगे? लेकिन ये चेपी-चैतन्य है। इसलिए मैं कई बार कहता हूँ कि इस मंदिर में यूँ ही मजे से मत आया करो; ये चेप लग जाता है। आंखों में कंजक्टिवाईटिस डिसीज़ हो जाए, तो सामने देखने वाले को भी वह हो जाता है, ऐसी यह डिसीज़ है...

...सबसे पहले तो हम सब का जन्म हिन्दुस्तान में हुआ, इससे बढ़कर कोई बात नहीं है। हिन्दुस्तान से संबंध-यह कितनी बड़ी बात है, जहां भगवान ने कह दिया कि वे हमेशा मानव स्वरूप में प्रगट रहेंगे। इसलिए मुझे कभी हिन्दुस्तान छोड़कर जाने का मन ही नहीं करता। अमेरिका वाले आते हैं, मुझे कहते हैं–आओ-आओ। मैं अब तक तो हाँ-हाँ-हाँ करता रहा था। पर, इस बार तो मैंने कह दिया कि मुझे तो आना नहीं है। फिर भी मैं एक बार पक्का जाऊंगा, क्योंकि काकाजी वहां गए हुए हैं।

बाकी एक बात खूब ध्यान से समझ भी लेना–दालिया साक्षी हैं। कमल के बारे में उन्होंने पूछा था; उसे अमेरिका जाना था। मैंने कह दिया था कि पूछने के लिए पूछते हो, तो मेरा कोई जवाब नहीं है। बाकी दिल से पूछते हो, तो पहले मैं पूछ लेता हूँ – *क्यूं जाना है?*

तो कहते हैं– *पैसा कमाना है।*

मैंने कहा– *पैसा देने वाला कौन है?* तो बोले– *महाराज हैं।*

तो मैंने कहा– *वो तो तुम्हें यहीं मिल जाएगा।*

हिन्दुस्तान को छोड़ कर कहीं जाने जैसा नहीं है, कहीं भी नहीं... मैंने परसों-तरसों भी बात की थी। हम दुबई गए थे। मैं तो वो ह्वील चेयर में बैठ कर जल्दी निकल आया। सामान लेते हुए सेवकों को आधा-पौना घंटा हो गया, तो मैं बैठा रहा था। पौने घंटे में मुझे इतनी घुटन हुई कि ये हम कहां आ गए? यह हिन्दुस्तान का प्रभाव है और जब हम वापिस आए तो ऐसा बोला जाता है न कि 'धरतीनो छेड़ो घर'– धरती का आँचल घर बोला जाता है। मैंने कहा– ***'धरती का आँचल हिन्दुस्तान।'***

हाँ, मैं ये कह रहा था कि हमें बस ये स्मृतियाँ करा करनी है, इससे हम आनंद में भी रहेंगे। साथ-साथ प्रभु हमारे साथ हैं, इसका हमें एहसास भी हमेशा के लिए रहेगा। नई कोई चीज करनी नहीं है। हिन्दुस्तान उत्सवों का देश है, अपने यहां कितने त्यौहार हैं–फॉरेन में हैं क्या? दीवाली, होली, दशहरा, राखी, लाभपंचमी इतने हैं, गिनते ही रहो। बस, ऐसे उत्सव किया करें और प्रभु के साथ संबंध दृढ़ करें!

...मेरा कहना यह है कि **हमें भगवान के सुख से सुखी रहना है।** क्यूं? **भगवान, संत और सत्संगी– वही परम सत्यस्वरूप हैं, बाकी सब सत्य रिलेटिव हैं।** काकाजी ने बात की थी कि न्यूटन ने एक सत्य निकाला–'लॉ ऑफ ग्रेविटेशन'। पर, अवकाश में वो 'लॉ ऑफ ग्रेविटेशन' काम नहीं करता, रिलेटिव हो गया। सो, **मन से, जीव से, हर प्रकार से जहां परम सत्यस्वरूप भगवान विराजमान हैं, हम उसी के संग रहा करें।**

...**'वर्तन से हमारे बयां होगा'** – इसका मतलब क्या? **मानो कोई आकर बोल जाए कि तुम्हारे ग्रह ऐसे हैं, तुम पर पनौती लगी है और हम हाय-तौबा करते हुए ज्योतिष-तांत्रिक के पास दौड़ें और फिर कहे कि हमें 'सर्वोपरि भगवान' मिले हैं – तो लोग हँसेंगे नहीं?** लेकिन हमें सर्वोपरि मिले हैं, जो होना होगा मेरे मालिक करेंगे, वो ही ठीक है। मतलब, हमारे भगवान स्वामिनारायण करेंगे – वो ठीक है, ऐसी निश्चिंतता रहे, हम हिलें नहीं और मानो हिल भी जाएँ, तो भजन उसका ही करें – 'स्वामिनारायण, स्वामिनारायण'। जैसे बच्चे को एकदम कोई धक्का लगेगा, तो बोलेगा – हे माँ! क्योंकि उसकी टॉप प्रायोरिटी, भरोसा, सिक्योरिटी अपनी मां के पास फील करता है। इसी तरह **हमने सिक्योरिटी की फाइनल जगह प्रभु को ही समझा होगा, तो प्रभु के पास दौड़े चले जाएँगे।** वर्ना इधर-उधर ज्योतिष-तांत्रिक को दिखाने कि मेरा क्या होगा – बता तो दो। यह हमारे वर्तन से पता लगेगा। लोग मानेंगे कि भई, सच में इन्हें ऐसी कोई 'सर्वोपरि' प्राप्ति हुई है, जिससे कि कितने भी आंधी-तूफान में यह हिलता या डगमगाता नहीं है।

13 मार्च 2012 — प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की निश्रा में प.पू. गुरुजी का प्राकट्य दिन, प्रातः सभा

प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी (मुंबई)

जो इस सत्संग से जुड़ जाता, फिर उसे कुछ नहीं भाता...

क्या बात है? यही हम लोग खूब देख रहे हैं कि ऐसा ही सबको हो गया है। मुझे तो मालूम नहीं था कि ऐसा एक भजन भी बना है। कल से मेरे मन में यही घूम रहा था और एक-दो जनों से शायद मैंने यह बात की भी कि यह सत्संग ऐसा मिल गया है कि अब हमें और कुछ भाता ही नहीं है, जमता ही नहीं है। इससे अधिक अभी इंटर्नेट की टेक्नोलॉजी ने हम सबके लिए इसे और भी ज्यादा सुलभ कर दिया है कि मुंबई में बैठकर भी यहां के सत्संग का आनंद ले सकते हैं।

जब परिक्रमा का प्रोगाम रखा था, तो मुझे भी मन में था कि मैं भी परिक्रमा में शामिल होने के लिए वहाँ जाऊं; लेकिन कुछ व्यावहारिक कारणों से नहीं आ पाया। सो, हम लोग जब घर पर यह प्रोग्राम देख रहे थे, तब वहीं सेन्टर टेबल पर काकाजी की मूर्ति रख कर हमने परिक्रमा कर ली। ऐसा लग रहा था कि हम दिल्ली में हैं। हम लोगों को ऐसा होता था कि बाकी सब काम छोड़ कर नॅट पर कार्यक्रम देखो। यहाँ भजन की पंक्ति याद आती है – कम्प्यूटर से फ्लॉपी जैसे, जुड़ जाएं हम आप से ऐसे... तो ऐसे ही एक-दूसरे से जुड़ गए हैं। आज भी शायद सभा का लाइव प्रोग्राम दिखा रहे होंगे।

आज हम सबके लिए कितना बड़ा और खुशी का त्यौहार, हमारे गुरुजी का अमृतपर्व मानो दीवाली है। सबके दिलों में खूब खुशी हो रही होगी, जो जहां भी है। जो नहीं भी आ पाए, वे भी खूब आनंद महसूस कर रहे होंगे कि गुरुजी का हमें संबंध मिल गया है। ऐसे गुरुजी के चरणों की रज मेरे माथे का चंदन है। जिनके हाथों

ने मुझे थामा, उनके चरणों में मेरा सब कुछ अर्पण है। गुरु के माहात्म्य का तो हम लोग खूब अनुभव कर चुके हैं, खूब प्रसंग हम सबके जीवन में आ गए हैं।

सब ने खूब आनंद किया, अपनी-अपनी भावनाओं को व्यक्त भी करते हैं... गुरुजी जब ऐसा मौका देते हैं, तो अपने भाव व्यक्त करने में हमें बहुत ही आनंद हो जाता है। मुझे याद है एक बार साहेबजी ने कहा था कि ये स्वरूप और संत न तो अपनी महिमा दिखाते हैं, न किसी को गाने देते हैं। लेकिन उनके प्रागट्य उत्सव पर हमें एक आज़ादी-फ्रीडम है कि हम उनकी महिमा गा सकें। आज मैं अपने जीवन की बात करूं, तो जब से – काकाजी के अमृतपर्व से मैं पवई में जुड़ा, तब से मुझे एक ऐसी निश्चिंतता हो गई है कि कुछ मालूम ही नहीं पड़ता। व्यावहारिक जीवन में कितने उतार-चढ़ाव भले ही आए, लेकिन उनका कोई इम्पेक्ट अब हिला नहीं जाता। आध्यात्मिकता की कोई प्रॉब्लम हो, मतलब उसमें आगे प्रगति करनी हो, भजन करना हो तो गुरुजी हमेशा एक ही चीज कहते हैं कि **ताड़देव जाकर, काकाजी के रूम में बैठ कर धुन करो।** व्यवहार की कोई प्रॉब्लम हो, तो जाकर **वशीभाई से बात कर लो।** देह की प्रॉब्लम हो, डॉ. मर्चंट से बात कर लो। **कहीं भी हमें किसी चीज के बारे में कुछ सोचना ही नहीं पड़ता और उनमें से महाराज प्रगट होकर पूरे सोल्यूशन दे देते हैं।**

मैं वच्छराजजी के यहां ठहरा हुआ हूँ। वहां मैं रमेश त्रिवेदीजी से यही बात कर रहा था कि यहां आस-पास के या दिल्ली में रहते लोग जो सत्संग से जुड़े हैं, वे सब स्वर्ग में रह रहे हैं। स्वर्ग में रह रहे हैं, मतलब वाकई जैसे **काकाजी, पप्पाजी ने कहा कि हम स्वर्ग धरती पर ले आएँगे, तो वो स्वर्ग यहां धरती पर उतरा हुआ है और हम सब उसका खूब आनंद ले रहे हैं।**

किसी भी फिल्ड में देखें, गुरुजी की हर क्रिया से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। **छोटी से छोटी से लेकर, बड़ी से बड़ी चीज तक यहां से बढ़िया हमें कोई मिल नहीं सकती।** मैं जब कल रात को यहां आया, तो मुझे थोड़ा मालूम था कि खिचड़ी बन रही है। लेकिन जब खाना खाया, तो इतना आनंद हो गया कि ओहो! बाजरे की रोटी और जो घी की क्वॉलिटी थी, इतना रवादार था कि घी का एक-एक दाना दिखाई पड़ता था। साथ में मिर्च का अचार, मैं तो खूब खुश हो गया। मुझे एकदम अपना बचपन याद आ गया। हमारी दादी हमें ऐसी चीजें खिलाती थीं। तो **यहां तो दादी, माता-पिता सब का पूरा आनंद गुरुजी कराते हैं।** सच, सांकरदा के संतों – **बापूस्वामी ने खूब-खूब आनंद कराया।** धन्यवाद है हमारे ऐसे गुरुजी को, जिन्होंने हमें इस सत्संग में दाखिला दे दिया...

पू. ब्रजलालभाई (सांकरदा)

अभी स्वामिजी ने बताया कि मैं गुरुजी के साथ यहाँ आता था। मुझे योगीजी महाराज ने दीक्षा दी थी। १९६५ तक दादर मंदिर में और फिर सांकरदा में गुरुजी और संतों के साथ १९७२ तक, यूँ मैं सात साल साधु के लिबास में रहा। **काकाजी** जब सांकरदा पधारते, तब एक बात करते –

ब्रह्म का गुण है – आनंद। २४ घंटे तुम आनंद में रहते हो जाओ, तो तुम ब्रह्मरूप हो गए। जब तक ब्रह्मरूप नहीं होंगे, तब तक परब्रह्म की भक्ति नहीं होगी... तुम्हारी सेवा महाराज को नहीं पहुँचेगी, बीच में कोई (मान का) देवता आकर ले जाएगा।

योगीजी महाराज ने ५१ संतों को दीक्षा दी, तब से काकाजी और पप्पाजी आध्यात्मिक बेइझ की एक ही बात पर लगे हुए थे कि **'चैतन्य मंदिर'** बनाने हैं। ५१ संतों को दादर मंदिर में **योगीजी महाराज** कहते– ***एक शास्त्रीजी महाराज हुए, तो दुनिया को हिला दी। ४० शास्त्रीजी महाराज जैसे करने हैं, ४० महंतस्वामी जैसे बनाने हैं...***

काकाजी ने सांकरदा के गेस्ट रूम में सभा करते हुए कहा था–

तुम्हें योगीजी महाराज ने ग्रहण किया है, तुम्हें कुछ करने की जरूरत नहीं। आनंद करो बस!

संबंध की महिमा की बात करते हुए वे कहते–

मैं तुम्हें योगीजी महाराज का स्वरूप मानता हूँ। हबशी का रंग एकदम काला होता है, ऐसे ही उनके बच्चों का भी। फिर भी, उसके माँ-बाप अपने बच्चों के लिए क्या कहते हैं? वॅरी ब्यूटीफुल। तुम योगीजी महाराज के हो, तो मुझे योगीजी महाराज जैसे ही लगते हो।

हमारे स्वभाव, प्रकृति, दोष कुछ भी देखा नहीं, केवल कृपा में ग्रहण किया। **काकाजी** कहते–

तुम क्या करोगे? अपने आप तो तुम एक पापड़ भी नहीं तोड़ सकते। जो कुछ करेंगे, वो ये सर्वोपरि प्रगट जो मिले हैं वे करेंगे। उनकी प्राप्ति की मस्ती में अखंड रहो कि मैं किसकी घरवाली हूँ।

सचमुच आज यह समाज देखते हैं, तो अंतर्दृष्टि होती है कि काकाजी और पप्पाजी हमारे पीछे जो लगे हुए थे... आज वो पूर्व का समाज दिखता है...

काकाजी और पप्पाजी ने जो संकल्प किया था कि पृथ्वी पर अक्षरधाम लाना है, उसका दर्शन आज हमें हो रहा है। पप्पाजी जब थे और आख़िर में उनकी जन्मजयंती मनाई, तब गुरुजी अपनी तबियत नादुरस्त होने के कारण आ नहीं पाए थे। तो, गुरुजी ने यहाँ से संदेशा लिखकर भेजा था। उसमें लिखा था–

गुणातीत समाज का सर्जन केवल आध्यात्मिकता पर आधारित है, दूसरी कोई सोशियल एक्टीविटी नहीं।

१९६६ से काकाजी और पप्पाजी ने केवल आध्यात्मिकता पर ज़ोर दिया। महाराज पधारे, संबंधयोग दिया, यज्ञ किए–**सब किया, पर चैतन्य को ब्रह्मरूप करने के लिए 'अक्षरब्रह्म' गुणातीत को साथ लाए। उन्होंने ४० साल तक ब्रह्मरूप होने की ही बात की। योगीजी महाराज ने** जब से ५१ चैतन्य मंदिर बनाने की बात की, तो साथ-साथ **इन गुणातीत स्वरूपों की हमें पहचान करा दी, जिन्हें वे साथ ही लाए थे।** तैयार करे यूँ नहीं कहा जाएगा, वो मनुष्यभाव कहा जाए। बापा इन गुणातीत स्वरूपों को साथ ही लाए थे। ६१ से ६५ तक में हमें उनकी पहचान करा दी। फिर जो कार्य करना था, वह किया। काकाजी कहते थे–

योगीजी महाराज को चैतन्यलक्षी जो कार्य करना था, इसलिए इस गुणातीत समाज की स्थापना की।

संस्था में एक तरफ स्वरूपनिष्ठा वाले थे और एक तरफ धर्मनिष्ठा वाले। धर्मनिष्ठा और स्वरूपनिष्ठा वाले का एक साथ काम नहीं हो सकता था। इसलिए योगीजी महाराज ने यह एक प्रसंग बनाकर, 'गुणातीत समाज' का सर्जन किया और काकाजी और पप्पाजी जैसे साक्षात् चैतन्यदर्शी और गुणातीत पुरुष हमें दे दिए। फिर ये

स्वरूप एक ही बात कहते रहते कि अब आप जहाँ हो, वहाँ उस स्वरूप के प्रति संपूर्ण दिव्यभाव से जुड़ जाओ। जब तक उनका माहात्म्य हमारे जीव में नहीं आएगा, तब तक हम ब्रह्मरूप नहीं होंगे।

पप्पाजी कहते– *आपने अपने स्वरूप को जितना धारण किया, उतना सुख आएगा। उतने भाग में भगवान बैठेंगे और वही भगवान तुम्हारा काम करेंगे।*

काकाजी कहते –*आध्यात्मिक मार्ग पर गुणातीत समाज का सर्जन हुआ है। वो ब्रह्मरूप होने का मार्ग है।*

योगीजी महाराज ने भी कोई सोशियल एक्टीवीटी नहीं की थी। शास्त्रीजी महाराज धाम में गए, फिर योगीजी महाराज को कई हरिभक्त कहते–*बापा, मंदिर का निर्माण करो।*

बापा कहते– *मुझे मंदिर नहीं,* ***'चैतन्य मंदिर'*** *बनाने हैं।*

दादर मंदिर में सुबह संघध्यान होता, तब हम सब संत जाते थे। एक **गुणातीतचरणस्वामी** थे। वे बापा से तुरंत प्रश्न पूछ लेते थे। मुंबई में जलाराम का सदाव्रत चलता था। ज़रूरतमंदों को खाना देते थे, तो इनका बहुत नाम हो गया था। वो स्वामी ने बापा से कहा– *बापा हम भी ऐसा कुछ करें?*

बापा बोले – *गुरु! हमें तो संबंध वाले को सिर पर बिठाकर नाचना है। जगत के जीव तो प्रारब्ध के मुताबिक जीते रहें... 'संबंध' के अलावा कुछ नहीं।*

चिन्मयानंदस्वामिजी गीता पर बहुत अच्छी कथा करते थे। उनके साथ के संतों ने संस्कृत में बहुत अच्छी तरह श्लोक बोले। तब संस्कृत पढ़ते हुए संतों ने योगीजी महाराज से पूछा–*बापा, वे इतने अच्छे संस्कृत के श्लोक बोलते हैं, तो हम लोग वहाँ जाएं?*

बापा बोले– *गुणातीत ज्ञान के सिवा सब फीका है। गुरु! गुणातीत ज्ञान सर्वोपरि है।*

योगीजी महाराज कहते थे–४० शास्त्रीजी महाराज जैसे करने हैं, तो आज हमें वो दर्शन होते हैं। हम तो बस वो दर्शन करके २४ घंटे आनंद में रहें, वो ही हमारी प्राप्ति है। योगीजी महाराज कहते–

मैंने ४० साल तक सेवा की। कोई भी संबंध वाला आए, तो उसकी सेवा शास्त्रीजी महाराज का स्वरूप मानकर मैंने कर ली, तो मैं सुखी हो गया। सुखी हो गया, वो क्या? कि मुझे किसी का अभाव नहीं आता है।

काकाजी और **पप्पाजी** ने बताया– ***हमारा अल्टीमेट गोल है कि किसी का अभाव न आए। तब सुहृद्भाव शक्य बनता है।***

काकाजी कहते– ***स्व-रहित हुए बिना 'गुणातीतभाव' संभव नहीं है।***

काकाजी सुहृद्भाव की बात करते थे कि–

कोई भी जीव तुम्हारे संबंध में आया, वो दुःखी हो, उसे भगवान भजने में जो कुछ अड़चन आती हो, उसके लिए तुम प्रार्थना करो, वो प्रार्थना प्रभु को पहुँचे और चैतन्य आगे जाए, वो– ***'गुणातीत सुहृद्भाव।'***

हम सबको मिलकर साथ में सेवा करनी है, एक-दूसरे का माहात्म्य समझना है, वो भी सुहृद्भाव है। पर जितने स्व-रहित होंगे, उतनी हमें प्राप्ति होगी। पप्पाजी, अक्षरविहारीस्वामिजी की महिमा समझाते और स्वामिजी, पप्पाजी की महिमा समझाते रहे। हमारे यहाँ एक-एक साधक को आख़िर तक के इतने प्रसंग मालूम है कि कहने बैठे, तो घंटों बीत जाएँ। पर, इन्होंने हम में इतना इनवॉल्व होकर किया कि हमें लगता है कि इन सत्पुरुषों ने

हमारे स्वभाव, प्रकृति, दोष कुछ भी देखे नहीं हैं। उन्होंने हमारे लिए खूब सहा और साधना की है। हर एक को कुछ न कुछ प्रॉब्लम तो आती ही है। एक बार हम कुछ परेशान थे। तो, स्वामिजी ने पप्पाजी से बात की– ये सब ऐसे परेशान हैं। तो पप्पाजी बोले –*उन्हें खिला-पिलाकर संभाले रखना। काम तो वैसे भी बापा ही करने वाले हैं।* यूँ स्वामिजी ने सबको संभाले ही रखा। पप्पाजी कहते थे– *हम में कोई दोष नहीं हैं; ये गुणातीत पुरुष ऐसे मिलें हैं कि हमारे दोष, स्वभाव, प्रकृति, समझदारी, मान्यता, फूँक मार कर उड़ा देंगे।*

गुणातीतानंदस्वामी ने भी अपनी बातों में कहा है–

पैर में गोबर चिपका हुआ हो, काठियावाड़ की पथरीली ज़मीन पर चलें, तो उखड़ने में क्या देर लगेगी? ऐसे दोष तो सत्पुरुष फूँक मार कर उड़ा देंगे।

पर, पप्पाजी कहते– *महाराज को कर्ता-हर्ता न मानें, वो सबसे बड़ा दोष है।*

हमें जाग्रतता इतनी ही रखनी है और आनंद करना है।

देखो, हमें चार दिन कितना आनंद कराया! इन मुक्तों के दर्शन करें, तो अहोहोभाव में से बाहर ही न आएँ। वो प्राप्ति की मस्ती में हम २४ घंटे रहें। काकाजी कहते थे– *ब्रह्म का गुण है आनंद करना।* बस हम २४ घंटे ब्रह्मरूप होते रहें और कुछ हमें नहीं चाहिए।

हम बाहर निकले, तब कौन सेवक थे? कौन-सी संस्था थी, अपने पास क्या था? सब उनका दिया हुआ है। जब तक मैं ब्रह्मरूप होकर आनंद करता न हो जाऊँ, तब तक मैंने उनका ऋण अदा नहीं किया कहा जाए। तो, मैं यही जाग्रतता रखकर जी सकूँ और उन लोगों का ऋण, सारे गुणातीत समाज का ऋण चुका सकूँ, ऐसी आज गुरुजी के प्रागट्य दिन पर प्रार्थना।

मेरी गुरुजी के साथ पहले से मित्रता है, इसलिए दो प्रसंग गुरुजी के भी कहता हूँ। जब हम शुरुआत में साधना करने आए, तब मुझे बहुत टेन्शन था। प्रसंग बनते हों, तब बहुत टेन्शन हो जाती थी। तब अपनी भाषा भी थोड़ी बदल जाती है। सांकरदा में गर्मी बहुत पड़ती है। गुरुजी को गर्मी जँचती नहीं थी। मैं गुरुजी के साथ और वे भी मेरे साथ खुल कर बोलते थे। उन्हें ऐसा नहीं लगता था कि इसे ऐसे कह दूँगा, तो खराब लग जाएगा– ऐसा हमारा संबंध था। हम रात को ११-१२ बजे तक बाहर गार्डन में गातरिया बिछाकर सोते थे। १९७१ की बात है। तब पाकिस्तान के साथ युद्ध चलता था। रात को ब्लॅक आऊट हो जाता था। हम बाहर सो रहे थे। तब गुरुजी के साथ कुछ बात कर रहा था कि जीकर मरना और मरकर जीना... गुरुजी बोले– *बॉम्ब गिरेगा तो?* तो मैंने कहा–*अच्छा है, मर जाएंगे!* ऐसे भी काकाजी रोज़ मरने की बात कहते हैं, तो एक ही बार में निपट जाएगा। ये रोज़ की झंझट मिट जाएगी न! तो गुरुजी बोले– *वो तो फिर वापिस लाकर यही कराएंगे। छोड़ने वाले तो हैं ही नहीं।*

काकाजी कहते– *गुरुजी प्रखर बुद्धिशाली।* वे कहते– *तुम मन और बुद्धि दोनों सत्पुरुष के पास छोड़ दो, तो तुम्हें कुछ बाधारूप नहीं होगा। सब कुछ आराम से हो जाएगा।*

गुरुजी ने अपने जीवन में यह किया। मैं गुरुजी के साथ १९६५ से हूँ। आज देखता हूँ तो लगता है कि योगीजी महाराज ने जो बात की थी, वो सचमुच साक्षात् हैं। **उनके तब के चरित्र और आज जो गुरुजी के दर्शन करता हूँ, वो देखकर ऐसा लगता है कि वे हम सबको भी सौ प्रतिशत ऐसा बना देंगे।** तो आज के शुभ दिन ऐसी

प्रार्थना करें कि पूरा गुणातीत समाज सहज आनंद में रहता हो जाए। **संप, सुहृद्‌भाव और एकता का सूत्र लेकर जो सभी स्वरूप लगे हुए हैं, उसमें हम अपनी समझदारी, मान्यता, स्व, सब कुछ छोड़कर, कोई भी प्रसंग बने, जहाँ-जहाँ हम हैं, वहाँ हमें जो कर्मयोग सौंपा है, वहीं हमें स्व-रहित होना है।**

हम दादर मंदिर में थे, तब सुनते थे–*सहन करो, वो सबसे बड़ा गुण है। उसमें सब कुछ आ जाता है।* सहन करना कब आता है कि जब अपनी समझदारी, मान्यता से विपरीत तरीके से सामने वाला मुक्त बरतता है; वो हमें सहना पड़ता है। तब जाग्रतता रखकर हमें पीछे हठ करनी है। इस प्रकार से हम जीते हो जाएं, ऐसी प्रार्थना है। ४० साल से इनके साथ हूँ, वर्तता हूँ ऐसा नहीं है, पर मुझे यह प्राप्ति करनी है।

आज के शुभ दिन पर मुझे मौका मिला है, तो आज स्वामिजी, गुरुजी और सभी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में यह प्रार्थना कि आपने जो प्राप्ति की और बड़े पुरुषों का ऋण अदा किया, वो ऋण मैं भी अदा कर सकूँ। इस जन्म में वो कराने वाले ही हैं, उसमें कोई शक नहीं। पर **काकाजी कहते**– *तुम्हारी देरी से देर है; जितनी तुम्हारी तैयारी, उतनी प्राप्ति।* आशीर्वाद से मिलता नहीं है, वर्तना तो पड़ता ही है। १ प्रतिशत वर्तेंगे, तो वे तो अपना व्यापार करने आए हैं। हमें सुखी करने के लिए उन्हें तो महाराज ने भेजा है। पर हम थोड़ा भी नहीं करेंगे, तो वे दे नहीं पाएंगे। **काकाजी कहते कि ९९ प्रतिशत हम देंगे, पर आप पैर तो उठाओ, १ प्रतिशत तो करो।** पर वो जो १ प्रतिशत की बात है, उसी में हमारी अपनी समझ, मान्यता बीच में आती है। स्वभाव, प्रकृति तो अब कुछ कर नहीं सकते, पर मुक्तों के विषय में जो वर्तने नहीं देते–छोड़ने नहीं देते, वो सहजावस्था में हम मुक्त होकर सुखी हो जाएं। **हम ऐसे बनेंगे, तो ही उनका ऋण अदा होगा।** बाकी तो सेवा भी हमने सालों से की-देह भी घिस दी, सब करा है, पर यह आख़िरी प्राप्ति कि–किसी का अभाव न आए, सहजावस्था में सुखी रहते हो जाएं–ऐसी प्राप्ति कराएं, यही प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना।

पू. कौशिकभाई (एरु)

...हमारी प्रगति अवश्य है। ये सत्पुरुष के साथ अनूठे ढंग से हम जुड़े भी हैं, फिर भी वो जो देना चाहते हैं और वे जिस कक्षा पर ले जाना चाहते हैं, हम ऐसे बने नहीं हैं... सो, आज 'संप, सुहृद्‌भाव और एकता' की बात दोहरानी पड़ती है, हमें बरताने के लिए ये सत्पुरुष को मोहताज़ होना पड़ता है, तो **काकाजी** कहते थे–

...वो बात महाराज ने वचनामृत के पंचाला के पांच में की है कि **सिर्फ स्वरूप से हेत नहीं चलेगा, उससे भी आगे उठना है और आगे जाना है। अल्टीमेट जो गोल है, वो तो केवल महाराज की मूर्ति में...**

पप्पाजी ने एक बार दिनकरभाई से पूछा था–*आप किसके हैं?*

उन्होंने बताया – *मैं सभी का, फिर भी किसी का नहीं केवल एक महाराज का। वो कक्षा पर ले जाने की बात है।*

हमारे लिए तो बहुत आनंद की बात है कि **ऐसे टॉप मोस्ट स्पिरिच्युअल लीडर हमें मिले और उस कक्षा पर ले जाने के लिए हमें चुना वो आनंद की बात है, लेकिन अभी भी उन्हें बार-बार यह दोहराना पड़ता है, तो दोहराए बिना सहजता से आनंद प्राप्त करें...**

हम इस रास्ते पर चल पड़े हैं, तो ऐसी कृपा बनी ही रहे...

प.पू. वशीभाई (पवई)

... एक ऐसा उत्साह छा रहा है। प्राची के भाई तेजस बड़े व्यस्त शिड्यूल में भी आज मुंबई से गुरुजी के प्रति भाव प्रकट करने यहां आए हैं, उनका भी बहुत-बहुत स्वागत है। स्वामी की बात में एक बात है कि **सभी शास्त्र का सार 'प्रगट सत्पुरुष' है।** बहुत डेप्थ वाली ये बात है। **गुणातीतानंदस्वामी ने सबका निचोड़ करके यह बात की है कि प्रगट सत्पुरुष पूरे शास्त्र का सार है।** पूरे शास्त्र में आप ढूंढने जाओगे, तो कहां क्या मिलेगा? आज ऐसे प्रगट सत्पुरुष गुरुजी का प्रागट्य है और हम सब भाग्यशाली हैं कि हमें काकाजी ने मुफ़्त में भेंट के रूप में ऐसे प्रगट सत्पुरुष दे दिए हैं।

अभी व्रजलालभाई ने बहुत अच्छा बताया, तो पुरानी स्मृति हो गई। उनके अंदर जो ज्ञान पड़ा है, उनकी जो साधना है, वो पूरी उनकी वाणी द्वारा आ गई। बहुत ही धन्यवाद है।

चार दिन आनंद, आनंद, आनंद में सब लोग 'आनंदोत्सव' में जीए। ओ.पी. ने बहुत अच्छा बताया कि ये **काकाजी और पप्पाजी का पृथ्वी पर स्वर्ग उतारने का जो संकल्प था, वो सही मायने में गुरुजी ने दिल्ली में एकदम तादृश कर दिया।** काकाजी जब १९७३ में फर्स्ट टाइम शिकागो गए, तब वहाँ किसी संस्था का मंदिर नहीं था, खाली वड़ताल वालों का व्हीलिंग में एक छोटा मंदिर था। आज शिकागो में स्वामिनारायण का इतना बड़ा मंदिर और संस्था का भी बाटलेट में बहुत बड़ा मंदिर है। तो, जहां **ऐसे प्रगट सत्पुरुष संकल्प करते हैं, पाँव रखते हैं वो चीज वहां निकल आती है। पवई में जसभाई साहेब जब भी आते हैं, तब कहते हैं कि जब काकाजी यहां इंटरनेशनल स्पीरीच्युअल रिसर्च सेंटर की बात करते थे, तब यहां जंगल था। कोई सोच भी नहीं सकता है कि यहां ऐसा मंदिर या इंटरनेशनल रिसर्च सेंटर होगा। लेकिन वे जो बात कहते हैं वो सही होती है, तो आज वहां भी हो गया।** ऐसे दिल्ली में काकाजी ने बोला था... अशोकविहार में उन्होंने स्थान ग्रहण किया और २०-२५ साल में इस जगह को स्वर्ग बना दिया। ऐसा बनाया कि यहां आस-पास की जगह के भाव भी बढ़ गए। फ़िज़ीकल रूप में ऐसा स्वर्ग तैयार कर दिया और जंगम तीर्थ के रूप में, ऐसे भक्तों तैयार किए...

...कुछ भक्त अक्षरविहारीस्वामिजी के पास गए थे, तो **स्वामिजी की भावना थी कि जो 'कुटुंबभावना' गुरुजी ने दिल्ली में प्रगटाई है, उसे व्यापक बनाना है। इसे सभी सेंटर में डॅवलप करना है,** सब जगह ऐसा नहीं है और ऐसी भावना का हमने यहां आनंदोत्सव में दर्शन भी किया।

हम जब कोई भी उत्सव करते हैं, तो उसकी फलश्रुति होती है। आनंदोत्सव की फलश्रुति क्या हुई? चार दिन उत्सव मनाया, तब हमने बोला था–रिर्टन गिफ्ट दो। तो वो सब हरिभक्त लेकर गए। उत्सव जब खत्म हुअ। तब अक्षरविहारीस्वामी ने भरतभाई, दिनकरभाई हम सबको बुला कर अपनी भावना जताई थी और पक्का कर लिया कि **'संप, सुहृदभाव और एकता'** की जो बातें हैं, उन्हें ठोस स्वरूप देकर उसे बड़ा स्वरूप देना है। **इसे मैं इस उत्सव की फलश्रुति मानता हूँ।** तो, **उन्होंने उस समय संकल्प कर लिया और उसका एक्शन शुरू कर दिया।**

उत्सव के १०-१५ दिन के बाद हमें फोन आया कि हमें अब वहाँ फंक्शन मनाना है। उन्हें **गुरुजी का बर्थ डे मनाने** का लाभ मिले, वो भाव था। और **इसके लिए वे मुंबई भी आए और हमें समझाया कि क्या करना है?** आपने देखा कि भक्तों की मूर्ति लूटने के लिए, आपका खाने का तो बापूस्वामी ने कैसा किया। उनकी भावना थी कि गुजराती खाना खिलाना है। आज दोपहर को भी मुबंई-गुजरात से जो आए हैं, वे बहुत खुश हुए कि हमारे बचपन की यादें ताज़ा हो गईं – चूल्हे की रोटी... आज भी ऐसा ही है लेकिन **इन सबके पीछे भावना थी कि आप बम्बई, शिकागो और हम साथ में जुड़कर करें।**

मुझे तो यह लगता है और मैंने दीदी से भी कहा था कि जैसे हर १०-१५ साल के बाद समय अपनी करवट बदलता है, **'चेईन्ज ऑफ विन्ड्स'** जिसे बोलते हैं – कुछ दिशा बदलती है, ऐसा इस उत्सव के बाद – जरूर धेर इज़ गोईंग टु बी ए ट्रीमेंडस चेईन्ज इन धी होल गुणातीत समाज सॅटअप। गुणातीत समाज में एक पूरा चेईन्ज आने वाला है। जब कुछ भी चेईन्ज होता है, तो उसकी शुरुआत तो थोड़े से ही होती है। जैसे गंगा गंगोत्री में से निकलती है, तो वहाँ छोटी-सी है, बाद में वो गंगासागर बन जाती है। तो, ऐसी **जबरदस्त भावना जो अक्षरविहारीस्वामी ने पकड़ी और आज हम देख रहे हैं कि ऐसा उत्सव हुआ। जो स्पिरिच्युअल अपलिफ्टमेन्ट लाने की-प्रकृति का रूपांतर करके ब्रह्मरुप होने की काकाजी और पप्पाजी की भावना थी, वो फ्यूचर में ऐसे ही बड़े पैमाने पर साहेबजी, स्वामिजी सब मिलकर साकार करेंगे।** पत्ते-पत्ते पर सत्संग का, जनरल सत्संग का डेवलपमेंट 'बेप्स' में है ही।

गुरुजी को इसमें और धन्यवाद हैं कि ब्रह्मरूप भी होओ, लेकिन आनंद करते-करते, खुशी-खुशी हो जाएँ। हमारे मल्कानी साहेब बोलते हैं ट्रावेलिंग करना है, तो गुरुजी के साथ करने जैसा है। जैसे शताब्दी ट्रेन में, ट्रेन के चालू होते ही कुछ न कुछ खाना आता ही रहता है, गुरुजी के साथ जहां भी जाओ इमीजियेट्ली कुछ न कुछ खाना आता रहता है। लेकिन उसमें भाव क्या है कि **प्रगट सत्पुरुष वर्तमान काल है और वही प्रवर्तमान है। वो जो बोलेंगे, वही सत्य, धर्म और नियम है।** महाराज के समय में तप का जोर था। कितना तप किया, खाना भी नहीं मिलता था, कितनी प्रतिकूल परिस्थिति थी? शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज के समय में पैसे-धन और आदमी की प्रतिकूलता थी। कुछ मिलता ही नहीं था, ऐसी परिस्थिति में जीये और...

कोटि-कोटि धन्यवाद हो, ऐसे सत्पुरुष को – जो गुणातीतानंदस्वामी ने बात बताई कि प्रगट सत्पुरुष मोक्ष का द्वार है। और... इस बात का जो इसेन्स है, वो शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज और काकाजी-पप्पाजी ने पृथ्वी के ऊपर ऐसा फिट कर दिया कि आप सचमुच स्वर्ग में हंसते, खेलते-कूदते आनंद करते-करते सुखी हुए। आपकी जो मूल प्रकृति है, जिसे चेईन्ज करना है और वो चेईन्ज हो सकता है। **पप्पाजी** पहले बोलते थे कि – *ब्यूक गाड़ी और ताजमहल होटल में रह कर हमें ये करना है।* लेकिन, ये इवोल्यूशन का प्रोसेस है।

काकाजी जिसे मुद्दे की बात कहते थे, वह बात गुरुजी ने उठाई; तो करोड़ों धन्यवाद हो गुरुजी को। ऐसे मुद्दे की बात उठाकर हमारी जिम्मेदारी बहुत बढ़ती है। व्हेन यु हैव टु मोबलाईज़ धीज़ थिंग्स, रेसपॉन्सबिलिटिज़ इनक्रीज़िज़। तो, आज गुरुजी को खूब-खूब धन्यवाद इसलिए देना है कि जब ये बात अक्षरविहारीस्वामिजी ने की, तो – नॉर्मली जो सेंटर में है वही सेंटर बर्थ डे सेलीब्रेट करता है; दूसरा कोई आकर

सेलीब्रेट करे, वो अच्छा नहीं लगता है। करोड़ों धन्यवाद हो काकाजी का। काकाजी की बात में आया–अर्थं साधयामि वा देहं पातयामि। उसका मीनिंग यह होता है कि कुछ भी करके ये कर लेना है। मतलब–

सुहृद्भाव रखने के लिए हमें कुछ भी न्यौछावर करना पड़े; अपने आपको भी होम देना पड़े, अपनी मान्यता भी होम कर देनी पड़े, तो वो होम दो; वो अर्थं साधयामि वा देहं पातयामि है।

...तो गुरुजी ने अपना छोड़कर, **प्रगट सत्पुरुष–अक्षरविहारीस्वामी की बात पकड़ कर 'हाँ' भर दी।** हमें यह मिलजुल कर मनाना है और मैं देख रहा हूँ कि यह व्यापक होने वाला है।

तो, फिर से गुरुजी को धन्यवाद है कि इस बात को पकड़ लिया। लेकिन क्या होता है कि हर एक सत्पुरुष को उसके चेले के मुताबिक करना पड़ता है। करोड़ों धन्यवाद है दीदी और बहनों को कि उन्होंने गुरुजी की 'हाँ' में 'हां' की और उससे भी करोड़ों धन्यवाद है भक्तों को जिन्होंने भी खुशी-खुशी 'हाँ' की और आज हम यह देख रहे हैं। **संप, सुहृद्भाव का एक नया डिरेक्शन!** काकाजी आज बहुत खुश होते होंगे कि हंसते-हंसते, आनंद करते-करते–ऐसे आचार्य की खिचड़ी खाकर और श्रीखंड खाकर, पीज़ा खाकर पृथ्वी पर जो अक्षरधाम उतारने की बात थी, उसमें टेक्नोलोजी भी अब मदद कर रही है। इंटरनेट की वजह से अभी जो हो रहा होता है, यू कॅन सी ऑल धी फंक्शन एनी टाइम-एनी व्हेर। लेकिन वो भी जवाबदारी बढ़ जाती है कि तुम जो भी बोलते हो, वो हर जगह पहुँच जाता है। इट बिकम्स ए डेटा। तो, आज गुरुजी के चरणों में प्रार्थना करनी है कि आपका प्रागट्य दिन है, आप तो पहले से ही छोटी-छोटी बात में भी भक्ति करते हो।

शुरुआत में ताड़देव में जगह कम थी। पहले तो पीछे वाला रूम भी नहीं था। तो, **गुरुजी जब फ्रंटीयर से आते थे, वे ट्रेन में ही स्नान कर लेते थे।** तब हमें ताज्जुब होता था कि गुरुजी चांदला वगैरह करके एकदम फ्रेश लगते हैं! पूछते थे कि गुरुजी स्नान कहां किया? तो बताते थे कि **ट्रेन में ही स्नान कर लिया, ताकि सीधा आकर काकाजी के पास बैठ पाऊँ।** तो वहां से शुरू हुई ऐसी छुपी भक्ति है।

आज भी ऐसी छुपी भक्ति करते हैं। भले कोई भक्त का मैरेज हो। अभी प्राची दीदी के भाई तेजस का मैरेज था, तो कुछ न कुछ भक्तों को खुश करने के लिए उनका जारी ही रहता है। भक्तों के सुख-दुःख में मिल-जुलकर, उन्हें आगे ले जाते हैं। ऐसे ही, एक बार गुरुजी अहमदाबाद जा रहे थे और वे ऐसी उलझन में भी थे कि क्या करें? जाएँ या न जाएँ? ऐसे बार-बार कितना जाना? कभी-कभी मैं भी भरतभाई को कहता हूँ कि ये रोज महापूजा में कहां जाना है? पर, उस समय काकाजी का एक नया सूत्र आया था–

'भक्तों के सुख-दुःख में झूलना, वही हमारी भक्ति और सुहृद्भाव है'–ऐसा कुछ सूत्र था।

अहमदाबाद एयरपोर्ट पर थे, तब मैंने गुरुजी को यह सूत्र भेजा भी था। यूँ, गुरुजी के लिए तो–भक्तों के सुख में सुख, भक्तों के दुःख में दुःख।

कहीं भी ऐसा एक पात्र तैयार करने में, अरे! एक मंदिर बनाने में कितना समय लग जाता है। आशीष और मिलन को वो मालूम होगा कि कितनी तकलीफ वाला काम है। **एक स्थूल मंदिर तैयार करने में इतना समय लगता है, तो चैतन्य मंदिर को तैयार करने के लिए कितना लगता होगा? पर वो सब गुरुजी ने किया है।**

अभी-अभी जब भी आते हैं, तब योगीजी महाराज की 'योगीवाणी' पुस्तक की हम गुरुजी के साथ बातें करते हैं। योगीजी महाराज की पृ. ९० की एक बात है कि बापा ने शास्त्रीजी महाराज की प्रसन्नता प्राप्त कर ली है, इसलिए बापा से सब खुश हैं... तो, ऐसे सब वचनामृत, योगीवाणी, काकाजी की बातों की टॅकनीकल इंटरप्रीटेशन्स गुरुजी बखूबी ढूँढते हैं। मुझे तो लगता है कि उनकी ऐसी इंटप्रीटेशन्स की एक बुक बनानी चाहिए। नॉर्मली आदमी को पता नहीं चलता है कि इस बात में महाराज ये कहना चाहते हैं।

तो, आज गुरुजी को बहुत-बहुत बधाई और खास प्रार्थना कि अब आप, अक्षरविहारीस्वामी, दिनकरभाई हमसे जो कराना चाहते हो, वही राह हम पकड़ें और कोई राह न पकड़ें। आपको व आपके सब भक्तों को प्रसन्न करके, जैसे वजुभाई ने बहुत अच्छा कहा कि यही करना है। **हमारे लिए बाकी कोई दुनिया है ही नहीं। भगवान और भगवान के भक्तों की सेवा, यही जीवन में करते रहें** – ऐसी प्रार्थना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी

आज हम सबके लिए सुंदर ऐतिहासिक दिन है। हम सबके लाड़ले गुरुजी का ७५वाँ प्राकट्य दिन तो है ही, पर इसके साथ गुरुजी को कोटि-कोटि धन्यवाद कि मैंने उन्हें सजेशन दिया कि इस तरह से उत्सव मनाना है और उन्होंने उसकी रज़ामंदी दी...

इसके पीछे का रहस्य यह है कि योगीजी महाराज ने मेरे एक जन्मदिन पर एक डायरी में पाँच मुद्दे लिखते हुए आख़िर में लिखा है –

माता-पिता की प्रतिभा पाकर लायक बनेगा और पूरे सत्संग समाज के अंदर निर्दोषबुद्धि और संप, सुहृद्भाव, एकता प्रगटाएगा।

पप्पाजी के आख़िरी आशीर्वाद हैं और उन्होंने कहा है –

संप, सुहृद्भाव और एकता किसी भी तरह–एट एनी कॉस्ट, सारे गुणातीत समाज में हो।

काकाजी का २६ तारीख का प्रवचन सच में बहुत मननीय है। **उसमें उन्होंने अपना दुःख व्यक्त किया है,** जिसे पुस्तिका के रूप में प.पू. गुरुजी ने प्रकाशित किया है।

इन सभी अनुसंधानों में, जब मैं यहाँ आया, तो गुरुजी के साथ बातचीत हुई थी। मैंने थोड़ा दर्द गुरुजी के पास व्यक्त किया था। तब दासत्वभक्ति के स्वरूप गुरुजी ने कहा था –

मैं तो बहुत छोटा पड़ूँ, लेकिन आप ही कुछ करो तो होगा।

इसी अनुसंधान में प्रभु ने मुझे प्रेरणा की कि उत्सव तो २ से ५ मना लिया, १३ तारीख फ्री है। तो, हम उसका लाभ लें। इसलिए मैंने सजेशन दिया और गुरुजी ने मान्यता दी। फिर मैंने संतों की मीटिंग की और उन्हें भी लगा कि सच में हमें इस तरह उत्सव मनाना है... १५ फरवरी मेरे जन्मदिन पर गुरुजी ने कहा कि यहाँ 'वाईंडिंग अप' कराने के कारण मैं इस बार नहीं आ पाऊँगा, लेकिन अगली बार से हर बार आऊँगा। मैंने सोचा – गुरुजी न आएँ, कोई बात नहीं; पर उनके जन्मदिन पर हम वहाँ जाएँ। इसलिए हम यह सब यहाँ लेकर आए हैं। यूँ १५ तारीख को जो कुछ भी करना था, उसके लिए मैंने संतों से सांकरदा में कहा कि

अक्षरविहारीस्वामी के लिए तुम कुछ करो, वो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। लेकिन गुरुजी के लिए तुम करो, वो विशेष है–महत्त्वपूर्ण है और ऐसी ही उमंग और उत्साह से करो।

(हंसा) दीदी ने एक बार बात की थी कि मुंबई में काकाजी की हीरक जयंती मनानी थी। तो, पप्पाजी ने दीदी से कहा–*एक भजन बनाओ।*

दीदी ने कहा– *काकाजी के लिए भजन मैं किस तरह बना सकूँगी? आपके लिए बनाना हो, तो बना सकती हूँ।*

पप्पाजी ने कहा– *देखो, मेरा भजन बनाओ और काकाजी का नाम लिख दो। मैं और काकाजी अलग कहाँ हैं? हम दोनों एक ही हैं।*

और... दीदी ने बहुत अच्छे तीन भजन बनाए थे, जो हम गाते हैं।

मूलतः कहने का अर्थ यह है कि काकाजी के भजन में पप्पाजी का भाव रखना है, तो अपने आप काकाजी में आ ही गया। उन दोनों में कोई फर्क नहीं है। इस तरह आज मुकुंदजीवनस्वामी का जन्मदिन मनाने के लिए अक्षरविहारी का भाव रखा, तो वो आ ही गया। तो जो कुछ भी किया है, वो अक्षरविहारी के लिए किया है, आपके लिए नहीं किया है। संतों ने अक्षरविहारी का भाव रख कर किया है। सो, इतना स्वीकार करना, ऐसी हमारी विनती है।

फिर संतों ने विचार किया कि कुछ नवीनता करनी है। सो, ऐसी नवीनता की दृष्टि से खिचड़ी का प्रोग्राम किया। सभी को खूब आनंद आया, सभी ने प्रशंसा की। सच में बहुत सक्सेसफुल प्रोग्राम हुआ। आज 'गुजराती थाली' है, उसमें भी सब को खूब आनंद आएगा।

दूसरी विशेषता यह है कि **सांकरदा का मंदिर काकाजी ने ऐसे संजोगों और परिस्थितियों में बनाया है कि उसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते।** अभी नया समाज है, पुराने तो हम सब जानते हैं। **विमुख प्रकरण की शुरुआत में सेवा का तो कोई चान्स ही नहीं था। ऐसे समय में काकाजी ने ताड़देव मंडल के मुक्तों के मुँह में से ग्रास निकाल कर सांकरदा का मंदिर किया है। सबसे पहला मंदिर काकाजी ने सांकरदा का किया और उसके बाद पवई का मंदिर, दिल्ली का मंदिर और शिकागो का ग्रुप हुआ।**

इसलिए मुझे ऐसा हुआ कि काकाजी ने हमारे लिए मंदिर किया है और दिल्ली का यह मंदिर काकाजी का है। **तो काकाजी का ऋण चुकाने के लिए हम सब संतों ने प्रयास किया है।** आप सब स्वीकार करना, यही मेरी प्रार्थना है। हम आपके पास प्रार्थना लेकर इसलिए आए हैं कि **हम या आप अलग नहीं हैं। हम सभी काकाजी और पप्पाजी के हैं।** इससे भी अधिक विशेष बात यह है कि काकाजी-पप्पाजी हमेशा कहते थे– *काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, साहेब जो अलग-अलग स्वरूप दिखते हैं, लेकिन ये सभी महाराज का ही एक स्वरूप हैं।*

महाराज का ही परम तत्त्व, गुणातीतभाव से उनमें रह कर काम करता है। सिर्फ पहचानने के लिए इन सभी को नाम देते हैं। लेकिन, हम उन्हें साक्षात् अक्षरपुरुषोत्तम का स्वरूप मानें। जब सभी में अक्षरपुरुषोत्तम का स्वरूप है, तो उसमें अलगता कहाँ रही? उसमें किसी भी प्रकार की अलगता रहती नहीं है। तो आज सभी संतों को साथ लेकर यह उत्सव मनाने के लिए मैं इसलिए यहाँ आया हूँ कि हम भरतभाई, वशीभाई सभी की

ऐसी इच्छा है कि **हम सब अलग-अलग नहीं बने रहें। हम सब महाराज व गुणातीत के सेवक हैं।** जैसे कि स्वामिजी ने कहा–'योगी परिवार', तो फिर वह सोखड़ा, सांकरदा या दिल्ली अलग-अलग हो ही नहीं सकता। सभी एक ही हैं, भले रहें अलग-अलग। चार भाई अलग-अलग दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता रहते हुए अलग-अलग व्यापार करते हों, पर चारों में संप, सुहृद्‌भाव और एकता हो, उन सभी का मन एक हो, तो सभी इकट्‌ठे होकर आनंद कर सकते हैं। जब भी वे इकट्‌ठे हों, ऐसा ही कहते हैं–हम चार भाई एक बाप के लड़के हैं! भले ही अलग-अलग रहते हैं। ऐसे ही **हम एक ही बाप के लड़के हैं। अक्षरधाम के ही हैं। पप्पाजी** हमेशा कहते – *जहाँ माहात्म्य की खींचतान हो, वहाँ अक्षरधाम है।*

ऐसी खींचतान यहाँ दिल्ली में देखने को मिलती है। आज सांकरदा से संतों-मुक्तों आए हैं, उन्हें यहाँ के मुक्तों का माहात्म्य है। तो, कहते हैं कि कैसे जबरदस्त मुक्त तैयार हुए हैं और सेवा करते हैं। कल सबने खिचड़ी खाकर संतों की महिमा समझी कि अहो हो! कितना भाव है। तो ये जो **एक-दूसरे के प्रति अहोभाव है, उस अहोभाव में ही 'अक्षरधाम' है।** यदि हम अहोभाव से रहते हैं, तो अक्षरधाम में ही हैं। जब अक्षरधाम में ही हैं, तो हमें दूसरी कोई चिंता करने की जरूरत नहीं है। यहाँ सूत्र भी लिखा है कि अन्य कुछ करने की जरूरत नहीं है। आप यहाँ आए, बस... **काकाजी** हमेशा कहते–

तुम एक बार सत्पुरुष के सान्निध्य में आओ, उनके प्रति सद्‌भावना रखो, तो तुम्हें कुछ करना बाकी नहीं रहता। सारी जिम्मेदारी सत्पुरुष की हो जाती है।

भजन-प्रार्थना वे करेंगे, हमारी परिस्थिति भी वे सॅट कर देते हैं। हमें तो योगीजी महाराज ने आशीर्वाद दिए हैं कि तुम ये भगवा कपड़े उतारना नहीं। पात्रता भी मैं घडूँगा और ब्रह्मरस भी मैं ही भरूँगा। जब पात्रता भी वे देंगे और ब्रह्मरस भी भरेंगे, तो हमें कुछ करना बाकी रहता नहीं। इस प्रकार **काकाजी** हमेशा कहते–

तुम्हें सत्पुरुष के सान्निध्य में प्रवेश मिला, तो पूर्णाहुति हो गई।

फिर भले हम कुछ न करें। मुझे खुद सोए रहने की आदत थी। जल्दी सुबह तो मैं उठ ही नहीं पाऊँ। गोंडल मंदिर में सेवा करनी होती थी। मैं जिस छोटे से कमरे में सो रहा था, वहाँ योगीजी महाराज मुझसे मिलने आए। साथ में दो युवक थे, उन्होंने कहा – ये तो सो रहे हैं। तो बापा कहते हैं–

गुरु, सो गए ऐसा नहीं कहना चाहिए। देर रात तक काम किया होगा, इसलिए आराम कर रहे होंगे।

योगीजी महाराज ने हमेशा किसी प्रकार का दोष-स्वभाव देखा ही नहीं। मैंने तो साधु होने के लिए मना किया था। लेकिन स्वामी ने कहा– *नहीं, मुझे तो तुम्हें साधु बनाना ही है।*

मैंने कहा साधु बनाना है, लेकिन उसके योग्य तो होना चाहिए; नख से शिखा तक तो जगत भरा हुआ है। तो कहते हैं–

कोई बात नहीं, तुम चिंता नहीं करना। तुम्हारे दाँत ऐसे खट्‌टे कर दूँगा कि चावल तो क्या हलवा भी नहीं चबाया जाएगा।

ऐसे योगीबापा के आशीर्वाद और काकाजी-पप्पाजी ने साथ-सहकार देकर सच में संतों को सुखी कर दिया।

आख़िर-आख़िर में पप्पाजी सांकरदा के संतों को महाबलेश्वर–बेडि्मंग्टन पॉईन्ट पर अपने साथ ले गए थे। वहाँ पप्पाजी ने इन सब पर ऐसी दृष्टि की कि सभी को अंतर में ठंडक हो गई। यूँ पप्पाजी ने सभी को सुखी कर दिया। इस प्रकार काकाजी-पप्पाजी ऐसे स्वरूपों ने हमें ग्रहण किया है, सुखी करने वाले हैं। किसी प्रकार की चिंता नहीं है। केवल एक ही बात, जैसे वजुभाई ने कहा कि 'आनंद' ब्रह्म का गुण है। तो इन पुरुषों के सान्निध्य में इकट्ठे होकर आनंद ही करते रहें। पप्पाजी का सूत्र है–

किसी का भी देखना नहीं, अपना कर लेना। उदासी आए, तो माला फेरना। अन्य कोई विचार करना ही नहीं।

किसी का भी देखने की तो बात ही नहीं। सभी प्रकृति-स्वभाव से युक्त दिखते हैं। पर, वो प्रकृति और स्वभाव ग्रहण किए हुए हैं–यह मानना है। मैंने एक बार सांकरदा मंदिर में पप्पाजी से कहा–

पप्पा, ये सभी संत सारा दिन कुछ काम करते नहीं, भजन-भक्ति नहीं, सेवा नहीं। कुछ नहीं करते और शोरशराबा करते रहते हैं।

पप्पाजी ने कहा–

देखो, इन सभी को योगीजी महाराज अक्षरधाम में से लाए हैं। सभी ने प्रकृति-स्वभाव ग्रहण किया है, सो तू इन्हें योगी का स्वरूप मान। फिर कहाँ प्रश्न रहा?

तब से मैंने प्रयत्न किया कि सभी को योगी का स्वरूप मानना है और सबसे अलिप्त रहना है। मैं अपने कमरे में ऊपर रहता हूँ, नीचे उधमबाजी होती रहती। सब का सुनता हूँ, पर किसी के प्रति कोई भावफेर किया ही नहीं। पप्पाजी के वचन पर मैंने बहुत प्रॅक्टिस की है। बापा का स्वरूप मानने का प्रयत्न किया, तो आज सच में सुखी हूँ। हक़ीक़त तो यही है कि किसी का कुछ देखे करे बिना हम सबको इकट्ठे होकर आनंद करना है। इस हेतु से **हम सब इकट्ठे होकर भूल जाएँ कि–सांकरदा, या भूल जाएँ–दिल्ली, या मुंबई। वो सब भूल कर 'हम सब एक हैं...' इस भावना से हमें जीना, रहना, वर्तना और आनंद करना है।** बस, इतनी भावना लेकर मैं यहाँ यह उत्सव करने के लिए आया हूँ।

आप सबका भी खूब आभार है कि आप सबने साथ-सहकार दिया है और गुरुजी ने सच में हमें अपने ही गिन कर 'हाँ' की है। वर्ना ये तो मना ही करें। मुझे गुरुजी ने कहा था–

यहाँ सब कुछ है और वो आपका ही है, वहाँ से क्यों लेकर आते हो?

लेकिन, **संतों की ऐसी भावना कि हम सांकरदा में ही उत्सव कर रहे हैं, ऐसी भावना से यहाँ उत्सव करना है...** इस प्रकार की एक शुद्ध भावना से, आत्मीयता के नाते से अल्प प्रयास से आए हैं। आप सभी के साथ-सहकार से इस प्रकार हम सब इकट्ठे होकर, योगीजी महाराज, काकाजी और पप्पाजी का यत्किंचित् ऋण चुका सकें। बहनों ने भजन में लिखा है–

संकल्प मेरा हो, तो भी वह काम दूसरे मुक्तों के द्वारा होता है, वो जो करता है, वो मैं ही करता हूँ;
ऐसा मान कर खुश होऊँ, प्रभुजी ऋण तभी आपका चुकाया जाए।

तो, इस प्रकार की भावना से प्रभु का ऋण चुकाने के लिए हम सब एक होकर आनंद करें और ऋण चुकाएँ। ऐसा करने के लिए सभी को बल, शक्ति और प्रेरणा दें–यही अंतर से प्रार्थना।

प.पू. गुरुजी

...अक्षरविहारीस्वामिजी खुद भजन गाकर सुनाने वाले हैं। तो ऑर्केस्ट्रा वाले खास तैयार रहें, रिकॉर्डिंग वाले तैयार रहें, क्योंकि ऐसा मौका बार-बार नहीं मिलता। मेरे एक जन्मदिन पर अक्षरविहारीस्वामिजी ने सांकरदा में भी गाया था। 'मेरी दोस्ती तेरा प्यार...' के राग का 'दोस्ती' पिक्चर में गाना था। अभी मैं वो ढूँढता हूँ, तो मिलता नहीं। क्योंकि उस समय रिकॉर्डिंग तो हुआ था, पर कहां टेप होगी? दोबारा ऐसा बने नहीं इसलिए खास पहले से इंस्ट्रक्शन दे दी।

स्वामी ने जब बात की, तो पहले मुझे लगा कि आजकल हरिप्रसादस्वामिजी कई बार बात करते हैं, तो भूल जाते हैं। स्वामी का भी ऐसा शुरू हुआ लगता है। वे कहते हैं मैंने परमीशन दी, पर मैंने कहा आपको तो आज्ञा देनी होती है, ये बात वे बार-बार भूल जाते हैं। यहां जो भी आपको करवाना है, अबकी बार नहीं; **पहले भी** एक बार **आप आए थे, तो मैंने कहा था कि स्वामी यहां आते हो, तो जैसे मैं सांकरदा रहता था और आप मुझे कुछ काम के लिए कहते थे कि यह करना है-आणंद जाना है, जहां भी–जो भी जाना-करना हो, वैसे यहां भी कह देना कि यह कर देना है।** आपका ही मंदिर है और दूसरा, **पहले से मैं आपको बड़ा मानता आया ही हूँ। मुझे आपका इरीटेशन भले ही रहा होगा, पर बड़े माने हैं, उसमें कभी कोई फर्क नहीं पड़ा है।**

मेरे नेचर में हमेशा कहीं विरोधाभास दिखाई पड़ेगा। वैसे मेरा मिज़ाज़ स्वतंत्र है, लेकिन फिर भी उंगली पकड़ने का चाहिए ही चाहिए। यह बात किसी से करें कि स्वतंत्र मिज़ाज़ के आदमी को किसी की उंगली पकड़कर चलना-बेहुदी बात लगेगी; लेकिन यह मेरे अंदर रहा है। मैंने खूब सोचा था कि मुझे इनका इरीटेशन क्यों रहता है। बाद में ख्याल आया कि वो इरीटेशन इनके साथ का नहीं था, वह काकाजी के साथ का था कि मैं तुम्हारे लिए इतना जीता हूँ और तुम इनके ऊपर क्यों ढले रहते हो? माइन्युटली देखें, तो वो झगड़ा इनके साथ का नहीं था, वो तो काकाजी के साथ का मेरा क्लॅश था...

ऐसे **संत जिस तरह से बिहेव करते हैं, वह हमें इनकी ऊपरी बातों से नहीं समझ आएगा। पर अगर महाराज के वचन का विश्वास रखा हो, महाराज का यानि इनकी पीढ़ी का, तो हमारी साधना बहुत सरल हो जाए। जो भी कुछ जटिलता नज़र आती है या फील होती है, उसकी वजह यह है कि हम संत का भरोसा न करके अपने माइंड का भरोसा करते हैं।**

अभी अक्षरविहारीस्वामिजी ने बात की कि एक होकर जीना है। कितनी इज़ी बात है कि अलग-अलग हम जो देखते हैं, उसके बदले महाराज के ये अलग-अलग स्वरूप ही हैं–यह मानें। **पप्पाजी** इसे बताते थे–
ब्लू कलर का ग्लास हो, रेड कलर का ग्लास हो, कलर लेस ग्लास हो, लेकिन पानी तो एक सरीखा ही है।

ग्लास के डिफरन्ट कलर्स होने के कारण पानी अलग-अलग कलर का नज़र आता है। इस तरह महाराज ने जिस विभूति में प्रवेश किया हो, उसे देखते हैं–जैसे ये काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी। स्वामिजी ने बहुत अच्छी

तरह कितनी इज़िली समझाया यह। लेकिन हम इनका भरोसा न रखकर मन का भरोसा करते हैं। **मन का एक स्वभाव है–टु क्रिएट कॉम्प्लेक्सिटी। यह एक नेचर ही हरेक चीज को जटिल बना देगा और इसलिए देखो, हमें साधना जटिल लगती है।**

अभी वजु ने बात की कि जो प्राप्ति अक्षरविहारीस्वामिजी को हुई, वो अब हमें हो जाए ऐसे आशीर्वाद दें। मैं बोलने वाला ही था कि मैं जो कहूँगा वो तो तू मानेगा नहीं। जैसे **योगीजी महाराज** ने मुझसे कहा था–***ये प्राप्ति तो तुझे हो चुकी है, तू मानकर चलने लग।***

क्या मानकर चलना है? **'मैं अक्षरविहारीस्वामिजी का स्वरूप हूँ-प्रकाश हूँ'**, वो मानकर ही चलना है। इसमें कोई अभिनिवेश में चलना–ऐसा भी नहीं है, लेकिन **एक जिम्मेदारी से चलना है।**

मैंने बात की न कि मुझे भी ये होश-समझ १९८८ के बाद आई। १९८६ में काकाजी ने शरीर छोड़ा। डेढ़ साल तो चुपचाप ही बेहोश जैसे बैठे रहे। उसके बाद थोड़ा-थोड़ा होश आया, जिसे कहा जाए कि जान आई। फिर यह हल निकाला कि अब जीना तो हमें ही पड़ेगा।

स्वामी की एक बात है, महाराज के समय के १२ सद्गुरु थे। स्वामी ने उस बात का कुछ ज़िकर करके कहा कि **महाराज** ने आनंदस्वामी से पूछा–

हम अगर आपको कोई क्रिया करने के लिए कहें, तो आप किस तरह क्रिया करते हो?

आनंदस्वामी ने कहा–*मैं आप जो कहें, वैसे करूंगा।*

फिर **मुक्तानंदस्वामी** से पूछा तो उन्होंने कहा– *क्रिया करने के लिए मैं एक गिट्ठी मेरी वृत्ति को बाहर निकालूं और क्रिया करके आऊँ, फिर एक हाथ अंदर ले जाऊं तब शांति होती है।*

यह बात शायद आप लोगों को समझ न आए, पर जो पुराने हैं, उन्हें समझ आएगी। फिर **स्वरूपानंदस्वामी** को पूछा कि आप किस प्रकार करते हो, तो कहते हैं –

मैं तो जो भी क्रिया करने जाऊं, मुझे सामने महाराज की मूर्ति नज़र आती है।

देखो ये तीन श्रेणी अलग हैं। फिर महाराज ने कहा–

आनंदस्वामी, मुक्तानंदस्वामी का समागम करें; मुक्तानंदस्वामी, स्वरूपानंदस्वामी का समागम करें।

मतलब कक्षा का भेद बता दिया। काकाजी के मुंह से भी सुना है, योगीजी महाराज भी एक बार बोले थे और **अक्षरविहारीस्वामिजी** ने खुद भी बात की कि–*ये अक्षरविहारीस्वामिजी में स्वरूपानंदस्वामी की चेतना हैं।* इससे मुझे तो यही समझ कर रखना है कि मुझे इनका समागम करना है। तो, इन्हें परमीशन लेने करने की बात तो बेतुकी जैसी है। मुझे आपकी आज्ञा में रहना है, अभी भी मैं तो वहीं का वहीं 'स्क्वेर वन' पर ही हूँ। 'आप जो कहो वही मैं करूं।' एक वेंत वृत्ति अंदर-बाहर की वो बात अभी तक मुझे समझ आती नहीं है...

ये पुरुष किस तरह क्या बात करते हैं, हमें समझ नहीं आएगी। लेकिन एक बात है कि खूब छुपे रहते हैं और **अभी इन्होंने ही बताया कि पप्पाजी ने इन्हें कहा कि जो योगी महाराज के हैं, इनकी सेवा करनी है; इसी बात को लेकर, खुद छुपे रह कर वे चले हैं।**

काकाजी का एक इंसीडंट बताता हूँ। १९८६ तक काकाजी मुंबई से पूरा खर्चा भेजते थे। १९८६ की जनवरी में मुझे वो रुपये पहले दे दिए और कहा–*देखो, इस बार मैंने यह तुम्हें एड्वान्स में दे दिया है।* तब, मुझे पता नहीं लगा। बाद में ख्याल आया कि मार्च में वे रफूचक्कर होने वाले थे, इसलिए जनवरी में पैसे दे दिए।

लेकिन एक बार क्या हुआ कि वे पैसे देते, तो कभी ज्यादा खर्चा हो जाए और... मैं दोबारा मांग लेता था; लेकिन वे कभी भी हिसाब नहीं पूछते थे। वे कभी नहीं कहते थे– बताओ, तुम्हारा महीने का खर्चा कितना है वगैरह-वगैरह... कभी भी नहीं पूछा।

एक बार मेरे मन में विचार आया कि काकाजी पैसे भेजते रहते हैं, मुझे आज तक कभी पूछते क्यों नहीं? इतना कहते थे कि हमें हिसाब लिखना चाहिए। लेकिन कभी भी ऐसा नहीं कहा कि– लाओ, हिसाब की डायरी तो देखें। मुझे हुआ कि क्या काकाजी को ऐसा रहता होगा कि इसे पूछेंगे, तो इसका मुंह लटक जायेगा कि मेरा भरोसा नहीं है। मेरे बारे वे बोलते भी थे कि मुकुंद यानि कम्बस्टीबल एट एन.टी.पी.। मतलब – कम्बस्टीबल एट नॉर्मल टेम्परेचर एन्ड प्रेशर! तो, मैं सोचता था कि काकाजी इसके कारण नहीं पूछते होंगे। एक बार मैंने काकाजी से पूछा–

काका, आप हिसाब लिखने को तो कहते हो, लेकिन कभी हिसाब पूछते नहीं, देखते नहीं हो।

तो कहते हैं – *महाराज ने शिक्षापत्री में कहा है तो लिखना, ताकि हमें ख्याल आए कि हम कहाँ-कितना खर्च करते हैं। तुम कहते हो कि क्यों नहीं पूछते हो।* ***तुम सब बापा के बनाए हुए साधु हो, हमारे भरोसे निकले। हमें तो यही सोचना है कि बापा के संबंध वाले संतों की सेवा करके हम जीवन धन्य कर रहे हैं।***

देखो, इनकी यह भावना।

स्वामी की एक बात है न, बड़े संत की क्रिया हमें हमारी जैसी ही लगती है, पर इन्हें समझने में फर्क है। इनकी हर एक क्रिया चैतन्यलक्षी होती है।

यह सारा ज्ञान हम बोलते हैं, लेकिन बरतते नहीं हैं। कहते हैं न कि **हमारी प्रगति नहीं हो पाई है, इसकी वजह भी यही है कि हमने ज्ञान तो खूब झाड़ा, लेकिन हम उस पर खुद चले नहीं।** अपने यहां हर एक बोलते हैं कि काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी ऐसे बड़े हैं– अक्षरविहारीस्वामी, साहेब वगैरह हर एक की क्रिया चैतन्यलक्षी है, लेकिन **भीतर में कहीं न कहीं 'मायिकभाव' रह ही जाता है। गुणातीतानंदस्वामी ने एक बात कितनी हद तक लिखी है कि – कई साधु बोलते हैं कि स्वामी मंदिर की सेवा की महिमा की जो बातें करते, वो तो हमसे मंदिर का काम करवा लेना है, इसलिए ऐसा कह रहे हैं।**

देखो, ऐसी बात अपने लिए भी होती है। जैसे सोखड़ा में पहली पारायण की थी, अक्षरविहारीस्वामी को ख्याल होगा। तब काकाजी ने ऐसा प्रवचन करा था कि सारी सभा रोई – सब इतने इमोशनल हो गए। तो हम जैसों ने ही बात की – देखा, काका ने सबको रुला दिया और अब सबसे सेवा निकलवा लेंगे। **काकाजी के साथ हेत भी था, लेकिन भीतर में ऐसा मायिकभाव भी हमें रहता था। इसीलिए साधु के साथ हमारा एक अंतराय रहता है। ये बात हम नहीं समझेंगे, तो ऐसे बड़े सत्पुरुष के साथ अंतराय रह जाएगा।**

ये कैसी बात है कि **हम इन्हें बड़े जरूर मानते हैं, लेकिन ये अलग ही कॉन्शियसनेस कहो या अलग ही योनि हैं, वो अभी तक हमारे दिमाग़ ने स्वीकार नहीं किया है।** कृष्ण का भजन गाते हैं, **'गोकुल गांव को पिण्डो न्यारो।'** मतलब वो अपने पिण्ड जैसा नहीं है, अलग है। पर, सब सिर्फ गाया करते हैं, लेकिन कभी सोचते हैं? चरवाहे वगैरह को समझना चाहिए था कि ये अलग हैं। हमारी तरह बोलता है, सोता है, खाता-पीता है, लड़ता-झगड़ता है, रोता या प्रेम करता है, लेकिन हममें और उनमें फर्क है।

भले ही हम लगाव के कारण बोलते नहीं हैं, लेकिन इनकी हर क्रिया में हमारी भीतर में मायिकभाव जमता रहता है और इनसे हमारा डिस्टन्स बढ़ता जाता है। कैसे? मैं बताता हूँ। सीधी-सादी बात समझो कि **हमारी कोई वीकनेस होगी, तो हम उसे ढकने की कोशिश करेंगे। संत के पास भी एकदम खुल्ले नहीं हो जाएँगे।** क्यों? **क्योंकि हमारे मन में ऐसा रहेगा कि–फिर स्वामी हमारे बारे में क्या सोचेंगे?** अगर स्वामी के पास अपनी कमजोरी की बात एकदम खुल करके कह दी, तो स्वामी हमारे बारे में क्या सोचेंगे कि **इतने सालों के बाद ऐसे ही रहे। पर, यहाँ हम गलती खा जाते हैं। वे हमारी कमज़ोरी को यूँ देखते ही नहीं हैं। वे केवल हमारा महाराज के साथ का संबंध देख कर, जो कमजोरी हमने बताई होगी, उसका उपाय वे ढूंढ कर हमें दवाई दे देंगे।** यह बात मैंने खूब पहले से पकड़ी थी। कई चीजें काकाजी को कहनी होती थी, तो बड़ी मुश्किल पड़ती थी। पर, मुझे ख्याल था कि अपने ढंग से तो वो जाने वाली है नहीं, जैसी है वैसी काकाजी या बापा को कहेंगे, तभी इसका इलाज निकालेंगे। मैंने एक चीज यह भी देखी कि **हम इनकी महिमा खूब गाते हैं, लेकिन उन्हें अपनी मां से भी कुछ कम ही समझा है। बोलेंगे क्या? करोड़ों माता; करोड़ों मां का दूध फीका करे, ऐसा साधु का प्रेम है।** पर, बोलना अलग और बीहेव अलग है। कैसे नहीं गिनते हैं, मैं समझाता हूँ। **हम इतना ही विचार करें कि दो भाई हों। एक अच्छा–इंटेलीजेंट, फिज़ीकली भी फिट और दूसरा फिज़ीकली और पढ़ने-करने में भी वीक हो, तो मां किसका ध्यान ज्यादा रखेगी? कमज़ोर का। सो, फायदा तो कमज़ोर को ज्यादा होता है, प्यार भी कमज़ोर को मां ज्यादा करेगी। ठीक इसी तरह साधु हमें जितना कमज़ोर समझे इतना हमारे फेवर में है, हमें फायदा है।** पर, यहाँ बीच में माइंड का इगो आ जाता है। **माइंड हमेशा इगो से पोल्यूटेड है। इसलिए सालों तक माइन्ड से घूमते रहने के बजाय हमें अपना रास्ता यदि शॉर्ट करना है, तो खुलकर अपनी कमज़ोरी संत को बता दें।**

स्वामी मुझे जानते हैं और संतों ने भी देखा होगा कि सेवा का तो मेरा काम था ही नहीं। सांकरदा में था–थोड़ा घूमा करा, फिर दोपहर को मैं कुछ न कुछ पढ़ता रहता था। मेरी सब पुरानी किताबें देखना। श्री अरविंद की किताबें, स्वामी की बातें, वचनामृत–सब कुछ मैंने जो पढ़ा है, ये सारी बातें जो ढूंढी है न, वो इसमें से ढूंढा हुआ है। इसलिए **सबसे पहले हम एक ही बात समझें कि हममें और ये संत में खूब फर्क है।**

गुणातीतानंदस्वामी ने कितनी अच्छी तरह यह बात समझाई कि मछली स्टीमर को देखे और समझ लो कि उसमें सोचने की शक्ति आई है, तो स्टीमर को देखकर ज्यादा से ज्यादा क्या समझेगी कि सामने से ये कोई बड़ा मछला आ रहा है, तो कहीं टकरा जाएँ, इससे अच्छा है कि एक ओर तैर जाएँ। लेकिन ये तो हम जैसी

कितनी मछलियों को अंदर डाल दो, तो लेकर पार उतार देगी–ऐसा वो कभी नहीं समझ पाएगी। यूँ हम बोलते हैं कि–स्वामी बड़े हैं, लेकिन इनमें और हममें खूब फर्क है। **हम खाना खाते हैं,** वो सारी मांसपेशी, खून वगैरह की नलियों में जाता है, **बॉडी को ताक़त देता है। ये खाना खाते हैं, वो अन्न 'अन्नमय ब्रह्म' बन जाता है।** यह समझ आए ऐसी बात ही नहीं है। पर, हमें एक विश्वास रखना है कि वे हम से अलग हैं।

कल देखो मैं खुद सोच रहा था। इन्होंने जब ये खिचड़ी की बात की। खिचड़ी तो मैं जानता हूँ कि सुहृद्स्वामी भी अच्छी बनाते हैं, ये नई बात नहीं थी। बाजरा का रोटले के बारे–बाजरा का आटा यहां ऐसा मिलता ही नहीं, जैसा गुजरात से ये ले आए हैं और वो भी ताजा पीस कर। मैंने सोचा था कि ये गुजरातियों को तो मजा आ जाएगा, लेकिन यहां वाले–यू.पी. के, दिल्ली के, पंजाब से आए हुए हैं इन्हें तो...! पर काकाजी जो बोलते थे कि भावना को हाथ पैर आते हैं, वो बात दिखाई पड़ी। सभी ने खूब टेस्टफुली खाया–दिल से खाया। बेशक, टेस्टी भी था, पर ये संतों की भावना का टेस्ट इसमें ज्यादा था।

...यह बात भी हमें समझनी पड़ेगी ही कि अपने गुणातीत समाज में जो कुछ होता है, वो ऐसे संत खुद जानबूझ कर करते होंगे या महाराज मुक्तों द्वारा करवाते होंगे... मानो कि–इन मुक्तों ने स्वभाव ग्रहण किया है, यह मानना बड़ी कठिन बात है, पर हम इतना तो मान सकते हैं न कि इन पर कंट्रोलिंग महाराज, काकाजी और पप्पाजी का है या हम जिसे मानते हैं, इनका है। **वे ही मेरे लिए ये चीजें बार-बार सामने लेकर आते हैं। हम इस बात को नहीं पकड़ेंगे, तब तक वो सामने आती ही रहेगी और इसका एग्ज़ाम्पल भी बताता हूँ।**

जगत के अंदर आप देखना, बाहर–जिन्हें यह सत्संग नहीं मिला है, इन्हें जो कोई डिफिकल्टीज़ या परेशानी आती होगी, वो बदलती-बदलती आती होगी। कभी उसे बीमारी की, कभी पैसे की रहेगी, तो कभी इगो हर्ट होती रहेगी। अपने यहां देखना, मानो एक के लिए जो एक परेशानी होगी, वही चलती रहेगी। जिसे पैसे की होगी, वो बीमार वगैरह होगा ही नहीं; उसे हमेशा पैसे की झंझट चलती रहेगी। जिसे बीमारी की होगी, उसका डॉक्टर का लाखों का खर्चा चलता रहेगा, पर वो बीमार रहता रहेगा। मतलब, कोई जानबूझ कर करता है। जब तक अपने देहभाव से उठकर आत्मा में रहते नहीं होंगे, तब तक यह बीमारी चालू रहेगी।

हमारी ये **परछाईं** का किडनी का ऑपरेशन था... तब वो एक बार बोली थी कि दर्द तो हो, पर हम आत्मा में रहें तो दर्द कहां रहे? उसकी तो भाषा ही मुझे अभी तक समझ नहीं आई है कि कैसे वो आत्मा में चली गई–भगवान जाने। पर, कुछ भी कह दो–पूर्व के मुक्त हैं।

...संत के साथ जुड़े रहने का मतलब–दिव्यभाव से। दिव्यभाव का मतलब कि हम में और इन स्वामी में, हम में और बड़े संत में, जानवर और इन्सान में जितना फर्क है, ऐसे ही मुझ में और अक्षरविहारीस्वामी में जानवर और इन्सान जितना फर्क है। ये जिस कॉन्शियसनेस में जीते हैं, वो एक अलग कॉन्शियसनेस है। हम इंटलेक्च्युअल कॉन्शियसनेस में रहते हैं।

ये स्वामी जब आए हैं, तो आशीर्वाद देकर जाएँ कि *प्रभुपाद ब्रह्मचारी जैसे कृष्ण कॉन्शियसनेस बोलते;* पप्पाजी बोलते– *जोगी के प्रकाश के रूप में;* काकाजी कहते–*ब्राह्मी कॉन्शियसनेस में हम रहते हो जाएँ...*

‘प्रसादम्’

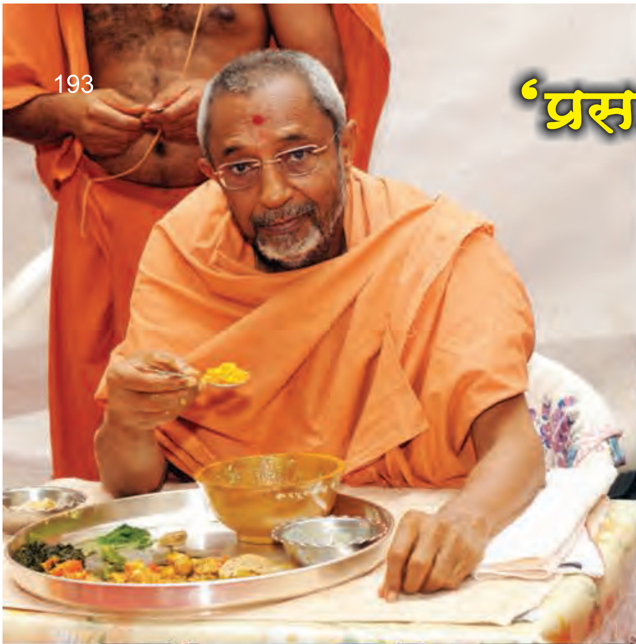

आप सब तो गुरुजी के यहाँ दिल्ली आने के बाद उनके परिचय में, उनसे जुड़े हुए हैं। मगर मैं एक बात अपनी ओर से कहूँगा कि असलियत में गुरुजी हमारे हैं। इसीलिए उनका जन्मदिन मनाने के लिए आज सांकरदा से हम सब संत लोग यहाँ पर आए हैं।

– प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी

12 मार्च 2012

भजन संध्या...

जब मैं सांकरदा रहता था और आप (प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी) मुझे कुछ काम के लिए कहते थे, वैसे यहां भी कह देना... पहले से मैं आपको बड़ा मानता आया ही हूँ... उसमें कभी कोई फर्क नहीं पड़ा है।

– प.पू. गुरुजी

काकाजी की पनाह पाई, मिले गुरुजी हमें जब से, बड़ी किस्मत से मेरा हो गया तआर्रुफ अनलहक़ से,
उनके फ़रमान पे करके फ़नां फ़ितरत हम जीएँगे, काकाजी के पैगंबर का नज़ारा हम भी देखेंगे...

इन्होंने अपनी भावना को व्यक्त करने के लिए खूब ज़हमत उठा ली...
कितने प्रेम से गरम-गरम भोजन खिलाया...

– प.पू. गुरुजी

इन संतों के भीतर जो आध्यात्मिक वैभव है, वो हर एक को टच कर जाता है...

– प.पू. गुरुजी

सांकरदा मंदिर के संतों को हम देखेंगे,
तो जूनागढ़ी संतों की रीती-रस्म का ख्याल पड़ जाएगा...

– प.पू. गुरुजी

और... प.पू. गुरुजी के लिए
प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी
स्वयं भोजन की थाली ले आए !

13 मार्च 2012 – प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की निश्रा में
प.पू. गुरुजी का 75 वाँ प्राकट्य दिन, प्रातः सभा

‘उजवीए जन्मदिन तमारो आज रे...’ – भजन स्वयं गाते प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी

चौद लोकनी हार स्वीकारी, हार ए अर्पण करीए...

हमारी सच्ची शादी तो आज ही हुई है
और
इसी दिनाँक को अब हम अपनी शादी की सालगिरह मनाया करेंगे।

– प.भ. तेजस शाह एवं सौ. अदिति

प.पू. काकाजी ने जिन विपरीत हालात में सांकरदा मंदिर का निर्माण किया था, उसी का, प.पू. गुरुजी के माध्यम से यत्किंचित् ऋण अदा करने की छिपी हुई प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की प्रबल भावना झलक रही थी।

13 मार्च 2012 – प.पू. गुरुजी का 75वाँ प्राकट्योत्सव

सांकरदा के संतों-मुक्तों द्वारा तैयार की गई पृष्ठभूमि एवं केक कटिंग...

गुरुजी क़वायद यही कराएँ, कुटुंबभाव सत्संग में जगाएँ
भेद दृष्टि टालें, हैं सभी हमारे, कर लो दिलों का मेल...

साधु मिलेने कोस्मोपॉलिटन, उन्हां विच होन्दे काकाजी दे दर्शन...

प.पू. योगिनी बहन की हीरक जयंती
एवं
सौ. शीला आंटी के जन्मदिन निमित्त केक कटिंग एवं हार अर्पण...

वी आर एस्पीरन्ट्स, रेग्युलर्लि मस्ट चेन्ट...
वॅन इन प्रॉब्लम, फॉल बॅक ऑन... 'स्वामिनारायण सुप्रीम लीविंग मंत्र'...

13 मार्च 2012 — प.पू. गुरुजी का 75वाँ प्राकट्योत्सव

पू. बापूस्वामी (सांकरदा)

...**काकाजी की आज्ञा से गुरुजी ने यहां ४१ साल से तपस्या की है और काका-पप्पा की रुचि और अभिप्राय की ओर ध्यान रख कर, हमारे गुणातीत बगीचे का विस्तृतकरण अच्छी तरह किया है।** यहां जब मैं सेवा में था, तो गुरुजी ने बताया कि यदि जीवन में अपने गुरु को प्रसन्न करने की भावना से कोई भी सेवा करते हैं, तो यह '**गुणातीत विचार**' है। स्वामिनारायण भगवान ने कृपा करके आत्मा-परमात्मा का सत्संग इस पृथ्वी पर हम सबके लिए प्रदान किया है, उसका कोई मूल्य नहीं है। **ये बातें सिर्फ सुनने जैसी नहीं हैं, चरितार्थ करने जैसी है।** योगीजी महाराज और सभी गुणातीत स्वरूपों ने कृपा करके हमें इस मार्ग पर चलाने की कृपा की है। गुणातीतानंदस्वामी ने अपनी बातों में कहा है–

करोड़ काम बिगाड़ कर, एक मोक्ष सुधार लेना। देखो, **पेंडिंग रख कर नहीं बोला है।**

यह दुनियाभर की बात नहीं है। श्रीजी महाराज को हृदय में जिन्हें धारण करना हो उनकी यह बात है। आप लोग बड़े बिज़नेसमॅन हैं, पंजाब और दिल्ली के ये सब चुनिन्दे अच्छे-अच्छे अमीर भी हैं। तो, करोड़ काम बिगाड़ कर, एक मोक्ष सुधारना–कोई सामान्य बात नहीं है। पर, आप सिर्फ सुनते रहोगे, तो कोई ऐसे महत्त्व की बात नहीं है। यदि हृदय की भावना और इन गुणातीत स्वरूपों की कृपा से सुन कर मूल्य करोगे, तो **यह बात बहुत गहन है। महाराज ने हमें योगीजी महाराज और इन दिव्य स्वरूपों की भेंट देकर कृपा में इस मार्ग पर लिया है।**

मैं ऐसा समझता हूँ कि जब शास्त्रीजी महाराज पांच संत के साथ हरिकृष्ण महाराज की आज्ञा लेकर निकले, तो उस समय जो निष्ठा वाले हरिभक्त थे, उनके सामने वे बोले कि अक्षरपुरुषोत्तम के लिए हमें यदि हरिजन के घर बिक जाना पड़े, तो भी कोई हर्जा नहीं। मगर अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना का कार्य हम नहीं छोड़ेंगे...

आज दिन तक स्वामिजी और गुणातीत स्वरूपों ने बस यही एक बात हमें बताई है कि **जो भी कुछ करना है, उन्हें राजी करने के लिए करना है।** एक बार सहजानंदस्वामी गढ़डा में अपने चरण लंबे रख कर बैठे थे। ५०० परमहंसों ने कितनी कड़ी तपस्या की थी, वो तो सत्संग जो जानते हैं उन्हें पता होगा... इतनी कड़ी तपस्या से भी गुज़रे हुए ५०० परमहंस जब विचरण करके आए और भगवान के चरण में नमस्कार-दण्डवत् प्रणाम किया, तो भगवान ने अपने चरण खींच लिए। सब संतों ने गिड़गिड़ा कर प्रार्थना की। फिर महाराज ने कहा–

आपका ऐसा क्या पुण्य-प्रताप है, आप में ऐसी कौन-सी लायकता है कि मैं जो खुद अक्षरधाम से आया हूँ, उसके चरण स्पर्श करने का भाग्य आपको प्राप्त हो।

सब संत अंतर्दृष्टि करने लगे और महाराज की मूर्ति में निमग्न हो गए। फिर एक विचक्षण संत ने खड़े होकर कहा– ***महाराज हम जैसे भी हैं, आपके हैं।***

यह सुन कर महाराज एकदम प्रसन्न हुए और सबको अपने चरण स्पर्श करने दिए। **यह बात समझाती है कि–हमारा मार्ग कृपासाध्य है, इसमें अपनी बुद्धि, अपना सयानापन नहीं चलता।**

हम बस यही प्रार्थना करते हैं कि काकाजी, पप्पाजी, सोनाबा, कांतिकाका ने योगीजी महाराज को सही अर्थ में पहचाना और सही अर्थ में गुणातीत समाज में बांटा है। कृपा करके हमें यह अवसर दिया है; तो बस हम आपकी 'हां' में 'हां' करते रहें और आपको राजी करने के लिए प्रयत्न करते रहें, उसके लिए बल, बुद्धि और शक्ति आप हम सभी संतों, युवकों, बहनों और गृहस्थों को अर्पण करते रहें।

हम तो यहाँ उत्सव मना कर गए तब से आज के दिन तक तो हमारा उत्सव जारी ही रहा है। स्वामिजी की इतनी भावना है कि उनका उत्सव तो हम सांकरदा में मनाते हैं, मगर वो उत्सव दिल्ली में मना रहे हैं, ऐसा ही मानकर गुरुजी का मनाना है। **स्वामिजी ने हमें यह बताया, सिखाया और समझाया है।** तो बस **हम गुरुजी और स्वामिजी की 'हां' में 'हां' करते रहें। आपने जो सुहृद्‌भाव का सही उपाय बताया है, सब मिलकर इस तरह से चलते रहें, यही ये अक्षरधाम की सभा में,** इन दोनों स्वरूपों के चरणों में और बड़े-बड़े संतों के चरणों में **प्रार्थना है...**

प.भ. पुनीतजी (पानीपत)

...हम सब बात करते हैं कि आज गुरुजी का अमृतपर्व है, बात तो सही है। पर क्या हमारे जीवन में वे क्या सिर्फ 'गुरुजी' ही हैं? गुरुजी हमारे गुरु तो हैं, पर... **किसी के पिता, भाई, मित्र और दादा भी हैं। इस संसार के जितने रिश्ते हम गिन सकते हैं, वो सब के हैं और वो सब रिश्ते गुरुजी ने हमसे निभाए हैं।** ये बात सुनने में शायद कैसी भी लगे, लेकिन यह आसान नहीं है। क्योंकि हम एक गृहस्थ का जीवन जीते हैं, तो इसका पूरा ख्याल है कि घर में हम एक भी रिश्ता ढंग से निभा नहीं पाते। कोई भी गृहस्थ मुझे बता दे कि उसकी फेमिली में वो किसी एक को भी पूरा राजी कर पाया है, उसे अपने पूरे परिवार का स्वीकार है या उसके परिवार को उसका स्वीकार है। बेशक, आज गुरुजी के जन्मदिन पर यह बात छोटी लगे, लेकिन विचार करने जैसी बात है। यह भी बात सही है कि जब गुरुजी हमें पहली बार मिले होंगे या जब-जब भी जिसे भी, तो हमें ऐसा ही लगा कि हमें बहुत अच्छे निर्मल और पवित्र संत मिल गए। गारंटी से कोई नहीं कह सकता कि पहले दर्शन में किसी ने इन्हें गुरु भी मान लिया होगा, लेकिन **धीरे-धीरे हम सबके भीतर वे कैसे बैठ गए? कैसे उन्होंने गुरु का स्थान लिया? कैसे एक पिता का या ऐसा कोई स्थान लिया? कैसे इस लेवल तक आ जाते हैं। हमसे हमारे मित्र बन कर हमारे साथ हंसते हैं, मज़ाक करके आनंद भी कराते हैं। ये धीरे-धीरे कैसे हुआ?**

मेरा संबंध गुरुजी से तकरीबन १५ साल का है, मेरे लिए यह याद रखना थोड़ा इज़ी रहता है, क्योंकि जब गुरुजी की हीरक जयंती मनाई थी, तब मैं सत्संग में नया-नया ही था और आज हम गुरुजी का अमृतपर्व मना रहे हैं।

...एक बात तो पक्की है कि ऐसे स्वरूपों की महिमा समझना और उसे कहना हमारे बस की बात नहीं है। लेकिन हम अगर थोड़ा गौर करें, चाहे वो **काकाजी और पप्पाजी** के आशीर्वाद थे, **वे सब इनके स्वरूप का बखान करके गए हैं।** चाहे काकाजी ने यह कहा हो कि ये ऐसे संत हैं, इन्हें पहचानने में बड़े-बड़े संत भी धोखा खा जाएँगे, ऐसा छुपा हुआ स्वरूप है या पप्पाजी ने कहा हो गुरुजी काकाजी स्वरूप हैं। **ये अपने आप में बहुत बड़ी सर्टिफिकेट-डिग्रियां हैं।** ऐसे गुरु के बारे, ऐसे संत के बारे हम क्या बात करें? लेकिन फिर मुझे यह ख्याल आया कि अपने लेवल पर ही जो गुरुजी ने हमसे १५ साल में रिश्ता निभाया है, उसमें से तो हम एक-दो बात कर ही सकते हैं।

...मैं वो दिन भूल नहीं सकता, जब गुरुजी की हीरक जयंती का उत्सव था। तब हमने १, २, ३ फरवरी १९९७ में मनाया था। हम रात को वहां ऐसे ही खड़े थे। एरेंजमेंट का तब इतना कुछ ख्याल भी नहीं था, न इतने इन्वॉल्व थे। तो गुरुजी ने सहजता से ही पूछा कि आपका रुकने का क्या प्रोग्राम है? मैंने कहा गुरुजी अभी देखेंगे, यहां पर कहीं ठहर जाएँगे। तो बिना एक सेकेंड सोचे हुए गुरुजी ने तुरंत ही बोल दिया कि चलो अंदर आओ। मेरे लिए तो बहुत ही हैरानी और ग्रेटनेस की बात थी। गुरुजी अंदर पीछे जहां अभी सेवकों का कमरा है, वहां खुद रुके हुए थे। उन्होंने उसमें मुझे भी साथ में सोने के लिए कहा। एक अचंभा भी हुआ कि गुरुजी का अपना रूम है, गुरुजी पीछे क्यों रुके हुए हैं? तो मुझे मालूम पड़ा कि गुरुजी ने अपना रूम पप्पाजी के लिए एरेंज किया हुआ है। ये जो छोटी-छोटी बातें हैं, क्योंकि बड़ी बातें न तो हमारी समझ में आतीं हैं, लेकिन जो संत के हमारे साथ की छोटी-छोटी रिलेशनशिप पूरी उम्र याद रखेंगे, तो मेरे ख्याल से उससे ही हमारा काम हो जाएगा।

आज सुबह गुरुजी ने खुद ही कहा कि वे काकाजी की रीत पर पूरे चले हुए हैं। इसमें कोई शक नहीं है। चाहे वो हमारे साथ का रिश्ता कहो या किसी भी बड़े लेवल का रिश्ता कहो। **समझते हुए बुद्धू भी बने, काकाजी की रीत न छोड़ी तूने...** और **काकाजी की रीत पर चलते हुए इन्होंने पूरे 'गुणातीत समाज' में जो अपना एक स्थान बनाया है, जो पेशन्स पिछले १५ साल में हमने देखी है, उसका रिजल्ट आज देख कर मन ऑटोमेटिकली बहुत ही भावुक हो जाता है। जो सुहृद्‌भाव-आत्मीयता की बातें हमने इतने सालों सुनीं, उसका आज अद्‌भुत दर्शन सहज ही दिल को छू लेता है।** एक छोटी-सी बात शेयर करना चाहूंगा। अगर हम वो पकड़ लें तो शायद हमारा काम पूरा हो जाए या यूं कहना चाहिए कि पूर्णाहुति हो जाए।

ये योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव का फंक्शन हुआ, तो समाज को गुरुजी क्या सिखाते हैं, उसकी मैं बात कर रहा हूँ। ये बात, मेरे ख्याल से, यहां शेयर करनी बिल्कुल एप्रोप्रीएट हैं। गुरुजी ने बीच में जो भी यहां सेवक थे उन्हें बात की–

देखो, ये फंक्शन तो अच्छा हो ही जाएगा। यह काकाजी का फंक्शन है, एरेंजमेंट सब अच्छे हो जाएंगे, गुणातीत समाज के जितने भी भक्त यहां आएंगे, वे भी खुश हो जाएंगे। ***लेकिन एक बात याद रखना, तुमने आपस में सुहृद्‌भाव न रख कर अगर फंक्शन बहुत बढ़िया भी कर लिया, तो मेरी निगाह में यह फंक्शन फेल ही है।***

हम जगत में देखेंगे बहुत बड़े-बड़े फंक्शन होते हैं और जिन्हें हम धार्मिक फंक्शन भी कह सकते हैं, वहां आध्यात्मिकता कितनी होती है वो मुझे ख्याल नहीं है; लेकिन वहां सिर्फ वाह-वाह जुटाने के लिए ही फंक्शन होते हैं। इतना बड़ा फंक्शन हुआ, यह हुआ-वो हुआ... लेकिन एक गुरु का अपने सेवकों को ऐसा सूचन करना कि तुम्हारे फंक्शन में एरेंजमेंट थोड़ा इधर-उधर हो, तो वह चलेगा। **लेकिन यह सेवा करते हुए आपस-आपस में हम करीब आए, वो रिज़ल्ट हमें इस फंक्शन का लेना है।** मुझे यह समझ नहीं आता कि गुरुजी को हम कितना धन्यवाद करें।

एक बात और कि **चाहे फरवरी की ४,००० एटेंडंस हो या १,००० की सभा हो या २०० की सभा हो या गुरुजी के साथ मैं अकेला बैठा हूँ, गुरुजी में से एक सरीखी ही बात आती है। उन्होंने कभी भी अलग-अलग बातें नहीं कीं।** तो मन कैसे न मानें कि ये भगवान का स्वरूप हैं। हमारे पास इनकी और कोई पहचान नहीं है। पर, इन छोटी-छोटी बातों को हमारे जीवन में अगर हमेशा ताज़ा रखें, तो शायद हम इनके स्वरूप तक पहुंच जाएँ। **वे कभी किसी मूल्यांकन में नहीं गए।**

मुझे सत्संग में रहने के लिए कहो या चलने के लिए कहो, इनकी ऐसी एक-दो बातें हमेशा याद रहेंगी और मुझे हेल्पफुल भी हैं... काकाजी क्या विभूति थीं और गुरुजी हमें क्या मिले हैं, वो अंदाजा लगाना मुश्किल है।

गुरुजी ने एक बार बात कही थी... हमें शहर-शहर में मंदिर नहीं बनाने। मानो, जयपुर में निष्ठा वाली एक हमारी फेमिली हो गई, तो समझो कि पूरे जयपुर को सत्संग हो गया और हमारा जयपुर में यह एक मंदिर हो गया। अमृतसर में यही बात और अगर मेरा ख्याल गलत नहीं, तो पानीपत में जहां हम रहते हैं, वहां पर भी इन्होंने हम पर ऐसी आशीष वर्षा खूब की है कि मेरा यह एक घर, हमारा मंदिर है। **वो अलग बात है कि हम इस पर चले या नहीं चले, वह मेरे लिए अंतर्दृष्टि करने की बात है।** इससे अंदाजा लगाएँ कि हमारे गुणातीत समाज के कितने हज़ार मंदिर हो गए। यह बात न तो हमें गिनिज बुक में रिकार्ड करानी है और न ही किसी को समझानी है। **यह बात हमारे समझने के लिए है कि हमें किस कक्षा के संत मिले हैं...** और हमें क्या एक्सपीरियन्स करने हैं? कोई जादू देखना है, मॅजिक देखना है?

...यह उत्सव देखा। कल रात से हम एक अद्‍भुत दर्शन कर रहे हैं। आज सुबह भी सभा में बातें हुईं तो ख्याल पड़ता है कि इस उत्सव से एक बात तो तै है कि इन स्वरूपों से दिल से जो जुड़े हैं, उन्हें चिंगारी तो अंदर लग गई है। इसे हम मंगलकारी कहें या क्रांतिकारी कहें। गुरुजी जहां हमारे जीवन के मंगल तो हैं ही, पर मैं समझता हूँ कि – ये क्रांतिकारी संत हैं। **जो धैर्य-दर्द मैंने इनके अंदर १५ साल में देखा है, उसका तो मैं साक्षी हूँ। आज फील होता है कि तत्त्व से सभी स्वरूप एक ही हैं।**

सो, खूब-खूब धन्यवाद प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी को जिन्होंने एक ऐसा जॅक्चर करके सबके सामने सॅम्पल पेश किया और जो दर्द गुरुजी के दिल में हमने १५ साल से देखा, उसे उन्होंने आज रेसीपोक्रेट किया।

आज इन गुणातीत पुरुषों के चरणों में एक प्रार्थना कि हम अपने व्यवहार से इन्हें इतना भरोसा दिला दें, इनके मन में इतनी ठंडक कर दें और इन्हें इतना राजी कर लें या इन्हें इतना मजबूर कर दें कि यहीं इसी

जगह पर हम सब इकट्ठे होकर गुरुजी का सौवां साल खूब धूमधाम से मनाएँ। यह मैं अकेला बात नहीं कर रहा... सबकी भावनाओं को रिप्रेजन्ट कर रहा हूँ; अगर ये हमसे हो गया, तो दूसरा कुछ करना नहीं है। ये तो कुछ दिल की बातें थीं। समय ही बताएगा कि कितना कामयाब रहे।

आज के दिन अगर फरवरी के फंक्शन की थोड़ी बात न करें, तो बात शायद अधूरी लगती है। गुरुजी ने प्ले के बारे में भी यही कहा कि सबने वाह-वाह की, प्ले अच्छा हो भी गया। **लेकिन वो प्ले, 'प्ले' बनकर न रह जाए, हमारे जीवन में कितना उतरा, इसकी हम रोज़ अंतर्दृष्टि करें...**

प.भ. कॅप्टन तेजस शाह (मुंबई)

...ये तो मुझे नहीं पता कि मुझे यहां क्यों बिठाया गया है; क्योंकि सारे संतों के बीच में मेरा बैठना तो मानो सभी बड़े लोगों के सामने किसी भी छोटे आदमी को उठा कर रखना, ऐसा हुआ है। मेरी कुछ भावनाएं और एक्सपीरियेंसिस आपके साथ शेयर करना चाहूंगा।

मेरा नाम तेजस शाह है और मैं मुंबई से हूँ। सब मुझे यहां पर प्राची शाह के भाई के रूप में जानते हैं। २००७ में जब मैं केवल १८ साल का था, तब प्राची दीदी मुझे यहाँ लेकर आई थीं। तब मैं दिल्ली में पाईलट ट्रेनिंग के लिए आया था और ट्वेल्थ पास किया था... प्राची दीदी ने कहा था कि एक स्वामिनारायण–गुरुजी हैं, उनसे जाकर हमें मिलना है और मैं तो ऐसे ही आया था। **मुझे नहीं पता था कि वो एक स्वामिनारायण–गुरुजी मेरे जीवन और मेरी लाइफ को इतना प्रभावित करेंगे।**

...मैं कैप्टन बना, तो गुरुपूर्णिमा का दिन था। जैसे-जैसे मेरी प्रगति होती गई, उसके हर एक स्टेप की शुरुआत मैंने इस मंदिर से, गुरुजी के सामने-उनके चरणों में की। २६ फरवरी को मेरी शादी अदिति के साथ हुई, तब भी गुरुजी मुंबई आए थे... आज जब हम फिर से आए, तो उन्होंने मुझे खुद अपना हार पहनाया और एक दूसरा हार अदिति को मैंने पहनाया। **अदिति ने मुझसे कहा कि आज से हम लोग अपनी मॅरेज एनीवर्सरी इसी दिन सेलिब्रेट करेंगे। २६ फरवरी नहीं, १३ मार्च को...**

मैं एक बात तो दिल से कहना चाहूंगा कि जो मैंने यहां पूरे परिवार के साथ जो सीखा है, वो है–सेवा का मतलब! **सेवा का अर्थ मैंने यहां पर सीखा है कि ऐसी सेवा जो आप कभी भी, किसी भी पैसों से, कितने भी पैसों से आप कभी खरीद न पाओ...**

पू. स्नेहलस्वामिजी (सांकरदा)

...जन्माष्टमी बिल्डींग में योगीजी महाराज ने प्रश्न पूछा था–

जीव ब्रह्मरूप कैसे होता है?

सब बड़े-बड़े बैठे थे, किसी ने उत्तर नहीं दिया। योगीजी महाराज ने कहा–

बड़े पुरुष (कृपा) दृष्टि करते हैं, तो जीव ब्रह्मरूप हो जाए।

योगीजी महाराज ने ही दोबारा प्रश्न पूछा– *बड़े पुरुष दृष्टि कब करते हैं?*

स्वयं उत्तर दिया – *देहभाव गिने बिना सेवा करें, तब।*
जिसे पप्पाजी कहते थे – *ग़रज़ से सेवा करो, दिव्यभाव रखकर सहन करो।*

...पप्पाजी जब-जब सांकरदा आते – ९ सितंबर को पप्पाजी आए थे, तब स्वामिजी पर खूब प्रसन्नता व्यक्त की है! ऐसे ही जब गुरुजी से मिलते तो खूब प्रसन्नता व्यक्त करते। उसका कारण क्या? उनके दो संकल्प! पहला संकल्प – **संप, सुहृद्भाव और एकता**; एवं दूसरा संकल्प – **गुणातीत भावना वाले साधु बनो।** पूज्य महंतस्वामी अंत्य २६ के मुताबिक कहते – *जिसे तिलक करें, वो भगवान को पहुँचे।* काकाजी ने ऐसे गुणातीत साधु की बात की... काकाजी ने कहा था –

मैं, हरिप्रसाद और पप्पाजी जो कुछ भी कहें, वो 'श्रुति' कही जाती है, 'स्मृति' नहीं।

ऐसा स्पष्टरूप से उन्होंने कहा। श्रुति मतलब – 'वेद वाक्य!' **ज़माने के अनुसार स्मृति बदलती है।** पराशर स्मृति, वायग्नायकल्प स्मृति, मनुस्मृति, पर **श्रुति नहीं बदलती। यूँ काकाजी और पप्पाजी के मुख से जो वाक्य निकलें, वो 'श्रुति' गिनी जाती है।** काकाजी ने लिखा है –

शुद्ध, पवित्र, अष्टांगयोग सिद्ध किया हुआ हो, आकाश में अद्धर उड़ता हो, ज़मीन में डटा रहता हो, करोड़ों लोगों को सत्संग कराता हो, पर जब तक मन का आभास है, तब तक पक्षपात रहेगा ही, भेदभाव रहेगा है, क्षोभ रहेगा ही।

आज सुबह गुरुजी ने बात की, **जब तक हमारा मन और बुद्धि है, तब तक संप, सुहृद्भाव और एकता में विरोध आएगा।** स्वामिजी ने जन्मदिन पर बहुत सुंदर बात की।
अक्षरविहारीस्वामिजी ने कहा – *हम सब एक ही हैं।*
काकाजी ने **'मोती बिखरे चौक में'** भी बात की –

भगतजी महाराज मतलब जागास्वामी, मतलब अदा, वे तीनों स्वरूप एक ही थे।

...लेकिन, भेददृष्टि हम जैसे सेवकों में रहती है। योगीजी महाराज को संप, सुहृद्भाव, एकता का कायदा बहुत पसंद था। बापा कहते –

पाँच ही युवक संप, सुहृद्भाव और एकता से रहें, तो मेरा देह पच्चीस साल तक अधिक रहेगा।

...काकाजी ने कहा था –

हे अक्षरविहारीस्वामी! आप, महापुरुषस्वामी, कोठारीस्वामी, शास्त्रीस्वामी, गुरुजी, सब एक होकर बरतो, तो लकड़ी में से सुर निकलेगा, केकट्स पर केले आएंगे और गधे की गाय होगी।

उन्हें वो पसंद था और उन्होंने यह भी लिखा – ***अभी तक हम यह कर नहीं सके हैं।***

काकाजी को यह दर्द था।

गुरुजी के महात्म्य दर्शन के बहुत सारे प्रसंग हमें पता हैं। पिछली बार अपने प्रवचन में उन्होंने कहा था कि गुणातीत कबीले के आप सभी सदस्य आना, कोई रह मत जाना। पहले से टिकट बुक करा लेना। उनको यह पसंद है...

आप विचार करो, काकाजी और पप्पाजी को खूब आनंद होता होगा कि स्वामिजी सांकरदा से पूरी गाड़ी भरकर सामान लेकर आए। **स्वामिजी को कितनी महिमा कि मेरे गुरुजी का जन्मदिन!** उसके पीछे की

भावना क्या है ? **उसके पीछे की भावना एक ही है कि संप, सुहृद्भाव और एकता गुणातीत समाज में हो,** हम सब एक ही हैं। **पप्पाजी** ने कहा–

हम सबको अक्षरधाम में साथ में रहना है। बाकी सब तो जीव कोटि है। जन्म लेते हैं, जीतें हैं और मरते हैं।

तो, अब वो मत्थापच्ची न करें। हम सब गुणातीत समाज के सदस्य हैं, प्रगति करते हुए चैतन्य हैं। हमारे **गुणातीत समाज में, सांकरदा हो या सोखड़ा हो, विद्यानगर हो या दिल्ली हो या शिकागो हो, सभी 'अक्षरधाम' के ही हैं, कोई भेदभाव नहीं है** और गुरुजी के चरणों में ऐसी प्रार्थना कि जिनकी तैयारी हो, उन सभी को मूर्ति सिद्ध बना देना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

पू. यज्ञप्रियस्वामिजी (दिल्ली)

... मैं एक भजन की पंक्ति बोलूंगा–

छोतेर वर्षे जोगी छे बाळसमो-२

एवी मूर्ति मारा दुःखने दमो रे-२

जोगीए गोंडल ने गोकुळ बनावियुं, गोकुळ बनावियुं...

ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज को जब ७६वां साल बैठा था, तो **कवि दुला काग** ने यह भजन उन पर बनाया था... आज प.पू. अक्षरविहारीस्वामी संतगण के साथ पधारे हैं, तो यह माहात्म्य का माहौल देख कर ऐसा लगता है कि **'गोकुल गांव'** यहां आया है।

...जैसे कि काकाजी महाराज कहते थे कि अकेले तो शायद हम सब बेस्ट कर सकते हैं, पर जोड़ में काम करने का सिद्धांत काकाजी महाराज का था। मुझे इस फंक्शन में जो टच कर गया, वो यह था कि हमारे सत्संग में **श्यामलालजी** और **महेशजी** पुराने नहीं हैं, लेकिन उन्होंने जिस प्रकार से इस फंक्शन की सेवा की और जोड़ में वो सेवा की, उसे मैं विशेष महत्त्व की बात मानता हूँ। ऐसे ही हमारे **आशीषभाई** और **मिलनभाई हैं**! आज हमारे मंदिर का शिखर आसमान को छू रहा है, उस पर ध्वजा भी लगी है। इसके पीछे **दोनों का काकाजी महाराज और गुरुजी को राजी करने का भाव था, तो उन्होंने जोड़ में काम किया।** यह प्रोजेक्ट शुरु करने से पहले मिलनभाई से गुरुजी ने कहा था कि आप आशीष को पकड़े रखना। **आज भी दोनों का दर्शन करते हैं, तो दोनों मिलकर ही कोई काम करते हैं।** तो आज प्रार्थना है कि **उन्होंने जो ऐसी भक्ति अदा की है, वैसी हम भी अदा कर पाएँ।**

साथ ही साथ अक्षरविहारीस्वामिजी पधारे हैं। उससे पहले **बापूस्वामी, आचार्यस्वामी और कोठारी उपेन्द्रस्वामी** इस कंस्ट्रक्शन की सेवा में आए थे। हम इन संतों के साथ यहां चार से छः महीने रहे। मैं तो नया हूँ, लेकिन वड़ील संतों के साथ रहकर, इनकी साधुता के दर्शन करके इनसे बहुत सीखने को मिला... एक बार रात को काफी देर हो गई थी, तो कम्प्यूटर पर बैठे-बैठे सब थक गए थे। सबने कहा–चलो, कॉफी पीएंगे। दो-तीन लड़के किचन में गए और फ्रीज में सब जगह देखा, लेकिन किसी को वहां दूध नहीं मिला। वे सब वापिस आकर बोले कि दूध नहीं है। बापूस्वामी उठे और कह कर गए कि मैं अभी आता हूँ। १० मिनिट के

अंदर-अंदर पतीली भर कर गरम दूध, अलग से कॉफी पाउडर, चीनी वगैरह सारा सामान ले आए। उन्हें सेवा का ऐसा माहात्म्य – आचार्यस्वामी को भी सेवा का ऐसा माहात्म्य। कोठारी उपेन्द्रस्वामी – वे मेरे साथ महापूजा में रोज बैठते थे, तो हर रोज की स्मृति उन्होंने मुझे दी है।

ये मंदिर के निर्माण के लिए मैं बोलना चाहूंगा कि भगवान स्वामिनारायण के समय का एक प्रसंग है कि एक परमहंस गांव में मंदिर बनवा रहे थे, उनका नाम था व्रजानंदस्वामी। मंदिर की दीवारें तो खड़ी हो गई थी, लेकिन अभी छत डली नहीं थी, खपरैल डालने बाकी थे। बरसात का सीज़न आने वाला था, तो उन्हें चिंता थी कि अगर बरसात हो गई, तो ये जो मेहनत अभी तक हुई है, वो बेकार हो जाएगी। उसी समय एक भक्त वहां आए। ठाकुरजी के दर्शन करते हुए, स्वामी को चिंतित देख कर उन्होंने समस्या पूछी। सब समझ कर अपने घर गए और घर के खपरैल उतार कर बैलगाड़ी में लादकर वे मंदिर ले आए। भक्तों की ऐसी भावना थी। स्वामी ने कहा – *तुम्हारे घर पर नहीं चाहिए? हम खरीद कर ले लेंगे।*

वो बोला – *स्वामी अभी मिलेंगे नहीं और बरसात का सीज़न आ रहा है। हमारे जैसे भक्तों के घर जो आज सुखी और समृद्ध हैं, वो केवल आप जैसे संतों के कारण हैं। आपने हमें निर्व्यसनी बनाया, हमें सुखी और समृद्ध बनाया, वर्ना हमारे घर की छत पर केवल घास-फूस ही होती थी, उसके बजाय आज खपरैल डल गए। सो, ये खपरैल आप मंदिर की सेवा में स्वीकार करो।*

ऐसे ही ये जो दिल्ली मंदिर का निर्माण हुआ है, उसके निर्माण में भक्तों का ऐसा समर्पण-भावना है। एक छोटा प्रसंग मैं आपको बताना चाहूंगा कि पंजाब से हमारे **टिम्मी भैया** आते हैं। उनके पास सिर्फ टू व्हीलर था। तो यहाँ सबने उनसे कहा कि आप गाड़ी ले लो। उन्होंने फट् कहा –

गुरुजी ने अभी मंदिर का हॉल बनवाने का काम हाथ में लिया हुआ है, मुझे सेवा कॉन्ट्रीब्यूट करनी है। जब हॉल बन जाएगा, उसके बाद ही फोर व्हीलर के बारे में सोचेंगे।

भक्तों ने ऐसा समर्पण करके मंदिर का निर्माण करवाया है। यह तो केवल एक प्रसंग बताया, लेकिन सभी भक्तों की ऐसी भावना कहनी पड़े। तो, मैं गुरुजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी और सभी स्वरूपों से मंदिर के सारे स्टाफ की ओर से प्रार्थना करूंगा कि **भक्तों की ये जो भावना है, वो हम कभी न भूलें और उनका ऋण हम पर सदा बना रहे।** सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. भरतभाई (पवई)

...एक मिनिट सब मिलकर धुन करते हैं। अक्षरविहारीस्वामिजी, गुरुजी, दिनकरभाई और सभी स्वरूपों जो आज हमें सुहृद्भाव की बात बता रहे हैं, सुहृद्भाव से जीने के लिए जो कह रहे हैं और उसके लिए स्वयं इतना परिश्रम उठा रहे हैं, तो हम सब मिलकर ऐसी धुन का अर्ध्य उनके चरणों में अर्पण करें कि आप जो सुहृद्भाव से जीना हमें कहते हैं, हम ऐसा जी पाएं।

आज जो सुहृद्भाव का आनंद हम ले रहे हैं, उसकी कोई सीमा नहीं है। **अक्षरविहारीस्वामिजी** ने सुबह बात की कि –

गुरुजी ने मुझे बताया कि आप इसकी शुरुआत करो और वो आपको ही करना है...
और... अक्षरविहारीस्वामिजी ने वो स्टेप उठाया है।

आज जो बात हुई, प्रसंग बने हैं, उन्हें याद करता हूँ तो २६ जनवरी १९८६ में काकाजी का साक्षात्कार दिन '**गुणातीत ज्योत**' के प्रांगण में मनाया, तब जो कथावार्ता और सुहृद्भाव, एकत्वभावना की बातें हुई थीं, वो सब याद आ रही हैं।

उस दिन भी गुरुजी ने बहुत अच्छा प्रसंग बताया था और सुहृद्भाव के बारे में जो बहुत अच्छी बात की थी आज भी मुझे तादृश है–

स्वामिनारायण भगवान के समय में गुणातीतानंदस्वामी के पास कोई कंठी पहनने के लिए आया कि स्वामी मुझे कंठी पहना दो–उसके गले में कंठी तो थी, तो स्वामी बोले – *ये कंठी पहनी तो है।*

वह बोला– *यह तो शुकस्वामी ने पहनाई है, अभी आप हैं तो आप पहना दो।*

तब गुणातीतानंदस्वामी बोले – *शुकस्वामी ने पहनाई है! वे तो महाराज से मिले हुए हैं। अब मुझे पहनाने की कोई जरूरत नहीं है।*

इस बात से वे ये कहना चाहते थे कि हमें इसी तरह कोई भेद दृष्टि नहीं रखनी है। सुहृद्भाव, एकता की वो बातें उस समय २६ जनवरी को हुईं, वो प्रसंग मुझे याद आता है। अभी जब हमने ७ मार्च मनाई, तब काकाजी का २६ जनवरी का यह पूरा प्रवचन सुना था। उसमें काकाजी ने एक बहुत अच्छी बात बताई –

हम सब को मिलकर ऐसी व्यवस्था करनी है कि ***जो भी भगवान भजते हैं, जो भी ये साधना करते हैं, जो इस मार्ग में आते हैं, उन्हें तनिक भी तकलीफ न हो, ऐसी व्यवस्था करनी है। वे हंसते-हंसते, सुख लेते-लेते साधना मार्ग पर जाएँ, ऐसी व्यवस्था करनी है...***

और उसके लिए काकाजी ने वहां तीन शब्द बताए हैं। ये तीन शब्द मैं इसलिए बोल रहा हूँ कि **गुरुजी हमें उनका दर्शन कराते रहते हैं।** आज अक्षरविहारीस्वामिजी के सान्निध्य में उसका दर्शन हमें हो रहा है। उसमें **तीन शब्द** ये बताए :

पहला शब्द बताया – **सद्भाव**!

ऐसे गुणातीत स्वरूपों के प्रति हमें निरंतर सद्भाव बना रहे... ऐसे सद्भाव के लिए काकाजी हमेशा बोलते थे और गुणातीतानंदस्वामी ने बताया – ***सद्भाव में निर्वासनिकता! ऐसे संतों के प्रति हमारा सद्भाव निरंतर बना रहे, तो हमारी साधना में कभी तकलीफ नहीं आएगी।***

दूसरा शब्द बताया – **सर्वदेशीयता**!

...हम जिस भी स्वरूप के पास जाते हैं, जिसे भी मानते हैं, उस स्वरूप को हम जहां भी, दिल्ली आएँ तो गुरुजी में अपने स्वरूप को देखें कि ये स्वरूप जो बोल रहे हैं, वो मेरे लिए ये हैं।

जैसे गुरुजी ने अपने जीवन के प्रसंग से बताया। प्ले में हमने देखा था कि काकाजी ने गुरुजी से कहा–

हमें इंग्लिश में यह एक ब्रॉशर छपवाना है। उसे मुझे फॉरेन लेकर जाना है।

काकाजी ने गुरुजी के साथ बैठकर वो सारा ब्रॉशर तैयार करवाया और जब गुरुजी वो ब्रॉशर छपवाने के लिए आणंद गए और वहाँ जाने से पहले पप्पाजी के दर्शन करने के लिए गए और पप्पाजी से सारी बात की। तो

पप्पाजी ने इमिजियेट्ली कहा – *हमें अभी कोई जरूरत नहीं है, इंग्लिश पढ़ने वाले कितने हैं? इसलिए हमें नहीं छपवानी।*

वो बात गुरुजी ने तुरंत ही एक्सेप्ट कर ली कि इनमें से काकाजी ही बोल रहे हैं। ऐसा करके सांकरदा लौट गए। बाद में गुरुजी सोचते हैं कि पहले हर रोज काकाजी का फोन आता था कि वो ब्रॉशर का क्या हुआ? मगर जब यह प्रसंग हो गया, तो कभी फोन करके पूछा भी नहीं। जब काकाजी ८-१० दिन के बाद दोबारा गुजरात आए और गुरुजी से मिले, तो वो ब्रॉशर के बारे में कुछ पूछा ही नहीं। फिर जब गुरुजी ने सामने से बात छेड़ी तो काकाजी बोले – *हाँ, बोलो क्या हुआ?*

गुरुजी ने सारी बातें बताईं, तो काकाजी इतने राजी होकर बोले – *वाह! तुमने सर्वदेशीयता के मेरे ज्ञान को पचाया है।*

ऐसे गुरुजी आज हम में **सर्वदेशीयता** के बीज डाल रहे हैं और सिखा रहे हैं। सुबह वशीभाई ने सही अर्थ में बोला – अक्षरविहारीस्वामिजी ने जब डिसाईड किया कि सांकरदा में हम गुरुजी का प्रागट्य दिन मनाएँ, इसी तरह से हमें यह दिन मनाना है और गुरुजी ने 'हां' कर दी। इसके लिए तो धन्यवाद है ही, मगर सब भक्त उसमें शामिल हो गए, इसलिए उन्हें बहुत-बहुत धन्यवाद।

तीसरा शब्द काकाजी ने दिया – **सुहृद्भाव!**

इस बार गुरुजी पवई आये थे, तो बहुत अच्छा वाक्य बताया –

हम जहां रहते हैं, वहां हम सुहृद्भाव से न जीएं। अंदर-अंदर हम एक-दूसरे से दूरी रखें और एक दूसरे को हेल्पफुल न हों, ग्रंथि बनाए रखें और बाहर से आए भक्तों के साथ हम सुहृद्भाव रखें कि ओहो आप तो बड़े हो, आपकी क्या सेवा करूं, आपके लिए अपनी जान हाज़िर कर दूँ, तो वो हमारा दंभ है

और

दूसरी ओर हम अंदर-अंदर में सुहृद्भाव रखें, जहां रहते हैं वहां एकदम बहुत अच्छा भाव रखें; मगर यदि किसी दूसरे सेंटर के मुक्तों के साथ हमें अलगता का भाव रहे कि ये तो दूसरे हैं, तो वो हमारी कसर है।

और... हमारी **ऐसी कसर टालने के लिए आज अक्षरविहारीस्वामिजी इतना प्रयत्न करके यह बता रहे हैं कि हमें ऐसी कसर नहीं रखनी है।** इसके लिए आज गुरुजी के चरणों में उनके प्रागट्य दिन पर प्रार्थना करते हैं।

काकाजी ने गुरुजी को यहां दिल्ली भेजा, तब उन्हें ऐसा दिल में हुआ –

मैं यहां सबसे मिलजुल कर नहीं रह पा रहा हूँ, इसलिए काकाजी मुझे दिल्ली भेज देते हैं कि तुम इधर से दूर रहो।

पर, दिल्ली जाने से पहले काकाजी ने स्पेश्यली मुझे बड़ौदा बुलाया और कहा –

यह मैं तुझे दिल्ली नहीं भेज रहा हूँ, योगीजी महाराज आपको दिल्ली भेज रहे हैं। उनका संकल्प है इसलिए आप दिल्ली जा रहे हो, न कि मैं आपको कह रहा हूँ...

बाद में यह बात बहुत बार हमने गुरुजी से सुनी और खुद भी योगीचरितम् में पढ़ी है कि योगीजी महाराज का यह संकल्प था। गुरुजी यहां पधारे और बापा के संकल्प से इतना बड़ा कार्य ये सभी भक्तों के साथ उनके साथ मिलकर किया। सच, गुरुजी ने जो कार्य किया है, वो कोई सामान्य बात नहीं है।

मैंने तो देखा है १९७५ में जब हम आए थे, तो काकाजी को कहीं जाना हो, तो तब अपनी कोई गाड़ी नहीं थी। एक बार हमारे **पकाई साहब** से गुरुजी ने कहा होगा कि काकाजी को नंदाजी के यहां जाना है, तो वे बोले मैं इन्हें वहां छोड़ते हुए निकल जाऊंगा। तो, काकाजी बोले – *हां, ठीक है। तुम मुझे नंदाजी के यहां तुगलक रोड पर छोड़ देना।* मैं साथ में गया था। वे तो वहां छोड़कर चले गए। आज तो भक्तों को बहुत-बहुत धन्यवाद है। हमारा पूरा ख्याल रख कर पूछते हैं कि आप इधर से जाओगे, तो वापिस कैसे आओगे? उस समय काकाजी को कोई पूछने वाला नहीं था कि आप वापिस कैसे आओगे? और मुझे मालूम है कि जब नंदाजी के यहाँ कार्य खतम हो गया, तो काकाजी मुझ से बोले – *तुम रिक्शा लेकर आओ।* मैं रिक्शा लेने के लिए बाहर गया, मगर वहां रिक्शा नहीं मिलता था, क्योंकि तब कोई भी रिक्शा वाला अशोकविहार आने के लिए 'हाँ' नहीं भरता था। इतने में काकाजी ही गेट से बाहर आ गए और कहा कि अशोकविहार तक का रिक्शा नहीं मिल रहा है, तो चलो एक रिक्शा में बैठ कर रिक्शा स्टॅन्ड तक चलते हैं और... काकाजी ने ऐसा ही किया। फिर वहां से दूसरी रिक्शा लेकर अशोकविहार आए। अशोकविहार पहुँचने में करीब दो-ढाई घंटा लगा। यहां तब एक फाटक था। उस फाटक पर करीब-करीब ३५-४० मिनिट ऐसे ही रिक्शा में बैठे रहे। बाद में जब यहां आए, तो मैं तो सोच रहा था कि थक गए हैं, अब आराम कर लेंगे। पर, काकाजी यहां आए और... धुन और कथावार्ता शुरू की। इसी तरह इन गुणातीत पुरुषों ने इतना परिश्रम झेला है।

आज भी हम देखते हैं कि घनश्यामभाई ने गुरुजी से केवल इतना ही कहा कि ऐसी एक मूर्ति हमें आपको भेंट देनी है। तो कहते हैं कि हमें वो चाहिए तो है, मगर मुझे देखनी पड़ेगी कि वो कैसी है। आप मानोगे नहीं कि दूसरे ही दिन गुरुजी जयपुर पहुंच गए। मूर्ति देख कर बहुत खुश हो गए और मूर्ति हमने यहां उत्सव में दी थी। ऐसी बहुत सारी स्मृतियाँ-ऐसे बहुत सारे प्रसंग भी हैं। अभी कहने को बैठेगें, तो बहुत समय जाएगा।

गुरुजी बहुत शार्प और इंटैलीजेंट हैं, वो तो हम सब जानते हैं। मगर गुरुजी की यह चीज मुझे बहुत अच्छी लगती है कि उनका काकाजी के प्रति निर्दोषभाव, दिव्यभाव और माहात्म्य अप्रतिम है। उस माहात्म्य, दिव्यभाव और निर्दोषभाव की कोई थाह नहीं है। तो **जो भी ताक़त है, वो अपने गुरु के प्रति जो निर्दोषभाव और दिव्यभाव है, वही शक्ति है** और...

काकाजी कभी-कभी गुरुजी से कहते भी थे – *तूने मेरे जैसे मिस्टिक में ऐसा दिव्यभाव रखा है, तो तेरा काम तो हो ही गया।*

इसी तरह हम ऐसे गुणातीतस्वरूपों को दिव्यभाव की दृष्टि से देखेंगे, तो हमारा कार्य भी हो ही जाएगा – हमारे अंतर में शांति ऐसी की ऐसी बनी रहेगी। अंतर में आनंद बना रहेगा; पर यदि ऐसी दृष्टि नहीं आएगी, तो हमारे अंतर में वो शांति और आनंद कभी भी नहीं बना रहेगा।

गुरुजी के पास हमेशा 'आनंद' का ही दर्शन होता है, हमेशा 'खुशी' मिलती है। जब गुरुजी ताड़देव या पवई आते हैं, तो हमने देखा है कि वे हमेशा छोटी-छोटी बातों में आनंद कराते हैं। छोटे-छोटे से प्रसंग कह कर

काकाजी की, ऐसे गुणातीत स्वरूपों की सब स्मृतियाँ कराते हैं। आज दोपहर को ही अक्षरविहारीस्वामिजी के पास बैठे थे, तो इतनी सारी पुरानी स्मृतियां करा रहे थे। हमारे वशीभाई बोल रहे थे कि इसका कोई ड्रामा या कोई पुस्तक लिखनी चाहिए। ये भी स्मृतियाँ हैं कि ऐसे स्वरूप ऐसे प्रसंगों में से पास हुए हैं और आज हमारे साथ में ऐसा आनंद करते हैं।

सुबह मुझे कोई पूछ रहा था कि भगवान भक्तों की कसौटी कब तक करेंगे? कल रात को बहुत बारिश आई। सुबह हम बात कर रहे थे कि यह भी हमारी कसौटी है। तो, **दिव्यांग** बोला कि कब तक कसौटी जारी ही रहेगी? कभी तो उसका एन्ड होना चाहिए कि अब तुम पास हो गए। अब तुम्हारी कोई कसौटी नहीं है, अब मज़ा करो। मैंने कहा कि भगवान के भक्त हैं, वे उनकी कसौटी में जब पास हो जाते हैं, तो बाद में नहीं होती है। हमें लगता है कि कसौटी हो रही है, मगर उसे तो आनंद ही होता है।

ऐसे-ऐसे बहुत सारे भक्तों को देखा है। वे एकदम मस्ती से जीते हैं; उन्हें कितनी भी तकलीफ है, पर वे मस्ती में रहते हैं। हमें लगता है कि यह तकलीफ है, मगर उसे पूछेंगे तो कहेगा कि नहीं, मुझे बहुत आनंद है। भगवान मिले हैं तो कोई तकलीफ है ही नहीं। **जब तक बड़े संत से हमारा ऐसा संबंध नहीं होता-बनता, तब तक हमें ऐसा लगता है कि हम कसौटी पर हैं।**

...भगवान हमें हमेशा इंस्ट्रुमेंट की तरह यूज़ कर सकें, ऐसा हमें बना दें; वो हम सच्चे भक्त बन गए। दिनकरभाई का एक छोटा-सा प्रसंग है–

एक बार एक भक्त ने साहेब से कहा–*हे साहेबजी! मुझे आपकी माला का मनका बना दो।* तो कोई दूसरा भक्त बोला–*साहेबजी! मुझे माला का मनका नहीं, फुमता बनना है, क्योंकि माला में मनके बहुत होते हैं, मगर फुमता एक ही होता है; इसलिए मुझे फुमता बना दो।* ऐसी बातें चल रही थी। जब दिनकरभाई का नंबर आया तो दिनकरभाई ने कहा–*माला तो चेईन्ज होती रहती है; क्योंकि आज ये माला है, कल दूसरी आ जाएगी, परसों तीसरी होगी, मगर जो साहेब के अंग–उंगली, आंख या नाक तो कभी चेईन्ज नहीं होंगे। इसलिए हमें उनका अंग बनना है। इसी तरह हम उनके इन्स्ट्रूमेंट बन जाएँ।*

आज गुरुजी के चरणों में प्रार्थना करनी है कि हम तो इन्स्ट्रूमेंट हैं, हमें कसौटी लगे ही नहीं।

दूसरी बात, जब से गुरुजी को देखा है, तब से मैं देखता रहा हूँ कि वे निखालिस-एकदम ओपन हैं। उन्हें किसी भी चीज का ऐसा नहीं लगता है कि मैं इसे ये बोलूं कि नहीं बोलूँ। इस बार जब पवई आए, तब बहुत अच्छे प्रसंग बताए। **पर, अपने प्रसंग बता कर वे हमें कहते हैं कि तुम ऐसी तकलीफ में मत जाना; तुम इसमें से ये सीख लेना।** काकाजी बोलते थे–***हमने तो बहुत मार खाई, मगर अब आप मत खाना, क्योंकि हमें आपको सुख से अक्षरधाम में लेकर जाना है।***

इसी तरह गुरुजी अपने-अपने प्रसंगों से बताते हैं। वे बताते थे कि हमारा इन्टेंशन प्यॉर होगा, तो कोई भी चीज हमारे लिए अच्छी हो जाएगी और बड़े गुणातीत स्वरूप को वो पहुंचेगी। मगर **हमारी इन्टेंशन गलत या व्यावहारिक बुद्धि वाली होगी, आध्यात्मिक नहीं होगी तो संत पुरुष राजी नहीं होंगे।**

मंदिर का प्रसंग बताया कि इस बार स्वामिजी पहली बार हॉल को देखने के लिए आए। ये कार्विंग वगैरह सब करवाया, पत्थर जड़ा वो सब बहुत अच्छा दिखता है। स्वामिजी मंदिर आए, हॉल भी देखा, सब कुछ देखा,

मगर वे उन सब के बारे में कुछ नहीं बोले। क्योंकि गुरुजी को मन में ऐसी भावना थी कि कोई ये हॉल देखें, तो कुछ हिस्ट्री जानें। ये तो सूक्ष्म बातें हैं। हमें तो ये पता भी नहीं चलेगा। गुरुजी जब बताते हैं, तो पता चलता है। मगर, जब **ये कलश बनाए, तो गुरुजी के अंतर में ये भावना थी कि काकाजी ने २६ जनवरी को जो बोला था कि 'सुहृद्भाव के कलश चढ़े' और 'गुणातीतभावना वाले साधु बनें', ऐसे साधु का कलश चढ़ाना है।** इसी भावना से यह कार्य किया था।

तो, जब स्वामिजी ने कलश देखा तो और कोई जिकर नहीं किया, मगर बोले कि– *ये कलश हमारे हरिधाम के कलश से बहुत अच्छे हैं।* ऐसा कह कर एप्रीसियेशन किया।

मीन्स, गुरुजी ये कहना चाहते थे कि हमारी इन्टेंशन प्रभु को राजी करने के लिए, प्रभु की प्रसन्नता के लिए हमेशा बना रहे–ये हमें देखना है। तो, आज काकाजी, गुरुजी के चरणों में अंतर से बहुत-बहुत यह प्रार्थना है कि हर पल हमारा जीवन ऐसा बना रहे और इसी तरह से हम जीवन जीएं यही प्रार्थना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. दिनकरभाई (शिकागो)

...दिनाँक के मुताबिक १३ मार्च को गुरुजी के प्राकट्य का अच्छा दिन आ रहा है और दिल्ली में सभी स्वरूप भी इकट्टे होकर आनंद करने वाले हैं। दो-तीन दिन पहले वशीभाई का फोन था, उन्होंने ऐसी इच्छा प्रकट की कि मैं और बापु यहाँ से थोड़ा भावदर्शन-प्रार्थना रखें। बापु तो आस्ट्रेलिया हैं। आज हमारे यहाँ भी बुधवार की सभा है और आज २९ फरवरी है। हर चार साल में फरवरी का महीना ऐसा होता है। ऐसे अच्छे दिन पर हम सभी गुरुजी के चरणों में प्रार्थना करते हैं कि आपने काकाजी की बहुत शोभा बढ़ाई है। काकाजी को धार कर आप जीते हो और जीवों से वर्तवाते हो, तो काकाजी खूब राजी होते होंगे। बापु कई बार बात करते हैं कि काकाजी ने एक जगह ऐसा लिखा है– *अक्षरधाम के अंदर मेरे दो खास निजी सेवक-साथीदार – बापु और गुरुजी।*

आप काकाजी के खूब लाड़ले, प्रिय पात्र और काकाजी ने आपको राजधानी दिल्ली में भेजा, उनके वचन से आपने दिल्ली के मंडल का खूब विकास किया है। तो उनकी आज्ञा से वहाँ का मंडल बहुत अच्छी समझ से शोभा बढ़ा रहा है और अब की बार देश-परदेश से जो भी हरिभक्त आए, उन सभी को खूब जँचा। हरिभक्त तो जब से आए हैं, तब से उसी प्रसंग की, उसी की बातें और स्मृति करते हैं।

उसमें सोने में सुंगध निहित हुई कि गुरुजी पवई मंदिर पधारे और वहाँ पर भी बातें की। सो, वहाँ भी गुरुजी का सबने बहुत लाभ लिया और सबने बहुत आनंद किया। गुरुजी के प्राकट्य दिन से ऐसी बहुत अच्छी क्षण हमें मिल ही रही हैं, उनका हम जितना लाभ लें, उतना कम है। गुरुजी ने इस बार भी सबको बहुत अच्छी तरह आनंद कराया। **सब हरिभक्तों को ऐसा होता है कि दिल्ली आएँ तो बस एक अपनापन लगता है, ऐसा सभी को अनुभव हुआ है।** तो, ऐसे अच्छे प्रसंग में गुरुजी के कई प्रसंग हैं। गुरुजी ने काकाजी की जिस भाव और दिल से आज्ञा पाल कर सेवा की है, उन सेवाओं में हम भी काकाजी के लिए कुछ कर सकें, ऐसी गुरुजी के चरणों में प्रार्थना है। **गुरुजी ने शुरुआत से ही काकाजी के साथ एक संबंध की दृष्टि से जीवन जीया है।**

गुरुजी पर आधारित जो प्ले था, उसके अंदर भी यही ज्यादा दिखाई देता है। हर एक को ऐसा लगा कि सच में **गुरुजी ने काकाजी को हर एक रीति से राजी किया है और काकाजी में भी गुरुजी के प्रति एक ऐसी अच्छी लिंक, सुहृद्भाव, आत्मीयता, मैत्रीभाव दिखाई देता है कि–काकाजी का यह कार्य गुरुजी ही करेंगे और वह कार्य अच्छे से अच्छा हो रहा है।**

वर्षों पहले १९९३ में मंदिर की स्थापना हुई, तब भी **'काकाजी लेन'** और **'स्वामिनारायण मार्ग'**, उसके विषय में जिन-जिन्होंने देखा-पढ़ा, उन्हें खूब आनंद और आश्चर्य हुआ कि **गुरुजी के अंदर कैसी भावना है कि यह हमेशा के लिए एक 'नाम' हो गया।** जो भी आता है उसे इन दो शब्द का दर्शन, श्रवण और मनन-चिंतन होता है और स्वामिनारायण भगवान ने कहा है कि हमारा नाम लेने से ही अनंत जीवों का कल्याण होता है, तो यह तो पूरा मार्ग ऐसा हो गया। देखो, योगीजी महाराज और काकाजी के समय में ऐसा मार्ग हुआ होता, तो बापा ऐसे **आशीर्वाद** देते और **अभी हैं भी कि इस मार्ग से जो भी गाड़ियाँ जाएँ, रिक्शा वाला या व्यक्ति जाएँ, ऊपर जो पक्षी उड़े उसका भी कल्याण।** आज **ऐसा अच्छा मंदिर और मार्ग का प्रभाव है।**

तो, गुरुजी के चरणों में प्रार्थना करते हैं कि हम सब काकाजी को ऐसे राजी करने के लिए लग पड़ें। जिससे जितना होता है, उसे खूब प्रेम से स्वीकार कर, उनका खूब ऋण और आभार मानें। जिस-जिसने डायरॅक्टली या इनडायरॅक्टली मंदिर के कामों में सेवा की है, उन सभी को खूब-खूब आशीर्वाद देना और सभी को खूब संभालना–प्रगति कराना, ऐसी काकाजी और सभी स्वरूपों के चरणों में हमारी प्रार्थना है।

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी

...सबने अपनी-अपनी ओर से तरह-तरह से उनके प्रति अपने अंतर के भाव प्रदर्शित किए। **आप सब तो गुरुजी के यहां दिल्ली आने के बाद उनके परिचय में, उनसे जुड़े हुए हैं। मगर मैं एक बात अपनी ओर से कहूंगा कि असलियत में गुरुजी हमारे हैं।** योगीजी महाराज ने गढ़पुर में जो ५१ संत बनाए, उसमें वे हमारे साथ थे, हमारे साथी हैं और जब विमुख प्रकरण हुआ, तब भी गुरुजी हमारे साथ सांकरदा में थे। **इसीलिए उनका जन्मदिन मनाने के लिए आज सांकरदा से हम सब संत लोग यहां पर आए हैं।**

दो दिन से संतों ने बहुत परिश्रम करके गुरुजी के प्रति हृदय में जो भाव-उर्मि थी, वो उनके चरणों में रखने के लिए प्रयास किया है। जैसे योगीजी महाराज कहते थे वैसे ही 'हां-हां गड़थल' की है। आप सबने हमें साथ-सहकार दिया बहुत-बहुत शुक्रिया। संतों, निष्कामस्वामी इत्यादि ने यह आयोजन किया कि इस बार गुरुजी का ऋण अदा करने के लिए, **गुरुजी के प्रति हमारी भावना व्यक्त करने के लिए उनके यहां जो सब भक्त हैं, गुणातीत समाज के जो सदस्य हैं, उन सबका हम प्रभु के भाव से पूजन करें।** इसलिए संतों ने ऐसा आयोजन करके सबका पूजन किया और **योगीजी महाराज की स्मृति कराते हुए बादाम पूरी प्रसाद दिया।** यह भावना व्यक्त करने के लिए हमने जो कुछ भी किया, उसमें कुछ गल्ती हो गई हो, कुछ क्षति हो गई हो, तो उदार दिल से सब को माफ करना।

मगर यह जो शुरुआत हुई है, ये जैसे मैंने सुबह बताया था, इसी तरह काकाजी, पप्पाजी और योगीजी महाराज का जो संकल्प था, उस संकल्प के मुताबिक हम सब गुणातीत समाज के जो सत्संगी मुक्त हैं, वे सब एक हैं। अभी-अभी भजन में भी जो कड़ी आई कि **हम सब एक हैं और आप जो हमसे करवाना चाहते हैं, वो हमें समझना है।** तो **यह समझने के लिए हमने यह उत्सव मनाया है।** गुरुजी के अंतर की प्रसन्नता ही हमारे लिए काफी है।

ज्यादा कुछ हम जानें या न जानें इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। जैसे कल सब लोगों ने खिचड़ी और रोटले का प्रसाद लिया, वो बापूस्वामी ने कैसे बनाया वो जानने की हमें जरूरत नहीं है, क्योंकि हमें ये नहीं बनाना है। मगर बापूस्वामी ने बनाया और हमें खाकर बहुत अच्छा लगा, बस यही काम हमें करना है। इसी तरह हमें जीतेजी अक्षरधाम का सुख प्राप्त करना है, मगर वो कैसे प्राप्त होगा वो सोचने की जरूरत नहीं है, क्योंकि यह हमारे बस की बात नहीं है। हमको ये सब कुछ मालूम भी नहीं होगा और समझ भी नहीं आएगा, हमें ख्याल भी नहीं आएगा। मगर एक छोटी-सी और सीधी-सी बात है कि काकाजी ने हमें गुरुजी बख़्शिश रूप दिए हैं, उनकी पहचान हमें हो गई है। अब हमें एक ही बात करनी है।

आज गुरुजी ने बहुत अच्छी बात बताई थी कि जो बात हमें संत बताते हैं, उस पर हम अमल नहीं करते हैं। **३२ प्रकार के भोजन देखते या उसका वर्णन करते रहें, मगर थोड़ा-सा भी मुंह में नहीं डालेंगे, तो हमारी भूख नहीं जाएगी। इसी तरह गुरुजी तो हमें मिले हैं, वे जो कुछ हमें बताते हैं, उस पर हम अमल करके अपने जीवन में उसका हम परिचय लेंगे, तो हमें उसका सुख मिलेगा, उसका आनंद मिलेगा और हमारी आध्यात्मिक चैतन्य प्रगति जो होनी है, वो होती जाएगी।**

इसी तरह आज हमें दूसरा कुछ नहीं करना है, सिर्फ गुरुजी के चरणों में यही एक प्रार्थना करनी है कि गुरुजी, आप हमें जो कुछ भी बताओ, कहो या समझाओ, वो हम अच्छी तरह से समझें, वो जीव में बैठ जाए और जीवन में उसका अमल तथा अनुसरण कर सकें, जिससे हमारी आध्यात्मिक प्रगति हो–हमें सुख, शांति और आनंद मिले। **बहुत छोटी-सी बात है, मगर यही लेकर हमें आज यहां से जाना है...** आज उनका आशीर्वाद देने का दिन है और हमारा मांगने का दिन है... **पप्पाजी बोलते थे–'वॉटेवर यू स्पीक, यू मीन इट।' जो कुछ भी हम बोलते हैं, उसका मर्म हम समझें और जीवन में उतारें...**

प.पू. गुरुजी

... सबसे पहले तो इतने शॉर्ट पीरियड में आप सब दोबारा इकट्ठे आ गए। हम लोगों ने तो वॉलेंटियर्स, मंदिर के संत, सेवक सब हॉल में इकट्ठे होकर आनंद करेंगे ऐसा १३ मार्च का प्रोग्राम रखा था। लेकिन फिर स्वामिजी का मॅसेज आया कि हम लोग सब आ रहे हैं। राजकोट, अमदावाद, पंजाब से फिर आ गए। अब तक हम सभी ३ फरवरी के फंक्शन की स्मृतियों में से ही बाहर नहीं आए हैं। और... जब आप लोगों ने इतनी भावना बताई, तो सबसे पहली बात यह करनी है कि–

ऐसे फंक्शन्स, माहौल जगह–जहां **अक्षरविहारीस्वामिजी जैसी सिद्ध विभूति हों और हम इनके करीब आए हों, तो हम अपना काम पहले करवा लें।** ये **समाधि** पर कोई नहीं जा पाए हों, काम की व्यस्तता में, भूल से, आलस से, तो **जाने से पहले ५ परिक्रमा जरूर कर जाएं।** वो इसलिए कि हम जगत में रहते हैं, तो कोई न कोई प्रॉबल्म, समस्या हल करवाना चाहते ही हैं। लौकिक हो या अलौकिक या आध्यात्मिक भी हो, तो आज के दिन खास कि–हमारी ये परेशानी हटे, जिसे काकाजी गुजराती में कहते थे बाधा आती हो, किसी का चुभता हो, वह टल जाए। व्यावहारिक समस्या का हल मिल जाए। महाराज, काकाजी, जरूर-जरूर-जरूर सुनेंगे, क्योंकि भगवान तो भावना के भूखे हैं। जैसे सुबह मैंने बताया **वे हमारी गल्तियां, हमारे स्वभाव, हमारी प्रकृति, हमारे दोष इत्यादि देखते ही नहीं हैं।** हाँ, **वे इतना ही चाहते हैं, जैसे अभी भरतभाई ने बताया कि 'सद्भावना' रखो।** हमारे ये **नाग साहेब** भी जब भी हम बुलावा भेजते हैं, वे जरूर आ जाते हैं। कई बार संयोगवश न आ पाए हों, वो बात अलग है। लेकिन इनकी एक सद्भावना है। वो बात आज भी हम भूले नहीं हैं। इस मंदिर में थोड़ी रौनक-शौनक अब दिखाई दी है। लेकिन, मेरे ख्याल से जब वे पहली बार आए थे, तो हम सब पत्तल में खाना खा रहे थे। इन्होंने देखा कि इनके पास थालियां वगैरह नहीं हैं, तो उस समय इनकी मधर ने एकदम १०० स्टील की थालियां भेज दीं थी। आज तक हम उसमें खाना खाते हैं। पर, **ऐसी सद्भावना**–हमें ख्याल नहीं है कि **'प्रगट' में वो इतना बड़ा पुण्य उदय कर देती है कि बड़े से बड़े भय से भी वो रक्षा कर जाती है** और... हमने ये देखा था ८४ के दंगों में इनकी इस प्रकार रक्षा जरूर हुई। सबसे पहली ये बात करनी है। हम समाधि की परिक्रमा करके जाएँ, हमारी समस्या की अरदास रखें। फलस्वरूप हमारे दिमाग़ का बोझ हट जाए।

दूसरी बात स्वामिजी ने जो चरित्र किया, मैं थोड़ा सन्न-सा भी रह गया था। मुझे ऐसी कल्पना ही नहीं थी। पहले तो फोन आया कि हम आ रहे हैं। मैंने कहा आओ भई, पर इतनी सारी चीजें और सभी को लेकर आ गए! आज हम एक शिविर के लिए भी कहीं जाते हैं, तो ऐसा रहता है कि हम सब के सब चले जाएँगे, तो मंदिर के रुटीन काम का कुछ एरेंजमेंट करना पड़ेगा। टिफिन्स वगैरह की एरेंजमेंट हम करके जाते हैं। सांकरदा में भी मंदिर है, पर ये सारे के सारे संत और सेवक यहां आए हुए हैं। तो **इन्होंने अपनी भावना को व्यक्त करने के लिए खूब ज़हमत उठा ली,** जो हर एक के दिल को छू जाती है। मैं जो सुबह बात कर रहा था कि बापूस्वामी ने जो खिचड़ी बनाई या बाजरे की रोटी खिलाई, वो टेस्टी तो थी ही। लेकिन सबसे बड़ी बात यह कि प्रभु ने इन संतों की भावनाओं में टेस्ट और भी भर दिया, जिसके कारण सभी को इतनी टेस्टी लगी। **इन्होंने भी कितने प्रेम से गरम-गरम खिलाई कि 'सामने बैठो, मैं देता हूँ।'** ये **भक्तों को भी इन संतों के प्रति कैसा अपनापन** बन गया होगा। वर्ना, दूसरे सेंटर से आए संत उनके बारे में क्या सोचेंगे -यह विचार नहीं आया। पर, **ये अपने ही संत हैं–ऐसी एक भावना जनरेट हो गई** और **हमें यही चीज करनी है।** मुझे तो स्वामिजी से पहले यही कहना है कि **जो भावना लेकर आप चल रहे हो, उसके पीछे-पीछे हम सिन्सियरली चल पाएं। दिमाग़ के किसी फितूर में हम फंसे नहीं,** आज के दिन खास ऐसे आशीर्वाद देकर जाएँ।

कई चीजें बहुत बुनियादी हैं, जो कई कहते हैं न गुरुजी ने ये रखी है। **पहले से मुझे इतना तो जरूर रहा है कि ये काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी के कहे पर हमें चलना है। इनकी बातों को पकड़े रखना है।** अंकल को याद होगा, एक बार मंदिर में पैसों की एकदम जरूरत पड़ गई। मैंने अंकल को फोन किया या बात की। अंकल ने कहा गुरुजी मुझे देना तो है, लेकिन अभी एरेंजमेंट नहीं हो पाएगी। फिर इन्होंने मुझे कहा कि आप ऐसा करो कि आप अभी लोन ले लो और उसके पेपर पर मैं साइन कर देता हूँ कि 'आई विल री पे' और तुम्हारा काम अभी हो जाएगा। वहां मुझे एकदम पप्पाजी याद आ गए। मैंने कह दिया था कि मैं यह नहीं करूंगा, क्योंकि एक बार **पप्पाजी** ने मुझ से कहा था–

तुम संतों को लोन क्यों लेना? गांव को बेवकूफ बनाने जैसी बात है। ***तुम्हें जरूरत होगी, तो भगवान का दूसरा नाम 'प्रोविडन्स' है, वे तुम्हें प्रोवाइड कर ही देंगे।*** *तुम्हें लोन क्यों लेनी पड़े? भजन करो, कोई वैसे ही दे जाएगा।*

पप्पाजी बड़े स्पष्ट बोल देते थे। तो मैंने अंकल को मना कर दी कि मैं लोन तो नहीं लूँगा, देख लेंगे फिर। ऐसे कई व्यावहारिक सूचन बहुत छोटे-छोटे हैं। जैसे कि ये मंदिर के लिए जमीन मिली और **शुरुआत हुई, तब से आप भी देखते होंगे कि हमने यहां कोई कॉमर्शियल एक्टीविटी नहीं रखी।** इसकी वजह भी यही है कि २६ जनवरी के आशीर्वचन में **काकाजी** ने ये बात खूब ज़ोर से दोहराई है–

यहाँ गुणातीत समाज में कॉमर्शलिज़म बिल्कुल नहीं चलेगा।

यह सेन्टेन्स वे बोले हैं। तो मैं ऐसी चीजों से खूब डर भी जाता हूँ। मैंने वो गांठ मार दी है कि कुछ भी हो जाए, **हमारा निर्वाह तो सिर्फ भक्तों की डोनेशन से कहो–इंटीमसी से वे जो कुछ दे जाएँ इस पर ही हो। कोई कॉमर्शियल एक्टीविटी हमें नहीं करनी।** तब भी माइंड है, कई बार स्कीमिंग कर भी जाता है। पर हम सजग भी रहते हैं।

तो, मैं यह बात कर रहा था कि–जब मंदिर की लैंड मिली, तब पहले हमारे कौशिक साहेब आते थे, इन्होंने, आउट ऑफ धी गुडविल, खूब आग्रह किया कि गुरुजी मंदिर के बाहर छः-सात दुकानें कर देते हैं। इनकी भावना ऐसी थी कि इसका किराया आता रहे, तो मंदिर को मंथली एक्सपेंस का लोड कम हो जाएगा। पर, मेरे दिमाग़ में यह बात खूब बैठी थी कि नहीं कोई कोमर्शियल एक्टीविटी एलाउ नहीं करनी।

ये तो व्यावहारिक सूचन की बात की। वैसे काकाजी-पप्पाजी ने जो आध्यात्मिक सूचन भी दिए हुए हैं। ये स्वामिजी ने भी सांकरदा के संतों को खूब पकड़ाए रखे हैं। **सांकरदा हम जाएँगे तो देखते हैं कि वहां ज्यादा सुख-सुविधा दिखाई नहीं पड़ेगी–वैभव नज़र नहीं आएगा। लेकिन ये संतों के भीतर में जो आध्यात्मिक वैभव है, वो हर एक को टच कर जाता है।** आप लोगों को शायद ख्याल नहीं है कि हमारे स्वामिनारायण संप्रदाय में जूनागढ़ प्रदेश के संतों के बारे में ऐसा कहते हैं कि वर्तन में उनका सिक्का पड़ता था कि **'जूनागढ़ी संत।' सांकरदा मंदिर के संतों को हम देखेंगे, तो वही जूनागढ़ी संतों की रीतो-रस्म का ख्याल पड़ जाएगा।** जो जानते हैं, उन्हें यह टच कर जाता है। **यह बहुत बड़ी तरक्की है। स्वामी से प्रार्थना है कि हममें भी ऐसा 'गुणातीतभाव' हमेशा का बना रहे, ऐसे आशीर्वाद दें।**

...कई बातें ऐसी हैं कि कई बार ऐसे संत हमारे साथ ऐसे बिहेव कर जाते हैं कि हमें लगे कि हम जो सोचते हैं, वो एकदम सही है। इन्होंने भी हमारी 'हां' में 'हां' कर दी है या हमारी बात ही सही है, ऐसा इशारा दे दिया है।

मैं एक बात करता हूँ। एक बार काकाजी आए थे। काकाजी का कैसा है कि – वे जानते तो हैं कि तुम लोग ऐसे हो, लेकिन अंदर से उगलवा कर बाहर लाने के लिए वे हमेशा पूरी कोशिश में लगे रहते। काकाजी कभी आते-करते, तो मैं कभी उनसे ऐसा नहीं पूछता था कि कहां गए थे – कहाँ से आए? एक बार काकाजी आए और...

ऐसे ही मुझसे बोले – *कल रात को बहुत देर हो गई थी, मैं 'दक्षा' में गया था।*

मैं थोड़ा अलर्ट हो गया; क्योंकि थोड़ा ख्याल आ गया कि काकाजी अब कुछ बॉलिंग कर रहे हैं, मैं कुछ बोला ही नहीं।

थोड़ी देर बाद दोबारा कहा– *वहाँ बहुत देर हो गई।*

मैंने जानबूझकर वजह नहीं पूछी। समझता था कि कुछ बोलूँगा, तो खामखाह फंस जाऊँगा; जैसे हमारे विजयपाल कहते हैं न – बोल मत, फंस जायेगा।

फिर काकाजी कहते हैं– *बहनों ने भाव से इतनी आईटम बनाई थीं कि अन्नकूट कर दिया।*

तब भी मैं नहीं बोला। तो इनको हुआ कि ये तो बोलता ही नहीं।

फिर कहते हैं– *आसन भी, जैसे स्वामी का बनाते हैं, ऐसा ऊँचा बनाया हुआ था।*

तब भी मैं नहीं बोला।

फिर कहते हैं– *जैसे स्वामी के प्रति भाव है, वैसा भाव मेरे प्रति दिखाई दिया।*

तब मैं एकदम बोल पड़ा – *आप भोले हो।*

कहते हैं – *क्यों?* उन्हें हुआ कि अब निकला।

मैंने कहा – *सब दिखावा करते हैं। स्वामी जैसा आपके प्रति भाव? आप खांड नहीं खाओ।*

तो कहते हैं – *हाँ, तेरी बात सच्ची है।*

और... वह टॉपिक यहां वाइंड अप हो गया। मुझे इसमें ज्यादा अंदर जाना भी नहीं था। पर, मुझे लगा कि– काकाजी मुझे इशारा देना चाहते थे कि तुम जो सोच रहे हो, वो गलत है।

इस बात को ४-६ महीने हो गए थे; स्वामिजी यहां आए थे। काकाजी नहाने गए थे, स्वामिजी काकाजी के रूम में बैठे थे। काकाजी नहा कर आए, फिर एकदम बोले –

यह मेरा चेला कहता है कि आप बहुत भोले हो। ये दक्षा की बहनें आपको बेवकूफ बनाती हैं।

मैं तो सोच में पड़ गया कि मैंने तुम्हें जो बात की थी, वो स्वामी को बताने के लिए थोड़ी की थी?

फिर दोहराया कि – *मैंने इसे कहा था कि मैं दक्षा गया था, तो बहनों ने बहुत भाव से सेवा की; तो ये मुझे कहता है कि वे खाली दिखावा करती हैं।*

पर, स्वामिजी समझ गए कि ये दो गुरु-चेले की कुछ चलती होगी, मुझे इसमें पड़ना नहीं है।

असल में वो बात क्या समझाना चाहते थे कि कभी हम भी इस प्रकार की बात करें, तो भी तुम इसमें इन्वॉल्व नहीं होना.. देखो, पहले कैसे कहा कि तेरी बात सही है, लेकिन **वे चाहते हैं कि तुम किसी की ऐसी क्रिया, प्रकृति, स्वभाव देखो ही मत।** और... इसका इंडीकेशन इन्होंने २६ जनवरी में दिया है। दक्षा की एक दो बहनों का नाम देकर के कि ये सब पूर्व के हैं। **मुझे वो पूर्व** का **संबंध देखना चाहिए था**, न कि वो काकाजी को बेवकूफ बनाते हैं – यह समझ कर मायिकभाव देखना था। पर, **हम लोग ये बोलते जरूर हैं, करते नहीं।**

इसलिए मुझे आज खुशी यह हुई कि यह बात **'हम एक हैं'** – जो केवल स्टेज पर बोलते रहते हैं, **वो ये स्वामिजी ने अमल में लाने की शुरुआत की।**

मैंने कइयों से कई बार सुना भी है कि **इन लोगों को कहना क्यों पड़ता है कि 'हम एक हैं।'** हैं नहीं क्या? और... इसलिए बार-बार स्टेज पर कहते रहते हैं कि हम एक हैं-एक हैं। लेकिन **आज स्वामिजी या ये संतों सभी ने इस बात की शुरुआत की है। तो देखो, आज हर एक के दिल को वो ऐसी टच कर गई कि नहीं, ये दिल की सच्चाई से कह रहे हैं। हमारी भावना सही होगी, तो भीतर में हमें एहसास कराने वाली तो प्रभु की मूर्ति बैठी है।** महाराज ने अलग ढंग से यह कहा हुआ है–

उनकी मरजी के मुताबिक बरतेंगे, तो भीतर में मूर्ति हँसती हुई दिखाई देगी।

बड़ी गहराई की बात है। अगर इनकी मर्जी के मुताबिक नहीं करेंगे, तो मूर्ति की नज़र कड़ी दिखाई देगी। ये चीजें यहां भी लागू होती हैं कि **हम अगर इनके सिद्धांत से चलते रहेंगे, तो वे हर एक को एहसास कराएँगे।** पर, **हमें कई बार ऐसा होता है कि फलाना क्या सोचेगा? ये क्या सोचेगा? जिसे जो सोचना हो, सोचा करे, हम एक ही सोच पर चलें कि हमें संप, सुहृदभाव और एकता के सिद्धांत पर चलना है।**

योगीजी महाराज की 'योगीवाणी' पुस्तक संस्था ने बहुत अच्छी निकाली है। इसमें आज सुबह ही मैंने एक सेन्टेन्स पढ़वाया कि **बापा ने** कितनी स्पष्टता से कहा है कि **आप लोगों को यदि मुझे राजी करना हो, तो 'एकता' रखना।** देखो, हम बात करते हैं – राजी करने हैं, राजी करने हैं। हम एकता रखेंगे, तो हमारे बिना कहे वे राजी होंगे ही होंगे; हमें कहने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी। इससे भी आगे लिखा कि **हमने जो यह मेहनत की है, सुहृद्भाव तोड़कर, माथे नहीं पड़ने देना।**

यह बात हमें खूब पकड़े रखनी है। कितनी ज़हमत उठा कर, कितनी गालियां खाकर, कितना अपमान सहन करके बापा का स्थूल संबंध न रखते हुए काकाजी और पप्पाजी ने गुणातीत समाज का सर्जन किया हुआ है। आज अगर हम अलग-अलग प्रवाहों में बंट गए, तो 'गुणातीत समाज' का अस्तित्व नहीं रह पाएगा।

जैसे आज किसी मंदिर में हम जाते हैं, तो कहते हैं कि यह तो माता का मंदिर है, यह तो शिवजी का मंदिर है, यह तो विष्णु भगवान का मंदिर है, यह तो महालक्ष्मी का मंदिर है। इसी तरह अगर हम अलग-अलग प्रवाहों में बंट गए, तो जरूर कहा जाएगा कि सांकरदा – अक्षरविहारीस्वामिजी का मंदिर है,

हरिधाम–हरिप्रसादस्वामिजी का मंदिर है, ब्रह्मज्योति जाओ तो साहेब का है, विद्यानगर जाओ तो पप्पाजी का है। कोई 'गुणातीत समाज का' नहीं बोलेगा– **जिसका काकाजी और पप्पाजी ने सर्जन किया। इसीलिए आख़िर पप्पाजी को कहना पड़ा–** ***यह मेरी मूर्ति है।*** **मतलब, मुझे अगर आपको खंडित नहीं होने देना हो, तो यह बात पकड़े रख कर 'एकता' बनाए रखनी।**

सो, स्वामिजी को खूब–लॉट्स आफ थँक्स, थँक्स, थँक्स, थँक्स, थँक्स। हम तो इनसे छोटे हैं, थँक्स कहने का हमारा अधिकार नहीं, लेकिन–

जिस काम की इन्होंने शुरुआत की, वो एक हिम्मत का काम है। तो इस राह पर हमें आगे ले जाना। **एकता भी सिर्फ ऊपर-ऊपर की नहीं, आंतरिक एकता। कई बार हम यह भी कहते हैं–आंतरिक एकता को–भावात्मक एकता को दिल में रखो, बाहर दिखावा थोड़ा करना है। नहीं, बाहर भी दिखनी चाहिए।** अंकल एक वाक्य अंग्रेजी में कहते हैं–**इट मस्ट एपीयर टु बी। दिखना चाहिए कि तुम्हारी एकता वाकई है।** इसकी अभिव्यक्ति भी होनी चाहिए और वो अभिव्यक्ति जैसे अभी भरतभाई ने बताया, खाली दिखावे की भी नहीं होनी चाहिए। भीतर में वो भावना सही भी होनी चाहिए।

काकाजी इसे अलग ढंग से कहते भी थे–*ऑनेस्टली, सिन्सीयरली एण्ड टोटली।* ये बातें–हमें ऐसा लगता है कि काकाजी बड़े-बड़े शब्द यूज़ करते थे। लेकिन नहीं, आज के ज़माने को ऐसे शब्दों से ही प्रभाव पड़ता है। सो, **हम इसे शब्द लालित्य न समझ कर, इसकी डेप्थ को पकड़ें।**

पर, हमारी बात–ये रास्ता सरल है, इसलिए अपने भेजे में बैठता नहीं है। हम मानते हैं कि इतने में थोड़ा हो जाएगा। लेकिन कहा न कि **साधना सरलता और आराम से काम हो जाए, ऐसी एक व्यवस्था की है।** वो यह व्यवस्था कि भले ही हम अलग-अलग रहते हैं। मानो, स्वामी सांकरदा रहते हैं, हम यहां रहते हैं, स्वामिजी सोखड़ा रहते हैं, लेकिन एक भावना हमारी मिटे नहीं कि **'हम सब एक ही हैं' और वो भावना एपीयर होती रहे। हर एक को हमारे वर्तन, वाणी और विचार से एहसास होता रहे।** ऐसी आज के दिन प्रार्थना।

फिर से आप सब आए हैं। ये अंकल भी सुबह गए; दो-तीन घंटों के लिए घर गए और फिर आ गए। आजकल दिल्ली में जाकर आना वो भी एक बड़ा टास्क है। ये **नाग साहेब** आए हैं; मैं नहीं मानता कि दो घंटे से कम लगा होगा। कई बार कई भक्त आते हैं, मैं हमेशा कहता हूँ, इन्हें चाय-पानी, नाश्ता करा दो; क्योंकि कितनी दूर से ये लोग आते हैं, भावना से आते हैं। अगर **वो भावना हम लोग नहीं समझेंगे, तो हम भगवान के गुनहगार बन जाते हैं।** देखो, ये खुश हो गए कि हम आते हैं, इसका रेकग्नीशन मिला और इसकी ताली बजाई!

...योगीवाणी में एक वाक्य बापा ने कैसा कहा कि हमने शास्त्रीजी महाराज को राजी किया है, तनिक भी मनमानी नहीं की है, तब जाकर आज तुम लोगों को शांति है। मतलब, बापा का कहना यह था कि संतों को तो अपने गुरु की मर्जी में रहकर गुरु को राजी कर लेना चाहिए, ताकि फिर हमारे संपर्क में आने वाले को शांति मिले। हम गाते हैं न–**शांति प्रदान करे, उसे संत कहते हैं। उसकी चाबी बता दी।** हम कोई

क्वालिटीज़–एट्रीब्यूट्स के लिए टयुनिंग न करें कि अब मुझे व्यवस्थित बरतना है। ये सब मैं कर चुका हूँ, इससे कुछ नहीं होना है। बस एक ही चीज रखेंगे कि हमें संत को किसी भी तरह राजी कर लेना है। इसे काकाजी अलग ढंग से कहते– *अरे भई, एक को पकड़ कर उसे उल्लू बना लो,* मतलब राजी कर लेना है। पर, **वहां मेन्टल कॉन्सियसनेस छोड़नी पड़ती है। क्योंकि माइंड को लिमिट है**... हमने दीवाली के कार्ड में एक बार यह लिखा था। पहले कहीं किसी कार्ड में यह आया था, जिसे देखकर काकाजी बहुत खुश हो गए थे कि देखो राजा, माइंड हेज़ लिमिट। **काकाजी ऐसा बोलते थे** कि–**मेन्टल कॉन्सियसनेस छोड़ोगे, तो छलांग मार पाओगे। मेन्टल कॉन्सियसनेस जैसे ही छोड़ेंगे, वैसे ही चैतन्य भूमिका ऑटोमेटिक शुरू हो जाएगी।** जैसे आजकल जनरेटर ऐसे बने हैं कि बिजली जाती है, तो ऑटोमेटिक वो चल जाते हैं, वैसे हम मेन्टल कॉन्सियसनेस से सोचना बंद कर दें। **हम 'प्रॉस एन्ड कॉन्स' सोचते रहते हैं, 'एक्शन एण्ड रियेक्शन' सोचते रहते हैं।** हमने ऐसा किया है, अब ये ऐसा करेगा। ये तो ऐसा ही विहेव करेगा, **वो छोड़कर 'सर्वोपरि प्रभु' मान कर पलभर रुक जाएँ।** ये सारी बहुत अच्छी बातें हैं। **पर,** कहते हैं न कि **हमारी धीरज नहीं रहती,** इसलिए इसे आजमाते नहीं हैं।

काकाजी तो कहते– *भजन करके थोड़ा तो ठहरो।* वे बोलते थे– *रुको, रुको, रुको।*

हम रुकते नहीं हैं। हम एकदम दूसरे विचार में स्टेप अप हो जाते हैं।

पप्पाजी भी बोलते थे– *स्टॉप यॉर एंजीन, लॅट हीम वर्क।*

...हमने भजन किया हुआ है, हम वेइट करें–प्रभु हमारे हैं, अब वे जो करेंगे ठीक करेंगे।

देखो, कल की बात। ये आशीष ने तो पहले कह दिया था कि टेंट लगाना पड़ेगा ही। लेकिन, फिर थोड़े दिन के बाद वो ही आया कि गुरुजी अगर ये टेंट लगाते हैं, तो २ लाख रुपये का खर्चा पड़ेगा। बरसात अगर नहीं पड़ती है, तो टेंट की तो जरूरत ही नहीं है। खामखाह क्यूं?

पता नहीं क्यों, ये कार्ड पोस्ट करने वाले पहला कार्ड इन्द्रदेव को पोस्ट कर देते हैं। इन्हें इंद्र पसंद आ गया होगा, तो वरुण देव भी अचूक आ जाते हैं। फंक्शन हम फ्रेब्रुवरी में करें, मार्च की शुरुआत में करें या एन्ड में करें, वे आते ही हैं। **गुरुजी के बर्थडे पर बारिश आनी ही चाहिए।** शायद प्रसाद बहुत अच्छा बनता है इसलिए ही आते होंगे। ये **अंकल कहते हैं कि हमारे सारे स्वामिनारायण संप्रदाय में भी हमारे दिल्ली मंदिर का जो खाना है, ऐसा किसी जगह पर नहीं है।** तो इंद्र फिर क्यों छोड़ें?

तो फिर, हम लोगों ने क्या सोचा कि बात तो सही है बारिश न आवे तो २ लाख रुपए की बचत हो जाएगी। पर, वो रिस्क ले कौन? मैंने तो कह दिया कि आप लोग तै करो। ये लोग कहते हैं कि हम तो आप कहोगे वो कर देंगे। मुझे भी थोड़ा ये हो गया कि खामखाह २ लाख फेंक देने। फिर मैंने सोचा, **'पंच परमेश्वर'** बोला जाता है। भरतभाई, वशीभाई वगैरह को फोन करके पूछो–तो, भरतभाई ने कहा कि पाँच मिनिट धुन करके पक्का करते हैं। आख़िर, फाइनल हो गया कि अब की टेन्ट नहीं लगाना है, बारिश नहीं आएगी। और... कल बारिश आई और वो भी गाज-गूंज के साथ आई। पर, मैं खुश ये हुआ कि मुझ पर कुछ नहीं आया, जो कुछ हुआ–सीधे फोन भरतभाई के पास गए कि ये क्या हो गया?

अब आज इसे एनालाइज़ करो ; कल बारिश नहीं होती, तो आज आती ही। तो **ये तो भरतभाई की अरज सुनकर तो महाराज ने कल निबटा दिया।** अगर कल बारिश नहीं आई होती, तो आज तसले, बाल्टियां लेकर आप सब लोग यहां खड़े होते। आप लोगों को ख्याल होगा; हमने पप्पाजी की हाज़िरी में डाइमन्ड ज्युबली मनाई थी, तब बारिश आई थी और इसी की वजह से ये हमारे पुनीत, पवन खण्डेलवाल वगैरह नये-नये जो आए थे, इन लोगों ने देखा कि ओहो! बेचारे तो फंस गए हैं। तो खूब भावना से हर एक अपनी पैंट चढ़ा कर बाल्टी, तसले ले आए और एक भावना से वो सेवा में लग पड़े। तो जैसे महंतस्वामी ने एक बार बताया था कि **यदि कोई भावना से ऐसी सेवा करता है, तो फलस्वरूप उसके दिल में सत्संग की चिकनाई आ जाती है। सत्संग की सेवा का वो फल है। केशवजीभाई** की मोटर के बारे में महंतस्वामी ने यह बात की थी। उसकी ऐसी पुरानी मोटर थी कि चले और थोड़ी आगे जाए कि उसका बॉनट उड़ कर रास्ते पर आ जाए। तब महंतस्वामी कहते – इसकी भावना तो देखो और **वो केशवभाई सत्संग से ऐसे जुड़ गए कि आख़िर तक सेवा की। यूँ विपरीत माहौल खड़ा करके भी महाराज ने तो हमारा ही काम किया है।**

तो हम समझें कि यह जो ग्रुप है – **गुणातीत समाज, वो प्यॉरली स्पिरिच्युअल ग्रुप है और इसलिए इनसे संबंध बनाए रखेंगे, तो प्रभु से हमारा संबंध डायरेक्ट बनता जाएगा।** ये संबंध हम दृढ़ रखें, जिससे कि हम हमेशा के लिए सुरक्षित रहें। ऐसा संबंध ही हमारा भक्तपन है। ऐसे भक्त हम बनें रहें, उसी रास्ते पर हम चलते रहें, इतनी प्रार्थना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

पू. मल्कानी अंकल (दिल्ली)

...आज हमारे प्रिय गुरुजी का ७५वाँ जन्मदिन है। मैं केवल उन्हें मुबारकबाद नहीं दे रहा, बल्कि आप सभी को मुबारकबाद देता हूँ। **गुरुजी हमारी आत्मा की परवरिश करते हैं।** मैंने एक बहुत अच्छा स्लोगन देखा था – कॅरिंग धाय नेम इज़ गुरुजी। पर मैं यह भी महसूस करता हूँ कि **हारवेस्टर ऑफ सोल्स धाय नेम इज़ गुरुजी!**

आज सुबह अक्षरविहारीस्वामिजी के बहुत ही यूनिक दर्शन हुए। मैं अपने ईष्टदेव पप्पाजी को याद कर रहा था। सुबह जब मैं मंदिर आया, तो गुरुजी ने बहुत अच्छी तरह प्रेम से बापुस्वामी द्वारा बनाई खिचड़ी दी। तुरंत ही स्मृतियों में मैं विद्यानगर पहुँच गया, जब ऐसी ही खिचड़ी मैंने पप्पाजी के साथ बैठ कर खाई थी। कैसा अद्भुत दर्शन और दिन की अद्भुत शुरुआत हुई।

इस शनिवार की शाम को मैं मंदिर में था। तब गुरुजी ने कहा कि *१३ तारीख को सुबह महापूजा है, आप पौने नौ बजे तक आ जाना।* मुझे मन में क्या हुआ कि मैंने गुरुजी से कहा कि मैं देर से सभा में तो आ जाऊंगा। फिर गुरुजी ने कहा – *सभा के लिए दो घंटे आओ, फिर जाओ और आओ, तो भले आप शाम को आना।* **मेरे मन में एक ऐसा तीर लगा** और मैंने सोचा जब मन में फैसला कर ही लिया है कि गुरुजी की हर बात के लिए 'हां' ही कहनी है। फिर मैंने कैसे सोचा कि मैं दोपहर को आ जाऊं? उन्होंने तो कहा सुबह आ जाओ और ये तो पौने नौ बजे की बात है। अगर सुबह पांच बजे भी कहते, तो भी आना चाहिए था। ये कैसे सोच लिया कि नहीं, मैं दोपहर को

आऊं। **पर देखो, ये मन का खेल है,** क्योंकि मन में तो फैसला एक तरफ कर लिया है कि गुरुजी की सब बात माननी है और 'हां' ही कहना है, तो ये कैसे हुआ? बट एनी वे **माइन्ड प्लेज़ गेइम।** मैं सुबह आया और आते ही ऐसा एक जबरदस्त दर्शन हुआ कि बापूस्वामी की बनी हुई खिचड़ी मिली, जिससे पप्पाजी की बहुत याद आई।

दरअसल **ये जो फंक्शन हो रहा है एक बड़ा नए तरीके का**, एक नया दर्शन हो रहा है। **मैं बहुत फंक्शनों पर गया हूँ,** स्वामिनारायण के सारे फंक्शन्स, हरिधाम, सांकरदा, विद्यानगर, साहेब के पास भी, **यहां भी इतने फंक्शन में साथ रहा हूँ, पर ऐसा फंक्शन मैंने नहीं देखा, जो आज हम सब यहां बैठे हुए हैं। सांकरदा के संतों को प्रभु की कृपा से मैं पहले से भी जानता हूँ।** अक्षरविहारीस्वामिजी सब संतों को फार्म पर ले आए थे, तो नाम से भी काफी संतों को जानता हूँ। दर्शन तो सबके हुए हैं, मगर **आज इस समय जो दर्शन हुआ, वो एक नए तरीके से बहुत अच्छा दर्शन!** ऐसा महसूस होता है कि ये **जितने भी सांकरदा के संत हैं, वे आज के ज़माने के तो हैं ही नहीं।** पहले से **महाराज के समय से हैं और आज हम सबको दर्शन देने के लिए आए हैं** कि सेवा क्या होती है? प्रेम क्या होता है? दिव्य प्रेम क्या होता है? और कैसे आनंद करवाया जाता है? अलग तरीके का दर्शन हुआ है और मैं सबको थैंक यू बोलूंगा, खास-खास **अक्षरविहारीस्वामिजी** को।

आज उन्होंने पूरे दिन में अलग-अलग तरीके के दर्शन दिए हैं। शाम को जब इधर आ रहे थे, तो **'टमटम'** में अक्षरविहारीस्वामिजी और गुरुजी के साथ मैं भी बैठ रहा था और चलाने वाले हमारे कॅप्टन यादव साहब! अचानक अक्षरविहारीस्वामिजी ने कहा कि *मैं 'टमटम' चलाता हूँ।* मैं जानता हूँ कि वो ड्राइविंग बहुत अच्छी तरीके से जानते हैं, मगर अभी कई वर्ष हो गए होंगे, उन्होंने चलाई नहीं होगी। यहां पहुंचे तो पीछे मुड़कर अक्षरविहारीस्वामिजी ने मुझे बोला–

आज मैं चला रहा हूँ, पीछे योगीजी महाराज बैठे हैं, मैं योगीजी महाराज का ड्राइवर हुआ करता था। आज गुरुजी वही योगीजी महाराज का दर्शन दे रहे हैं, तभी मैं चला रहा हूँ।

मैं बहुत खुश भी हुआ, फिर एक ऐसा लगा कि यह भी एक नया दर्शन दे रहे हैं... मैं फिर भी अक्षरविहारीस्वामिजी को थैंक यू बोलूंगा, पूरे दिन उन्होंने आनंद करवाया है। मुझे हिन्दी में सही शब्द नहीं मिल रहा है। पर एक होता है **'डिवाईन ह्यूमर'** और **खुद इतनी मौज-मस्ती से भजन भी गाया।** भजन तो गाया, वो तो ठीक है, संत लोग गाते भी हैं, वो मैं जानता हूँ, पर इतनी मौज-मस्ती से वे खुद भी पूरा आनंद ले रहे थे, बहुत अच्छा लगा। **आज ऐसा दर्शन दिया कि हम इसे कभी भूल नहीं सकते।**

गुरुजी की बात करूं तो गुरुजी के दर्शन हुए आज २६-२७ साल से ज्यादा ही हो गए होंगे। लाइफ में स्वामिनारायण के सबसे पहले संत हमें जो मिले, तो वो गुरुजी। **गुरुजी से जब भी मिलता हूँ, किसी भी समय टेलीफोन पर या पर्सनली, तो मुझे महसूस होता है कि मैं एक 'कम्फर्ट ज़ोन' में हूँ। सलामत भी हूँ, फ्री हूँ। मैं किसी जंजीर से बंधा हुआ नहीं हूँ, खुला हूँ।** मतलब **गुरुजी से कुछ भी बात कर सकते हैं।** कारण क्या उसका? क्योंकि मैं जानता हूँ कि गुरुजी मेरे विषय में सब जानते हैं, तो मैं उनसे छिपाऊँ क्या? शायद मैं खुद अपने विषय में इतना नहीं जानता हूँ, जितना वे जानते हैं।

एक समय ऐसा था–मेरे कई व्यूज़, कई विचार गुरुजी की बातों से नहीं मिलते थे। मगर धीरे-धीरे मैं देखता हूँ कि अभी ऐसी कोई बात ही नहीं रही। **मुझे पता है वो जो भी बात कहते हैं, वो अभी सत्य नहीं है, तो कल सत्य हो ही जाएगी।** बेझिकली क्या है कि **अपनी जिंदगी से ज्यादा गुरुजी से प्रेम है।** एक होता है न अपनी जिंदगी से, मौज मस्ती से, अपने विचारों से प्रेम से जुड़े हुए होते हैं। तो **आज मैं खुले दिल से बोल सकता हूँ कि वो सब चीजें मैं एक साइड पर रख सकता हूँ और गुरुजी से बहुत प्रेम है।** आज प्रार्थना भी करूंगा कि ऐसा प्रेम गुरुजी कायम रखें। आज तक हम यहां पहुंचे हैं, इस सभा में बैठे हुए हैं क्योंकि गुरुजी ने कई बातें हमारी टॉलरेट की हैं। **देखा जाए तो हमने तो कुछ टॉलरेट नहीं किया है, पर गुरुजी ने बहुत टॉलरेट किया है। तभी आज यहां बैठा हुआ हूँ और आनंद कर रहा हूँ।**

गुरुजी तो सबसे ही प्रेम करते हैं। एक बार हरिधाम में मैंने कहा था कि गुरुजी तो **'प्रेम की गंगा'** हैं। आज **वही चीज मुझे अक्षरविहारीस्वामिजी में भी महसूस हो रही है कि वे भी प्रेम की गंगा ही हैं** और **आज तो खास करके पप्पाजी की खूब याद आई है–सुबह खिचड़ी खाने से लेकर अभी तक।** उसके लिए कुछ शब्द नहीं हैं, रियली समझा नहीं सकता हूँ। **मैं तो आज के फंक्शन का अभी भी सोच रहा हूँ कि ऐसा यूनिक फंक्शन मेरे ख्याल से–गुरुजी, हुआ नहीं है।**

अगर बोलता जाऊं तो उसका कोई अंत नहीं है। पर, बहुत खुशी हुई है, बहुत आनंद आया है, यहां आप सब लोगों का दर्शन हुआ है। आप आते ही रहियेगा। अक्षरविहारीस्वामिजी से हम ये कहेंगे कि **आज जैसा दर्शन दिया है,** एक **पप्पाजी रूप आप बनकर आए हो। पप्पाजी का भी गुरुजी से बहुत प्रेम-बहुत प्रेम। सब जानते हैं कि पप्पाजी का गुरुजी से बहुत प्रेम था। आज वही प्रेम अक्षरविहारीस्वामिजी दिखा रहे हैं** और ऐसा प्रेम सारे दिल्ली के सत्संग पर कायम रहे। ऐसा फिर कोई और फंक्शन करना, चाहे कितनी भी दिक्कत हो जाए-आनंद करवाना। आज सुबह वाली 'खिचड़ी' तो एक्स्ट्रा ऑर्डीनरी थी, तो थँक यू वन्स अगेईन। सबको मेरा जय स्वामिनारायण। गुरुजी, थँक यू वेरी मच।

Statement about ownership and other particulars about newspaper —
'भगवत् कृपा' (Form IV Rule 8)

1.	Place of Publication	: YOGI DIVINE SOCIETY, 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052
2.	Periodicity of its Publication	: Bi-Monthly
3.	Printer's Name	: Prabhaker Rao
4.	Nationality	: Indian
	Address	: 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052
5.	Publisher's Name	:
	Nationality	: As above
	Address	:
6.	Editor's Name	:
	Nationality	: As above
	Address	:
7.	Owner's Name	: Yogi Divine Society
	Nationality	: Indian
	Address	: 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052

I, Prabhaker Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
Prabhaker Rao
Signature of Publisher

Date: 28 May, 2012

निमंत्रण

आइए,

12 जून 2012, मंगलवार सायं : 6:30 से 9:15

प.पू. गुरुजी की निश्रा में –

ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज के 94वें प्राकट्योत्सव

एवं

'अनुष्ठान शिविर' की पूर्णाहुति के निमित्त

'ताड़देव', श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर—अशोकविहार में

इष्ट मित्रमण्डल सहित दर्शन, सेवा, समागम का लाभ लेकर स्वयं को धन्य करें.....

'चातुर्मास के नियम'

30 जून, शनिवार से
24 नवंबर 2012, शनिवार तक

भगवान और संत की प्रसन्नता हेतु इस चातुर्मास दौरान सभी सत्संगी प.पू. गुरुजी की आज्ञा के मुताबिक निम्न नियमों का पालन करें।

1. सावन के महीने यानि– 20 जुलाई से 17 अगस्त तक एक बारी भोजन लें।
2. **30 जून, शनिवार** - नियम की एकादशी
   10 अगस्त, शुक्रवार- जन्माष्टमी
   26 सितंबर, बुधवार - जलझीलनी एकादशी
   24 नवंबर, शनिवार - कार्तिक शुक्ला एकादशी
   इन चारों दिन व्रत रखें।
3. चातुर्मास दौरान मंदिर में यथाशक्ति महापूजा करवाएं।
4. रोज सुबह या सायं **'स्वामिनारायण महामंत्र'** का अजपाजप करते हुए चालीस मिनिट तेज़ वॉकिंग करें।
5. सावन महीने के दौरान **'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव'** में हुई कथावार्ता के पाँच पन्नों का नियमित रूप से रोज़ पाठ करते हुए उस पर मनन-चिंतन करें।
6. **चातुर्मास दौरान छोटे-बड़े किसी भी प्रसंग में प्रगट प्रभु को ही कर्ता-हर्ता न मान कर बाह्यदृष्टि रखते हुए वर्तावं कर दिया हो, तो नित्य के 400 मंत्र लेखन के अतिरिक्त उस दिन 'प्रायश्चित् रूप' में 200 मंत्र अधिक लिखें।**

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 28.5.2012, सोमवार : ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज का स्वधामगमन दिन

(2) दि. 31.5.2012, गुरुवार : भगवान स्वामिनारायण की स्वधामगमन तिथि

(3) दि. 1.6.2012, शुक्रवार : **ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज स्वरूपदर्शन हीरक पर्व**
गुणातीत ज्योत स्थापना दिन
भीम एकादशी, व्रत

(4) दि. 4.6.2012, सोमवार : वटसावित्री

(5) दि. 12.6.2012, मंगलवार : **गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज का प्राकट्योत्सव एवं अनुष्ठान शिविर की पूर्णाहुति**
(सायं 6:30 से 9:15 मनाएंगे।)

(6) दि. 15.6.2012, शुक्रवार : एकादशी, व्रत

(7) दि. 21.6.2012, गुरुवार : रथयात्रा

(8) दि. 30.6.2012, शनिवार : **देवशयनी एकादशी, व्रत**
चातुर्मास प्रारंभ

(9) दि. 3.7.2012, मंगलवार : **गुरुपूर्णिमा**
(सुबह 8:00 से 9:30 ताड़देव मंदिर में मनाएँगे। जो इस समय न आ पाएँ, वे दिन में किसी भी समय आ करके 'गुरुपूजन' कर सकेंगे।)

(10) दि. 14.7.2012, शनिवार — एकादशी, व्रत

नृत्यउवर्शी सौ. प्राची शाह-पंडया की प.पू. गुरुजी के प्रति भक्ति...

Air Mail

R.N.I. 28971/ 77

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched Bimonthly

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :-*

SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI

'Taad-dev', Kãkãji Lane, Swãminãrãyan Mãrg, Ashok Vihãr-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052